रसिकप्रिया

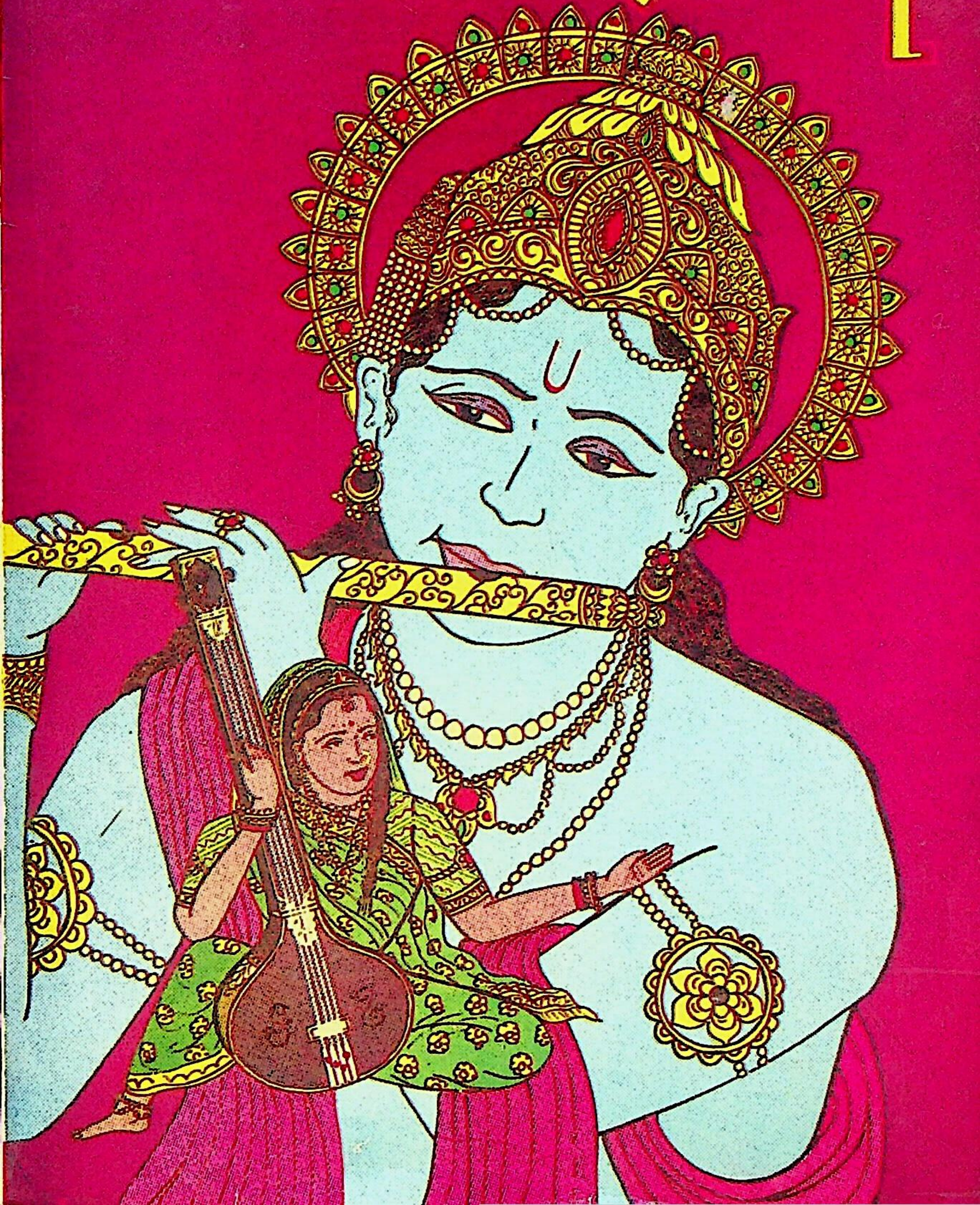

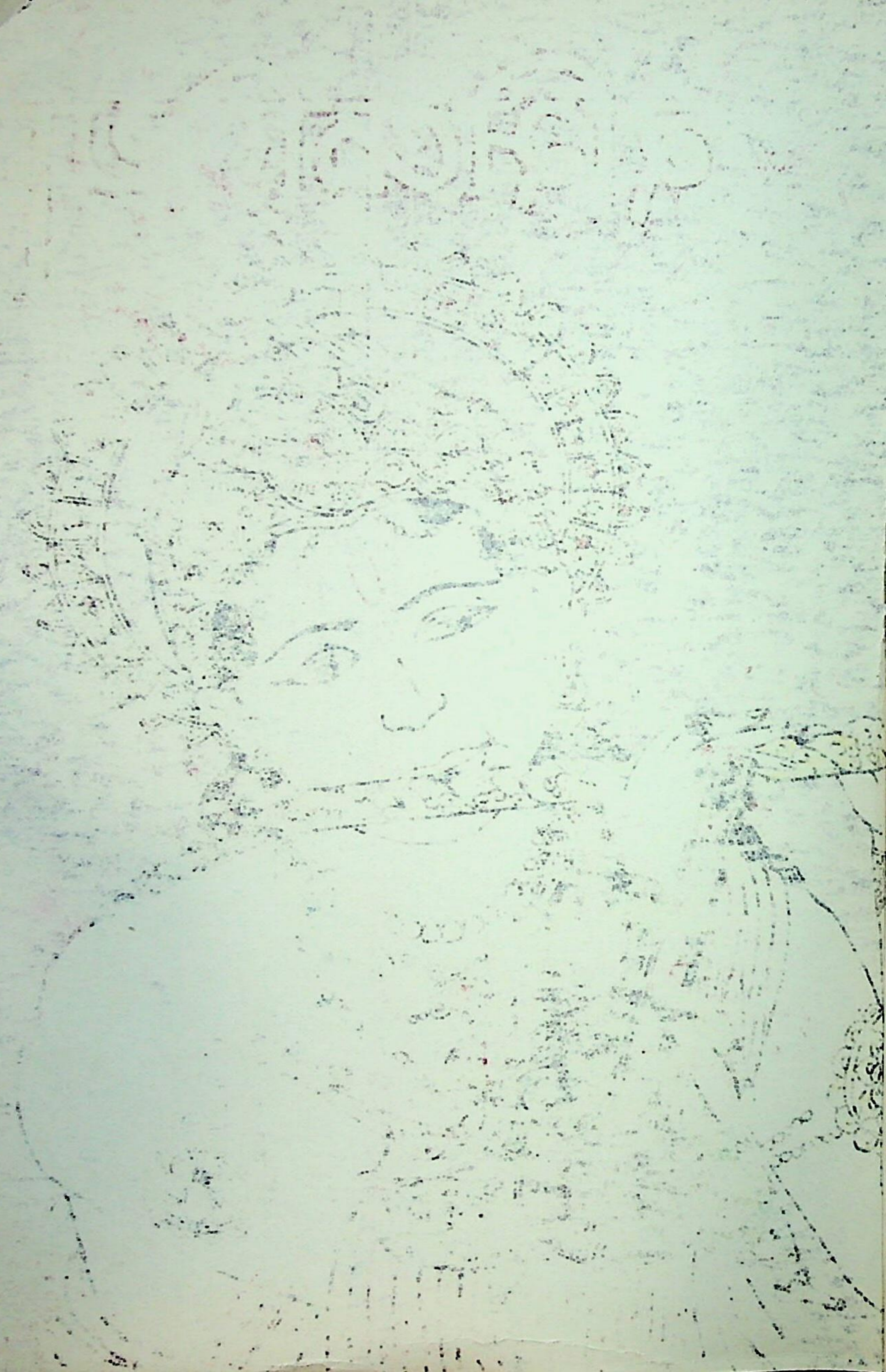

कविकुलकुमुदकविकेशवदासप्रणीत-

रसिकप्रिया

कवीश्वरसरदारकृतसुखविलासिकाटीकासहित ।

॥ श्रीः ॥

कविकुलकुमुदकविकेशवदासप्रणीत-

रसिकप्रिया

कवीश्वरसरदारकृतसुखविलासिकाटीकासहित ।

काव्यप्रेमी रसिकजनोंके आनन्दार्थ

श्रृंगार, हास्य, करुणा, रौद्र, वीर, भयानक, बीभत्स,
अद्भुतादि नवोंरसोमें सुरस नायक-नायका
भेद अलंकार और उदाहरण सहित ।

खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष-"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस,
बम्बई.

संस्करण - सन् १९९५, संवत २०५१

मूल्य ३५ रुपये मात्र

सर्वाधिकार - प्रकाशक व्दारा सुरक्षित

Printed by Shri Sanjay Bajaj for M/s. Khemraj Shrikrishnadass proprietors Shri Venkateshwar press, Bombay - 400 004. at their Shri Venkateshwar press, 66 - Hadapsar Industrial Estate, Pune - 411 013.

भूमिका।

दोहा- अति रति गति मति एक करि, विविध विवेक विलास।
रसिकन को रसिकप्रिया, कीन्हीं केशवदास ॥

कविकुल कुमुद कवि केशवदास की प्यारी हितकारी महारसवारी कविता का गौरव जगत् प्रख्यात है तिसपर इस "रसिकप्रिया" की कविता तो सविताके समान जनप्रिय होरही है हो क्यों न? इसमें उक्त कविने कवित्त और दोहा के मध्य करुणारस, हास्यरस, वीभत्सरस, श्रृंग्ाररस, वीररस अरु भयानक रस संतत निरंतर अरु वैर सहित विचार कर वरणा है।इस रसिकप्रियाके पढ़नेसे रति मति अतिशय करके बढ़ती है और सब रस बिरस कहे नवरस तिनकी रति का ज्ञान होता है तथा मूल स्वार्थ चातुर्यताकी प्राप्ति होती है और तब सब राजा प्रजाको वल्लभ होता है तथा इसमें श्रीकृष्ण राधाको वर्णन है इससे तिनके ध्यानको परमार्थ भी होता है भावरसिकप्रियाकी प्रीतिते दोनों बातें स्वार्थ और परमार्थकी सिद्धि होती हैं। इसमें प्रच्छन्न प्रकाश संयोग वियोग वर्णन, नायक नायिका वर्णन, स्वकीया परकीया वर्णन, दर्शन वर्णन, चेष्टादि मिलनस्थान वर्णन, राधा कृष्ण हाव भाव वर्णन, अष्टनायका नायक संभोगेश्रृंगार वर्णन, दशदशा वर्णन, मान वर्णन, विप्रलंभश्रृंगार मानमोचन वर्णन, करुणादि विरहप्रवास वर्णन, सखी जन वर्णन, नवरस वर्णन, चतुर्विधवृत्तिरस वर्णन, रस अनरस वर्णन आदि नानाप्रकारके वर्णन हैं। और फिर तिनके भेदोंका वर्णन है भाव कोई विषय रसके अंग प्रत्यंग का शेष नहीं रहा तिसपर महामान्य सरदार कविने सोनेमें सुगंध किया है अर्थात् श्री १०८ काशीराजकी आज्ञासे बहुतही सुन्दर और रोचक तिलक किया है तथा किसी २ स्थानपर नारायण कवीश्वरने भी सुन्दर भाव भरित अर्थ किया है, जिनका विशेष वर्णन कहां तक लिखें सज्जन रसिकवर आप अवलोकन कर आनन्दके भागी होंगे। इन्हीं कविवर कवि केशवदासप्रणीत "रामचन्द्रिका सटीक" को भी हमने अत्यंत सुन्दर और शुद्ध छापा है, जिसका मूल्य २ रु० है.

आपका कृपाकांक्षी-

खेमराज श्रीकृष्णदास, "श्रीवेङ्कटेश्वर" यन्त्रालयाध्यक्ष–बम्बई.

श्रीगणेशाय नमः ।

रसिकप्रिया ।

भाषाटीकासमेत ।

सरदारकविकृत ।

दोहा- सीता सीतापति करत, शीतल हीतल जासु ॥
तासु दाम सरदार बनि, छोडो करम कुवासु ॥१॥
उद्दित उद्दित नन्द है, जगमें आनँदकन्द ॥
ईश्वर भूपति भावते, जस राकाके चन्द ॥२॥
करतजु निशिदिन भूपमणि, शुचिविलास सुखसंग ॥
सो तरंगिनी तासुकी, भाषत एक तरंग ॥३॥
निशाअन्त जप रामप्रभु, सीतालषण समेत ॥
जागत हैं भूपालमणि, बहुविप्रन धन देत ॥४॥

छन्द भुजंग प्रयात ।

रहैं यामिनी भूमिके नाथ जागे। सदानाथसीता दुवोपाँय पागे ॥
पढे वेद ताविप्र बंदी उचारैं। चहूँ ओर सौधामके दिव्यद्वारैं ॥
बजी नौबतैं ढोल औ झांझनीकी। भली साहनाई करन्नालपीकी ॥
नचैं पातुरां द्वारपै भूप ऐसी। मनोसिद्ध शोभा धरे रूप वैसी ॥
सुहाये कई भूमिके भूप भारी। अये राजके द्वार आनन्दकारी ॥
सबै शूरसानी लये संग थोरे। जुहारे करैं भूमछूराखधोरे ॥
महाराज श्रीईश्वरीनैनखोले। तबै द्वारके पाल तो बैन बोले ॥५॥

छप्पै- महाराजमणिमुकुटनाथकाशीप्रतापवर।
महावीर रणधीर धरम अवतार धरा पर ॥
सीतापति पदपद्म प्रेमपालक अधिकारी।
चंचरीक चितचार चन्दजस चतुरबिहारी ॥
सरदार भूमिपालनसकलस्वच्छस्वच्छशोभाठये।
तज जानजोर युग पाणि सबदेव दरश कारण अये ॥६॥

दोहा- सुनत श्रवण मङ्गलकरण, नित्यकिया कर चार ॥
दिव्यदिवाकरसे विपत, आये देवदरबार ॥७॥

करि प्रणाम महिपाल मणि, शीशनाइ करजोर ।।
देन लगे आशीषवर, विप्रवृन्द सब ओर ।।८।।

छप्पै- सरस सुयश शशि उदित होहि दिनरैनि प्रकाशित ।
मारतण्डउद्दण्डतेजब्रह्मण्डविलासित ।।
पंचदेव परपूरक्रिया दृगकोर निहारैं ।
दुश्मन दावादार पांयपर शीश शुधारैं ।।
सरदारस्वच्छ अतलच्छ ग्रह अच्छ अच्छ क्रीडा करो ।
पुत्रन समेत ईश्वर नृपति जो शीश विप्र आशिष धरो ।।९।।

दोहा- बन्दीवर बिरदावली, बोलन लगे अनूप ।।
शत्रुनके शिर अस्त्र दै, विचरौ भारी भूप ।।१०।।

विरद ।

भूपमणिमुकुट विकटभटपटकनकटिपटतटतूणीरवीरवर बरछीकृपानपान कंमानतान शत्रुप्राण-भंजन रंजन जगमित्रमित्रप्रताप तापत्रयखण्डन । महाराज ऋतुराजसाज साजनसमाज सुमनदराज कविराज भ्रमरमकरंद वृन्दलच्छ अच्छ स्वच्छ दिनदान ग्रीषमगुमान अरिसरतानसुखावन उदण्डवारशूर नूरमण्डन पावसप्रचण्डभूअमंडल पालनखल बलघालन गजराजघनसघनशैलवर सपासानसाज गरजतोपगोलागाज अरिपुर पहार फारन शरदजस शशि हेमंत शिशिरसुखसकलसभा शोभन पुत्रपरिवार पुन पालन ।।११।।

दोहा- पालनयश शालन अरिन, घालन दारिद भूति ।।
रहो वीर आनन्दयुत, जाहिर जगत सुघूमि ।।१२।।

तोंटक ।

महिपाल सबै मिलि भूप लखे । कर जोरि सुपाइॅन शीश रखे ।।
मिलि शूर सबै सरदार जिते । करजोर जुहारत आन तिते ।।
मरजी लखि बैठि रहे रुचिसों । निजथानन थाननपै शुचिसों ।।
नर जासु नरायण नाम लसें । कर दक्षिण आप बली बिलसें ।।
लघु बंधु महिपतिके कहिये । बलस्वारथपारथसो लहिये ।।

तिनतें उत भूपनकी अवली। बलबीरजु धीरनकी सवली ॥
शहिजादिनके मिलि यूथ रहे। रुखपावत बोलत बोल चहे ॥
इत शूर अनूप अनूप लसे। सब अत्र अनूपम अंग कसे ॥१३॥
दोहा- तहाँ आई सरदार कवि, दै अशीष सुखमान ॥
आयसु पाय महीपकी, बैठि गयो निजथान ॥१४॥
ताहि निहारि महीपमणि, कहे बैन सुख दैन ॥
रसिकप्रिया भूषण रचो, कविकुल आनँद ऐन ॥१५॥
धरि शिर आयसु भूपकी, मनमहँ मानि अनंद ॥
रसिकप्रिया भूषण रचो, जस राकाको चंद ॥१६॥
शिवट्टीग गगनोग्रह सुपुन, रद गणेशकी शाल ॥
जेठशुक्ल दशमी सुगुरु, करो ग्रंथ सुखमाल ॥१७॥
वास ललितपुरनंद है, हरिजनको सरदार ॥
बंदीजन रघुनाथको, पालत पवनकुमार ॥१८॥
नहिं विद्याबल बालमति, नहीं अंगमें जोर ॥
लखकपूतपालन करत, श्रीकेशरीकिशोर ॥१९॥
कहुँ कहुँ नारायण कियो, याको तिलक अनूप ॥
चित्तवृत्ति दै करि कृपा, मुदित भये सब भूप ॥२०॥

मूल छप्पै ।

एकरदन गजबदन सदनबुधि मदनकदनसुत ।
गौरिनंद आनंदकंद जगबन्द चंदयुत ॥
सुखदायक दायक सुकृत्तजगनायक नायक ।
खल घायक घायक दरिद्र सब लायक लायक ॥
गुणगण अनंत भगवंत भवभगतवंत भवभयहरण ।
जयकेशवदासनिवासनिधि लंबोदर अशरणशरण ॥१॥

टीका-या छप्पयमें कवि मंगलाचरण करते हैं। मंगलाचरण को विचार यह कि ग्रन्थ निर्विघ्न निबाहै सो तीनि रीतिको होते हैं नमस्कारात्मक १, आशीर्वादात्मक २, वस्तुनिर्देशात्मक ३ ॥१॥

अथ नमस्कारात्मकलक्षण ।

दोहा- करि प्रमाण सुमिरण करै, इष्ट देवता जोई ॥
नमस्कार आत्मक सुतो, ग्रन्थन मति ते होइ ॥१॥

आशीर्वादात्मकलक्षण ।

आवत है जयशब्द जहँ, देव नामके संग ॥
मंगल आशीर्वाद सो, कहत सुकवि रुचि रंग ॥२॥

वस्तुनिर्देश लक्षण ।

नमस्कारजयरहितपद, ग्रन्थवस्तुको रूप ॥
जानिपरै सुरबिनयजत, कहत ताहि कवि भूप ॥३॥

तो इहां इतनी जानलीजै दो प्रथमवारे तो एकरूप हैं ॥ काहे नमस्कार जय खाली नाहीं होत ॥ अरु वस्तुनिर्देशको भी पाछे अर्थ कहैंगे ॥ अब नमस्कारात्मकको अर्थ यह है कि एक रदन है जिनके । एकको आशय यह कि, अभिमान रूप जो दशन सो नाश कीन्हों है जिनने । काहे आपुन आपनो स्वरूप हीन करदयो गज हाथीवत् वदनते इहां जो केशव गजवदन कहो है तामें यह जनावत कि, प्रणवरूप गजानन हैं जो दोई कुंभ तेईहें तीनके अंककी रीतिते तीनको अंक मध्यमें हीनहोइ है जानो । कुंभ जो उठे हैं सोइ तीनके अंकवत् । अरु शुण्ड जो है सोई है प्रणवको दण्डआशय यह कि, प्रथम प्रणव उच्चारण कियो ॥ वह प्रणव अरु गणेश कैसे हैं बुद्धिके घर मदन जो काम ताको कीन्हों है कदन नाश जिन शंभु तिनके हैं सुत पुत्र ॥ असप्रणवमें मदन कदन करता है जाके सुतका तीनदेव प्रणवसे हैं ॥ गणेश कैसे हैं गौरीके नन्द हैं अस प्रणव गौरी माया नंद पुत्र सब संसार ताके है आनन्दके गन्द जगबन्दत दोहु में चन्दयुत दोई गणेश के भालमें चन्द्र है प्रणवपै चन्द्राकार मात्रा है सुखदाता हैं ॥ सुकृत के भी दाता हैं ॥ गण जो देव हैं तिनके नायक हैं इन्द्र ॥ तिनके भी नायक हैं गणेश ॥ अरु प्रणव गणनायक ब्रह्मा तिनके नायक हैं ॥ खल घायक हैं ॥ अरु दरिद्रघायक हैं ॥ अरु सब लायक जो मन्त्रशास्त्र अरु गुणको जो गणसमूह सो हैं अनन्त दोहुन में अरु भव जो संसार ताविषे भगवन्त हैं भग ऐश्वर्य्यवन्त हैं अशरण के शरण हैं ॥ दोऊ जय करो केशवदास की काहे सकल निधिनिवास स्थान हौ औलम्ब है उदर अशरण शरण हौ ॥ प्रणवको भी जा विषे सर्व सिद्धरहत अशरण जे हैं वेद जिन आनको शरण नाहीं राखो सो भी जाके शरण हैं ॥ प्रथम प्रणव उच्चार वेद पाठ लोकमें भी प्रसिद्ध है ॥ यह तो वरण अर्थ अब गणेश में या प्रश्न ॥ सदन बुद्धिदाता नाहिं होत,

ताकी यह उत्तर कै दांत नहीं तो अबुद्धि सदन कहावैगो ॥ अरु मदन कदन प्रथम करचुके तौ कृष्ण ने मदन उत्पन्न कीन्हों ताको कदन कहिबो अनुचित तहां मदन धतूराको नाम है ॥ तो यामें विक्षिप्तताके पुत्र कौन नीकी तहां ऐसी भी कहे हैं कि कद नहीं है जिनको कदनमें नाशकरने की है सामर्थ्यता जिन को तौ वा अर्थ में एक मदनमात्र रहो यामें सब संसार आयो यह अतिव्याप्ति है ॥ तहाँ मदनही है अरु कद शरीर भी नाहीं है ॥ ज्ञानरूप शिवसुत हैं अरु कोई कहै कि यवन भाषा काहे राखी तहाँ भाषा लक्षण-

दोहा- भाषा ब्रजभाषा रुचिर, कहैं सुमति सब कोय ॥
मिलै संस्कृत फारसी, जो अति प्रगटी होय ॥१॥

अथवा मद संयुक्ति है जिनको गजवदनन कदनसुन नाश ना हो जिनको तिनके पुत्र हैं इति ॥ अस सुगम अर्थ कीजियत है यामें केशव ने सब पद साभिप्राय दिये हैं ॥परिकरांकुर अलंकार कर गौरीनन्द को यह अभिप्राय कि गणेश गोद महामंगलदाता हैं ताको लक्षण ॥ दोहा-साभिप्राय विशेष जहँ, परिकर अंकुरनाम॥ एक है रदन जिनके का एकदन्तको गज ॥ गजायुर्वेद में शुभ लिखो है ॥ या में कोई कहै दो अशुभ सो नहीं जैसे हाथमें तिल उत्तम सामुद्रिक वारेने कहो तो का आन अशुभ है ॥ सदन बुद्धि को अभिप्राय तुम बुद्धिघर हो इत्यादि जानलीजै॥ अरु वस्तु निर्देश अर्थ ॥ एक है रदन दशन जिनके हाथमें का जब कंस वधो है तहां गये कृष्ण तब एक कुवलयापीडको दांत आप लयो एक बलराम सदन बुद्धिके घर हैं मदन कदन नाशभयो का अनंग ताहि कीन्हों है उत्पन्न जिनने अरु गौरी यशोदानन्द तिनको आनन्द देन हारे जग जिनकी वंदना करता है ॥ चन्द्रयुत चन्द्रवंश कहि ॥ अथवा चन्द अंतमें दैके कृष्णचन्द्र अथवा मोर चन्द्रिका है शिर पै ॥ सुखदायक हैं भूभार हरण सुकृत दायक हैं इत्यादि सुगम हैं गुणके गण समूह जो अनन्त बलराम हैं सो भवसंसार को भगवन्त जान भय हरण करता अरु लंबो है उदर जिनको यशोदाको माटी के मिस सब ब्रह्माण्ड आपने मुख में दिखायो ऐसे जो केशव जिनकी जय यामें देवरतिभाव ध्वनि है ॥ सुभावोक्तिअलंकार लक्षण जाको जैसो रूप गुण कहिये तैसो जान ॥१॥

छप्पै- श्रीवृषभानुकुमारि हेतु शृंगाररूप हेतु शृंगाररूप भय।
वासहासरसहरे मातबंधन करुणामय ॥
केशी प्रति अतिरौद्रवीर मारो वत्सासुर।
भयदावानलपानपियो बीभत्सवकी उर ॥

अतिअद्भुतवंच विरंचि मतिशांत संतते शोचचित ।।
कहि केशवसे बहुरसिक जन नवरसमें ब्रजराज नित ।।१।।

इहां उक्ति कविकीते देवरति भाव ध्वनि है ।। यह कविजनावत है कि ब्रजराज नवरसमें हैं जाको जा रसमें प्रीति होइ सो ताही रस में कृष्णचन्द्र को सेवन करै अर्थ स्मरण श्रीवृषभानुकुमारी राधा ताके हेतु तो श्रृंगार रूप होतभये ।। तहाँ प्रथमहीं रसरूप कहियत है कि, रसरूप काको कहिये ।।१।।

दोहा- मिल विभाव अनुभाव पुनि, संचारी सुअनूप ।।
व्यंग करै थिरभाव जो, सोई रस सुख रूप ।।२।।

ये जो चार हैं तिनते रस उत्पत्ति होत है ।। यह मत तौ लोलट्टभट्टको है अरु संकू अनुमान कहे हैं कि उत्पत्तिका देखि परति यह अनुमान है ।। अरु भट्टनायक कहे हैं कि अनुमान तो वह का कहावै कै जो कल्पना मात्र मन में निश्चय करै यह भोग है ।। अरु अभिनभ गुप्तपाद कहे हैं, कि भोग जो दृष्टिगोचर नहीं ताको कहांते भयो रसविज्ञित होत है सो कहियत है कि विभावना इक नायका परस्पर ताको नाम आलम्बन विभाव ।। विभाव काहे इनके आश्रय में रहत है अस घनवन शरद वसन्त ये उद्दीपन जो बात जहां नाहीं तहां ताको उत्पन्न करै सो उद्दीपन अथवा प्रकाश ज्यादा करै अरु कटाक्ष भुजोक्षेपन अनुभाव अरु निर्वेदादि संचारीरति स्थायी ते रस उत्पत्ति होत है यह लोलट्टभट्टकीमति ।। काहे जैसे रामस्वरूपकी उत्पत्ति नहीं तथापि लीला रामते रामरूप की उत्पत्ति होत है तब संकू कही कै उत्पत्ति तो देखबेमें आवत इहां कहां राम देखने में आवत अनुमान कहो कै ऐसे राम रहे अथवा ये राम सदृश है ।। यह रीति अनुमान की है ।। अरु भट्टनायक कहते हैं कि अनुमान नहीं है याको भोग कहो काहे माया आवर्णरहित जो चैतन्य परमात्मा जो रस ताको विशिष्ट जो भोग सो लीला रामते होत है अरु अभिनव गुप्तपाद कहे हैं ।। आलम्बन कारण सत्त है अरु उद्दीपन भी सत्त है अरु सञ्चारी भी सत्त है स्थायी भी अनुभावते सत्त होत है परन्तु जे सबरस के कारण हैं पर कारज में नहीं जान परत जैसे जब रसहोइ है तब सोई आनन्द रूप होजाते हैं देहाध्यास नाहीं रहत सो केशव कहे हैं कि श्रीवृषभानु कुमारी के हेतु आप श्रृंगाररूप ह्वैगये तहां श्रीवृषभानु कुमारी काहेको? यह हेतु कि श्री शोभा देनहार तप्त नहीं ।। अरु यमुना में व्याप्ति वारन अर्थ श्रीकही यमुना भी पत्नी हैं ।। अथवा श्रीलक्ष्मी जो है वृषभानुकुमारी सो राधा तामें प्रश्न कवि करत हैं शृंगार रूप कहा तहाँ उत्तर श्रृंगारको रंग श्याम है सो आपभी श्याम ह्वै गये तहाँ प्रश्न श्रृंगार पाछे भयो ये श्याम जन्मके हैं यह उत्तर नहीं बनत ।। श्रृंगार अवस्था होगये जैसे कोई बूझत

अमुकको आजकाल्हि कहारूप है सौ रूप नहीं लक्षनातेवाकी अवस्था बूझत हैं ।। रूप कहा कहावै है तहां यह कही चाहिये कि श्रृंगारको रूप ह्वैगये ।। आपनरूप भूलिगये बिहारी ।। दोहा-कहालटे ते द्दग करे, परे लाल बेहाल ।। कहूं लटुक कहूं पीतपट, कहूं मुकुट बनमाल ।। यहां नायका आलंबन विभाव ।। बेहाल नेत्र देख ह्वै गये यह अनुभाव ।। मोहसंचारी रतिथाई ताते विंजित श्रृंगार ।। अथवा पांच वर्षमें षोडश वर्ष को कर्म कियो यह गीतगोविन्दमें ।। मेघैर्मेदुर ।। अरुवास हास रसहरे जब गोप कन्याके वस्त्र हरे तब हास रस ह्वैगये ।। प्र० ।। तहां विभाव नहीं बनत। काहे हास तो अयोग्य वस्तु ।। जो उलटो कार्य्यते होत है ।। तामें यह उत्तर है।। कि गोपी जल विषे वस्त्र हीन रहीं सोई विभाव है ।। अरु आप कृष्ण पर वस्त्र लेन अनुभाव हर्ष संचारी हास व्यंग ।। अरु माताके बंधन विषे करुणा नहीं बनत। काहे ।। यह रस माता को है तहां यह कही कि ।। माता बांधत रही तहां रसरी छोटी होजात ।। तब माताको दु:ख जान के आप बंधगये तो यामें भी शोकस्थायी न हो सकैगी कि माता बांधत यमलार्जुन तारे तिनकी शाप याद आई ।। तोभी उनको तारे तब करुणा कहां इहां ऐसी काह चाही कै मान बंधन देखि कंस के गृह में आप करुणारूप भये ।। तो वसुदेव देवकी आलंबन विभाव ।। अरु कृष्ण रुदन करत आये सो अनुभाव मोहसंचारी शोकस्थानी ताते करुणारस ।। इहां अवस्था क्रम नहीं विचारी ।। रसक्रम जानिये ।। अरु केशीप्रति अतिरौद्र काहे वारंवार कोप करे ।। केशीविभाव अरुणद्दग अनुभाव गर्भसंचारी क्रोधस्थायी ते रुद्ररस अरु उत्साहते वत्सासुरमारो सो शत्रु विभाव आपके अंग अनुपमलीला अनुभाव गर्भ संचारी ।। उत्साहस्थायी ताते वीर अरुवीर रौद्रमें इतनो भेद है कि वीरमें समताकी सुध बनीरहत रौद्रमें नहीं अरु भयानक रस दावानल पानविषे काहे केशव को भय देख आपु भी भय मानी ।। अरु बीभत्सकी उर जब स्तन पान करे तब बहुत गलानी मानि ताको तारी ।। इहां वाके स्तनपानकी अपने मनमें कदर्यता जानी ।। सोई विभाव नेत्रादिको रूप फिर व अनुभाव निंदा संचारी ग्लानिथाई ताते बीभत्स जानिये अरु ब्रह्मा वत्सहरन में अद्भुत कहाभये ।। कै देखो ब्रह्मा भी अज्ञानी है सोई विभाव अरु ऐसी आवत रोमांच ह्वै आये ।। सो अनुभाव शंका संचारी ।। आश्चर्य स्थायी ताते अद्भुत अरु शांत संतत. निरंतर जब शोच कीनो निरंतर शोच कहा अर्जुन को उपदेश करन लगे तब अथवा उद्धव को तो इहां कोई शांत ते पाठ कहे हैं ।। तहां सात मुनिनसों मिले अथवा शांत है चित्त जिनको ऐसे महादेव जब ब्रज में आये जब उनको शांतरूप देख आप भी शांत रूप ह्वै गये ।। इहां महादेव ।। विभाव ।। समता ज्ञान अनुभाव ।। धैर्य

हर्ष संचारी निरवेद थाई ताते शांत रस सो कहत ताते केशव कवि अथवा केशव यह नाम उच्चार कर हे रसिक जन! सेवहु ॥ ब्रजराज नवरस मय हैं ॥ यहां रचना कर बात कही ताते परजा उक्त अरु बहुविधि वर्णनते उल्लेख ॥ अरु एक कृष्णको अनेक रीति ते अनेक ठौर कहे ताते तृतीय विशेष को संकर है ॥ दोहा ॥ अलंकार है क्षीर औ, नीर सरस कविराज ॥ मिले समुझ संकर कहे, जे जानत सुखसाज ॥२॥

दोहा- नदी बेतवै तीर जहँ, तीरथ तुंगारन्न ।
नगर ओडछो बहु बसै, धरणीतलमें धन्न ॥३॥

अब कवि अपने नगर की स्तुति करत हैं कि नदी है जामें वेतवै ताके तीर विषे तीरथ है तुंगारन्न ताके नजीक नगर बसै है धरणीतलमें बहुत धन्य है धन्य काहे कै जहां नगर तहां तीरथ नाहीं जहां तीरथ तहां नगर नाहीं जहां दोई तहां उत्तम भूप नाहीं यामें बहु बसे कहनेते यह सूचित करै है कै देवता भी बहुत हैं ताते देव धन्य कहत है अरु कोई ऐसी भी कहत हैं कै देवलोकते तरे हैं ॥३॥

दोहा- आश्रम चार बसे जहां, चारबरण शुभ कर्म ।
जप तपविद्या वेदविधि, सबै बढे धनधर्म ॥४॥

चार आश्रम गृहस्थ ब्रह्मचारी वानप्रस्थ संन्यासी चारवर्ण ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्रसे सब शुभकर्म करैं हैं, यजन याजन, अध्ययन अध्यापन दान प्रतिग्रह ब्रह्मज्ञान इत्यादि सबजानि ये चारआश्रम चारवर्ण जप तप विद्या वेद विधिवारी करत हैं जाको जो धर्म है सो सब करत हैं ॥४॥

दोहा- दिनप्रति जहँ दूनों लहै, जहां दया अरु दान ॥
एक तहां केशव सुकवि, जानत सकल जहान ॥५॥

दोहा- अपने अपने धर्मते, सबै सदा सुखकारि ॥
जासों देशविदेशके, रहे सबै नृपहारि ॥६॥

अपने अपने धर्म ते सबसुख कर रहे हैं विनसबते देशके नृप हारिगये प्रश्न काहे हारे का राजासे वे बडे प्रबल हैं उ० । जे पूर्व कहि आये अपने २ धर्म में सब हैं इहिते राजा उनही देशके ते अपराध कोई नहीं करत इहिते हारे अरु विदेशके भयते ॥५॥६॥

दोहा- रचो विरंचि विचार तहँ, नृपमणि मधुकरशाहि ॥
गहिरवारकाशीशरवि, कुलमंडन यश जाहि ॥७॥

रविकुल आदि रहै चंद्रकुल पाछे कहायो ताते आदिकुल कहो ॥७॥

दोहा- ताके पुत्र प्रसिद्ध महि, मण्डनदूलहराम ॥

इन्द्रजीत ताको अनुज, सकलधर्मको धाम ॥८॥

दोहा- दीन्हीं ताहि नृसिंहजू, तनमनजय रणसिद्धि ॥
हितकर लक्ष्मण राम ज्यों, भई राजसों वृद्धि ॥९॥

दोहा- तिन कवि केशवदाससों, कीन्हो धर्म सनेहु ॥
सब सुख दै करियों कह्यो, रसिकप्रिया करिदेहु ॥१०॥

दोहा- संवत सोरहसै बरस, बीते अडतालीस ॥
कातिक सुदि तिथि सप्तमी, बार वरन रजनीश ॥११॥

बार रजनीश चन्द्र ॥८ ॥९ ॥१० ॥ ११ ॥

दोहा- अतिरतिगतिमति एककरि, विविध विवेक विलास ॥
रसिकनको रसिकप्रिया, कीन्हीं केशवदास ॥१२॥

रतिगतिका प्रीतिकी गति अर्थप्रीति सब ओरते खींचि मतिकी गति कहा अपनी मति अनत न जाइ एककरि कहा जापै प्रीति ताहीमें मति लगी अरु नानारीतिको विवेक ॥ विलास अरु विविध रीतिको जो विवेक ताको विलास यह है आनशास्त्र चिंतवन त्याग रसिक जो पुरुष है विषयहीन जैसे राधाकृष्ण उपासक तिनके हेत रसिकप्रिया करी है ॥ अथवा जिन रसिकन रति की गति मतिकी गति एककरी है अरु विविध विवेकके विलास तिनके हित अथवा रतिथाईकी गतिमें करी है ॥ मतिकी गति संचारिन की गति मति एक अर्थ क्रम प्रथम विभाव जान अनुभाव रूप जान सो संचारी ते थाई ह्वैगये हैं लवलीन आश छूटिगयो है अर्थ देहाध्यास जिनको ॥१२॥

दोहा- ज्यों बिन डीठ न शोभिये, लोचनलोलविशाल ॥
त्योंही केशव सकलकवि, बिन बाणी नरसाल ॥१३॥

दोहा- ताते रुचि शुचि शोचि पचि, कीजैं सरस कवित्त ॥
केशव श्याम सुजानको, सुनत होइ बश चित्त ॥१४॥

सरस कवित्त कैसो बनाइये कै जाके सुनत श्याम सुजान सुसुन्दर श्याम कृष्णजिनने जाने हैं ऐसे कविको चित्त बशहोइ अथवा श्याम सुजान श्रृंगार रस जाननहार को चित्त बश होइ, यामें आन रस काहे तो शृंगार सब रस को राजा है जो राजा को जानि हैं सो का सेनाको न जानि हैं ॥ १३ ॥ १४ ॥

अथ नवरस वर्णन।

दोहा- प्रथम श्रृङ्गार सुहास्यरस, करुणा रुद्र सुवीर॥
भय बीभत्स बखानिये, अद्भुत शान्त सुधीर॥१५॥

दोहा- नवहू रसको भाव बहु, तिनके भिन्न विचार॥
सबको केशवदास हरि, नाइक है श्रृङ्गार॥१६॥

इहां जो सबको नायक शृंगार कहो सो काहे याको देवता हरि है॥ अरु वही रूप श्याम रूप है॥ याको विस्तार साहित्य सुधाकर के मंगल में हम लिखो हैं॥१५॥ १६॥

अथ श्रृंगाररस लक्षण।

दोहा- रतिमतिकी अतिचातुरी, रतिपतिमन्त्रविचार॥
ताहीसों सब कहत हैं, कविकोविद श्रृंगार॥१७॥

रति विषे जो चातुरी है सो कहा प्रीति चातुर्यताते यामें यह जनाई कि मनुष्य मात्र की प्रीति पशुकी नहीं॥ तहां का कोई पशु पक्षिन के विषे रस होइ है॥ कि रति में मतिकी चतुराई कहा सामान्यादिकन में नहीं रहे जो उन विषे प्रीति होइगी तो रसाभास ह्वै जाइगो अरु रतिपति जो काम है ताको मंत्र अरु विचार यह कामशास्त्रमें लिखो है॥ प्रतिपदाते पूर्णमासी लों॥ काम अमुक स्थान में रहत है अथवा विभाव अनुभाव संचारी स्थाई इनको क्रमते लगाइये कै रति थाई मति संचारी चतुराई अनुभाव अरु मंत्र जाविषे देव रहै जाते प्रकट होई सो नायक नायका है इति॥१७॥

दोहा- शुभसंयोगवियोग पुनि, दो श्रृँगारकी जाति॥
पुनि प्रच्छन्न प्रकाश करि, दोऊ द्वै द्वै भांति॥१८॥

संयोग अरु वियोग ते दो दो रीतिके होती हैं॥ एक प्रच्छन्न नाम जाको कोई न जाने प्रकाश जाको अंतरंग बहिरंग दोई सखी जानें॥१८॥

अथ प्रच्छन्नसंयोगश्रृंगार।

दोहा- सो प्रछन्नसंयोग अरु, कहैं वियोग प्रमान॥
जानैं पीउ प्रियाकि सखि, होहि जुति नहिं समान॥१९॥

सो प्रच्छन्न संयोग अरु प्रच्छन्न वियोग कहावै जाको पीउ प्रिया सखी तिन समान होई सो जाने अरु कोई कहै कै नायका समान प्रश्न भई तो सखा कहा ताको उत्तर कैसे राजा समान राजमंत्री होत है। प्रच्छन्न संयोग॥१९॥

अथ प्रच्छन्नसंयोगउदाहरण ॥ सवैया ।

बनमें बृषभानुकुमारि मुरारि रमे रुचिसों रसरूपपिये ।
कलकूजत पूजत कामकलाविपरीत रची रतिकेलि हिये ॥
मणि सोहत श्याम जराइजरी अतिचौकि चलै चलचार हिये ।
मखतूलके झूलझुलावत केशव भानुमनों शनि अङ्कलिये ॥२०॥

वनमें वृषभानुकुमारी राधा अरु माधव रमन करैं हैं ॥ बहुत रुचिसों रस जो रूपको ताहिको पीकरके तो रसनाम जलको सोईरूप वारुणीको अर्थांश मदमत्त ह्वैगये ॥ कलमनोहर कूजत हैं शब्दकरत हैं ॥ अरु काम कलानको पूजके पूर्ण करत हैं तहां विपरीत रति है ॥ रतिके लिहियेमें ॥ विचार ताते मणिमय जो चौकीश्याम है ॥ सो राधाके हियेमें सोहत है । अरु चलत है सो कैसी लागत। मानों मखतूल श्याम पाठ ताके झूला में झूलावत है भानु शनि अंक गोदीमें लैके ॥ इहां चौकीभानु । श्याममणि शनि अरुजो वेणिके बार सोई मखतूल अथवा मखतूलही में वह चौकी गोई है यामें पांच प्रश्न हैं। एकनायक को नाम शृंगारमें मुरारी दूसरो प्रथम कवित्तमें विपरीत शब्द अमंगल तीसरे सखीउक्ति सखीप्रति प्रच्छन्न में, चौथौ सूर्य अरुण है सुवर्ण पीतमें ॥ पंचम स्त्री पुरुष में पिता पुत्रकी उत्प्रेक्षा तामें उत्तर । कै मुरनामा नरकासुर कोई दैत्य रहो स्त्री इच्छाकारी ताहि मारि सोरह हजार कन्या ल्याये ताते महाशृंगाररूप नाम है ॥ अरु कोई कहै कि मुरारि नाम पाछेभयो ॥ द्वारका में यह लीला व्रजकी है ॥ तहां परमेश्वरके नाम सब अनादि हैं ॥ तो इहां वृषभानुकुमारी नामपै प्रश्न ॥ काहे न कीनी गोपकुमारी अथवा राधामुरारि इककहते तहां ऐसी कहिये कै प्रच्छन्न संयोग करनकी इच्छा जान वृषभानुकुमारी मुरारिनाम राखो है का वृषभानुकुमारी महा तेजवंत अरु मुरारि महावीर ते यह सूचित करत कै स्त्री तहां आन नाहीं रहै ॥ ताहि के डरते बिहारी को घटाये वृषभानजा वे हलधरके वीर । अरु विपरीतको उत्तर यह कियो कै दोहुन की प्रीति पूर्ण है ताते स्थायी पूर्ण भयो अरु अनुज्ञा अलंकारकी रीति केशवने राखी है ॥ ताकी लक्षण । दोहा ॥ होई अनुज्ञादोष में, जोलीजै गुणमानि । होई विपत जामें सदा, हिये बसे हरि आनि ॥ तो इहां थोरोदोश बहुत गुण ॥ तो इहां भी दोश बनोरहो । तहां ऐसी कहे चाही एकै पूजत कामकला कामकी कला सबपूजत नाम तूर्ण होत तब विपरीत रचि कै कामकला कौनहु बाकी न रहै प्रथम तो रमण पहिली तुक में करचुके जो मंगल रूप है ॥ अरु अन्त में पूर्णमें रति विपरीत रचि तीजो उत्तर । कि सखी एक नायककी रही एक नायक की रही सो ऐसेही है । अरु सखीते लक्षण कर सखी भी बनत है। काहे सखी मंडन शिक्षा करन उपालंभ परिहास ॥ सखा विट चेटकादि कहे हैं तो यामें प्रश्नहू नाही हैं ॥

अंतरंग सखा अंतरंग सखी चारों तिन समान हैं ।। याते कै नायका को मान नायक की सखी छुटावत नायक । नायका की सखी सों अंतरंग ।। सखी अंतरंग सखी सोकहै । अरु चौथो उत्तरकै मणिरक्त में श्याम को प्रतिबिंब परो तहां एक बात रहि जात है कै उपमान तीन उपमेय दो हैं सो न बनै हैं तहां ऐसी कहै चाहि कि उपमानते उपमेय बोध होत है । सो प्रसिद्ध है । इहां मखतूल ते गुणको बोध कीन्हो ।। परन्तु ऐसी अर्थ करै तो सरिल अर्थ होई । कै मणि शोभावान् होइ है ।। श्यामते मध्य की जराउ जरी ।। अति चौकी भी का सुवर्ण नाहीं देखि परत । ऐसी जराउते जरि है सो अति सोहत है काहे जो ।। मणि के कण लागेते रूप देखिपरत । तो जो बाहिरकिनारेकी मणि सो झूला अरु मध्यकी सोई है शनि ।। अरु पांचयें प्रश्नको उत्तर यह कीन्हों कै उत्प्रेक्षामें दोषनहीं तथापि अनजो मणी है । चार तरफकि तहां कहिकै मणि सोहत है ।। श्याममूर्तिके श्यामशोभित है । चौकी में सो चौकी चलत है सो मानों मखतूलके झूलापै झुलावत हैं केशव कृष्णकीन्हे भा शोभा तिनको झुलावत हैं ।। आस पास जो मणी लगी हैं सोमानों शोभारूप हैं । रूपवंत तिनको एकअंकमें लैकै झुलावत हैं ।। शनि कहा प्रीतिमें सनिके । तहां बहुत कलेश ते अर्थहोत है, उत्प्रेक्षा में इनको दोष नाहीं । बिहारी दो० भाल लाल बेंदा दिये, छुटे बार छबि देत । गहोराहु अतिआहुकर, जनु शशिसूरसमेत । तो इहां शशिसूरसमेंत नाहीं गहत ।। उत्प्रेक्षालक्षण दोहा । उत्प्रेक्षासंभावना, वस्तुहेत फललेख ।। पहिली उक्ति अनुक्ति है, सिद्ध असिद्ध विशेष । तो इहां वस्तु चौकीमणि संभावना तामें शनिसूर्यकी उरु झुलावन क्रिया के आगे मानो ताते अनउक्ति विषया वस्तुत्प्रेक्षा ।।२०।।

प्रकाशसंयोगलक्षण ।

दोहा- सोप्रकाशसंयोग अरु, कहैं प्रकाश वियोग ।।
अपने अपने चित्तमें जानै सिगरे लोग ।।२१।।

जो सीगरे लोग न जानो तौ आगे स्वकीयाके लक्षणमें कहा होईगो ।। लज्जा न रही तहां एक तो इन लज्जा लक्षण में नाहीं करी तथापि सिगरे लोग अंतरंग बहिरंग सखी सखा जाने ।।२१।।

अथ प्रकाशसंयोग उदाहरण ।। कवित्त ।

केशव एक समै हरिराधिका आसन एक लसे रँगभीने ।
आनन्दसों तिय आननकी द्युति देखत दर्पणमें दृगदीने ।।
भालके लालमें बालविलोकतही भरि लालन लोचन लीने ।
शासनपीयसवासिनसीय हुताशनमें जनु आसन कीने ।।२२।।

बहिरंग सखीकी उक्ति बहिरंगसखी सों ।। कै हे सखी एकसमय में हरिअस राधिका आसनपै रसभीने बैठे हैं। तहां कहीकै सामुहे बैठे हैं तब रसभीने होहिंगे ।। तामें जब सामुहे बैठे तब दर्पण दोई कैसे देखि हैं ।। तो बराबर कहो चाहिये रस भीने भुज उनकी उनके ऊपर उनकी उनके ऊपर । अरु आनंद सों तीय आनन की द्युति दर्पणमें देखत है दृगदैकै ।। तब भाल जो बालको है तामें जो लालबेंदा तामें जो परी प्रतिबिंब बालको सो देखतही लालने लोचन भरलये । काहे कि शासन आज्ञा ताको पाइके सवासिन वस्त्रसहित सीता हुताशनमें मानों आसन कीन्हे है ।। अरु जो आपन भालकही तो नायक विषे भालमें लालकहा अरुजो मुकुटसहित माणिक है तो भाल के ऊपर है । अरु बालको देखिबो नाहीं रहो जो अपने लालमें देखो ।। अरु यहकहो तो कि रस भीने हैं कहा रति विपरीतकर उठे हैं। सो भूषण वसन वैसेही बने हैं तो अर्थ बनत तामें चार प्रश्न एकतो संयोग विषे वियोग दूजे आंशू तीजे वस्त्रको कहा प्रयोजन। चौथे दोसखीमें प्रकाश कैसे ताको उत्तर। कै सीता लंकाविष अग्निमें पैठी तो संयोग है।। अरु सवस्त्र ते सीताके सत्तकी बढाई कै सीताको वस्त्र भी न जरो तहां यह प्रश्न है कि श्रीराम जब जानकी को अग्निप्रवेश करायो तब कालाग्नि सरिस ह्वै गये अरु कृष्ण शृंगार स्वरूप सो कैसे बनि है तहां ऐसे कही है ।। जब जानकी अग्नि प्रवेश कीन्हों तबकी कथा तो वियोग ताते जब लवकुंश को युद्ध भयो तबकी कथा है तो तहां हर्ष होइगो ।। तो यामें आनंद आंशूबनि हैं अरु कोई कहै कि इहां जानकी कहां तो सुमिरण है ।। अरु चौथा यह कि आन समयकी बात बहिरंग कहत हैं । अरु जो द्युति सो भरिलई कहत तो सब अर्थ नष्ट ह्वैगयो ।। काहे जानकीकी सुधिआई सो व्यर्थपरिगई । इहां नायक नायका आलंबनविभाव अरु अविलोकन अनुभाव आनंद संचारी रति थाई ताते शृंगारसे सुमिरण अलंकार ताको लक्षण । दोहा ।। लखतआन सुधि आनकी, आवत सुमिरण होइ । भाल बाल के पेखते सियसुधि आई सोइ ।।२।।

अथ राधिकाको प्रच्छन्नवियोगशृंगार यथा ।। सवैया ।

कीट ज्यों काटत्यों कानन कानसों मानहिमें कहि आवतऊनो ।
ताहि चले सुनके चुप ह्वै गये नीकही केशव एकहि दूनो ।।
नेक अटेपट फूटत आंखि सुदेखत हैं छबको ब्रज सूनो ।
काहेको काहूको कीजै परखोसुजीजेरेजीवकिनाकदै चूनो ।।२३।।

उक्ति नायकाकी अंतरंग सखीसों कैसे सखी में जो मान में ऊनोबात कहतरही ततो मेरे कानन को जैसे कीट काटत तैसी लागतरही यह अर्थमें प्रश्नकरी

कि जीभको का नायकनीको नाही लगतरहो ।। तहां उत्तर । तू मेरी पक्षकरकान्हसों कहतरही तहां मान यह शब्दव्यर्थही जाइ है ।। तहां ऐसो अर्थ कीजिये कि काननको तो कान्हकीट समान काटतरहे अरु जीभमान मैं भी ऊनो कहै विषम कामों तें विषममें मानवती । जीभनेहिनी ताको चलो सुनचुप ह्वैगये ।। एकन एकजीभनाहीं । दूनोजीभ भी कानभी या कोई कहै की कान बोलतरहे तो नैन तब काननको सुननेको ज्ञान रहत तबतहे विचारो तो आवाज आवै है जब बधिर होजात तब आवाज नहीं आवत यह रीति तो इनकी अरु आंखिन की कौन बात।। कहोनेक अटेपट पटजो इनपै नेकअटै ब्रजराज के सामुहे तो फूटतर ही सो कबको ब्रजसूनो देखती है ताते काहे निमित्त काहूको परे खो करिये । अब जी जे है जीव कि नाक यमको चुनोती देके इहां कीट ज्यों दृष्टांत चुनोती लोकोक्ति है ।।२३।।

अथ राधिकाको प्रकाशवियोगशृंगार यथा ।। कवित्त ।। अन्यच्च ।।

जिनके मुखकी द्युति देखतही निशिबासर केशव दीठ अटी ।
पुनि प्रेम बढ़ावनकी बतियां तजि आन कछू रसना न रटी ।।
जिनके पदपाणिउरोजसरोज हिये धरिकै पलनैन घटी ।
तिनके संग छूटतही फटूरेहियतोहिं कहानदरारफटी ।।२४।।

यह कवित्त केशवको नहीं है । तिलककारने नहीं लिखो ।।२४।।

अथ राधिकाको प्रकाशवियोगश्रृंगार यथा । कवित्त ।।

शीतलसमीर टारि चन्द्रचन्द्रिकानिवारि, केशोदास ऐसहीतो हरषहिरातु है । फूलन फैलाइ डार झारि डारि घनसार, चन्दनको डारे चित्तचौगुनो पिरातु है ।। नीरहीन मीन मुरझाइ जीवै नीरहीते, क्षीरकै छिरीके कहा धीरज धिरातु है । पाई है तैं पीरकै धौंयोंहीं उपचार करै, आगिको तो डाढो अङ्ग आगही सिरातु है ।।२५।।

उक्ति नायकाकी सखीसों ।। कै शीतल समीर टारिदै । अरु चन्द्रिका भी निवारि का जिन दिखरावै ।। कि मेरो हर्ष तो ऐसही हराइ जातु है तू काहेको उपचार करति है । अरु फूलनको फैलाइ दै अरु घनसार झार दै ।। अरु चन्दनको डार दै याको देख मेरो चित्त चौगुन पीडा पावतु है ।। जलहीन जो मीन मुरझानी सो जलहीते जीवत है क्षीर दूधके छीटाते वाको धीरज नाहीं होत । तूने पीर नाहीं जानी ।। बेजाने उपाय कर रही है ।। आगि को जरो शरीर आगिही के सेकन ते आछो होत है । अर्थ बेनायक मेरी पीर न जायगी । यह तो वरन अर्थ तो हहां

प्रश्नकरी कि जहां चन्द्र तहां चन्द्रिका रहत है ताको यह उत्तर कीजै कि चन्द्र शशी चन्द्रिका भूषण। अरु कोई कहै कै भूषण विरह में कहांतें आये तो वियोग पांचरीति को होत है ॥ रसरहस्य दोहा। अब वियोग कहि पांचविधि, जहँ पूरब अनुराग। विरह ईरषा शाप पुनि, गमन विदेश विभाग ॥ तो इहां विदेश गमन सुन करिके दुःख भयो है या पदते जानीजात के आग को जरो अंग आगते सिरात है। तो नायक को रोकनेकी तदबीर कर ॥ अथवा सूरने विरह में लिखे भूषण। जातवेद सनाह मारीवीर भूषणजार ॥ अथवा गेहमें रही तहां भूषण धरे हैं ॥ अरु दूसरी प्रश्न। उन हर्ष हिरात में कि हर्ष कहां रहै ॥ विरहमें जो हिरानो है ताकी उत्तरकीजे कि ध्यानजन्य सुख रहो सो सखीनके छुवेते गयो तो यामें ध्यान होति ॥ तो शीतल समीर टार काहेको पहिले कहती। इहां ऐसी कहे चाही एकैनाद दशा को प्राप्तहोत है अथवा नायक विदेश गमनते हर्ष हिराइगो। अथवा ॥ ऐसो अर्थ करो चाही तू ऐसही तो गतिमें हरषत है। मोको दुःख दीबेको तहां कोई कहे उकारांत शब्दको ईकारांत काहेकरो तो ऊकारांत ईकारांत इकारांत उकारांत अर्थ के निमित्त हो जाति है ॥ विहारी दोहा-पारो सोर सुहागको, इत विनही पिय नेह ॥ उनदोही अँखिया कि कै, कै अलसोही देह ॥ उनींदीसी आंखैं कैकै चाहीतहां कि कै कहो है ॥ याते दोष नाहीं अरु तीसरी प्रश्न में चौगुन काहे कहे १०, २० गुणकहते ताको उत्तर ॥ कि चकार मयत्री। तहां फेर प्रश्नके १४॥२४॥२४॥ गुणकाहे न कहो ॥ कि चन्दन काष्ठ ताते अग्नि निकसत तो सोभी नाहीं बनत काहे चौगुन को अर्थ न निकसौ तामें बिरह १ दूजो ध्यान छुट व तिसरो रोग आन उपाय आन॥ चौथेसखी कूर तहां फेरप्रश्नकै उपाय बिरोध में सखीकी कूरता होचुकी फेरअजात काहेको कही तहां उत्तर ॥ कै आनबैद्य जो देहकी तासीर नाहीं जानत सो करै तो औषध दोषकाहे प्रकृति वाने नाहीं जानी ॥ अरु जाननहार प्रकृतिको करैतो कूरकहावे। तहां ये नाहीं बनत काहे कि परपीरके कारण संयोग बिरह पाइ भये॥ इहां यह कही कि एक पीर नायक जो अवस्था उत्तम में छोड विदेश जात। अथवा गयो दूसरो मदन बाण तीसरे लोकलाज जाते राखनसखी ॥ चौथे शीतल उपचार। अरु सखी बहिरंग काहे कि विरहदाह नाहीं जानत रही ॥ नायका कहति। तू बिन पीरपाइ उपचार करति है ॥ याते प्रकाश। इहां शीतल समीरादि उद्दीपन नायका जो तलफत सोई अनुभाव दीनता संचारी रति थांई ताते श्रृंगाररस ॥ अरुनायकनाहीं तातेबियोग ॥ इहां व्याघात अलंकार ताको लक्षण ॥ दोहा-व्याघात तो कछु आनते, कारज होवै आन ॥ शीतल सब उपचारते, बाढी तपन महान ॥२५॥

दोहा- यों प्रच्छन्न प्रकाश सब, वरणै योग वियोग।
अब नायकलक्षण कहों, गूढ अगूढ प्रयोग ॥२६॥

यो प्रच्छन्न सुगम ॥२६॥

इति श्रीमन्महाराजकुमारइन्द्रजीतविरचितायां रसिकप्रियायां प्रच्छन्नप्रकाशवर्णनं नाम प्रथमः प्रकाशः ।।१।।

इति श्रीमन्महाराजधिराजकाशिराजश्रीमदीश्वरीप्रसादनारायणसिंहबहादुरस्याज्ञाभिगामिलिलितपुरनिवासिहरिजनकवीश्वरात्मजेन सरदाराख्यकवीश्वरेण विरचितायां मुखविलासिकाटीकायां रसिकप्रियायां भूषणे प्रच्छन्नप्रकाशसंयोगवियोगवर्णनं नाम प्रथमः प्रकाशः ।।१।।

अथ नायकलक्षण ।

दोहा- अभिमानी त्यागी तरुण, कोककलान प्रवीन ।।
भव्य क्षमी सुन्दर धनी, शुचि रुचि सदा कुलीन ।।१।।

अभिमानीका अपने रूपके सामुहे आनको रूप तुच्छ मानो त्यागी कहा कौनहू बात में आसक्त न रहै तरुण युवा होय अरु कोकशास्त्रजाननहार भव्यकुशलकर्ता। क्षमाशील अरुसुंदरबोधनी सुचित है जाकीरुचि ।। किंवापवित्रसदा कुलीन तो इहां अभिमानीबिषे कोईप्रश्नकरै कि अभिमानी श्रृंगारकैसे जानहै तो सर्वगुण अभिमानी सदाकुलीन तोपरमेश्वरहैजाकुलविषे अवतारधारण कीन्हों सो कुल उत्तम ह्वैगयो १

दोहा- ये गुण केशव जाहिमें, सोई नायक जान ।
अतुल दक्ष शठ धृष्ट पुन, चौविध ताहि बखान ।।२।।

सुगम । अनुकूल क्षमी भी पाठ है औ अतुलभी है ।।२।।

अनुकूललक्षण ।

दोहा- प्रीतिकरै नारिसों, परनारी प्रतिकूल ।
केशव मनबचकर्म करि, सो कहिये अनुकूल ।।३।।

टीका सुगम ।।३।।

कवित्त ।

और कै हास विलासन भावत साधुनको यह सिद्ध सुभावै ।
बात वहै जु सदा निबहै हरि कोऊ कहूं कछु शोधु न पावै ।।
आसनबास सुवासनभूषण केशव क्यों हूं यहौ बनि आवै ।
मो बिन पान न खात जु कान्ह सुबैर कि धौं यह प्रीति कहावै ४

उक्तिनायिका की नायक प्राति-कि हे प्राणनाथ तुम मोबिन हँसत बोलत नाहीं हो आनके हँसे बोलेसों यह साधुनको स्वभाव ही हैं। अरु आसन अरु वस्त्र सुगंध भूषण सब कष्टते योंभी साध्य है हैं, परंतु बात वा करिये जो सदा निबहै। तुममोबिन पान आदिक सब छोडदेत हौ सो यह वैर है प्रीति नाहीं, काहे मोको सुनकर बहुत दुःख होत है इहां साधु स्वभाव मनसा वाचा आसनादिक कर्म इहां स्वतः संभवी नायक को अनुकूलत्व वस्तु ताते लेश अलंकार है ताको लक्षण ॥ दो०-गुण में दोष रु दोषमें, गुण कल्पना सुलेश ॥ नायक के गुणमें कहौ, आपदोषको वेश ॥४॥

अथ प्रकाशअनुकूल यथा ॥ सवैया ।

केशवसूधी विलोचनसूधी विलोकनको अविलोकै सदाई।
सूधि यों बात सुनै समझै कहि आवत सूधि यों बात सदाई ॥
सूधी सुहांसी सुधाकरसों मुखशोधलई वसुधाकी सुधाई।
सूधे स्वभावसबै सजनीवश कैसे किये अतिटेढ़े कन्हाई ॥५॥

बहिरंगसखीकी उक्ति नायकासों ॥ कि तेरी विलोकन सूधी है। अरु सब स्वभाव भी सूधे हैं ॥ पर टेढ़े कान्ह कैसे बश करे हैं ॥ तो यामें नायक आनते टेढ़ा रहत। यही अनुकूलता है इहां टेढ़े को कारण नहीं अरु बश करलिये ताते प्रथम विभावना अलंकार। ताको लक्षण ॥ दोहा। विनकारण कारज उदो, प्रथम विभावन जान। बिन टेढ़ि ही रीतिते, बश किय टेढ़े कान ॥ अरु इच्छा फल विपरीतिते विचित्र ॥५॥

अन्यच्च ॥ सवैया ।

मेरे तो नाहिं ने चञ्चल लोचन नाहिं ने केशव बानि सुहाई।
जानों न भूषण भेदके भावन भूल हूनै नहि भौंहँ चढ़ाई ॥
भोरेहू ना चितयो हरि ओर त्यों धैरकरै इहि भांति लुगाई।
रंचकतो चतुराई न चित्तहिकान्हभये बश काहेते माई ॥६॥

उक्तिं नायका की बहिरंग सखीसों कि हे सखी! मेरे नेत्र चंचल नहीं हैं अरु सुहाई बाणी भी नहीं है जानोंहों नहीं भूषण भेदके भावको अरु भोरेहूँ भौंहँ नहीं चढाई है अरु भोरे भी हरिकी ओर नहीं चितवतहों मेरो घैरनाम गीला लुगाई नाहक करती हैं। अरु रंचचतुराई भी नहीं है ॥ पर हरि काहे धों वशभये सो मैं नहीं जानत रही परंतु भौंहँ चढ़ाई नहीं। अरु दूसर भोरही हरिकी ओर नहीं देखो तो अनुकूल की नायका स्वकीया कैसे? यह दूसरी प्रश्न ताको उत्तर ॥ कि मैं भूषण

के भेद नहीं जानती। तथापि उन भौंहँ नहीं चढ़ाई तो इहां प्रसंग हत होजात है॥ काहे अपनी रीति तीन तुकमें कहत है ॥ सो बीचहीमें नायककी रीति जनाई। अरु फेर अपनी बात कहन लागी ।॥ ताते भूषण भावको भेद यह पदको अर्थ नहीं लगो केशव यह कहत कि ॥ भू (पृथ्वी) खनबेवारो भाव ताको भेद मैं नहीं जानत। अर्थलधु मध्यम गुरुमानतो मैं जानत नहीं हों यामें यह जनाई कि नायक परकीयान के संग जाती तब मैं मान करती अरु भौहँ चढाई नहीं भूलहू यामें यह धनिकैवीराद भेदभी नहीं जानत हौं यातें यह सूचित करत कि कनिष्ठाके पासभी नहींजात। अरु चितई नहीं ताको उत्तर करो जैसे घैर लुगाई करती तैसे मैं नहीं चितई ॥ तो यामें लुगाई तो यह घैरकरती कि इन नायक बशकर लिये सो क्या नहीं चितवत रही ताको यह उत्तम कि भूषण भौहँ चढाइबेकी कौन कहै? मैं भूलहू त्यों हरिकी ओर चितई नहीं त्योंको अर्थ जैसे तैसे रोषवती चितवती है इति। जहां बहिरंग सखी कहै तहां प्रकाश जानने जहां अंतरंग तहां प्रच्छन्न ॥ इहांहू विभावना अलंकार प्रथम जानने पूर्वरीतिते ॥६॥

दक्षिणलक्षण।

दोहा- पहिली सों हियहेतु डर, सहज बढाई कानि।
चित्त चलै हूं ना चलै, दक्षिणलक्षण जानि ॥७॥

अनेक हैं नायका जाके विवाहिता तामें पहिली सो है हीयमें हेतु डरसहज जाकी बडाई होति है अरु कानलज्जाकी अरु चित जाको चलेहू तनअचल रहै सो दक्षिण प्रश्न ॥ दोहा। दक्षिण दक्षिण को कियो, अक्षिन केशवदास ॥ लक्षण लक्षण कबिनको, कीन्हों लक्षण नास ॥ उत्तर कि पहिलीसों जैसो हेत है तैसो सब बिवाहितासों ॥७॥

प्रच्छन्नदक्षिणउत्तर ॥ कवित्त।

हरिसे हितुसों भ्रम भूलहू न कीजे मान, हातोकरि हियहू सों होत हितहानियें। लोकमें अलोक आननी कहू लगावते हैं, सीता जूको दूतगीतकेसे उर आनियें॥ आंखियन जो देखियत सोई सांचीकेशवराइ, काननकी सुनि सांची कबहूं न मानियें। गोकुलकी कुलटायें योंहीं उलटावत हैं, आजलों तौ वैसही है काल्हि कहा जानियें ॥८॥

नायकासों काहू कहीं कि नायक एक पर आसक्त भयो सो सुनि अपने मनसों कहत है कि हरि ऐसे हितसों भ्रम भूलिहू न कीजै हे मन। हात करके नामहत नाश करिकै होय हानि होति है। अरु लोकके अलौकिक नीकेकों लगावै यामें

सीताजू की कथा दूतने श्रीराम सों नीचकी कहो कैसी कही ।। ताते जो आंख देखिये सो साँची है काननकी सुनी कबहूं ना पतियाइये । ये जो गोकुल की कुलटा हैं सो ऐसहीं उलटावती हैं आजुलौं तौ कान्ह वैसेही है काल्हकी कहा जानी? यामें आन कविसों विरोध नहीं काहे एकभांति रहत इहां नायकको अन अपराध वस्तु तातें काव्यलिंग अलंकार है लक्षण । दोहा । "काव्यलिंग सामर्थ्यता, जहँ दृढकीजै बात । काननकी झूंठी लियें, सियदृष्टांत देखात" ।।८।।

प्रकाशदक्षिण ।। सवैया ।

चितचोप चितैबेकी तैसी ये है अरु तैसीये भांति डरात घने ।
उरु तैसेइ कोमलबोल गोपालके मोहत है तिहि भांति मने ।
गुणतैसे इहां सविलास सबैहुते तैसेइ केशवको नगने ।
सखि तू कहौ आन वधूके अधीन हैं सापरतीक कि धौंसपने ।।९।।

उक्ति नायका की बहिरंग सखीसों कि हे सखी! उनके चितैबे में चोप तैसी है जैसी आगे रही का एकभांति नेह मानत रहे ।। अरु जैसे डराति रहे तैसेई डराति है । अरु तैसेई बोलति है जैसे बोलत रहे ।। अरु मनको जाभांति मोहत रहे ताभांति मोहत है अरु गुण हास विलास तैसेई हैं जैसे रहे तैसे सब हाव भाव जैसे रहे । कहांतक गनिये ।। अरु तूं कहत है कि आनही के वधू एकके आधी न होगये सो सापरतीक साक्षात्में तू देखै कि स्वप्नमें इहाँ नायकाके उत्तरते उत्तरा अलंकार जानोंजात है ।।९।।

पुनः सवैया ।

बहि अंतर गूढ़ अगूढ़ निरन्तर कामकलाकुल कोन गने ।
कहि केशव हास बिलास सबै प्रतिद्यौसबढेरसरीतिसने ।।
जिनको जिय मेरेई जीव जिये सखि कायमनोबचप्रीतिघने ।
तिनसों कहें आन वधूके अधीनहैं सापरतीक कि धौंसपने १०

यह कवित्त केशवको नहीं है ।।१०।।

शठ लक्षण

दोहा- **मुख मीठी बातें कहै, निपट कपट जिय जान ।**
जाहि न डर अपराधको, शठ करताहि बखान ।।११।।

मुखते मीठी बातें निपट करै अरु जियमें कपट राखै जाहि जाको अपराधको डर न राखै ।।११।।

प्रच्छन्नशठ यथा ।। सवैया ।

रुचि- पंकजचन्दनकंचनचम्पकरंचनरोचनहुकि रची ।
कहिये किहि कारणको इते लायक कापर भामिनि भौंह नची ।।
अनुमानत हौं अँखियां लखि लाल ये नाहिं ने रातिके रोष रची ।
तन तेरे वियोग तपो तरुणीतिहि मानहुं मोहि यमाहँ तची १२।।

नायक नायकाके नेत्र में लाली देख आपनो उपराध छुपाइबे निमित्त मीठी बातें कहत है कि हे प्राणप्यारी तेरे जे नेत्र हैं तिन में रुचि पंकज (कमल) अरु चंदन अरु कंचन चंपक की अरु रोचनहूं की रची है । यामें पंकजरोचन तो अरुण है ।। पर चंपक कंचन पीत सो काहे कहो यातें पंथ विरोधी अंधदोष होत है । पीत नेत्र तो नाहिं काहु बरणें तामें यह कि कछुक लाली आई है तो रोचन काहे कहो यहां यह कहीं कि आगे वियोग आंचसों तची हैं तौ तप्त कंचनभी अरुण होत है ।। अरु चंपकरंच नहीं है कहां चंपकवारी पीतता रंचभी नहीं है रोचनसी रची हैं कहिये किहिं कारण को है ।। इनते लायक का पर भामिनी भौं हैं नची हैं ।। तातें मैं अनुमान करतहौं तिहारी आंख लाल लखत कि जो रोषते नाहीं रची हैं ।। तेरे वियोगते मेरो तन तपो है तामें जे रहती है ताही आंच सों ये तची हैं ।। इहां हेतूत्प्रेक्षा अलंकार है ताको लक्षण । दोहा ।। जाकी हेतु न होइ सो, ताको थापै हेत । हेतूत्प्रेक्षा जान तहँ, दृग लाली तप चेत ।।१२।।

अथ प्रकाशशठ यथा ।। कवित्त ।

कानरंग रंगे नैन तिनहूके डोलैं संग, नासा अंगरसनाके रसही समानेहौ । और गूढ कहा कहौ मूए हौं जू जान जाहु, प्रौढ रूढ केशोदास नीके करजाने हौ ।। तन आन मन आन कपटनिधान कान्ह, सांची कहो मेरी आन काहेको डराने हौ । वेतौ हैं बिकानी हाथ मेरे हौंतिहारे हाथ, तुम ब्रजनाथहाथ कौनके बिकाने हौ ।।१३।।

उक्ति बहिरंग, सखीकी नायक प्रति । कि कान्हके रंगसों रँगे हैं तिहारे नैन अथ जो सुनपाई आननायका सोई आप चले गये ताते तिहारे नैन तिनकानन संग डोलत है जहां चाहैं तहां लैजाइ यामें नायक अपराध नेत्रकी बडाई ।। अरु नासा रंग हों तुम नासारंग जैसे भ्रमर कि जहां सुवास पावे तहां को मधु पीवै । अरु और जो गूढं कहिबे योग नाहीं एहो कहां कहों मूढ जो होइ सो भी जानजाइ तुम प्रौढ रूढ केशवदास हो प्रौढ होइ वा रूढ होइ सुंदर असुंदर कोइ होइ परंतु तुम ताके दासहौ या नीके कर जाने हौ । तुम्हारे तन आन को है मन आन को

हैं हे कपटके निधान! काहू बात तो सांची कहो काहेको डराने हौ ॥ ते मेरे हाथ बिकानी हैं अरु मैं तिहारे हाथ, बिकानी हों परंतु तुम हे ब्रजनाथ कौनके हाथ बिकानेहो ॥ यामें मुख मीठी बातें नहीं निकासी सो यह निकासी। कि यामें उत्तरा अलंकार नायक कहत होंहू तिहारे हाथ बिकाने हैं तब सखी कही। तुम कौनके हाथ बिकाने हौ? तो यामें प्रसंग हत होजात ॥ कबित्त ॥ तामें यह कहो चाही कि नायक आइकर, सखीकी खुशामद करत तब सखी कहै है ॥ कि तुम मेरी खुशामद काहेको करत? जिनके पास मैं रहत तिनकी करो तो इहां एकावली अलंकार होइ। कि वे मेरे हाथमें तिहारे हाथ। तुम आनके हाथ अरु कारण कार्य संबंधते कारण माला अरु छपीबात प्रकट करत तातें पिहितको संकर है। वे मेरे हाथ बिकी कहां॥ अंतरंगको कहीनहीं मानती मैं तिहारे हाथ कहां तिहारे अपराध दुरावत। अरु तुम कौनके हाथ बिके। अर्थात् नित नवीन अपराध करत हौ ॥१३॥

अथ धृष्टलक्षण ।

दोहा- लाज न गारी मारकी, छांड दई सब त्रास ।
देख्यो दोष न मानहीं, धृष्ट सुकेशवदास ॥१४॥

प्रच्छन्नधृष्ट यथा ॥ सवैया ।

नेह भरे लै लै भाजत भाजनको न गने दधि दूध मिठाये ।
गारी दये ते हसें बरजैं घर आवत हैं जनु बोल पठाये ॥
लाज कि और कहा कहि केशव जे सुनियें गुण ते सब ठाये ।
मामी पिये इनकी मेरी माइको हे हरि आठहू गाठ हठाये ॥१५॥

याको शब्दार्थ यह है कि नायका मान कीनों। ताके बुलाइबे निमित्त वाके जे नेह माखनभरे भाजनलै भाजे दूधदधि भी फेंक दीनो ताते अंतरंग सखीसों कहत है कि मेरे भाजननाश कीने गोरस भी अरु गारी देनेते हँसे हैं बरजेपर घर कैसे आवत मानीं बोल पठाये है। अरु आनलाजकी कहाकहों जे गुण हैं ते सब नाश कीने। सो इनकी मामी कौन पिये जे आठगांठ अठाई है। मनसा वाचा कर्मणा विहसन चित्तवन चलत चातुरी आतुरी सो ये बातें तो परकीयाकी हैं। अरु नायका बहुत प्रीती बराबर सों दक्षिण। अरु है विवाहिता बहुत तिनमें कबहूं कहूं कबहूं कहूं मिथ्या मीठी ढिठाई समेत सो शठ अरु गारी मारकी लाज नाहीं ॥ अरु त्रास छोडिदइ। अरु देखे दोषको न माने सो धृष्ट सो यामें तो मार नाहीं अरु देखो दोषभी नाहीं अरु वचन परकीया पोषक है। ताते वाच्यार्थ याको ऐसो चहिये कि नेहभरे भाजन कियो जो नेह हमारे भरे भाजन हैं आठ जाकों आठ गांठ कहत

सो लेकर भाजत हैं अरु दधि दूधका गने नहीं खटाई नहीं मिठाई जो प्रातहोइ ताहीं सों रमैं है अरु गारीदेत रहतहो, अरु आप आनेके संग हँसत रहत अरु मैं बरजत मेरे निकट मति आइये परघरमें कैसे आवत मानों आपते बुलाये हैं अरु लाजकी ओर कहा कहों। अर्थांश सुरत भी जबरहि करत हैं जे गुण होत ते सब ढाइदये का नाश करद ये हैं। ताते तू कहत अवन करि है जो जेठ आठ गांठ अठाई है। अरु जो आठ गांठ कही सो तीन होति है। कर्मणामें सब भोग। पांचो कहोजात चितवनादिक कर्म हैं ताते ये आठ गांठ जानियें नेत्र भू श्रवण जीभ कर पद अधरचितवत तैं टेढभू इशारा श्रवण सुन बो सीधी नाहीं सुनत बोलनकर चलावन पदचलन अधर मुसकान अरु मनइच्छा जहां लोकोक्तिअलंकार। जहां लोककी बात कहैं सो लोकोक्ति इहां आठो गांठ यह लोकोक्ति अरु अन्तरंगसों कहत ताते प्रच्छन्न ॥१४ ॥१५॥

दोहा- मनसा वाचा कर्मणा, बिहँसन चितवनलेष।
चलन चातुरी आतुरी, आठों गांठ विशेष ॥१६॥

टीका सुगम ॥१५॥

प्रकाशधृष्ट यथा सवैया ॥

सोंहको शोच सँकोचन पांचको डोलत शाहु भये कर चोरी।
बैननबंचकताई रची रति नैननके सँग डोरति डोरी॥
लाज करैं न डरैं हितहानि ते आनि अरे जिय जानिकि भोरी।
नाहिं ने केशवशाख जिन्हें बकि केतिनसों दुखवै मुखकोरी॥१७॥

उक्ति नायिकाकी बहिरंग सखीसे कैसोंह को इनको शोच नहीं है का वचन तें जो चाही सो कही अरु पांचको संकोच नहीं। जो कहो सो सुनलेत। अरु चोरी करशाहु भये डोलत है याते पगन में भी भय नहीं। अरु बैनन में बंचकता रची है यामें मनकाहे रची है॥ रति इनकी नैननिके संग डोलत डोरी सी होकर। अरु लाज नहीं करत नहीं हितहानिते॥ डरत करनते जो चाहत सो करत अरु मोसों आन अरत मेरे श्यामु हैं भौंह नचावत मुसक्यात है। नहीं है केशव शाख जिनको बककै तिनसों मुखको दुखावै॥ यामें जो पंचम बिभावना हैं चोरी शाहु भये सो नाहीं आनपदमें निर्वाह नहीं होत अरु हों बकत वे नहीं मानत यही हेतुते कार्य नहीं भयो ताते विशेषोक्ति जानिये ॥१६॥१७॥

दोहा- वरणहु कवि नायक सबै, नायक इहि अनुसार।
सब गुणलायक नायका, सुन अब बहुत प्रकार ॥१८॥

इति श्रीमन्महाराज कुमारइन्द्रजीतविरचितायां रसिकप्रियायां चतुर्विधनायकप्रच्छन्नप्रकाशवर्णनं नाम द्वितीय: प्रकाश: ।।२।।

उक्त कविकी कि के कविनायक यही रीति ते वर्णन हुआ अब नायका सबलायक का नायक शठधृष्ट भी होत है नायका सर्व गुण लायक कहावै स्वकीया परकीया ।।१८।।

इति श्रीमन्महाराजाधिराजकाशिराजश्रीमदीश्वरीप्रसादनारायणसिंह बहादुर स्याज्ञाभिगामिललितपुरनिवासिहरिजनकवीश्वरात्मजेन सरदाराख्यक वीश्वरेण विरचितायां रसिकप्रियायां भूषणे सुखविलासिकानामटीकायां नायकनायकावर्णनं नाम द्वितीय: प्रकाश: ।।२।।

अथ नायकाजातिवर्णन।

दोहा- प्रथम पद्मिनी चित्रिणी, युवतीजाति प्रमान।
बहुरि शंखिनी हस्तिनी, केशवदास बखान ।।१।।

नायकाकी जाति हैं पद्मिनी आदि ।।१।।

पद्मिनी लक्षण।

दोहा- सहज सुगंध स्वरूप शुभ, पुण्यप्रेम सुखदान।
तनु तनु भोजन रोस रति, निद्रा मान बखान ।।२।।

सहज है सुगन्ध अरु स्वरूप है शुभश्रेष्ठ जाको अरु पुण्यरूपी है प्रेम जाको तनु कहे सूक्ष्म है तनु भोजन रोस रति अरु निद्रा मान ।।२।।

दोहा- सजल सुबुद्धि उदार मृदु, हास बास शुचि अंग।।
अमल अलोम अनङ्गभुव, पद्मिनि हाटकरंग ।।३।।

लज्जासहित है सुंदर है बुद्धिउदार है कोमल है अरु हास वास कपडा शुचि पवित्र चाहत है अथवा हासवास शुचि है जाके अंगमें अमल हैं लोमरहित मदनसदन जाको ऐसी जो होइ सो पद्मिनी कहावै ।।३।।

पद्मिनीउदाहरण ।। कवित्त ।।

हँसत कहत बात फूलसे झरत जात, गूड़भूर हावभाव कोककैसी कारिका। पन्नगी नगी कुमारि आसुरी सुरी निहारि, डारों वारि किन्नरी नरी गमारिनारिका ।। तापे हौं कहा ह्वै जाउँ बलि जाउँ केशवराइ, रचि विधि

एकव्रज लोचनकी तारिका। भौंरसे भ्रमत अभिलाष लाख भांति दिव्य, चंपे कैसी कली वृषभानुकी कुमारिका ।।४।।

हँसत बात कहत है सहजकहतबातभी पाठ है तब फूलसे झरत हैं अरु गूढ जे हावभाव हैं भूरतिन निमित्त कोककी कारिका है पन्नगी सर्प की कन्या नगी पर्वतकी असुरी असुरन की सुरी देवतनकी किन्नरी किन्नरकी नरी वारिडारों नरीजे गमार नारिका हैं ।। तापे में कहाकहो करजाउँ है केशवराय मैं बलिजात हौं विधाताने ब्रजसमूहलोचन की तारिका एकबेरही रची है। जापै अभिलाष लाखन भौंर से भ्रमत हैं।। ऐसी चम्पेकी कलीसमान वृषभानु कुमारी है। हँसत बात कहत का बहुत सुगन्ध आवत अरु बहुत रुचि होत अरु बहुत कोमलचित्त में लगत है अरु सोई रविबात में अरु कोककारिका कहा कहों गूढ हैं। वाके अर्थ तैसही गूढ़ हैं हावभाव जाके ताते उपमा दई अर्थका काम कलनते पूररहो है अंग जाको ।। अरु भोजन निमित्त पन्नगी वारी सो नाहीं बनत काहे जापै वारिये ताते अधिकगुण चाही तोका ज्यादा खातरही। अरु पन्नगी तो पवन आहार करत हैं सो जब नायका थोरो पवन आहार करै पन्नगी बहुत करै तब बनै ।। अरु नगी पर्वतकी तिनको रोष नहीं यह कहत हैं। सोभी नाहीं बनते काहे कि पहार जड हैं जब चैतन्य कहे तब महारोष है श्रीरामायणे-तुमसहित गिरते गिरों। पावक जरों जलनिधिमें परों। घरजाहु अपयशहोहु ।। जगजीवत विवाहनहौं करों ।। अरु आसुरीमें निद्रा कहत कैनाहीं। तहां श्री हनुमान्जू जब गये तब मंदोदरी आदिक सब सोवत रही ।। रामायणे-सो सुन कुंभकरण पहँगयऊ ।। करिबहुयतन जगावत भयऊ। अरु सुरीमें रतिको अभाव है इहां अभाव नाहीं बिहारी ।। परो जो रविपरीतरति रूपौसुरतनधीर। करत कुलाहल किंकनी गहो मोनमंजीर ।। अरु क्रमभंग दूषण है। दोहामें रतिनिद्रामान बखान है पहले रतिशब्द है पाछे निद्रा है।। कवित्तमें आसुरी सुरीनिहार आसुरीकी निद्रालीन्ही सुरीकी रति लीन्ही। अरु मनपर किन्नरीवारी ।। किन्नरीगानपै वारों चाही। वारोंबहुत मान जाको होइसो ।। उनको तो मानहूं नहीं है। काहे गानकर्ता हे। तब मान कहा न अर्थनको प्रयोजन यह कि बहुत बिस्तार थोरे में दिखादियो।। अरु भौंर चंपेपर बैठत नाहीं। भ्रमत रहत हैं सो दूति कहत वापै अनेकके मनोरथ भ्रमत हैं परंतु बैठत नहीं है अरु यामें केशव को अभिप्राय यह कि सबगुणसंपन्न है अर्थ अतिउत्तम है ।। वृषभानु कुमारी इहां उपमा अलंकार है कहुँ लुप्ताभी प्रधान ह्वै जात है ।।४।।

चित्रिणीलक्षण ।

दोहा- नृत्य कविता रुचै, अचलचित्त चलिदृष्ट ।।

बहिरतिरत अति सुरतिजल, मुख सुगंधकी सृष्ट ।।५।।

टीका सुगम ।।५।।

दोहा- विरललोम तन मदनगृह, भावत सकल सुवास।
मित्रचित्र प्रियचित्रिणी, जानहु केशवदास ।।६।।

टीका सुगम ।।६।।

चित्रिणी ।। सवैया।

बोलिबो बोलनको सुनिबो अविलोकनको अविलोकन जोते।
नाचि बो गाइबो बीन बजाइ बोरी झरि झाइबो जानत तोते ।।
रागविरागनके परिरंभन हासविलासनतेर तिकोते।
जौ मिलतौ हरि मित्रहु सों सखि ऐसे चरित्र जो चित्रमें होते ७

सखीकी उक्ति नायकासों ।। कि जे गुण साक्षात् हरिमें हैं ते गुण चित्रमें नाहीं कोन कि आप बोलो अरु बोल आनके सुनिबो आनको अविलोकन करनो अरु आप आनकी अविलोकन तें जोतेका संग चले ।। रामायणे । तेतिनरथन सारथिनजोते ।। अरु नाचिबो पुनि गाइबो पाछेबीन बजाइबो आपूरीझ आनकों रिझाइवो जानत तो ते तें तोते सूगासमान अर्थ यह कि जो करो कहोसो कहें करें ।। राग अनुराग विरागभये पर आलिंगत अरु हासविलासनरतिको ताकरत का हासविलास जहां रति थोरी तोका कोई हरिसे मित्रको मिलतो हे सखी जो ये गुण चित्रमें होते तामें कोई कहै। कि नायका चित्र काहे देखत ।। जो मानवती है तहां मान नाहीं है नायका कों प्रथम स्वप्नदर्शन भयो फेर श्रवण तब चित्र भयो। अब सखी नायक को साक्षात् मिलायो चाहत है ।। इहां संभावना अलंकार जानियें। ताको लक्षण दोहा-ज्योंयो त्योंयो होइ तो, संभावना विचार। होतो जो असचित्रतों, को देखत पियप्यार ।।७।।

दोहा- कोपशील कोविदकपट, सजल सलोम शरीर।
अरुणबसन नखदानरुचि, निलज निशंक अधीर ।।८।।

टीका सुगम ।।८।।

दोहा- क्षारगंधयुत मारजल, तप्तभूरभग होइ ।।
सुरतारति अतिशंखिनी, वरणत कविजन लोइ ।।९।।

टीका सुगम ।।९।।

शंखिनी यथा ।। सवैया।

जात नहीं कदलीकि गली न भली विधि हो बदली मुख लाव।

चाहै न चम्पकलीकि थली मलिनीनलिनीकि दिशा न सिधावै ।।
जो कोउ केशवनागलवंगलतालवली अवलीन चरावै ।
खारक दाख खवाइ मरो किन ऊँट कटार हि भावै ।।१०।।

उक्ति नायकाकी नायकप्रति । अन्योक्ति औ रूपकातिशयोक्ति को संकर कहत हैं कि ऊँट कैसो है कि जात नहीं कबहू कदली की गलिमें कहा सरसजिनके जंघा तिनके पास नहीं जात ।। बेरके कंटक सरीखे जिनके लोम हैं तिनके पास जात है ।। अरु चंपकलीथली सरस जिनकी नासिका तिनके पास भी नहीं जात अरु नलिनी कमलिनी की सुवास तिनपै भी नहीं जात । अरु कोऊ नागवेलि लवंगलवल्ली हरफारेवरी ऐसे गंध बतावै तो भी त्याग देइ खारक छुहारा दाख सरीखे जिनके अधर तेभी पान नहीं करत ऊँटवाकी ऊँट कटारेसरीखी जाकी गंध है ते भावती हैं । कि वह शंखिनी है जो नायक सों कहत तहां आपने शरीर की निंदा कोइ नाहीं करत वह शंखिनी है जो रोम कुवास स्थूल अंग वरणैं काहे कि जो शंखिनी होती तो साफ कोप करती ।।१०।।

हस्तिनीलक्षण ।

दोहा- थूल अंगुली चरणमुख, अधर भृकुटि कटु बोल ।
मदनसदन रदकंधरा मंदचाल चितलोल ।।११।।

टीका सुगम ।।११।।

दोहा- स्वेदमदनजलद्विरदमद, गंधित भूरे केश ।
अतितीक्षण बहुलोमतनख, भनि हस्तिनि इहि वेश ।।१३।।

टीका सुगम ।।११।।

सब देह भई दुर्गंधमई मति अंधदई सुख पावत कैसे ।
कछु सालते लोमविशालसे हैं श्रुति ताडन केशव बोल अनैसे ।।
अलि ज्यों मलिनीनलिनी तजिकै करिनी के कपोलन मंडित तैसे ।
क्षिति छोडिकै राजसिरीवश पापि निरयपदराज विराजत जैसे ।।१३।।

इहां हस्तिनी नायका अरु हस्तिनी करिणी जाकी सब देह दुर्गंधमई है ताके पास मति ते जे अंध हैं ते कैसे सुख पावत अरु साल कांटाते हैं लोभ विशाल दोहुनके । अरु श्रुति काननको ताडे हैं ऐसे हैं अनैसे बोल जिनके ।। सो हे अली ऐसिनके पास अलि भ्रमर अरु नायक जे मलीन कमलिनी तजिके भौंर अरु नलिनी पद्मिनी तजिके नायक थे दोऊ कैसे करिणी हस्तिनी अरु हस्तिनी नायकाके कपोल सेवत हैं कैसे ।। राजश्री भूमिको छोडके पापके वश होइकै । राजत निरय पदनाम

नरक में ॥ यामें जातपूर्ण उपमाश्लेष। दृष्टांतको संकर है ॥ सालसे लोम देह दुर्गन्धते तो जाति है। अरु अलिउपमान पुरुष उपमेय ज्यों वाचक जाइवैधरम ताते पूर्ण उपमा अरु नलिनी करिणी में श्लेष राजा दृष्टांतको संकर है ॥१३॥

दोहा- ता नायककी नायका, ग्रंथनि तीनि बखान।
सुकिया परकीया अवर, सामान्या सुप्रमान ॥१४॥

ता नायककी नायका ग्रंथमें तीन कही । स्वकीया परकीया अरु सामान्या ॥ स्वकीया परकीया अरु स्वकीया परकीया आन। यह भी पाठ है। तहां आनसो कहा सामान्या सो जानलीजै ॥१४॥

स्वकीयालक्षण।

दोहा- सम्पति विपति जो मरण हूं, सदा एक अनुहार।
ताको स्वकीया जानिये, मन क्रम वचन विचार ॥१५॥

संपत्ति अरु विपत्ति मरण में एक अनुहार है कहा। जे धर्म वेद विदित ते न त्यागै ॥ मनसा वाचा कर्मणा करके जाको विचाररहे अरु कोई ऐसो भी अर्थ करत हैं संपति कहिये कल्याण कल्याणरूपी है पतिजाको ॥ वेदोक्ति पूर्वक यातें विवाहिता कही। और विपतिमें मरणमें सदा कहिये सुखदाई है सकारको अर्थ श्रेय ताकी दाता ॥ संकोंशहू कहिये। जसखं आकाश है खचर आकाशगामी कहावै हैं॥ भनक्षत्रको कहै हैं भहू कहति हैं। जैसे समतानताकी भेश भईश चंद्रमा नक्षत्रको ईशऐसो सदाको अर्थ मंगलदायक है ॥ तो इहां पतिकी सेवाहू उद्योतनभई। क्योंकि विपत्तिमें श्रेयदाता कहा सेवा करै॥ और लाजहूकी बात कही लजीली होइ तौ नायक सुख पावै अरु मरणहूमें श्रेहदा कहा पतिको उत्तम गति देनहारी। ऐसे स्वकीया कही परन्तु यह अर्थ खींचिकै होइ है॥ तातें वाहीमें जे बातें निकस गई का संपति विपत्तिमें एक अनुहार ठहरी तो एक अनुहार आन न ह्वै है ॥१५॥

स्वकीयाभेदलक्षण।

दोहा- मुगधा मध्या प्रौढ गनि, तिनके तीनि विचार।
एकएककी जानिये, चारचार अनुहार ॥१६॥

मुग्धा मध्या प्रौढा ॥ एक एकके चारचार भेद जानियें ॥१६॥

मुग्धाभेद।

दोहा- नवलवधू नवयोवना, नवलअनंगा नाम।

लज्जा लिये जु रति करै, लज्जाप्राइ सुधाम ।।१७।।

नवलवधू नवयौवना नवल अनंगा औ लज्जाप्राया लाज लिये रति करै है यह मुग्धाके चार भेद ।।१७।।

नववधूमुग्धालक्षण ।

दोहा- जासों मुगधा नववधू, कहत सयाने लोइ ।
दिन दिन द्युति दूनी बढे, वरणि कहै कवि लोइ ।।१८।।

दिनदिन द्युति दूनी बढजाय ।।१८।।

यथा ।। सवैया ।

मोहिबो मोहनकी गतिको गतिही पढैं बैन कहां धौं पढैगी ।
ओप उरोजनकी उपजै दिनकाइ मढै अँगिया न मढैगी ।।
नैननकी गति गूढ चलाचल केशवदास अकाश चढैगी ।
माइ कहां यह माइगि दीपति जो दिन दो इहि भांति बढैगी ।।१९।।

उक्ति सखीकी सखीप्राति ।। कि हे सखी यह बहुत आश्चर्य मय होत जाति है । कि मोहनकी जो गति है । का जितेक मोहनमंत्र यंत्रादिक बश हैं ।। अथवा मोहन कृष्ण तिनकी जो गति है ताको तो याकी चलन मोहति है अरु ओप जाके उरोजनकी उपजे हैं ऐसी दिनदिन तो कासों मढैगी आंगी तो नमढैगी । अर्थ ऐसी आंगी कहां जासों जाके उरोज मढैं हैं ।। अरु नयनन की गति बहुत गुढ है ।। चलाचल विषे सो केशवदास आकाशश्रवण सीमामें मढैगी ।। हे माई यह दीपति कहां अमाइगी जो या भांति दोदिन मढैगी इहां भविष्य में अधिक अलंकार जहां आधारतें आधेय अधिक होइ सो इहां अंगकी दीप्ति आधेय । अंग आधारते ।।१९।।

नवयौवनभूषिता मुग्धोलक्षण ।

दोहा- सो नवयौंवनभूषिता, मुग्धाको यह वेश ।
बालदशा निकसै जहां, यौवनको परवेश ।।२०।।

यौवनके प्रवेश में बाल अवस्था छूटत जाय ।।२०।।

यथा । सवैया ।

केशव फूलि नचैं भृकुटीकटि लूटि नितम्बलई बहुकाली ।
बैननशोच सकोच सुनैनन छूटिगई गतिकी चलि चाली ।।
द्यौसक धीर धरो न धरो अबलै मिलि वै तुमको वनमाली ।

वाको अयान निकासनकों उर आये हैं यौवनके अवताली ॥२१॥

उक्ति सखीकी नायक प्रति । कि द्यौसक धीर तुमधरो वाके उरते अयान निकासिवेको यौवन के ॥ अवताली निकासनहार आइ चुके हैं काहे उनको देख भृकुटीकूली नचतीं हैं । कि हमारे सहायी आये ॥ अरु नितंबने कटिको लूटलई । बहुकाली जो बहुबरसतें अयानने पोसी रही ॥ अरु वचन कों शेच प्राप्त होगयो अयान वारेकै अब हमारो दस्त उठो । अरु नयनन जे अयानपनके रहे तिनको संकोच भयो है ॥ अरु गतिकी जो चलचाल हती अयानपनकी सो छूटिगई तातें तुम धीरधरो न धरो । अब वाकों तुमको हौं निलावत हौं । वा को अयान निकासिबेकें यौवन के अवताली आये हैं इहां जो काकोक्ति सो लगावत तामें नववधू होजात है । नवयौवना नाहीं होति ताते समाधि अलंकार है समाधि कौन कहावै जहां आपन कार्य आनके कारणतें होइ सो इहां यौवनके अवतालीतै तिहारो काजभयो ॥२१॥

मुग्धानवलवधूअनंगालक्षण ।

दोहा- नवल अनंगा होइ सो, मुग्धा केशवदास ।
खेलै बोलैबालविधि, हस त्रस सविलास ॥२२॥

करै सबपै बालविधिते ॥२२॥

यथा ॥ कवित्त ।

चंचल न हूजो नथअंचल न खैंचौ हाथ, सौवै नेक़सारिकाऊ शुक तौसुवायो जू। मन्दकरो दीपद्युति चन्दमुख देखियत, दौरके दुराई आऊ द्वार तौ दिखायो जू ॥ मृगजमरालबाल बाहिरै बिडार देउ, भायो तुम्है केशव सुमोहूं मनभायो जू। छलके निवास ऐसे वचनविलास सुनि, सौगुनो सुरतहूँ तैं श्यामसुख पायो जू २३ ॥

उक्ति नायका की नायक प्रति ॥ नायक कही नायका सों चलौ सेजपै सोवैं सो सुन नायका कही बहुत नीकी यह तो मेरे मनहीं में रही अब बहुत रात्री बीती चलौ सोवैं जामें कोई जगावै नाहीं । मेरी चंचल होके अचल न ऐंचौ हाथ को शुक सोइ चुको है सारिकाहू सोवै ॥ मंदकर देहु दीपकी द्युति चन्दमुख तो देखि परत है । अरु दौरनाम वेंगितें दुराइ आउँ जो द्वार दिखात है ॥ अरु मृगज जे हैं मराल बालजे हैं ते बाहिरै विडारआउँ । जों तुम्हारे मनमें है सो मेरे भी मन भायो है छलके निवास जो नायक सो ऐसे वचन सुनकर सुरततैं सौ गुणो श्याम सुखपायो

श्याम शृंगार सुख पायो ॥ अरु यामें छल निकासो कि छल सोगये चाहत शुक सारिका तौ ज्ञान वारे हैं मराल ना होय वचन है सो तासों पर्य्यायोक्ति अंलकारसो नहींबनत जब इतनो छलजानो तब नवलवधू कहां । ताते इहां प्रहर्षण अलंकार जानियें ॥२३॥

अथ लज्जाप्रायरतिमुग्धालक्षण ।

दोहा- मुग्धा लज्जाप्रायरति, वरणत हैं इहि रीति ।
करै जु रति अतिलाजसों, पतिहि बढावै प्रीति ॥२४॥

सुरति लाज युक्त करिके पतिको प्रीति बढावै ॥२४॥

यथा ॥ सवैया ।

बोलि न होंवे बुलाय रहे हरिपांय परे अरु ओलियो ओडी ।
केशव भेटबेकोंभरि अंक छुडाइ रहे जक हौ नहीं छोडी ॥
सीधे चितैबेकों केतौ कियौ शिरचाप उठाइ अंगूठन ठोडी ।
मैं भर चित्त तऊँचितयो नरही गढनैनन लाज निगोडी ॥२५॥

उक्ति नायकाकी सखी प्रति ॥कि हे सखी नायकने लाज छुटाइबेको बहुत उपाय कीन्हें परन्तु लाज न छूटी । काहे निगोडी गोडतें रहित ॥ वे प्रथम सुरति विषे बुलाय रहे पर हौं न बोली । मेरे पांय परे अरु आलीओढी ॥ अरु भरि अंक भटिबे के लिये जक मेरी छुटाइ रहे पर हौं न छोडी । अरु सीधे चितैबे कों केतो उपाय कीनौ दोह अंगुठा ठोढीमैं लगाये ॥ अरु शिरदोई बगल अगुरिनतें दबायो । पै मैं लाज न छोडी अरु कहोकै रतिवाच्यार्थ तैं नहीं कसत तौ विज्ञार्थ ते कहत है कै इतनो उपायभये तऊँ लाज न गई यातें सूचित रति करावति है इहां विशेषोक्ति अलंकार है ॥ जहां जाकाजको कारण होइ अरु कारज न होइ तहां विशेषोक्ति जानिये इहां नायक उपाय करै लाज न छूटी ॥२५॥

मुग्धाशयनलक्षण ।

दोहा- मुग्धा सोइ रहै नहीं, पियसँग सुनो सुजान ।
जो क्यों हूं सो वै सखी, सुख नहिं ताहि समान ॥२६॥

मुग्धा नायकके पास नहीं सोवै जो सखी सोवै लैकै तो सुख नहीं प्रमाण राधिका माधवै एक ही सेज पै धायलै सोई सुभायसलीने ॥२६॥

पांइपरै मनुहार करै पलकापर पांइ धरे भयभीने ।

सोइ गई कहि केशव कैस हूं कोरककोरहूं सोहन कीने ।।
साहस कै मुखसों मुख छूवै छिन मैं हरिं मान महासुख लीने
एकउ सांसहीके उससै सिगरेई सुगन्ध बिदाकर दीने ।।२७।।

उक्ति सखीकी सखीप्रति । कि हे सखी! पांइपरेतैं मनुहार करेते पलकापरपांइ भयमें भीनेंधरै ।। कैसहू पलंगपर सो हैं करे तैं सोगई । तब साहसकर नायकने मुखसों मुख छुवायौ ।। औ हरिने महासुख मानो । तब नायकाने उसासलई तासों सिगरे जे सुगंध धरे रहेते बिदा करदिये ।। अरु जो सो हैं सुगन्ध बिदाकरे तौका रति न होती याते यह अर्थ आछो नहीं । यहां कारणके सँग कारज भयो तातें हेतु अलंकार है सो है करिवो कारण पलंगपै आइवो कारज ।।२७।।

मुग्धाको सुरतिलक्षण ।

दोहा- मुग्धासुरति करै नहीं, सुपनेहूं सुखमान ।
छलबलकीने होत है, सुखशोभाकी हान ।।२८।।

मुग्धा स्वप्नमें भी सुख मानके रतिनहीं करत छलबलते नायक रति करै तो सुखशोभा घटजाय ।।२८।।

यथा ।। कवित्त ।

सुखदै सखीनबीच दैकै सों हैं खायकै खवाइ कछू स्वाय बश कीनी बरबसु है। कोमलमृणालकासीमाल्लिकाकी मालिकासी, बालिका जुडारीमाड मानसकै पशु है ।। जानै नाविभात भयो केशव सुनेकी बात, देखौ आनिगात जातभयो कैधो असु है । चित्रसी जु राखी वह चित्रिणी विचित्रगति, देखो धोंनयेरसिकयामें कौन रसुहै ।।२९।।

उक्ति सखीकी नायकप्रति ।। कि सुख दैकै सखीनको बीचदे कै अरु सोहै खाइ नसावारीवस्तु खवाइ वाको बरबश सुवाई । फेर महा कोमल मृणाल कासी चमेली मालिकासी तुम बालिकासी जो यह मानसवारी बात है ।। कि पशुवारी है । अब जानत नहीं विभातभयो है ।। बातको सुनै गाततो देखो ऐसो अनर्थ भयो जात है वह चित्रिणी चित्रकैसी होगई है का अचल होगई है ।। यामें तुम्हैं कौन रसुमिलो । कहेधौ नये रसिकभी पाठ है ।। इहां विषम अलंकार है अनमिल तेके संग तैं । नायक प्रौढ नायका नवोढ ।।२९।।

दोहा- मुग्धा मान करै नहीं, करै तो सुनो सुजान ।
त्यों डरपाइ छुडाइये, ज्यों डरपै अज्ञान ।।३०।।

मुग्धा मान कदापि नहीं करै जो करै तौ अज्ञानकी रीतितें डरपायके छुडाइये।। करहित सुनहु यहभी पाठ है ।।३०।।

यथा ।। सवैया ।

बोलैं न बाल बुलावत हूं नखरेख लिखैं भुव प्रेम परेखो ।
आपनै हाथ विलोक विलोक कही तब केशव बुद्धि विशेखो ।।
छोटि बडी विधि रेख लिखी युग आयुकि रेख सुकौन सुलेखो ।
प्रेम ते बोल सहो न परौ अकुलाइ कही पिय कैसि है देखो ।।३१।।

मुग्धा सखीनके सिखाये मानकर बैठी है। नायक बुलावत आपु नाहीं बोलत नखते भूमि लिखत है जाही प्रेम परेखो ।। आनमानकी रीति नाहीं जानत । तब नायक अपने हाथ देख देख बुद्धि विशेष करकै कही ।। कि विधाताने एक छोटी एक बडी रेख लिखी है सो नहीं जातन ।। हमारी आयु की रेख कौन है ।

इतनी सुन मान छोडकै प्रेमते यह बोलसहो नहीं गयो ।। अकुलाय बोली पीय कैसी है। तुम देखो तो बोलत मान छूटगयो ।। तब नायक कही जब नायका कही पीय कैसी है । तब नायक कही देखो ।। इहां संसृष्ट अलंकार है ।

जहां तिलतंदुलसे अनेक अलंकार मिलैं तहां संसृष्ट ।। बलावत नबोली । कारण अछित कारज न भयो यातें विशेषोक्ति अरु नायक छलकरो ।। आपन हाथ देख तातें दूसर पर्यायोक्ति। अरु कैसी है नायका वचन देखो नायक वचनते उत्तरा यातें जहां प्रति उत्तरहोइ तहां उत्तरा यातें संसृष्ट इति मुग्धा ।।३१।।

अथ मध्याके चतुर्भेद ।

दो०- मध्या आरुढयौवना, प्रगलभवचना जान ।
प्रादुर्भूतमनोभवा, सुरतिविचित्रा मान ।।३२।।

आरूए यौवना प्रगल्भवचना प्रादुर्भूतमनोभवा उत्पत्तिभयौ है कामजाके औ सुरति विचित्रा यह मध्या के चार भेद हैं ।।३२।।

मध्या आरूढयौवना लक्षण ।

दो०- मध्या आरुढ़यौवना, पूरणयौवनवंत ।
भागसोहागभरी सदा, भावत है मन कंत ।।३३।।

आरूढ यौवना चढ्यो है यौवन जा नायका के परिपूर्ण । भाग सुहाग भरी सदा जाके मनमें कंत भावत है ।।३३।।

यथा कवित्त ।

चंदकै सौभागभाल भृकुटि कमान ऐसी, मैन कैसे पैने शर नैनन विलासु है । नासिकासरोजगंधवाहसे सुगन्धवाह, दारयोंसे दशन कैसो बीजुरीसो हास है ।। भाईं ऐसी ग्रीवाभुज पानसों उदर अरु, पंकज सों पांइ गतिहंस ऐसी जासु है । देखी है गुपाल एक गोपिका मैं देवतासी, सोनोसो शरीर सब सोंधे कैसी वासु है ।।३४।।

उक्ति सखी की नायकसों कि एकनायका मैं देखी सो कैसी है ।। चंद्रभाग आधेचन्द्र सों जाको भाल है। अरु भृकुटी कमान ऐसी है मैनकामके शरबाणसे पैने हैं नैन अरु नासिका सरोजकमल सी गंधवाहसी है सुगंधगंधवाह नाम पवनको है । दारोंसे जाके दशन हैं अरु बीजुरीसी है हास जाकी अरु भाईउतारी ऐसी ग्रीवा है ।। अरु बांह है पानपत्रसो उदरहै कमल से पांइ हंससी चाल है । हे गुपाल! एक गोपिका मैं देवता सी देखी है । जाको सुवर्ण सो शरीर है ।। सोंधेकी वास है । तो इहां नायका की रुचिजान । सखी नायक को मिलायो चाहत ।। यह तो काम अरु चलो कहत नहीं यातें मध्या । मध्या की सखी भी मध्या होत है ।। कि मैनके शरसे पैने नैन ते काम बिजुरी से हांस तैं । लाज यातें मध्या तो नेत्रके बाण मारत ।। अरु हँसत । यह लज्जाहो धर्म नहीं ।। अरु पाय की चाह यह । निकासा कि सब नायक के बचन हैं । तीन तुक में चौथी में सखीके कि मैं देखी है तो यामें नायकाकी चाह कहांते आई । अरु यह कही सोनो सुगंध है तोभी न निकसी ।। कहा यह आन मैं नहीं होति । कोई कहै यह परकीया मैं होजात ।। तातें वही व्यंगते कही । इहां कवि निबद्धवक्ता की उक्ति ते नायका के रूप की अधिकाई वस्तु तातें तुम मिलो यह दूसरी वस्तु है ।। अथवा उपमा अलंकारतैं नायक कों मिलायो चाहत यह वस्तु है ।। चंद्रभाग उपमान सो वाचक ।। भाल उपमेय । इहां धर्म लुप्ता सोई भृकुटी कमान मैं मैन शर उपमान नैन उपमेय से वाचक पैने धर्म्म यारीति ते सब उपमाके भेद जानियें ।।३४।।

अथ प्रगल्भवचना मध्यालक्षण ।

दोहा- प्रगलभवचना जानतिहि, वरणौं केशवदास ।
वचननमाहँ उराहनो, देह दिखावै त्रास ।।३५।।

वचन प्रगल्भ होय । बोलत में शंका न करै । वचननमें उराहनो देय औ त्रास दिखावै ।।३५।।

कान्ह भलेजु भले ढँग लागे भले ह्वै नैननके रँग रागे।
जानत हौं सब ही तुम जानत आपसे केशव लालच लागे ।।
जाहु नहीं अहो जाहु चले हरि जात जहीं दिनहीं बनबागे।
देख कहां रहै धोखे परे उभटोगे जु देखबो देखहु आगे ।।३६।।

नायक तयार होकर बाहिर जात तब नायका कहत है कि हे कान्ह ! तुम बहुत भले हौ अरु भले ढंग सीखे हौ ।। अरु भले होके नैनके रँगरँगे हौ ।। अर्थ। जासों नैन लागत ताहीके होजातहौ भले इन नैननिके रँगरागे यह भी पाठ है ।। जानहौ सब बात तुमहीं अरु तुमको जे तुमसे हैं ते जानब जो या लालचमें लगे हैं ।। तुम जाहु नहीं जातहौ नहीं इहांसे चलेजाहु ।। जहां जातहौ दिनमें ।। बनाइकै बागे। उत्तम जामा बनाइकै कहा देख रहेहौ धोखेपरकैं उबठौगेजू देखबौजो जो देखबौ उबटत है उबटबौ बढो जो अभिमान कोई बातकर आनको दिखावै वासों उबटब कहै है आगे देखो कहाहोइगो ।। इहां पिहित अलंकार है छपी बातको प्रगट करै सो पिहित अरु लाटा अनुप्रास है वही शब्द फिरफिर आवत ताते। उलटेकसे देखिहोयभी पाठ है। प्रश्न ।। यामें स्वकीया नहीं ।। धोखेपरे इत्यादिक वचननितैं परकीयासी भासती है ।। मध्याके वचन स्वकीयामें कहे हैं उत्तर यह कहती है नायकाजातहौ बनिबनि बागे जहां ।। तौ बागेको पहिर चलिबो निजघरही में बनै परकीयाके घरबागे कहां ।। याते स्वकीयाई है ।। ऐसेभी कोई कहत ।।३६।।

प्रादुर्भूतमनोभवामध्यालक्षण।

दोहा- प्रादुर्भूतमनोभवा, मध्या कहैं बखान।
तनमनभूषितशोभिये, केशव कामकलान ।।३७।।

जाके तनमन में कामकलाभूषित होइ सो प्रादुर्भूतमनोभवा मध्या ।।३७।।

सवैया।

आजु मैं देखी है गोपसुता इक होइ न ऐसी अहीर कि जाई।
देखतिही रहिये द्युति देहकि देखतैं औरन देखि सुहाई ।।
एकहि बंक विलोकन ऊपर वारौं विलोकत्रिलोक निकाई।
केशवदास कलानिधि सो वरु बूझि है कामकि मेरो कन्हाई ।।३८।।

बंकविलोकनते तनमन भूषित कामकलान यह कहो ।। तहां तीन बार क्यों कहे एक तो यही बात अनुचित है ।। दूजे जहां कन्हाई कहे तहां उनकी समता क्यों कलानिधि अरु काम कहो न चाहिये तहां ऐसो अर्थ केशवदास कलानिधि

सों कही ।। कलानिधि सों वरु चाहिये ।। काहे कलाकामकी ।। वाठौर दीर्घ को लघु है ।। कामकियो सो भासत है सो कामको कलाकी निधि है कौन है ।। मेरो कन्हाई है ।। ताते एक कान्हही कहे हैं तहां कोई कहै यहां नायका मध्या है ।। सोऊ चारभेदके तीजें स्थान पैहै ।। प्रौढा के निकट जाइलगी ।। सो कहां अबलौं विवाही नहीं ।। यह तो शास्त्र विरुध्द है ।। काहे प्रौढाके निकट बेस आई ।। और सब अवस्था पतिबिन बीती ।। यह बात श्रृंगारशास्त्रसों विरुद्ध और काहूने टीकामें लिखी है ।। तहाँ कन्या लिखी है । सो जादेश में ऐसी कन्या है ।। तौ प्रौढा कौन ब्रतकी ह्वै है प्रौढाही जानपरत । यह बडी शंका है ।। तहां ऐसी कहेचाही काहूने कोई अतिसुंदर नायका देखी सो जानत नहीं कौनकी है ।। कि मैं एकगोपसुता देखी है ।। सो कहती है ।। मैं एक गोपसुता देखी सो ऐसी सुंदर है ।। ताकोवरु कि तौ कलानिधि बूझिये ।। कि मेरो कन्हाई ताकी नायका बूझिये ।। ऐसे सन्देह सों कहत है ।। तहां प्रश्न ।। जो सन्देह है जानतीही नहीं ।। तौ मेरी कन्हाई बननो यह प्रश्न ताको उत्तर जासों कहत है ।। सा वा नायका को धाई है सो वह बहिरंगता धाईसों कहत कि मैं आजु देखी है गोपसुता नायका ताकी स्तुति करी और कही कि मेरे अनुमानमें यों आवत है कि वाकोपति कलानिधि बूझिये ।। कहाकै तौ चन्द्रमाककी स्त्री हैं कि कामकी ऐसिन के घरको मोहिंलागत है । जब धाई कहै कि मेरो कन्हाई ।। घाईने जताई दियो घाईके उत्तर ते उत्तरालंकार ।। अरु सीधो अर्थ ऐसो याको है । सखी सखी प्रति नायकको सुनाइ कहत तात नायका के नजदीक नायक जाइकै ।। मैं एक गोपसुता देखी है ऐसी गोपकी कुमारी नहीं होत ।। जाकी देहकी द्युति देखत रहिये ।। आन को देखबो नहीं सुहात ।। वाकी एक बंक विलोकनपै त्रिलोककी निकाई वारिये ।। जाको कलानिधि सों वर्ण कन्हाई बूझि है जे बातें कामकी ।। अथवा काम बूझि है काहे वह मनोभव है कलानिधि है अनेककला जानतकि कन्हाई अर्थ अर्थपर समै वाको देखनहार दो हैं ।। कि अंगमें कामके बाहिर कन्हाई बिकल्प अलंकार ते नायक मिलाइबी चाहत यह वस्तु जहां भविष्य कही यह ह्वै है कि यह ह्वै ह्वै तहां विकल्प भूतवर्तमानमें सन्देह यह भेद सन्देह विकल्प को है ।।३८।।

अथ सुरतविचित्रामध्यालक्षण ।

दोहा- अति विचित्र सुरता सुतौ, जाकी सुरत विचित्र ।
वरणत कविकुलको कठिन, सुनत सुहावै मित्र ।।३९।।

विचित्र सुरता वह है कि जाको सुरत विचित्र होइ ।। औ कविकुलपै कठिन तासो कह्यो जाय । और जो कोऊ सुनै ताहि सुहाय । और मित्र संबोधन है ।।३९।।

कवित्त ।

केशोदास साविलास मंदहासयुत, अविलोकनअलापनको आनँद अपार है। बहि रति सात अरु अंतरितसात सुन, रतिविपरीतनिको विविधविचार है।। छूटि जात लाज तहां भूषण सुदेश केश, टूटजातहारसब मिटत शृँगार है। कूजि कूजि उठै रति कूजतिन सुनि खग, सोई तो सुरत सखी और विवहार है ।।४०।।

उक्ति नायकाकी अंतरंग सखीसों। कि हे सखी! जो ऐसी होई जो रति है कि केशव जो है जामैं आपन दास होइजाँइ ।। सो विलास सहित। अरु मंदहास युत होइ ।। अरु देखबेको बोलवे को आनंद अपार होइ। फेरअंतर बाहिरकी जे सात रति हैं तेहोहिं। तदनंतर विपरीत को नानाप्रकार को विचार होइ अरु लाजछूटि जाइ। अरु भूषण सुंदर देशते बिगरजाइँ केशभी छूटिजायँहीं ।। अरु हार टूटजाहिं। सब श्रृंगार मिटजाहिं ।। अरु रतिके कूजनसुन पक्षी कूजन लगें। यह जान कोई पक्षी कूजत है सोई सुरत है ओर तो व्यवहार है दंपतिको तो यामें कविको कठिन कौन बात केशवराखि कोई कहै तौ रतिकरी है नहीं विचारमात्र रति है। तौ विन सुरत की सुरत यह कठिनता इहां लाटा अनुप्रास वृता अनुप्रासवीप्सा है ।। केशोदास साविलास यह वृता सात सात कूज यह वीप्सा अथ सातबहिररति ।।४०।।

बहिररति सात ।

दोहा- आलिंगन चुंबन परस, मर्दन नखरददान।
अधरपान सो जानियें, बहि रति सात सुजान ।।४१।।

टीका सुगम ।।४१।।

अथ सात अन्तररति ।

दोहा- थिति तिर्यक सनमुख विमुख, अधऊरध उत्तान।
सात अंतरति समझिये, केशो सकल सुजान ।।४२।।

स्थिति इत्यादिक आसन जानिये ।।४२।।

दोहा- सोरहई श्रृंगार सब, सोरह सुरतसमान।
बुधिविवेक बल समुझिये, केशव सकल सुजान ।।४३।।

यह दोहा प्राचीन पुस्तकमें नहीं मिलत ।।४३।।

अथ षोडशश्रृंगार ।। कवित्त ।।

प्रथम सकल शुचि मज्जन अमलबास, जावक सुदेशकेशपाशको

सम्हारिबो। अंगराग भूषणविविध मुखवास राग, कज्जलकलित लोललोचन बिहारिबो ॥ बोलनि हँसनि मृदुचलनि चितौनि चारु, पलपलप्रतिपतिव्रतपरिपारिबो। केशोदा साविलास करहु कुँवरिराधे, इहि विधि सोरह श्रृङ्गारनि शृंगारिबो ॥४४॥

इहां केशव ने सोरह श्रृंगार कहे। तहां श्रृंगार जो करने ते होइँ सोइ कहावैं तहां अरु बोलनि चितवनि चलनिपतिव्रत यह श्रृंगारमें कैसे बनि हैं? श्रृंगार जो पतिव्रत तौ कहा पतिव्रत्र छूटत बनत है ॥ सुरतांतमें सब श्रृंगार छूटत। वरणे हैं अबहीं केशव पाछिले कवित्तमें कहि चुके कि सुरत विचित्राके उदाहरण में कै। टूटजात हार सब मिटत श्रृंगार है ॥ तो पतिव्रत मिटि है अरु फेर ह्वै है। अरु हसनि बोलआदिक सब स्वभावमें हैं ॥ तहां ऐसो अर्थ कीजिये। प्रथम सकलशुचि १ मज्जान २ अमलवास ३ जावक ४ केशसमारबो ५ भये अंगराग ६ तहां एक अंग को राग अंग बनाइबो तो पहिले पांच ५ मांगसिंदूर ६ भालखौर ७ फेर चिबुक तिल ८ मेहँदीरचाइबो ९ अरगजा लगाइबो १० फिर भूषण विविध दो तरहके ॥ मणि सुवर्णके ११ फूल के १२ मुखवासमें तीन मुखमें ॥ वास लवंगादि १३ दंतमंजन १४ अधररंग तांबूल ते १५ अरु काजर १६। तहाँ कोई कहै कि अंगरागमें सब बनाये तहां जावक काजर काहे जुदा कीनो तौ ये दोई ज्यादा रंग करनहार हैं जैसे नेत्र श्याम कि अधिक श्याम। अरुण अधिक अरुण अरु बोलनि चितवनि को ऐसो अर्थ ॥ इन विलासन सहित इहां केशोदास साविलास यह पतिव्रत औ वृत्त्यनुप्रास है ॥४४॥

अथ सुरतान्त ॥ सवैया।

सुन्दरता पय पावक जावक पीक हिये नखचन्दन ये हैं।
चन्दनचित्र सुधा विष अंजन टूटि सबै मणि हारगये हैं ॥
केशवनैननि नीदमई मदिरा मद घूमत मोहमये हैं ॥
केलिकै नागरिनागर प्रात उजागर सागरभेष भये हैं ॥४५॥

उक्ति सखीकी सखी प्रति ॥ कि आज सुरतांत में नागरी अरु नागर उजागर सागर के भेषक होइ रहे हैं जो सुंदरता है सोई पय जल है। अरु पावक बडबा अग्नि सो जावक अरु पीक अरु हियेमें नख तेई चन्द हैं ॥ चन्दनते चित्रित सोई सुधा अमृत है। अरु विष अंजन है ॥ अरु जो हार टूटे सोई मणि है। अरु जो नैननमें नींद है सोई मदिरा है ताके मदते घूमत मोहमय हैं। केलिकरिके सागररू होइ रहे हैं तहां कोई कहै कि चन्दन एकहै तौ आन पुरानो चाहिये ॥ तहां ऐसी

कहिये कि चन्द्रआगे करण निकसे ये द्वितीयाके हैं यातैं नये कहे अरु मध्या कहे कि घूम रहे हैं ।। नायक नायकाकी ओर मुख कीने है नायका पीटदिये यातें लाज अरु सुरत कराई याते पूमा ।। अरु कोई हार टूटबे में मध्याकही खैंचन क्रियाते । लाज आयो और प्रौढा अति काम सों भेटती है ।। मुग्धाको सुरतांत सुन्दरता यह पदने दूरकियो । सो तो प्रौढाकी रतिमेंभी वर्णन करत हैं । देव आदिक सब कविनने वर्णन करे ।। सोति मखहार है निहार टूटे हार हैं इहां रूपक अलंकार जहां उपमान उपमेय समता वाचक हीनकर होई सो रूपक ।। तो सागर उपमान नागरि उपमेय । अरु कोई कहै कि इहां वाचक धर्मलुप्ता काहे न होई तौ बामें विशेषमात्र होई है ।। यामें विशेष विशेषण दोनों इतनो भेद ।।४५।।

अथ मध्याधीरादिभेद ।

दोहा- **सिगरी मध्या तीनविधि, धीरा और अधीर ।**
धीराधीरा तीसरी, वरणत सुकवि अमीर ।।४६।।
धीरा बोलै वक्रविधि, वाणीविषम अधीर ।
पियको देइ उराहनो, सो धीरा न अधीर ।।४७।।

धीरा वक्र बोलै अर्थ व्यंगलिये कोप करै ।। वाणी विषम कहिये टेढी बात कहै व्यंग न राखै । सो अधीरा ।। पियको उराहनो देय अर्थ व्यंग अव्यंग दोई करै सो धीराधीरा ।।४६।।४७।।

धीरा यथा ।। सवैया ।

ज्यों ज्यों हुलाससो केशवदास विलासनिवास हिये अविरेख्यो ।
त्यों त्यों बढ्यो उरकम्प कछू भ्रम भीत भयो किधौं शीत विशेख्यो।।
मुद्रित होत सखी बरही मेरे नैन सरोजनि सांचकै लेख्यो ।।
त जु कह्यो मुख मोहन को अरविन्द सो है सुतौ चन्दसो देख्यो ।।४८।।

उक्ति नायकाकी सखी प्रति ।। नायकके सुनाई कहत है कि हे सखी! नायकको मुखकमल सो तू कहत रही सो चंदसो आज मैने देखो चंदको आशय यह कि कलंकी है अरु शीतकर है अरु घट बढ होत है अरु प्रात द्युति हीन हो जात अरु कमल आपनो स्थान छोड अन्तनहीं जात चंद्रमा घटादिकमेंभी पहुँचै है जो देखै सो यह जानै कि हमारे नेत्र सामुहै है अरु सोई रीति इनकी है यह तैं वक्रउक्ति अलंकार धीरा नायका अरु मध्या काहेतैं सो अब कहत हैं नायकाको क्रोधते कंप भयो ताको लाजते छपावत है कि हे सखी ! जैसे जैसे बढे हुलाससों

विलास निवास हिये में अवरेख्यो त्यों त्यों मैं कंपन लगी तब मोको भ्रम भयो कि भीतभई है कि विशेषशीत तब वर श्रेष्ठ है हे सखी ! बरहीसे जो मेरे नैनसरोज है ते मुद्रित ह्वै गये हैं ऐसो जानि सखी काहो कि अरविन्दसो मुख है सो वह चंदसो है अरु कोई कहै कि बरही नेत्रबरही काहे कहे तो कमलचंदते दूर रहत मुदित होत मध्या ॥४८॥

अथ मध्या अधीरा यथा । कवित्त ।

तातं कैसो गात सब बल बलबीर कैसो, मात कैसो मुंह महामोह मन भायो है। थलसो अचलशील अनिलसे चलचित्त जलसो अमलतेज तेजकसो गायो है। केशौदास बसत अकाशके प्रकाश घोष, घट घट घर घर घेरैं घनो छायो है। रतिकिसी रति नाथ रूप रतिनाथ कैसो, कहो कैसोराइझूँठ कौन यह पायो है ॥४९॥

उक्ति नायकाकी नायकसों। तात वैसो तौ गात है कहा तात पिता को गात डंगत अरु तिहारो डगत बलबीर कैसो बल बलबीर बारुणी खाइ मतिजात हैं अरु माता सो मुख है का कछु कछु महावर लगो है अरु थलसो शीलवाको नाम क्षमा चाहै सो कहै तुम क्षमा धारण करेहौ अरु पवनसो सब शरीर है शीतल संग शील अरु अमलजलसो चित्त कहा नीचे चलत तेज कहे अग्नि सो तेज मेरे अंगकै ते पायो अथवा सब प्रकाश आकाश सो होत अरु तुम्हारे घर सर्वदा व्यापक कह बसत है अरु रति कैसी रति कहा पति त्याग अरु रूपमें रूप रतिनाथ कैसो कहा संगिन कै सुखद असंगिन कै दुखद यह विषमवाणीको अर्थ सहजही सब जानत परंतु जो जो झूठ है सो नायकचित्त ते अधीरा अरु साफ नहीं कहत कि यह कीनों ताते मध्या उल्लेख अलंकार जवात्युत्प्रेक्षक कर वरनै सो यहां तात आदर्शन कहि दीनो है ॥४९॥

अथ मध्या धीराधीरा यथा । सवैया ।

कान्ह भलै जुं भले समुझाय हौ मोह समुद्रको ज्यों उमड्यो है।
केशव आपने माणिकसों मन हाथ पराये दे कौनौ लह्यो है।
नैननहीं मिलवो करिये सब बैननको मिलबो तौ रह्यो है।
जाय कह्यो तुम जैसे सखीनसों ऐहो गुपालमें ऐसो कह्यो है ५०॥

उक्ति नायकाकी नायक प्रति । कि काहू भलीने भली समुझाई है नायक मोहसमुद्र सो उमडो हुतो अरु आपने माणिक सो जो मन है सो पराये हाथदे कौनने पायो नयननहीं सों मिलिबो करिये अब बैननको मिलिबो तौ रहो जैसे तुम सखीन

सों जाइकै कहतहौ सो ऐहो गोपाल मैं ऐसो कहो है यह अक्षरार्थ परंतु यामें प्रश्न गोपालने सखीनसों कहा बातकही सो नहीं कही तहां उत्तर ॥ कि ऐहो गोपाल मेरे गोपाल ऐ हैं यह अर्थ नीको नहीं अरु यामें शब्दका सुरबदलत शब्द एहो गुपाल है तहां गोपालको अर्थ गो गऊके पालनहार वह दोष बनोरहो गोपालको गोपाल कियो अरु सूरत कहैं हैं कि आंखिनको मिलबोरहो वचनको मिलबो गयो मैं ऐसो कबि कहौ काहे यामें प्रभति उदासीन दोई कही ऐसो मैं तुमसों कबि कहौं यामें प्रभति काहे कहि कि मुकरगई अरु तुम याही लायकहौ तुमसों कहौ तौ यामें उदासीनता तौ यामें परकीयत दोषको दूसरा प्रश्न उत्तर चाहने परा नहीं तौ धीर भी परकीया होजाइगी जैसे क्षुद्र कविन लिखदई कि मुग्धापरकीया ऊधीरा होसकत ताही गनतीमें केशवदास होज हैं भलावे तौ धीराको भेद नहीं जानत रहैं अरु कबिनकी हुब तनपाई रही केशव तौ महाराज वीरबर महाराज रामशाहि महाराज मानके दरबारी रहे तो वे कैसे कहैगे काहे धीरा सपत्नी सों कलंक लगावत या अर्थमें तो साफ परकीया ह्वै गई तहां तीन तुकवारी बात चौथी तुकमें है कै कहूभलीने मोकों समझाई है कै वे मोह समुद्रमें उमहेहैं तौ मोह समुद्रमें अपनों मन माणिक परये हाथदयो सो काहूने पायो के वेही पावैं अरु नयनन को मिलबो तिहारो रहो बैनन को मिलबोगयो यह मोहि आननै सिखाई ताते तुम उनसो कहो नाराज होके सो मैं ऐसी कबि कही है तौ यामैं नहीं कही अरु कही दोनौं बात आई तातें धीरा अधीरा भई यामैं उपमा अलंकार मोह उपमेय समुद्र उपमान ज्यों वाचिक उमह्यो धर्म ताते पूर्ण उपमा माणिक उपमान मन उपमेय सो वाचिक ताते धर्मलुप्ता ॥५०॥

अथ प्रौढाभेद चतुर्विधा ।

दोहा- **सुनि समस्त रसकोविदा, चितविभ्रमयाजाति ।**
अनिअक्रामतिनायका, लुब्धामति शुभभांति ॥५१॥

आक्रामित पति आन औ लब्धापतिबखान यह भी पाठ है ॥५१॥

अथ समस्तरसकोविदालक्षण ।

दोहा- **सो समस्तरसकोविदा, कोविदकहत बखान ।**
जो रसभावै प्रीतिमें; ताही रसकी खान ॥५२॥

समस्तरसकोविदा सब सुखसाधनकी सिद्धिहो अरु जो प्रीति में रस भावे ताही रसकी खानि होइ दान भी पाठ है ॥५२॥

कवित्त ।

देखी है गोपाल एक गोपिका अनूपरूप, सोने तस लो नीवाससोधेते सुहाई है । शोभा ही सुहाई अवतारु घनश्यामकीधों, कीधों यह दामिनी ये कामिनी ह्यौ आई है ।।.देवी कोउ दानवा न मानहा न होइ ऐसी, भानवनिहाव भाव भारती पठाई है । केशोदास सब सुखसाधनकी सिद्ध यह, मेरे जानमै नहींसो मैनकी की जाई है ।।५३।।

हे गोपाल । एक गोपिका सोने के से रंगकी जिसकी उपमा ही मो सों नहीं कहिजात कीधों हे घनश्याम शोभा हीने अवतार लियो है बिजुलीही स्त्रीको रूप धारण किये है ऐसी मैंने देखी है ऐसी स्त्री तो न देवतों के और न दानवों के न मनुष्योके है कीधों सरस्वती है या सब साधनकी सिद्ध है या मेरे जानमें मैंमे कामदेवकी उत्पन्न की हुई है ।।५३।।

विचित्रविभ्रमा प्रौढा ।

दोहा- अतिविचित्रविभ्रम सदा, प्रौढा प्रगट बखान ।
जाकी दीपति दूतिका, पियहि मिलावै आन ।।५४।।

विचित्र विभ्रमा प्रौढा नायका का उदाहरण । जा स्त्रीका अतिविचित्र विभ्रम हो जाकी दीप्तिको देखते दूतिका वाके पियका मिलाप करादेवै ऐसी स्त्रीको विचित्र विभ्रमा प्रौढा कहैं हैं ।।५४।।

सवैया ।

है गति मन्दमनोहर केशव आनँदकन्दहि ये उमहे हैं ।
भौंह विलासन कोमल हासनि अंग सुवासनि गाढे गहे हैं ।
भौंह विलोकनिकौ अवलोकि सुमारुह्यौनन्दकुमारु रहे हैं ।
येक तौ कामके बाणकहावत फूलनिकी विधि भूल गहे हैं ।।५५।।

जाकी गति मनके हरनेवाली मन्द होय और मनमें आनंद के कन्दको उमा है और जाके भौंह की मरोडन और कोमल मुसक्यान और अंगकी सुगंध और नयनों की टेढी चितवनी देख कहे नन्दके कुमार श्रीकृष्णजी कामदेव फूलनकी विधिको भूल गये हैं ये ही तो कामके बाण कहावें हैं ।।५५।।

अक्रामतिप्रौढा ।

दोहा- सो अक्रामति नायका, प्रौढा करिवे चित्त ।

मनसा वाचा कर्मणा, वश कीन्हे जेहि मित्त ।।५६।।

अक्रामति प्रौढा नायकको उदाहरण । जो नायका मनसा वाचा कर्मणा करिके अपने मित्रको वश करै वाको अक्रामति प्रौढा नायका कहैं हैं ।।५६।।

सवैया ।

तो हित गाइ बजावत नाचत बार अनेक श्रृंगार बनायो ।
जीही मैं आनको आनिबो छांड़िबो तेरो तऊ नभयो मन भायो ।
भावै सोतै करिवाको हे भामिनी भाग बड़े बश चौकडिपायो ।
कान्ह ज्यों सूधे जू चाहत नाहि न चाहति है अब पाइ लगायो ।।५७।।

तेरे हित हे नायका कान्ह गाते बजाते अरु नाचते हैं अरु अनेक शृंगार धारण करते हैं ताहूपर तेरो मन नहीं भावै है हे भामिनी तेरे बडे भाग होंगे अरु जो यह नहीं कि कान्ह सूधे को छोडके और को पसन्द करैगी तो तेरे हितमें भलाई न होगी ।।५७।।

प्रौढा लब्धापति !

दोहा- सो लब्धापति जानिये, केशवप्रकट प्रमान ।
कानिकरै पतिकुल सबै, प्रभुता प्रभुहि समान ।।५८।।

लब्धापति प्रौढानायकाको उदाहरण । जो नायका पति और कुलकै सब मनुष्योंकी कानिकरैवाको लब्धापति प्रौढानायका कहैं हैं ।।५८।।

सवैया ।

आजु बिराजति है कहि केशव श्रीवृषभानुकुमारि कन्हाई ।
बानी बिरंचि वही क्रमका मरची जो बरीसो बधून बनाई ।।
अंग विलोकि त्रिलोकमें ऐसी को नारि निहारि न नार बनाई ।
मूरतिवन्त श्रृंगारसमीप श्रृंगार किये जानो सुन्दरताई ।।५९।।

हे कन्हाई ! आज वृषभानु कुमारी ऐसी सोहै है कि मानो कामदेवने सरस्वती हीको जिस क्रमसे रचा है वही क्रमसे इनको भी रचा ऐसी तो त्रिलोक में कोई स्त्री नहीं है कीधौं मूरतिवंत शृंगार के समीप मानों शृंगार किये सुन्दरता ही आई होय ऐसी शोभै है ।।५९।।

प्रौढा धीरा ।

दोहा- आदरमांझ अनादरे, प्रगट करे हित होइ ।

आकृति आपु दुरावई, प्रौढाधीरा दोइ ॥६०॥

धीराप्रौढानायका को उदाहरण ॥ जो आदर के बीचमें अनादर करै और प्रकट में हित करै और आकृति को छिपाये रहै वाको धीराप्रौढा नायका कहैं हैं ॥६०॥

सवैया ।

आवत देखि लयें उठि आगेहु आपहि केशव आसन दीनो ।
आपुहि पांइँ पखारि भले जलपानको भाजनु लाइ नबीनो ॥
वीरी बनाइकै आगे धरी सो जबै हरिको बरबीजन लीनो ।
बांह गही हरि ऐसो कह्यो हंसि ये तौ इतो अवराधन कीनो ॥६१॥

जो नायका श्रीकृष्णजीको आवते देखिके आगें उठिके लेबे और आसन बैठबेको देवै और आपही जलके भाजनको लाय के चरण धोयके बीरी खाने के लिये दैके आप पंखा हांकै ऐसी आराधना करै ॥६१॥

प्रौढाधीरा आकृतिगुप्ता ॥ सवैया ।

चितवो चितवाये हंसाये हंसो औ बुलायेसे बोलो रहै मति मौने ।
सोह अनेकनि आवहु अंक करौं रतिको प्रति रैनको रोनै ॥
कोई खवाये ते खाऔ बिराजनु आइ हौं केशव आजुहि गौनै ।
मोहनके मनमोहनको सखी तोहि नहीं सिखई सिख कौनै ॥६२॥

आकृति गुप्ताधीरा प्रौढा नायका को उदाहरण ॥ जो नायका चितवायेते चितवै और हँसाये ते हँसे और बोलायेते बोलै नहीं तौ मौनही रहै और खवाये ही ते खावै मनो गौने या रौनेमें आई है और मनमोहनके मन मोहिबेको मानों काहूने नई सीख सिखाई है ऐसी नायका को आकृतिगुप्ता धीराप्रौढा नायका कहैं हैं ॥६२॥

सवैया ।

हितको इत देखो जु देखो सबैं हितु बात सुनो जो सुनी निबही है।
यह तौ कछु और वहे सब है और सोह करो जु करो जु तुही है ॥
समुझाइ कह्यो समझायकै केशव झूठी सबैं हमसों जु कही है ।
मान किये अपमान करै जो हंसौ अबके हंसिबेको रही है ६३॥

हे नायका ! यहां हितको देखो जो सब देखती हैं और हित ही की बात

सुनो जाके सुनबेते निबाह होइगो यह तो सब कछु और ही है याकी सौंह कहे इस तरह ते समझाय के कहो और सब जो हमसों कही है वह सब झूठी है और मान कियेते अपमान करो है ॥६३॥

प्रौढाअधीरा ।

दोहा-मुखरूखी बातैं कहै, जियमें पीकी भूख।
धीर अधीरा जानियें, जैसी मीठी ऊष ॥६४॥
पतिको अति अपराधगनि हित न करै हित मानि ॥
कहत अधीरा प्रौढ तिय, केशवदास बखानि ॥६५॥

अधीरा प्रौढा नायकाको उदाहरण। जो नायका मुखते रूखी बातें कहे और जियमें पियकी भूंख रहै ऐसी ऊखसरस मीठी नायकाको अधीरा प्रौढा नायका कहैं हैं ॥६४॥ पतिको बडा अपराध गनिकै हित मानिकै जो स्त्री हित न करै ताको केशवदास लिखते हैं कि उसी स्त्रीको अधीरा प्रौढा स्त्री कहते हैं ॥६५॥

सवैया ।

हौ मन मैले न बोलो कछू अब छांडहु बोलिबो बोल हँसो है।
केशव और निसा रसरासरि सो रसबाद सबै हमसो है ॥
देखहु धौं यकबार सकोचन आरसलोचन आरसी सोहै।
आयजू वैसेई साजसौं आजुसो भूलिगई पिय काल्हिकीसोहैं ॥

जो स्त्री पतिको उपराध हृदयमें गनिकै वासों नेह नहीं लगावै है उसको अधीरा प्रौढा नायका कहते हैं-सो पतिसों कहै है कि मैं मनसों अधीरा हौं यासोंहमसों बोलिबो छांडौ और हास आदिक न करौ और रात्रिके विषे रास बिलासक की बार्त्ता सोभी न करौ काहेसे कि आलसयुक्त पतिके नेत्र देखिकै वाको उपदेश करै है यामें व्यंग्यार्थ दरशात है कि पतिके नयन आलसयुक्त हैं तो सूचित है कि किसी दूसरी स्त्रीके भवनमें जगे हैं यासों कहै है कि जोई ढंग काल्हि थे सोई आज फिर हैं क्या तुमको काल्हि की सौंह भूलि गई यह स्वकीया नायकोक्ति है ॥६६॥

अथ परकीया लक्षण ।

दोहा- सबतैं पर परसिद्ध जो, ताकी प्रिया जु होइ।
परकीया तासों कहैं, परम पुराने लोइ ॥६७॥

सबते परका बेद लोकते परका परपुरुषन लोकमें लीनन खेदमें परशब्द जगमें

भी देहरी दीपक करिकै लीजिये कि पर सिद्धतें पर कहा कोइ न जानें ताकी जो प्रिया होय सो परकीया ॥६७॥

अथ परकीयाभेद ।

दोहा- परकीया द्वै भांति पुनि, ऊढा एक अनूढ ।
जिन्है देखि वश होत है, सन्ततमूढ अमूढ ॥६८॥

ता परकीयाके द्वै भेद कहे एक ऊढा एक अनूढा जाहि देखि मूढ अमूढ निरन्तर बश होत हैं ॥६८॥

ऊढा अनूढा लक्षण ।

दोहा- ऊढा होत बिवाहिता, अनव्याहिता अनूढ ।
तिनके कहौं विलास सब, केशव गूढ अगूढ ॥६९॥

ऊढा ब्याहिता बिना ब्याहिता अनूढा तिनके बिलास गूढ और अगूढ हैं ॥६९॥

ऊढा यथा ॥ सवैया ।

बैठी सखीनकी शोभै सभा सबहीके जु नैनन मांझ वसै ।
बूझे ते बात बराइ कहै मन ही मन केशव राइ हंसै ॥
खेलति है इत खेल उतै पिय चित्त खिलावत यों विलसैं ।
कौउ जानै नहीं दृग दौरे कबै कित ह्वै हरि आननछ्वै निकसै ७०

सब सखिनकी सभामें बैठी है मंडन शिक्षाकरन उपालंभपरिहासकी उरु सबके नैनन मांझ बसै है कहा सबकी दृष्टि वाहीकी ओर है अरु कोई बूझै बात तो बराइके कहै जामें मित्र आपन बूझे प्रीतम आपुन ऐसे वचन बोलै कैसे कि यह दिन तन मन मिथ्या है तौ सखिन को वैराग नायकको उदासीकै तुमसे अपराधी हमें मिले अरु मित्रको यह कहत तुम न मिले तौ सब वृथा ऐसे बराई बोलती है अरु मन ही मन हँसै है का जे सब मूढ हैं अरु खेल तौ सखिन संग खेलती पै पीयके चित्तको खिलावत अरु यह कोई नाहीं जानत दृगन को दौराई कब हरिके नैंनन छूकै निकसत यहां कारण चित्तको दौराइबो कारज हरि आनन छूवो ताते चपला अतिशयोक्ति ॥७०॥

अनूढा यथा ॥ सवैया ।

बैठीहुती ब्रजनारिनमें बनि श्रीवृषभानुकुमारि सभागी ।
खेलतहीं सखी चौपर चारुभई तिहिं खेल खरी अनुरागी ॥
पीछे ते केशव बोलि उठे सुनिके चित चातुरी आतुरि जागी ।

जानै न काहू कवै हरिके सुर मारगही सरसीद्दग लागी ।।७१।।

वृषभानु कुमारी जहां सभागी बन बैठीरही सभागी कहा वा दिन पिताने वाक्य दान आनके गेह कीनों राधा बिवाह आन संग ब्रह्मवैवर्त पुराणमें है सो खेल नहीं चारु चौपर ताके खेलमैं अनुरागिन ह्वैगई यह सुनिके आनकै वाक्यदान भयो तहां पीछे जाइ कोई बहानेते हरि बोलउठे सो सुनि आतुरी चित्तमें जग गई सो काहूने न जानी कि हरिको सुर बाण मारो यातें चितवनते शब्दवेधी बाण मारो जो ऐसो अर्थ कीजै तौ अनूढा होती है नाहीं तौ पारवती जानकी दमयन्ती अबिवाह विषे अनुरागिन भई सो सब अनूढा ह्वै जाइँगी अरु वैसे अर्थमें परकीयाको जो आप पति त्याग परपतिसों प्रीति करै तौ अविवाहिता पतिहीन है वह कब परकीया भई अरु कोई कहै कै परज्ञातमें तौ स्वज्ञाता परज्ञातको यामें विचार नहीं यहां तौपतिपर पतिको विचार है कि एक गोपकन्या गोपपर आसक्त रही अबिवाहिता विषे अरु फेर वही गोपसों बिवाह भयो तौ वह कहा कहावैगी जैसे । दो०-दिखरायो पैवंदपिय पीपरमें बरलाइ । समुझि पाछिली पक्ष तिय रहीसकुचि शिरनाइ।। पीयने एक पैवंदका पेड नायकाको दिखायो तामें जर पीपरकी डारवरकीका जानवो वाच्यलिंगते कै हम तुम्हारे पीपर नाम पराये पीरहैं अविवाहिता विषे अरु अबवर हैं तौ वह परकीया ह्वै है कि न ह्वै है तहां संकल्प दो रीतिको एक मानसी एक साक्षात् तामें मानसीको फल ज्यादहकाहे देवयानीने शुक्राचार्य्यसों कही कि अब हमारो हाथ क्षत्रीनें ग्रहण करो तो हम ययाति के संग जैहैं सो सुनि मानस संकल्प जानि राजाको बिवाहि दई अरुरुक्मिणी ऐसेही कृष्णके संग गई तौ वे स्वकीया छांड परकीया न ह्वै हैं आनकी कहा वह तो बात दिव्य प्रकृतिकी है तुम अदिव्यमें कहो तहां संयोगितादि राजाके संग आपतैं गई तौ स्वकीया की गति पाई अरु कोई कहै कि सामान्याकी पुत्री प्रथम समागम जाके साथ भयो ताहीके पास पतिब्रताकी रीति ते रही जैसे यह । दोहा ।। अनरुषसों पियसँग कियो सबसों सरुष सुभाइ । बासुदेव पूजौनतरु अनगन धनि धन पाइ ।। तहां जानै वासुदेव तरु न पूजौं यह जानकै यह पीपर है सो परपतिसंगकी कौन कहै तहां कहा होइगो तौ याहीते चार बिवाह ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र एक लिख्यो है यातें वही अर्थ कीजैकै सभागी भई है का पिता वाक्यदान करचुको यहांभी चपलातिशय उक्ति अलंकार कहत सो नाहीं । काहेकै कृष्णको अभिप्राय जान रसीली चितवनते जबाब कियो, कि मैं तुम्हारे पास रहोंगी ।। तहां कोई कहै कि व्यंगम अलंकार नहीं होत । काहे लक्षणमें अलंकारको ऐसो शब्द है कि जुदोरहै इस ब्यंगते तौ रस अरु व्यंगते जुदो चाहिये सो अर्थ याको नहीं ।। याको अर्थ ऐसी कीजै कि रस वारी जो व्यंग है । विभाव अनभाव संचारी अस्थायी ताते जो व्यंग है सो नहीं ताते जुदो रहै ।। अपिहित सूक्षम परजा उक्ति आदिक गूढोक्ति गूढोत्तर ये व्यंग हीन नहीं होत ।।७१।।

दोहा- काहू सों न कहै कछू, बात अनूढागूढ।
सखी सहेली सों कहै, ऊढा गूढअपूढ ॥७२॥

गूढ बात काहू सों न कहै सो अनूढा। अन्तरंगसों गूढ कहै अरु सहेली बहिरंग से अगूढ कहै ताको ऊढा जानियें ॥७२॥

ऊढा बचन यथा ॥ सवैया।

केशवराय किसौं हकिकै कछुएक न आपु मैं होडपरी।
एकचितै मुसक्याय इतै उत बात कहै बहुभाइ भरी॥
चारुचकोरविलोचन भासी चहूं दिशि तैं अँगुरी पसरी।
सखी आजु गई हुति गोकुल हौं सब ही मिली द्वैजको चन्दकरी ॥७३॥

इहां ऊढाके बचन उदाहरण निमित्त ॥ दूसरो कवित्त कीनों प्रश्न अरु कोई कहै कि पहिले कह फेर क्यों कह्यो ॥ ऊढा को कवित्त ताको उत्तर यह कि। दोहामें कह्यो ॥ अनूढा काहूसे न कहै? औ ऊढा कवित्त बात कहै ताके कहिबेको उदाहरण दियो चाहिये याही ते कवित्त दूसरो केशवने कियो। प्रश्न-होड परी सो कहा है। उत्तर। तहां नायका को देखिकैं ॥ गोलमें सब कहन लागी इन्हींसों मोहनकी प्रीति लगी है। अरु कोई कहै कि यह नहीं और बातकी होड परी है ॥ का छुटाई बडाईं की होडाहोडी परी है। यामें रस नहीं होत ॥ तहां नायका अपनी बात कहत है कि ऐसी मेरी और आंगुरी पसरी जैसे द्वैजके चन्दको देखत हैं ऐसे देखि रही या बातमें ऊढाके वाक्य को वर्णन सिद्ध भयो चारुचकोरबिलोचनभासी कह्यो ताते उपमाद्यलंकार भयो ॥७३॥

दोहा- जगनायककी नायका, बरणी केशवदास।
तिनके दरशन रस कहौं, सुनहु प्रछन्न प्रकाश ॥७४॥

इति श्रीमन्महाराजकुमारइन्द्रजीतविरचितायां रसिकप्रियायां
स्वकीयापरकीयादिभेदवर्णनं नाम तृतीयः प्रकाशः ॥३॥

जगसंसारके नायक श्रीकृष्णचन्द तिनकी नायका श्रीराधा ताको बरणन केशवदास कर चुके अब तिनके दरशन अरु रस प्रछन्न कहिये छिपो अरु प्रकाश कहिये जाहिर बरण न करत हैं ॥७४॥

इति श्रीमन्महाराजधिराजकाशिराजश्रीमदीश्वरीप्रसादनारायणसिंहबहादुरस्या-
ज्ञाभिगामिललितपुरनिवासिहरिजनकवीश्वरात्मजेन सरदाराख्यकवीश्वरेण
विरचितायां रसिकप्रियायांभूषणसुखविलासिकानामटीकायां
स्वकीयापरकीया वर्णनं नाम तृतीयः प्रकाशः ॥३॥

अथ दरशनवर्णन ।

दोहा- ये दोऊ दरशै दरश, होहिं सकाम शरीर ।
दरशन चारि प्रकारको, वरणत हैं मतिधीर ।।१।।

नायक अरु नायका जहां दरशै कहे देखिं परैं तिहि दरश ते काम संयुक्त होजाय ताको दरशन कहिये सो चार प्रकारको है ।।१।।

दोहा- एक जुनिको देखिये, दूजो दरशन चित्र ।
तीजौं सपनो जानियें, चौथो श्रवण सुमित्र ।।२।।

एक जु नीको देखिये अर्थात् साक्षात् दरशन होहि दूजो चित्रमें ।। तीजो स्वप्नेमें चौथो श्रवण दरशन होहि ।।२।।

दोहा- दरशन नीके दरशि यह, दंपति अतिसुखमान ।
ताहि कहत साक्षात हैं, केशवदास सुजान ।।३।।

यह दोहा केशवदासको नहीं ।। प्राचीन पुस्तकनमें नहीं मिलत याते तिलक नहीं कियो ।।३।।

अथ साक्षात्दरशन ।

दोहा- नींद भूखद्युति देहकी, गई सुनतहीं जाहि ।
को जानै ह्वै है कहा, केशव देखैं ताहि ।।४।।

नींद भूख अरु देहकी द्युति जा राधाके सुनत गई ता राधाको केशव देखो देखै की जानै अब कहा ह्वै है । अरु राधापक्ष ऐसो अर्थ कीजै ताहि राधा देखती हैं ।। प्रश्न-अरु कोई कि पहिले श्रवण स्वप्न तब चित्र तब साक्षात् चाहत रहो उत्तर तहां यह है कि दरशन में क्रमनहीं उषाको प्रथम स्वप्न भयो अरु रंभावतीको अरु पद्मावतीको प्रथम साक्षात् सोनाहीं यामें श्रवणक्रम केशव देखाइ चुके कि नींदभूखद्युति देहकी जाके सुनतगई अरु कोई कहै कि स्वप्नलोभी याहीमें है काहे नींद गई जब स्वप्नमें देखी भूख गई जब चित्रमें देखी अरु सुनत देहकी द्युतिगई अब साक्षात् दोई देखते हैं किंवा मित्र परस्पर चित्र नहीं चित्रजड है सो नहीं देखि सकत स्वप्नमेंभी एकही देखत एक को परस्पर स्वप्न अरु देखिबो नहीं बनत ऐसेही श्रवणमें दोऊ सुनैं सो नहीं बनत जहां प्रत्यक्ष बैठे हैं तहां श्रवण दर्शन कहावै अरु साक्षात् में दोऊ दोहुन को देखत यह दोहा दंपति दर्शन को है आगे कवित्त में एक एकको दर्शन कहैगे यामें मिलायके कह्यो है दोहुन को ।।४।।

दोहा- देखनको पिय रूपदृग, तजी सकल जगकाज।
कोटि यतन हूं कै रही, रहे नैन गडिलाज ॥५॥

यह दोहा भी काहूको बनायो है, केशव को नहीं ॥५॥

राधाको साक्षात्प्रच्छन्नदर्शन यथा। सवैया।

कहि केशव श्रीवृषभानुकुमारि शृंगार शृंगार सबै सरसै।
सविलास चितै हरिनायक त्यों रतिनायक शायकसे बरसै॥
कबहूं मुख देखति दर्पणलै उपमा मुखकी सुखमा परसै।
जनु आनंदकंदसुपूरणचंद दुज्यो रविमंडलमें दरसै ॥६॥

उक्ति अंतरंग सखीकी अंतरंग सखी प्रति। दर्शन एकको साक्षात् नहीं ह्वै सकत कि वृषभानु कुमारी शृंगार करिचुकी कैसो है वह शृंगार रसको सरसै नाम बढावैहै यामें कोई कहै कि शृंगार कहा सरस रही अबै तो नायक देख्यो नहीं तो पहिले दोहामें चारों दर्शन दिखायचुके अब केवल ग्रन्थकी रुचिकेलिये बनावत हैं अरु सविलास ताही समय हरिनायक त्यों नाम वैसेही रतिनायक सायक से बरसावत ज्यों राधाशृंगार सरसत अरु नायक सविलास है तैसेही रतिनायक सायक बरसावत है अरु कबहू दर्पण में मुख देखती सो दर्पण अरुणमतिको है तामें राधाको मुख कैसी शोभा देत मानों आनंद को कंद जो पूरणचंद है सो रविमंडल में दुज्यो दर्शन है यहां फल उत्प्रेक्षालंकार मानों राधाको आनन देखिकै आप ह्वैगयो आनंद को कंद सो दुरिकै देखत है चंद अरु अहेत के हेतते हेतूत्प्रेक्षा भी होतहै अरु दपर्णमुख वस्तु में चंद सूर्यकी संभावना करी ताते वस्तूत्प्रेक्षा ॥६॥

साक्षात् दर्शनप्रकाश राधाको यथा। सवैया।

पहिले तजि आरस आरसी देखि घरीकघसै घनसारहि लै।
पुनि पोंछि गुलाब तिलौंछिफुलेल अंगोछैमें आछे अंगौछनकै ॥
कहि केशव मेदजवादसों मांजि इते पर आजेमें अंजन दै।
बहुरेदुरि देखों तौ देखों कहा सखि लाजते लोचन लागे रहैं ॥७॥

उक्ति नायकाकी सखीप्रति हे सखी! मैं छिपिकै भी देखती हौं तौ भी हमारे लोचनके नायकसामुहे नहीं होत लाजमें लगेई रहत हैं आलस तजिके आरसी घन सारादि उपाय बहुत कियो परन्तु इनने लाज न छोडी। प्रश्न घनसारादिते लाज कैसे जायगी ? उत्तर। इहां मौग्धभाव की अधिकता है नायका यह सुनेरही कि

उद्दीपन ते लाज छुटिजात याते घनसारादि उपाय किये ॥ अर्थ । इन सबको नेत्रमें लगायो प्रश्न-अरु यामें परस्परदर्शन दोऊको कैसे ॥ उत्तर । लाज तबहीं आवत कि जब दूसरी तरफ कोऊ देखत होय इहां लाजतौ हैई है ॥ अरु येते उपाय आप किये अंतरंग सखी पास नहीं है अरु जासों कहत सो बहिरंग है याते प्रकाश जानि या कवित्तके तिलकको विस्तार कविप्रियाके तिलकमें कीनों है याते इहां नहीं कियो कारण बहुत किये अरु कार्य्य नहीं भयो ताते विशेषोक्ति अलंकार जानिये ॥७॥

नायकको प्रच्छन्न साक्षात् दर्शन ॥ सवैया ।

भाल गुही गुन लाल लटैं लपटी लर मोतिनकी सुखदै नी ।
ताहि विलोकत आरसी लेकर आरस सो इकसारस नैनी ॥
केशव कान्ह दुरे दरसी परसी उपमामतिको अतिपैनी ।
सूरजमंडलमें शशिमंडलमध्य धसी जनु ताहि त्रिवेणी ॥८॥

उक्ति अंतरंग सखीकी अंतरंग प्रति ॥ कि भालमें तौ गुही हैं लालगुनते लटैं अरु तामें लपटि रही हैं लर मोतिनकी ताको विलोकत नाम देखत है ॥ आरसी करमें लैकर आरस अलसौहीं दीठि करिकै आलसते सात्त्विक भाव जनायो । सारस कमलनैनी सो कान्ह दुरे देखत हैं तहां उपमा मनमें कैंसी भासत किक मानो दरपण जो है मणिमय तामें है मुख सो दर्पण सूर्यमंडल मुख शशिमंडल ताके मध्यमें त्रिवेणी है ॥ इहां लटश्याम यमुना मोती गंगालाल गुन सरस्वती अरु कोई कहै यामें राधा नहीं देखै तो सात्त्विक कहांते आयो ॥ आपनो रूप देखिआपको सात्त्विक न आयो चाहिये ॥ रामायणे ॥ मोहैन नारि नारिके रूपा मानोपदते उत्प्रेक्षालंकार ॥८॥

नायकको प्रकाश साक्षात् दर्शन ॥ सवैया ।

इक तो उर और उरोज अनूपम तैसे मनोहरहार महारी ।
चित्त चलै तरुणीनहुको अरु नैनकि केशव बात कहारी ॥
हितकी हित सों कहिही बनिआवत कौलगिहोहुंरिकौतुकहारी
अंचरु दै नंदलाल विलोंकतरी दधि नोखि बिलोवनहारी ॥९॥

कै तू अनोखी दधिबिलोवनहारी है ॥ अंचल की ओट करिकै नायकको देखती है एक तौ तेरो उर उत्तम दूसरे उरोज तीसरे हार मनहरणहार सो तेरो चित्त जो है सो चलत है ॥ तरुणी नैननको अरु नैनकी को उरु नैनकी कौन बात कही जे हित आपन हैं तिनसों हितकी कहेई बनत है कभीतक मैं कौतुक देखनहारी

हौं ।। इहां सार अलंकार उरते उरोज अधिक उरोजसे हार अधिक किंवा एक तौ उरोजमें मनोहरता बनीही रही तापे हार पहिरे यामें मनोहरताकी अधिकाई भई ।। ताते अनुगुनालंकार भयो हौं कबलौं देखौं ताते बहिरंग सखीते प्रकाश ।।९।।

दोहा- प्रकट कामको कल्पतरु, कहि न सकति मतिमूढ ।
चित्रहुमें हरिमित्रकी, अतिअद्भुत गति गूढ ।।१०।।

यह दोहा केशवको नहीं है ।।१०।।

राधाको प्रच्छन्नचित्रदर्शन ।। सवैया ।

लोचन ऐंचि लिये इतको मनकी गति यद्यपि नेह नहीं है ।
आनन आइगये श्रमसीकर रोम उठे उरकंप गही है ।।
तासों कहा कहिये कहि केशव लाजसमुद्रमें बूडि रही है ।
चित्रहुमें हरिमित्रहि देखति यों सकुची जनु बांह गही है ११

उक्ति अंतरंग सखीकी अंतरंगप्रति कि देखौ याके चरित्र चित्र देखि सात्त्विक भाव हो आयो है लोचन नेत्र इतको ऐंचिलये तदपि नैनकी गति नेह नहीं है जोती है अरु मुखपै श्रमके सीकर आइ गये हैं, अरु रोमभी उठि आये कंपभी ह्वैगयो कहो यासों कहा कही अबै हम तुमको देख सात्त्विक जान लाजरूपी समुद्रमें बूडी हैं चित्रही में हरिमित्रको देखिकै कैसी सकुची मानौ बांहगहि लई है इहां दूसरो विभावना अलंकार है हेतु तो अपूरण है कहा तसबीर देखत, अरु सात्त्विक भाव कार्य्य पूरण है अरु स्वभावोक्ति भी है ।।११।।

अन्यच्च ।। सवैया।

तैं जनु मोहनके चितयो कछु ऐसे कही जस मोसों कही हैं ।
लाज तजै नहिं खेलत ही मनकी मतिगूढ कहां धोलही है ।।
केशव चित्रित मंदिर आजु दिखावत ही मति रीझि रही है ।
चित्रहुमें हरिमित्र हि देखत यों सकुची जनु बांह गही है १२।।

यह कवित्त केशवको नहीं याते तिलक नहीं कियो ।।१२।।

राधाको प्रकाशचित्रदर्शन यथा ।। कवित्त ।

केशवदासनेहदशा दीपकसंयोग कैसे, ज्योतिहीके ध्यान तप तेज हिन शाइ है । आंखिनसों बांधे अन्य काहूकी न भागी भूख, पानीकी कहा नां रानी प्यास क्यों बुझाइ है ।। येरी मेरी इंदुमुखी इंदीवरनैन लिखे, इंदिराके मंदिर क्यों संपति सिधाइ है। ऐसे दिन ऐसे ही गवाँवत गवाँर कहा, चित्र देखे

मित्रके मिलेको सुख पाइ है ।।१३।।

उक्ति बहिरंग सखी की नायका चित्र देखिरही है ताको देखि कहत है कि बिनदीप तुम भोजनक्षुधा वे लक्ष्मी संपति वे मित्र मिले काहूको सूख होत है? तुम गवांरि काहेभई गवांरपद कहेते बहिरंग जानी जात याते प्रकाशकाकोक्ति अलंकार ।।१३।।

नायकको प्रच्छन्नचित्रदर्शन यथा ।। कवित्त ।

रूठेबेको तूठबेकी मृदु मुसक्याइकै, विलोकिबेको भेद कछू कह्यो न परतु है। केशोदास बाले बिना बोलनके सुने बिना, हिलन मिलन बिना मोह क्यों सरतु है।। कौलग अलोनो रूपप्याय प्याय राखों नैन, —नीर बिना मीन कैसे धीरज धरतु है। चित्रनी विचित्र किननींकेई चितै, यै मनचित्र चित येते चित्त चौगुनों जरतु हैं ।।१४।।

नायक आप मनसों कहत है कि हे मन रूठबेको अरु तूठबेको अरु कोमल मुसुक्यानको अरु बिलोकिबेको भेद कछू कहत नहीं बनत बे बोले अरु बिना नींक बोल सुने अरु हिलन मिलन बिन मोह कैसे सरै ये नयन कबलौं अलोनो रूपी प्याय प्याय राखियें बे नीर मीन धीरज नहीं धरत वह जो चित्रनीविचित्र है ताको चल देखिये चित्रको देखेतो चित्त चौगुनो जरतु है चौगुन जरन को आशय प्रथम तौ श्रवण दर्शन त जरो दूजे स्वप्नते तीजे चित्रते चौथे हे मन तू नहीं चलत चित्रमें चेष्ट नहीं उपमानते विशेषता उपमेयमें है याते व्यतिरेक अलंकार जानियें चित्रते नायकाविशेष भई ।।१४।।

नायकको प्रकाश चित्रदर्शन यथा । कवित्त ।

अंतरिच्छ गच्छनी नियच्छन सुलच्छनीनि, अच्छी अच्छी अच्छनीनि छविछमनीय है । किन्नरीनरी सुनारिपन्नगी नगीकुमारि, आसुरीसुरी न हूंनिहारिनमनीय है ।। भोगिनको भामिनी औ देह धरे दामिनी यों, काम कामनी यों कहा ऐसी कमनीय है। चित्रहूमें चित्त हि चुराये लेत कोऊ यह, राम कैसी रमनी रमासी रमनीय है ।।१५।।

नायक जाको चित्र देखत ताकी स्तुति करत है। अंतरिक्ष गच्छीनी परीयक्षनी तिन सबकी छबिकी क्षमनीय है क्षमा करावहारी का उनकी छबि निंदनहार जिनके छबिसंबंधी क्रोध है याको देखि जरै हैं यह उन्हें दीन जान क्षमा करत हैं यातें यह क्षमनीय है और सबको नमनीय है नमस्कार सब याको करत हैं ऐसी कोऊ

यह है जासों छपायो सो बहिरंग है याते बहिरंगने देखे चित्र देखत तौ चित्र दर्शन प्रकाश भयो किन्नरी जो हैं अरुण रणमें जे सुनारी हैं अरु पन्नगी नगी पर्वतकुमारी। अरु आसुरी सुरी आदि सब पद सुगम हैं इहां वृत्तानुप्रास उपमा अलंकार अंतरिक्ष गच्छनी यक्षनी ये वृत्तानुप्रास ।। अरु देहधरे दामिनी यह उपमा ।।१५।।

स्वप्नदर्शन ।

दोहा- केशवदरशन स्वप्नको, सदा दुरोई होय ।।
कबहूँ प्रकट न देखिये, यह जानत सब कोय ।।१६।।

स्वप्न दर्शन छिपो रहत है ।। प्रकट नहीं होत ।।१६।।

राधाको प्रच्छन्न स्वप्नदर्शन ।। सवैया ।

आतुर ज्यों उठि दौरी अली जनु आतुर ज्यों गहिये सुगही त्यों ।
हे मेरी रानी कहा भयो तो कहँ बूझत केशव बूझि रही त्यों ।।
डीठि लगी कि धौं प्रेतलग्यो कि लग्यो उरप्रीतम जाहि डरीयों ।
आनन सीकर सीकहिये धक सोवतते अकुलाय उठी क्यों ।।१७।।

उक्त अंतरंग सखी कहे नायिकाने स्वप्नमें नायक देख्यो । अकुलायकै अंकलगे चाही ताही समय नींदखुली तौ सखी को पकरो सो सखी कहति है हे अली! जिन आतुर याको देखो अरु आतुर सब पकरो जैसे मैं पकरी हूं अथवा मोहि पकरौ । अरु बूझति कै तो को कहा भयो है बूझति है ।। तैसे ही सुन बूझकै रहिगई । तोको दृष्टि लगी है कि प्रेतलगी है कि प्रीतम उरसों लगी है ।। ताते ऐसी डरानी आनन जो मुख है तापर सीकर स्वेद के ह्वै आये । अरु सीसी कहत है धक वेग सोवततैं क्यों अकुलाइ उठी है औ स्वप्न में नायक अंतपदते जानोजात । काहे वह अंतरंग है सो जानत याते निश्चयांत संदेह अलंकार। आगे दृष्टि प्रेतमें संदेह प्रीतमने निश्चय ।।१७।।

नायकको प्रच्छन्न स्वप्न दर्शन यथा।। कवित्त ।

नखपदपदवीको पावे पद द्रौपदी न, एकौ बिसे उरबसी उरमें न आनिवी । लोमसी पुलोमजानतिलसीतिलोत्तमा, नमैलहूसमानमन मैनकानमानिबी ।। जानिये न कौन जाति अब हीं जगाये जात, जानु जानि हौं जो जाहि केहूं पहिंचानिबी । बातकीसी बानी मांह भावसो भवानी मांह, केशोदास रतिमें रतिक ज्योति जानिवी ।।१८।।

नखपदवीको द्रौपदी कही । अरु उरमें उरबसी लोममें पुलोमजा ।। तिलमें

तिलोत्तमा ।। मैलमें मैनका ऐसी जो नायका जानी न गई जो स्वप्नमें दर्शन दै जगाइ गई मैं अपनी जान जान है जो वाको पहिंचानि है बातमें बानी कही भावमें भवानी रतिमें रती यातें दूसर पर्य्याय अलंकार जानिये का है एककी छबि अनेक ठौर वर्णों यह कही सो यामें क्रम नहीं है कहां तिलोत्तमा तिलमें कहां मैनका मैलमें तौ इहां वर्ण मयत्री हेत ये नाम राखे ताते उल्लेख जहां एकको एक अनेक प्रकार समुझै सो यामें नायका अनेक भांति समुझी ऐसी जो महाराज सवाई आपने तिलक में लिखी सो नहीं उल्लेखमें धर्म्म मात्र अनेकको होत पर्य्याय में विशेषण यह भेद है अरु स्वप्न दर्शन प्रकाश नहीं होत ॥१८॥

दोहा- भूख होइ जिहि बातकी, बिन देखतही पीव।
सखी सुनावै गुणश्रवण, अंग अंग सब जीव ॥१९॥

यह दोहा केशव को नहीं ॥१९॥

श्रवण दर्शन ।

दोहा- शील रूप गुण समुझिकै, सखी सुनावै आनि।
केशव ताको कहत है, दरशन श्रवण बखानि ॥२०॥

यह भी दोहा केशवदास को नहीं है ॥२०॥

नायकको प्रच्छन्नश्रवणदर्शन यथा ॥ सवैया ।

सौं हैं दिवाय दिवाय सखी, इकबारक कानन आन बसाये। जानैको केशव काननते, कितह्वै हरि नैननि मांझ सिधाये ।। लाजके साज धरेई रहे तब, नैनन लै मनहीं सों मिलाये। कैसी करौं अब क्यों निकसों री, हरेई हरे हियमें हरि आये ॥२१॥

उक्ति नायकाकी सखीसों। कहूं सखीने शिक्षा पूर्वक कही है ऐसो तदाकार इकमैं मन है तनक तो मन और ठौर राखौ सो नायका अपनी व्यवस्था कहत है मनकी कहूँ नायकको सखी नायकके गुण सुनायगई है सौंह दिवाइ के याको प्रयोजन कै जिन २ बाकी बातैं सुनी हैं तेते व्याकुल होगईं तब नायककै सखीने सौं हैं दिवाय दिवाय कही भली वाकी एकही बात सुन सो भली कहां तैं जानी सो कवित्त के पाठमें यही है कै मोंको वाने सौं हैं दिवाइ दिवाइ इक बार का मनमें बसाये कहा एकही बार मोको सुनाई सो मैं नाहीं जानती कब धौं नैनन मांह सिधारे अरी हे सखी लाजके साज सब धरे रहे जब नैननने मनसों मिलाइ दिये सो अब मैं कैसी करौं वे कैसे निकसैं ? मनते हरे हरे जो हीय में हरि आये

यह तौ शब्द अर्थ अरु यामें यह प्रश्न है कि मन नहीं तो कानन सुनतैं ताते मनही ने कानन नैनन हियसों मिलाये सो नाहीं कहूँ ऐसी भी होत मन नाहीं रहत अरु इन्द्रीको ज्ञान ह्वै जात ।। जैसे त्वक्इन्द्री के तप्तवस्तु को ज्ञान होत इहां हरिनाम सुनिबो कारण मन आइजैबो कार्य्य ताते हेतु अलंकार है ।।२१।।

नायकाको प्रकाश श्रवण दर्शन ।। कवित्त ।

कौलोंपी हौ कानरसरूपकी बुझै है प्यास, केशौदास कैसे नयननभर पीजिये। बीरकी सों मेरी बीरबारी है जुबारो आन, नेकहसि हांकरबलइ तेरी लीजिये ।। बरसक मांझ यह बैस अलबेली बीते, देहौ सुख सखिनक्यों अबहीं न दीजिये। ये री लड़बावरी अहीर बूझों तोहिं, नाहिं सों सनेह कीजै नाह सों न कीजिये ।।२२।।

उक्ति बहिरंग सखी की नायकासों। वाको कबलौं कानरस पीजिये रूपको प्यास बुझै है कैसे नयननभर पी है। मोकों वीरकी सोंह है तू बालक है अरु वारो आनको जो तू कहै तो नेकहँस तेरी बलाइलउं हे अलबेली ! वर्षमें यह तेरी अलबेली बैस बीति जै है जो सुख सखिन को दे है सो अबहीं काहे नहीं देती है ? तू लड बावरी है हों अहीर ऐसी बूझैहौं तोको नाह सों सनेह कर नाहीं सों न कर। ये बातैं लडबावरी अहीरकी बहिरंग कहत ताते प्रकाश ।। अरु यह अलबेली वैस बीति जै है। सनेह नाहसों न कीजै। कहा कीजै यामें काकोक्ति। यह शृंगारको अंग शांत है ताते रसवत् अलंकार मुख्य जानियें ।।२२।।

नायकाको प्रच्छन्न श्रवण दर्शन ।। कवित्त ।।

लंघत है लोक लोक लीक नाउ लंघी जात, सबही तू समझावै तो हिं समझावैको। छोडन कहत तनतन कौन छूटै लाज, धननीतराख दोऊ कोविद कहावैको। शोचको संकोच हूकों पूरब पच्छिम पन्थ, केशोदास एकौ काल एकौ जन धावैंको। दुख सुख दूर दुरा दूर होते मेरे मन, जैसी सुनी तैसी तोहिं आंखिन दिखावैको ।।२३।।

नायका मनसों कहत कि तू मत विस्तार छोडन कहत अथवा तन छोडन कहत अथवा तन जे तेरे अन्तरंग बहिरंग तिनको छोडन चाहत। अरु लाज नाहीं छोडत। धन मीत देईराख पंडितको कहायो है। तैसे तू लोक लंघत अरु लीक नहीं लंघी जात तोते अरु यह शोच संकोचकी पूरब पश्चिम पन्थ है एक बेर एक जनि कौन धावै। ताते दुख अरु सुख दूर दुराइकै दूरते हे मेरे मन जैसी तैने कानते

सुनी हैं तैसी आंख ते क्यों न दिखावत यह दृष्टांत अलंकार है धननीत यह लोकोक्ति ॥२३॥

नायकको प्रकाश श्रवण दर्शन ॥ कवित्त ।

निपट कपट हरि प्रेमको प्रकट कर, बीसो बिसे बशीकर कैसे उर आनिये। कामको प्रहरशन कामनाकौ बरषन, कान्हको सकरषन सब जग जानिये। किधौं केशौराइ मनमोहनीको भूषन है, किधौं व्रजबालनिको दूषन बखानिये। सुनतहीं छूट्यो धाम बन बन डोलै श्याम, राधे तेरो नामके उचाट मन्त्र मानिये ॥२४॥

निपट कपट हिय प्रेमको प्रगट करनहार है कै बीस बिसे बशीकर है यह कैसे उरमें आनिये कि काम को उत्कर्ष रुष बढावन हार है कै कामना कै वर्षन हार है कैकाहूको कर्षनहार या कैसे उरमें आनिये कै मोहनीकी भूषन है कै ब्रजबालन को दूषण है जाके सुने श्याम घरछोड बन बन डोलत सो राधे तेरो नाम है कि उच्चाटन मंत्र है याते संदेह अलंकार दो तुकमें किधौं साक्षात् दोमैं लुप्त जैसे लुप्तोत्प्रेक्षामें मानों जनलुप्त है तैसेही सन्देहमें किधौं लुप्त होत अरु यामें ब्रजबालनको दूषण हरण है सो यह उपासनाको ग्रंथ नहीं श्रृङ्गार ग्रंथ है ऐसी अर्थ करेते दूषण है जात राधाके रूपको उत्कर्षता नहीं होती इहां जब सबके रूप को दूषण करै तब भूषण ॥२४॥

दोहा- दरसन रस रमनीयके, कहे परम रमनीय।
प्रकटन प्रेम प्रभाव अब, कहौं कछू कमनीय ॥२५॥

इति श्रीमन्नहाराजकुमारइन्द्रजीतविरचितायां रसिकप्रियायां चतुर्विधदर्शनप्रच्छन्नप्रकाशवर्णनं नाम चतुर्थः प्रकाशः ॥४॥

दर्शन प्रत्यक्षादि तिनको रस कहिये आनन्द रमनीय नाम दंपति के परम रमनीय सुन्दर कहे अब प्रेमको प्रभाव कहौंहौऐ दर्शन रमन रमनीनको अरु दर्शन रसरमनीनके यहभी पाठ है ॥२५॥

इति श्रीमन्महाराजधिराजकाशिराजश्रीराजश्रीमदीश्वरीप्रसादनारायणसिंहबहादुरस्याज्ञभिगामिललितपुरनिवासिहरिजनकवीश्वरात्मजेन सरदाराख्यकवीश्वरेण विरचितायां रसिकप्रियाभूषणे सुखविलासिकानामटीकायां दर्शन-वर्णनं नाम चतुर्थः प्रकाशः ॥४॥

अथ दंपतीचेष्टा वर्णन ।

दोहा- तियके चितकी जान सखि, पियसों कहै सुनाय ।
कहै सखीसों प्रीतिमें, आपुनते अकुलाय ।।१।।

तियके चित्तकी बात जानके सखी पियसों सुनायकै कहै सो सखी प्रीतिमें कही आपु अकुलाय कि सखी सखीसों प्रीतिमें कहै औ आप व्याकुल होय राधिकाकी किंवा नायक सखीसों कहै तौ प्रीतिमें व्याकुल होजाय आप ।।१।।

सखीको वचन नायकसों विरह निवेदना ।। सवैया ।

कािल्हकी ग्वारि तौ आजहु तौ न सम्हारति केशव कैसहुँ देहै ।
सीरी ह्वै जात उठै कब हूं जरि जीव रहै कै रही रुचि रे है ।।
कोरि बिचार बिचारति है उपचारनके बरसै सखि मेहै ।
कान्ह बुरो जिनमानौ तिहारी विलोकनमैं बिस बीसबिसे है ।।२।।

उक्ति सखीकी नायकप्रति ।। कै हे कान्ह काल्हि जबते तुम वाको देखो तबते आजु लौं देह नहीं सम्हारति है । रेहरेखा रेहारेख छंद शास्त्रमें एक है । कबहू सीरी होजाते कबहू जरउठत जीव रहौ कै रुचिकी रेहरेखि रही है ।। कोटिन विचार उपचारनके सखी मेह बरसावती तथापि नहीं उठत याते बीसबिसे तिहारी चितवनमें विष है यहां विषचितवनको रूपक है ।।२।।

नायकाकी सखीप्रति नायक अपनी बात कहत है ।। कवित्त ।

प्यासै ह्वै रही उदास भागी भूख गई त्रास, केशोदास नींदहूकी निंदा नित ठानी है । मतिको मतौ न लेय बिद्याकी बिदाई देय, शोभा सुकी सेइ सेइसब सुखसानी है। विषसो लगत गीतकेलिकीनपरतीत, प्रीति उरपाहुनीसी पचिपहिचानी है । तोबिनको कहै गाथ धीरजता लैके साथ, मोहिं को मिलावै हाथ लाजके बिकानी है ।।३।।

नायक बचन सखीप्रति । कि प्यास तौ तनते उदास ह्वै गई अरु भूख भागी त्रास गई अरु नींदकी निंदा भई है मेरी मतितैं मतो नहीं लेत अरु विद्या जो है ताकी बिदाई देत है सोभासुकी सेवकै सब सुखमें सनी है । सेजसूनी पाठमें सेजसूनी है अरु गीत विवसो मानत ।। अरु केलिकी तौ प्रतीतहू नहीं करत अरु प्रीति उरकी पाहुनी बरोबर पचिपचि पहिंचानी है ऐसो जो मेरो तन है जो बातें कीनी सो याकी गाथा तो बिन कहनहार है । या धीर्य्यता साथलै मोको हाथमें मिलावै जो बाला

जाके हाथ बिकानी है तुक प्रति जहां वरन की समता बारंबार आवै सो वृत्तानुप्रास अरु विषसो गीत इत्यादिकमें व्याघात जानियें ॥३॥

अथ चेष्टालक्षण ।

दोहा- पियसों प्रन्कटन प्रीति कहुं जितनै करत उपाय ।
ते सब केशवदास अब, बरणत सब न सुनाय ॥४॥

नायका जितनो उपाय अर्थ चेष्टा करै तामें यह जानी जाय कि तासों प्रियासों प्रीति प्रकट नहीं है ॥४॥

दोहा- जब चितवै पिय अनत हूं, तब चितवै निरशंक ।
जान बिलोकत आपुसों, अलिहि लगावै अंक ॥५॥

जब पियाकी दृष्टि अन्य ओर जाय तब आप निश्शंक देखन लगै अरु जब नायक वाकी ओर देखे तब सखीको अंकमें लगावै ॥५॥

दोहा- कबहूँ श्रुतिकंडु न करै, आरससों ऐंड़ाय ।
केशवदास विलाससों, बारबार जमुहाय ॥६॥

कबहूं श्रवण खुजलावै कभी आलस्यभरिके ऐंडाय अरु बिलासते बारम्बार जमुहाय ॥६॥

दोहा- झूठेऊ हँसिहँसि उठै, कहैं सखीसों बात ।
ऐसे मिसही मिसप्रिया, पियहि दिखावै गात ॥७॥

झूठे हँसिहँसिकै काहू बहानेते पियाको तिया अङ्ग दिखावै ॥७॥

दोहा- योंही पीय पियानि प्रति, प्रकटन अपनी प्रीत ॥
सो प्रच्छन्न प्रकाशकर, बुधिबल करत समीत ॥८॥

ऐसेही प्रीतम प्यारीसों अपनी प्रीति प्रकट करै कहूं चेष्टा छिपावै, अरु कहूं प्रकट करै ॥८॥

राधाजीको प्रच्छन्नचेष्टा ॥ कवित्त ।

चोरि चोरि चित चितवन मुँह मोरि मोरि, काहेते हँसत हिये हरष बढायो है । केशोरायकी सों तू जम्हाति कहा बारबार, विसिखाहमेरीवरि आरजोर आयो है ॥ [illegible]सो ऐंडात अति अंचल उठात उर, उघरि उघरि जात [illegible] छबि छायो है । फूल फूल भेंटति रहति उरझूलि झूलि, भूलि भूलि कहत [illegible] है ॥९॥

सब चेष्टा नायकाकी देख बहिरंगसखी कहति है कै तू कौन को चित चोरि चोरि मुँह मोरि मोरि चितवन इत्यादि चेष्टा कहत सो आजकहूँ कछू पायो है नायकको देख करत सो नहीं जानत ताते प्रच्छन्न स्वभावोक्ति अलंकार स्वभाव वर्णन ते बीरी खाय मरी वीर आरस ज्यों आयो है दूसरीतुकमें यहभी पाठहै उर उरज उघरिजात तीसरे चरणमें ऐसो भी पाठ है ॥९॥

अथ प्रियाजूकी प्रकाशचेष्टा ॥ कवित्त ।

मेरो मुँह चूमैं तेरी पूरी साध चूमबेकी, चाटै ओस आंशू क्यों री रातप्यास डाढे हैं। छोटे छोटे कर कहा छुवत छबीली छाती, छ्वावो जाके छ्वायबेके अभिलाष बाढे हैं॥ खेलन जो आई हौ तौ खेलो जैसे खेलियत, केशौरायकीसों तैंये खेल कौन काढे हँ। फूलफूल भेंटति है मोहिं कहा मेरी भटू, भेंटै किन जायजेव भेंटबेको ठाढे हैं ॥१०॥

बहिरंगसखी नायका की चेष्टा देख कहत है मेरो मुँह चूमै तेरी चूमनेकी साधन पूर है अरु कहूँ ओसचाटे प्यास बुझात है आंशू क्यों शिरात पाठ भी है तेरी जो छबिबारी छाती है तामें मेरे छोटे छोटे हाथ कहा छुआवत है वाही छुआवो जाके छुवाइबेकी अभिलाषहै खेलिबे को आई तौ खेल खेलौ ये कौन खेल निकासे हैं मोको काहेको भेंटति है जिनसे भेंट जे सामुहे खडे हैं यहां बहिरंग जानो याते प्रकाश अरु सूक्ष्म अलंकार लिखो सो नहीं नायकासों सखीवचन न होते तौ होतो ताते छिपी बात जनाई याते पिहित है ऐसी सवाई महाराज लिखी सो नहीं वामें भाव चाही यहां साफ कहत ताते विवृतोक्ति है काहेकै छपौ जो आशय सो प्रकट दिखायो विवृतोक्ति दो रीतिकी होत कहूं श्लेष सों कहूं साफ ॥१०॥

नायकाकी प्रच्छन्न चेष्टा ॥ कवित्त ।

छोरछोर बांधै पाग आरससों आरसी लै, अनतही आनभोंति देखत अनैसे हौ। तोरि तोरि डारत तिनूका कहौ कौनपर, कौनके परत पांय बावरे ज्यों ऐसे हौ ॥ कबहूं चुटक देत चटकी खुजावौ कान, मटकीयों डाउजुरी ज्यो जम्हात जैसे हौ। बारबार कौनपर देत मणिमालामोहिं, गावत कछूक कछू आजु कान्ह कैसे हौ ॥११॥

उक्ति सखीकी नायक प्रति ॥ बारबार पाग बांधत हौ अरु अनत चितवतहौ कौनपै तृण तोरत हौ कौनके पांय बावरेसे परतहौ कहा बार बार चुटकी दै दै कान खुजावत हौ कौन पैं मटकि [illegible] हौ काहें ऐसे जम्हातहौ भटकि एँडांत ज्यों

जुडी जम्हात भी पाठ है कौन पै बार बार मणिमाल देत हौ कछूको कछू गावत आजु तुम कैसे भये हौ सखी बहिरंग ताते प्रच्छन है स्वभावोक्ति अलंकार ॥११॥

नायककी प्रकाश चेष्टा ॥ सवैया ।

जालगिलां चलु गायन दै दिन नाच नचावत सांझ यहांऊं ।
केशवमंत्र करौ बश कारक हारिकयंत्र कहां लगि नाऊं ॥
हारि रहे हरिकेहूं मिली न मिलाउं जो जाहि तौ मांगसुपाऊं ।
ठाढीवेजाहु मिलौमिलबे कहँ और कहा कनियां करल्याऊं ॥१२॥

उक्ति सखीकी नायक प्रति ॥ जाके हेतु लुगाइनको लांच दई लांच नाम रुसवत लौंच भी पाट है अरु तुमको उन नाचनचाये अरु तुम बशकरन हेतु मंत्र करे अरु यंत्र करि हारे कहांतक गनांऊ तुम हारगये वह न मिली ताको हौं मिलाउती जो मुख मांगो पाउंती जाहु वे ठाढे हैं मिलौ और का कनिया कै लै आऊं यहांऊं विवृतोक्ति पूर्ववत बहिरंग सखी तैं प्रकाश जानलो ॥१२॥

अथ स्वयंदूतत्व वर्णन ।

दोहा- जो क्यों हूं न मिलै कहूं, केशव दोऊ ईठ ।
तौ तब अपने आपही, बुधि बलकरत बसीठ ॥१३॥

जो क्योंहू प्रकारते कहूं दोऊकी अर्थ नायक नायकाकी चेष्टा न मिलै अरु सखी दूती के मिलाये ते भी ईठ चेष्टा न मिलै अर्थ सखी आदिकते छिपावै तो तब अपने ते आपही बुद्धिके बसीठ दूतपन करै ॥१३॥

नायकको प्रच्छन्न स्वयंदूतत्व ॥ सवैया ।

दूरते देखबेको ह्वै दीन मनाइ हुती लिखहू लिख चीठी ।
देखे मिलौ मनहौं हु मिली मिल खेलबेहूंको मिली मति मीठी ॥
ऐसेमें ओर चलाइ है केशव कैसहूँ कान्ह कुमारि दै दीठी ।
लागै न बार मृणालके तार ज्यों टूटैगी लाल हमैं तुम्हैईठी १४

नायका नायकसों कहती है देखो दूरते तौ परस्पर चिट्ठी लिखी ताते अब मिले मन भी खेल हैं तब मति भी मिली जो ऐसे में कोऊ बालकी दीठि परजायगी तौ हम तुमसों मृणालके तार सी ईठ टूटजै है अभिप्राय यह रति करो चाही स्वयदूतीके यो रीति की होति यहां रतिहेत दूतपन कीनो. पठाईहुतीभी पाठ है गूढोक्ति अलंकार आशय गूढक है प्रश्न स्वयंदूती के लक्षण में यह है कि जहां

कोऊ न मिलै अर्थ सखी दूती आदि निकट न होय तहां आप दूतत्व करै बे पहिंचान पीयसों यहां पहिंचान है नायक अरु आन मिल्यो है नायक नायका पासही है यहां स्वयंदूतत्व कैसे ? उत्तर। नायका के स्वयंदूतत्वमें दो भाव हैं जो नायक निकट होय तौ आप काहू भांतिते संकेतस्थल जतावै दूसरो भेद नायक पासही होय संकोचवशते कुछ न कहिसकै कि नायकाके मन में न जाने का है तहां नायका सुरत स्वयंदूत करै यहां सुरत स्वयंदूत है संकेतस्थल नहीं, संकेतस्थलमें नायक आयके प्राप्त होत है प्रच्छन्न तो प्रसिद्ध ही है ॥१४॥

पुनःप्रियास्वयंदूतत्व ॥ यथा-सवैया ।

छुवो जनि हाथसों हाथ किये पलही पल बाढत प्रेमकला ।
न जानिये जीमें कहा बसिजाय चलै पुनि केशव कौन चला ॥
भलेही भले निबहै जो भली यह देखबहीकी हलाहु भला ।
विलौमनतो मिलबौय कहूं मिलबौ न अलौकिक नंदलला १५

उक्ति नायकाकी नायकप्रति ॥ एकान्तमें नायक नायका हैं सो नायक संकोचवश हाथ नहीं पसारत यह जान नायका कहत कि हमारे हाथसों हाथ मत छुआवो प्रेमकी कला हमारे उर बढतजात है नहीं जानिये फेर जीमें का आय जाय तब हम तुम्हारो का करसकि हैं जो भलाई में निब है सोई भली है यह देखिबे की हला भला तो है जो हमारो तुम्हारो मन मिलो है तब अब मिलबो अलौकिक नहीं अलंकार भाव पूर्ववत् ॥१५॥

प्रियाको प्रकाश स्वयंदूतत्व ॥ यथा-सवैया ।

धाइ नहीं घरदाइ परी जुरि आई खिला इकि आंख बहाऊं ।
पौरपै आवै रतौंधी इतैपर ऊंचो सुनैसु महादुख पाऊं ॥
कान्हनवेरहुयाउनयौंइनआंलिनको लगहौं बहराऊं ।
ये सब मो सँग सो वन आवैं कै मैं इनके संगसो वन जाऊं १६

अक्षरार्थ सुगम ॥ परन्तु सखी न जानै तो प्रकाश नहीं जानै तौ स्वयंदूती नहीं तहां यह स्वयंदूती के प्रच्छन्न प्रकाश में है कि एकांत नायकसों कहै सो प्रच्छन्न समुदाय में कहै सो प्रकाश ॥ अरु वचन विदग्धा स्वयंदूतीभेद प्रथम मिलाप सो स्वयंदूती दूती सो वचनबिदग्धा अलंकार पूर्ववत् अरु जहां स्वयं तत्त्व तहां यहीं अलंकार जानियें ॥१६॥

नायकको प्रच्छन्नस्वयंतत्त्व ।। कवित्त ।

आपनोई भाइकेये सोहत सरीक सेवे, केशोदास दास ज्यों चलतचित्त लीने हैं। आपही अटाउ कै ये लेत नाउं मेरो वे तौ, बापुरे मिलापके स ताप कर हीने हैं। प्रियाको सुनायकै कहत ऐसी घनश्याम, सुबलको लै लै नाम कामभयभीने हैं। साथ लै सखान अब जैबो बन छांडो हम खेलबेको संग सखा शाखा मृग कीने हैं।।१७।।

उक्ति अंतरग सखीकी अंतरंग प्रति कि देखकै कान्हको चरित्र आज नायककी बनमें बुलावन हेत ये उपाय नधि चलेजात ताकों सुनायकै कि हमारे साथ के सखा अपने भाइनके शरीक हैं उनहीं के दासकी रीति भयवान चलत हैं ।। आपु आनको बिगार करत हमारो नाम लगावत ऐसे बावरे मिलाप की सलापकर हीने भये हैं अरु सुबल अपने बलको नाम लेत कि हम ऐसे बली हैं कि साथमें सखन के जैबो हम छाडौ शाखामृग बानर सखा करे स्वबलको नाम वानर ते निकसत कि हमारे सखा प्राचीन वानर हैं सुग्रीवादि ।।१७।।

नायकाको प्रकाश स्वयंदूतत्व ।। सवैया ।

वनजैये चलौ को उठाली है केशव है तुमहीं तौ अरी अरहौ ।।
कछू खेलिये खेलन आवत आजहीं भूलो न भूलोगरे परहौ ।।
हित है हियमें किधौं नाहिं तऊं हित नाहीं हिये तौल लाल रहौ ।।
हमसों यह बूझियेऐसी कहौजो कही तु कही व कहा करहौ १८

प्रथम उक्ति नायककी कि बनजैये चलो तब नायका कहति कि कोऊ ठाली तौ नहीं ठाली नाम कोऊ बेकामकी हैं अरु ताही पदमें नायक को जातवत का हम बे मदनकी हैं हमहूं चाहती तब नायक न समझौ सो कही तुमहू हो जब नायका सखीनको जो यह बोध करत कि तू हमारो अरी बैरी है सो का अरि है लरि है अरु नायक प्रति का कोई हमारी अरि है शत्रु है जो एक है तब ना समझ नायक कही कछु खेल खेलिबेको बुलावत झगरा नहीं करन आवत सखिन समुझाबत कि हमैं नहीं अब नायक प्रति का आज नहीं आवत तब नायक न समुझी अरु कही कै ही तैं भूलो सो सुन सखिन प्रति कहत का काहू के गरे परिहौ नायक प्रति का मेरे गरे सों लगिहौ सो नायक न जाती हित है हीय है कि नहीं है सो सुनकहत सखीप्रति हित नहीं तौ लला काहू सों लरिहौ अरु नायक प्रति यह अर्थ लला आजु लरि हौ आजु बिहार करिहौ तब नायक न बूझी सो नायक सों कही हम सों यही बूझ ऐसे कहौ है यह सों यह भी पाठ है तब नायका सखिन प्रति

जो कही सो कही तुम का करिहौ अरु नायकप्रति जु कही सुही कही अब बकत रहिहौ चलो हम आवत हैं, यद्यपि यामें गूढोक्ति अलंकार है तथापि एकही शब्दमें हित अनहितवारी दोई बातैं हैं ताते तुल्ययोग्यता जानियें अरु जो उत्तर अलंकार को अर्थ कीजे तौ दु:संधान रस दोष होत है अरु नायक प्रथम वाक्यते नायकको स्वयंदूतत्व सखिन सामुहें ते प्रकाश ।।१८।।

अन्यच्च कवित्त ।

केशोदास घरघर नाचतफिरत गोप, एकरहे छकते मरेई गुनियत है। वारुणीकेबश बलदाऊभये सखासब संगको लैंजैये दुखशीशधुनियत है ।। मोहिं तो गयेई बनै देहदीपमाला पाय गायन संवारबेको चित्त चुनियत है। जो न बसौ लोल नैन लेरुवा मरहिं सब खरकखरेई आज सुनैं सुनियत है ।।१९।।

उक्ति नायककी नायकाको सुनायकै कहत है घर घर गोप नाचत अरु एके छकके मरेसे ह्वैगये अरु मदिराके वश बलदाऊ सखन समेत होगये या दु:खत शीश धुनियत है मोको तो जानेइ परैगो काहे दिवारीको दिन है गायनके प्रचारबेके अर्थ देखबेको और मै जो खिरकमें न बसों है चञ्चलनैनी तो ले रुआ नाम बछरू सब मरजायँ खरिकमें सूने सुनियत है प्रमाण गीतावली ललन लोनेरेरुवा अलंकार पूर्ववत् ।।१९।।

दोहा- ऊढा पुनि यहि भांति करि, बहुविधि हितन जनाय।
आपनहीं ते लाज तज, पियहि मिलै अकुलाय ।।२०।।

ऊढा नायका या रीतिते बहु विधिते हित को जनावै और आपुनते लाज तजके प्रीतमसों अकुलाय कै मिले ।।२०।।

कवित्त ।

पन्थन थकित पलमनोरथ रथनके, केशोदास जग मग जैसे गाय गीतमैं । पवन बिचार चक्रचक्रमन चित्त चढि, भूतल अकाश भ्रमै घाम जल शीतमैं। कोलौ राखों थिर वपु बापी कूप सरस महरि बिनकीने बहुवासरबितीत मैं । ज्ञानगिरि फोर तोर लाज तरु जाय मिलौ आपहि ते आप गाज्यो आप निधि प्रीतमैं ।।२१।।

उक्ति नायकाकी मनकी रीति बखानत नदीसों रूपक करिकै कि देखौ पन्थ राह थकत नहीं पलकहूं नदी अरु मनोरथ जो है ताहीके जे रथ जगमग कैसे होत जैसो गीतमें गाये अरु पवन औ विचार दोई हैं चक्र वा रथके अथवा पवन इनके

बिचार देख चकित होजात अरु मन जो है सो भी चकित होजात भू पृथ्वी आकाश में घाम जल शीत नहीं गनत अरु इनको वपु शरीर सों वापी कूप सर समकर कबलौं राखौं हरिके चरनते निकस बहु वासर ब्यतीत में ह्वैगये ज्ञानगिरिको फोरिकैं अरु लाजरूपी तरु तोरिकै आपही से आपगाज्यो आपनिधिरूपी प्रीतिमें यहां नदी रथ मनको रूपक ऊढा नायका है ॥२१॥

अन्यच्च ॥ तथा सवैया ।

जात भई सँगजातिलै कीरति केशव है कुल सों हित फूट्यो ।
गर्व गयो पुनि यौवनरूपको सो तौ सबै पल ही पल खूट्यो ॥
कान्हतिहारही आन किये कहौं नीकहि लाजसों ना तोई छूट्यो ।
छांड्यो सबै हम हेर तुम्हैं तुमपै तनकौ कपटो नहिं छूट्यो ॥२२॥

कीर्ति जो हमारी है सो जातिसमेत गई अर्थ यह कि पतिव्रताते व्यभिचारिणी भईं अरु जातिते गईं अरु कुलसों भी हित गयो अरु यौबन रूपको गर्व गयो यामें प्रश्न का नायकावृद्ध भई ॥ उत्तर । अपनसों बोली तब गर्व कहां ऊतो पलहीपल खोंटो भयो अरु हे हरि तिहारी शपथ कर कहत कि लाजसों तो नातोई टूटो हम सब छांड्यो पर तुम कपट न छांड्यो परकीया खण्डितामें भी लगावत हैं काहे नायक आनसों रमनकरि आयो है याते खोटो शब्द घटिगयो जाति अरु कीरति संग गई ताते सहोक्ति अलंकार ॥२२॥

दोहा- अधिक अनूढा लाजते, पियपै जाय न आप ।
कैहूं कै सखियों कहै, ताके तनको ताप ॥२३॥

अनूढा अधिक लाज ते पिया सों न बोलै ताको सखी जनावै ॥२३॥

सवैया ।

जानै को केशव कौने कह्यो कबकान्ह हमारे हिंडोरन झूलैट पानन खाइन पानी पियै तबते भरिलोचन लेत समूलै ॥ जाहु नहीं चलि बेग बलाय ल्यों लेहु सकेल कहां यह भूलै । वह काम कली कुम्हिलाय गये बहुरैं फिर फूलै ॥२४॥

उक्ति सखीकी नायकप्रति-कि नहीं जानत काहू कहिदई है कि कान्ह हमारे हिंडोरापर झूलन आवत तबते पय पान छोड आंखैं मूलतक वरूनीलों भरलेत ताते बलायल्यों बेगजाहु सकेल लेहु वाको भूलो जिस काहे वा कामतरुकी कली है जो कुम्हिलाय जैहै तो फेर न फूलिहै काकूक्ति अलंकार है । का फूल है न फूलि है ॥२४॥

प्रथममिलन स्थानवर्णन ।

दोहा- जनी सहेली धाइ घर, सूनै घर निसै चार ।
अतिभय उत्सवव्याधिमिस, न्यौंतो सुवन बिहार ॥२५॥

दासी सहेली धाईके घरमें औ काहू सून घरमें रात्रिसमयमें किंवा ऐसे मिलनके संचार प्रचार होय कतिभयतें कहूं छिपै तहां मिलन होय किंवा आप नायका डर संयुक्त होय ता समय मित्र आयकै उपचार करै अरु काहू उत्सवमें जाय व्याधिरोग के बहानेते और न्यौतेमें अरु सुन्दर बनमें मिलिकै बिहार करै ॥२५॥

दोहा- इनहीं ठौरन होत है, प्रथममिलन संसार ।
केशव राजा रंकको, रचि राखो करतार ॥२६॥

याही ठौर में मिलाप होत है प्रथम राजाको अरु रंकको यह कर्तार रचिराखो ॥२६॥

जनीके घरको मिलन ॥ कवित्त ।

वेषकै कुमारिका को ब्रजकी कुमरिकानि, मांण सांझ केशोदास त्रास पग पेलिकै । कामकी लतासी चल प्रेमपाससी अमल, राधिकाको बुद्धिबल कण्ट भुज मेलिकै ॥ दौरि दौरि दुरि दुरि पूरि पूरि अभिलाष, लाख भांतिके अनूपरूप बहु केलिकै । जनीके अजिर आज रजनी मैं सजनीरी, सांची कीन्ही श्याम चोरी मिहि चनि खेलिकै ॥२७॥

उक्ति सखीकी सखीप्रति ॥ कि आजु दासीके घर में सखिन यह काम कीन्हों हरिको कुमारी वेष बनाय सांझके मध्य त्रास खेल कामलतासी राधाके संग मिलाप कराय दयो अरु उन संग संग दौर दौर दुरदुरके अभिलाष पूर्ण करे लाख भांतिके अनंत रीति केलि करि रातमें सांची चोरि मिहिचनि श्याम कीनी ॥ यहां पर्यायोक्ति अलंकार है छलते इष्टसाधन कीन्हौं याते ॥२७॥

सहेलीके घरको मिलन ॥ कवित्त ।

नैननके तारिनमें राखो प्यारे पूतरीके, मुरली ज्यों लाइ राखो दशन बसनमैं । राखो भुजबीच बनमाली बनमालकर, चन्दन ज्यों चतुर चढाय राखो तनमैं ॥ केशोराइ कलकण्ठ राखो बलिकठुलाकै, करम करम कैहू आनी है भवनमैं । चम्पककली ज्यों सूंघि सूंघि काह देवतासी, लेहु मेरे लाल

इन्है मेलि राखो मन मैं ॥२८॥

अर्थ सुगम ढिठाईते कहत ॥ याते सहेली लुप्तोपमालंकार नयनतारिन में पुतरी करिराखो पुतरी उपमान नायका उपमेय याते बाचकधर्मलुप्ता अरु मुरली उपमान दशन बसन अधरनमें राखो ज्यों बाचक ताते उपमेय धर्मलुप्ता इत्यादि जानिये अरु कर्म्मक्रिया भी पाठ है ॥

धाईके घरको मिलन ॥ कवित्त ।

हँसत खेलत खेल मन्द भई चन्दद्युति, कहत कहानी अरु बूझत पहेली जाल । केशोदास नींद मिसु आपनै आपनै घर, हरै हरै उठि गई ग्वालिका सकल बाल ॥ घोर उठे गगन सघन घन चहूं दिशि, उठि चले कान्ह धाइ बोलि उठी तिहिं काल । आधी रात अधिक अँधरी मांझ जैहौ कहां, राधिकाकी आधीसेज सोइ रहौ नंदलाल ॥२९॥

अरु बालिका पाठ में बालक बालिका स्त्री उठाइबी नहीं गनको उठिबो अकस्मात ही भयो जो धाइको कहिराख्यो होइ यह यत्न ठहराओ जो बालक न उठते तौ धाइ सो कहती याते यह जानियें कि अकस्मात् इच्छा पूर्ण भई ताते यहां जो प्रहर्षण अलङ्कार लिखो सो नहीं काहे कै आगे सखी सब उठगईं ते जानतरही ताते गूढोक्ति होत धाइकै कहनेते कहां धाइ की इच्छा रही यह जो कोऊ कहै सो नहीं काहे सहेली तौ नींदबश गईं धाइकी ये बातैं सिखाइबो छलकरी इष्ट साध्यो ताते पर्यायोक्ति सोभी आहीं अरु धाइ जो कही सो अंधेरी रात जान ताते समाधि अलंकार है कि कार्य्य सुगम आनकारणते भयो घनकी अँधेरीते ॥२९॥

सूने घरको मिलन ॥ कवित्त ।

देखतेही चित्र सूनी चित्रशाला बाला आजु, रूपकीसी माला राधारूपक सुहायेरी । नूपुरके सुरनके अनुरूप तानै लेत, पगतलताल देत अतिमन भायेरी ॥ ऐसेमें दिखाई दीन्ही औचक कुँवर कान्ह, जैसे हैं ये गात तैसे जात न बतायेरी । केशोदास कहै परै अलज सलज सेन, जलजसे लोचन जलदसे हैं आयेरी ॥३०॥

उक्ति सखीकी सखी प्रति ॥ कि आज चित्र सूनो देखि कैसो चित्र है चित्रनी जो बाला है तासरूपकी मालासी राधारूपक जे सुहाये हैं तिन्हैं देख रूपकनाम ताल विशेष सो नूपुरके जे सुर हैं तिनके अनुरूप तानैं लेत हैं पगतल ताल देत

हैं मन भाये करतल भी पाठ है ऐसो समय समुझ औचक कान्हने दिखाईदई तब आन गात जैसे भये तैसे नहीं कहत बनत परन्तु जे जलज कमलसे लोचन रहे ते जलद मेघसे ह्वै गयै ॥ अर्थ ॥ आंसूनामा भी सात्त्विक ह्वै गयो। प्रहर्षण अलंकार जो चित्त चाहत रही राधा सो हरि मिलि गये ॥३०॥

निशिचारिको मिलन ॥ सवैया ।

एकसमै सब देखत गोकुल गोपी गोपाल समूह सिधाये ।
रातिन्हआई चले घरको दशहूं दिशि मेघ महा मढि आये ॥
दूसरौ बोलत ही समुझै कहि केशव यों छितिमें तम छाये ।
ऐसे मैं श्याम सुजानवियोगविदा कै दियो सुकिये मन भाये ॥३१॥

अरु कोई कहै उक्ति कौनकी काहे तहां तौ कोई देखत नहीं रहें तौ पीछे केशव कहि चुके जानै पीउ पिया कि सखी होय जु तिनहिं समान ताते दश दिशि मेघन जब छाय लीन्हों अरु बहुत रीतिके तम ह्वै गये एकै रात्रि दूजे बन तीजैं मेध तब सखी संग नहीं छोडो यह कहांते निकसत कि दूसरी बोलतही तैं जानोजात तौ आन चले गये सखी संग रही अलंकार समाहित काहे कि दैव जो तैं जा कार्य होत तहां समाहित होता है ॥३१॥

अतिभयको मिलन ॥ कवित्त ।

जानि आगिलागी वृषभानके निकटभौन, दौरि ब्रजवासी चढे चहुँदिशि धाइकै। जहाँ तहाँ शोरभारी भीर नरनारिनकी, सबही की छूटिगई लाज यहि भाइकै ॥ एसेमें कुँवरकाह सारी शुकबाहिरकै, राधिका जगाई और युवती जगाईकै। लोचन विशाल चारुचिबुककपोल चूमि, चंपेकैसी माला लाल लीन्ही उरनाइकै ॥३२॥

उपमा अलंकार है अरु दैवयोगते कार्य ताते समाहित इष्ट सिद्धि भयो बिन यतन ताते प्रहर्षण भी है ॥३२॥

उत्सवको मिलन ॥ कवित्त ।

बलकी वरसुगांठ ताकी रातिजागिबेको, आई ब्रजसुंदरी सँवारि तन सोनो सो। केशौदास भीर भई नंदजूके मंदिरनि, आधो मध्य ऊरध बचौ न काहूकोनोसो। गावति बजावति नचत नानारूप करि, जहाँ तहाँ उमँगत आनँदको औनो सो। साँवारेकी सूनि सेज सोवतहीं राधिकाजू सोये आनि

साँवरेऊ मानि मनगोनो सो ।।३३।।

औनो तालते जहां होई पानी जात ताको कहत हैं यहां राधा सेज अपनी पाई याते प्रहर्षण अलंकार बिन श्रम कार्य सिद्ध भयो अरु पर्यायोक्ति भी है नायकने सखीसों यह कहि राख्यो कि जब निद्रा नायकाको आवै तब हमारी सेज बताइयो यह छलते इष्ट साध्यो ।।३३।।

व्याधिमिसको मिलन ।। सवैया ।

शोधि निदान निदान दिये उपचार विचार किये न धिरानी ।
वेदकि शासन व्याधिविनाशन होमहुताशनहूनहि रानी ।।
केशव बेगिचलौ बलि बोलति दीनभई वृषभानुकि रानी ।
आयेहौ मेटि मरू करिकै बहुरे उनको वह पीरपिरानी ।।३४।।

उक्ति सखीकी नायक प्रति ।। कि शोधक निदान कारण बहुत दान कीन्हें अरु उपचार विचार बहुत करे न धीरी परी अरु वेदकी आज्ञाते अग्निमें होम भी करौ ताते बलिजाउँ बेगि चलो तुमको बुलावत है वृषभानुरानी दीनभई है अरु प्रथम ही मिलन कहौ केशवने दूसरो तौ चाहत है छलते ताते पर्यायोक्ति ।।३४।।

न्योतेके मिसको मिलन ।।कवित्त ।

न्योतेकै बुलाई दूती बेटी वृषभानुजूकी, जैबेको यशोदारानी आनि है श्रृँगारिकै । भोजनके भवन विलोकिबेके पान खात, ऊपर अकेली गई आनँद विचारिकै ।। देखति देखति हरिभावतेको भागी देखि, दौरि गही व्याल ऐसी बेनीडारडरिकै । भेंटि भरिअंक मन भायो करि छांड्यो मुख, केशरिसों माडिलीनी बेशरि उतारिकै ३५।।

उक्ति सखीकी सखी प्रति ।। कि हे सखी! आज यशोदाने राधा को बुलाय शृँगार करि भोजन कराइचुकी तब भवन देखिबे को राधा ऊपर गई सो तहां हरिको देखिकै भागी तिन दौरिके ताकी बेनी पकरिकै मनमानी कीन्हीं अरु बेशरि उतारि केशरिते मुख मांज्यो अभिप्राय यह कि राधा को अङ्ग केसरि सो है तामें रदछद नखछद न देखि परै अरु केसरि तौ अंगके रंग में मिलिगई याते मिलित अलंकार अरु बेसरि उतारिबेते सब गहना उतारे ताते लक्षित लक्षणा आपनो बेसर को अर्थ शहेरहौ अरु आन को ग्रहण करो व्यंग यह कि आनन जानी अरु क्रम नाहीं ताते असंलक्ष क्रमध्वनि अरु पर्यायोक्ति भी है बेसर उतारलईकी बहुत देरतक रहै यह छल ।।३५।।

वनविहारके मिसको मिलन ।। सवैया ।

दै दधि काल्हि गई कहिदैन पसारहु ओलिभरोपुनिफेटी ।
छाँडो नहीं मगछाँडो जु पाये छुडावै विलोकनि लाजलपेटी ।।
बातसम्हारि कहौ सुनिहै कोउ जानतहौ यह कौनकि बेटी ।
जानत हैं वृषभानुकि है पर तोहिं न जानत कौनकि चेटी ।।३६।।

बनमें चेटीशब्द व्यंग अर्थ है काहे चेटी घरमें चाहिये तहां हरि कही कि तोहीं हम नहीं जानत तू कौनकी चेटी है ? अर्थ । तेरी मालिक तौ दधि देवो चाहत काहे जबाब नहीं देत याते उत्तरालङ्कार है पहिली तुकमें देहरी भी पाठ है ।।३६।।

जलबिहारको मिलन ।। सवैया ।

हरिराधिका मानसरोवरके तटठाढे री हाथसों हाथछिये ।
प्रियके शिरपाग प्रियामुकताछर राजत माल दुहूनहिये ।।
कटि केशव काछनी श्वेतकसे सबही तनचंदन चित्रकिये ।
निकसे जनु क्षीरसमुद्रहीते सँगश्रीपति मानहुँ श्रीहि लिये ३७।।

सुगम अलङ्कार उत्प्रेक्षा ।।३७।।

अन्यच्च ।। सवैया ।

ऋतु ग्रीषमकी प्रतिबासर केशव खेलत हैं यमुनाजलमें ।
इत गोपसुता वहिं पार गुपाल बिराजत गोपनके दलमें ।।
अतिबूडत हैं गति मीननकी मिलिजाइ उठैं अपने थलमें ।
इहि भाँति मनोरथपूरि दुवोजन दूरिरहैं छबिसों छलमें ।।३८।।

सुगम पर्यायोक्ति अलङ्कार ।।३८।।

दोहा- यहि विधि राधारमणके, बरणे मिलन विशेष ।
केशवदास निवास बहु, बुधिबललीजहु लेख ।।३९।।

सुगम इति परकीया ।।३९।।

दोहा- और जु तरुणी तीसरी, क्यों बरणौ इहिठौर ।
रसमें विरस न बरणिये, कहत रसिकशिरमौर ।।४०।।

सुगम ।।४०।।

दोहा- प्रथम मिलन थलमें कहे, अपनी मति अनुसार ।

हाव भाव वर्णन करौं, सुनि अब बहुत प्रकार ।।४१।।

इति श्रीमन्महाराजकुमारइन्द्रजीतविरचितायां रसिकप्रियायां नायकनायिकाचेश्टादर्शनवर्णनं नाम पंचमः प्रकाशः ।।५।।

प्रथम मिलन थल पै कहे अब हाव भाव वर्णन करतहौं बहुत प्रकारते ।।४१।।

इति श्रीमन्महाराजाधिराजकाशिराजश्रीमदीश्वरीप्रसादनारायणसिंहबहादुर-स्याज्ञाभिगामिललितपुरनिवासिहरिजनकवीश्वरात्मजेन सरदाराख्यक-वीश्वरेण विरचितायां रसिकप्रियायां भूषणे सुखविलासिकानाम-टीकायां चेष्टादिमिलनस्थानवर्णनं नाम पंचमः प्रकाशः ।।५।।

भावलक्षण ।

दोहा- आननलोचनवचनमग, प्रकटत मनकी बात ।
ताहीसों सब कहत हैं, भाव कविनके तात ।।१।।

आननते नेत्रनते वचनते मनवारी बात जो प्रक्टै सो भाव कहावै शब्दको अर्थ तौ यह है अरु कोई कि भाव तौ मन अनुकूल विकार कहावत यह तौ अनुभाव है ।।१।।

दो०-जो देखै सुविभाव है, आपरूप अनुभाव ।। संचारी जो संचरै, थाई है थिरदाव ।। तहां ऐसी जानिये, कि यो आनन लोचन बचनते अपने मनकी बात जनावत है सोई भाव है वा मनकी बात भाव है अरु कोई कहै वचन काहे कहे तौ इहां विह्वल वचन हैं ।। रामायणे-"थके नयन रघुपति छबि देखे । पलकनहूं पर हरे निमेषे ।। अधिक सनेह देह भइ भोरी"।। अरु कोई कहै यामें तो चार चाहिये विभाव अनुभाव संचारी स्थायी यहां अनुभावमात्र काहे दिखायों तहां 'अनुभावी भावबोधकः' ऐसो अमरमें है ताते भावको बोध करता जतायो ।।१।।

दोहा- भाव सुपाँचप्रकारको, सुनु विभाव अनुभाव ।
अस्थाई सात्त्विक कहैं, व्यभिचारी कविराव ।।२।।

यामें कोई कहै कि पांच प्रकार कैसे तिलककार तौ चारही गनावत तहां सात्त्विक भाव अनुभावहीमें है भरतसूत्रमें चारही मानत विभावानुभाव व्यभिचारी संयोगाद्रसनिष्पत्ति अरु जो कहत कि मनवारीरीति सबमें चाहिये सो "विभावैर्ललनोद्यानादिभिरालंबनोद्दीपनकारणैः स्थायी इत्यादिको भावो जनितः। अनुभावैः कटाक्षभु जोत्क्षेपप्रभृतिभिः कार्यैः प्रतीतयोग्यव्यभिचारिभिर्निवेदादिभिः सहकारिभिरुपचितो मुख्यया वृत्त्या" ताते पिता पुत्र पौत्र परपौत्रको भाव यामें जानने ।।२।।

विभाववर्णन ।

दोहा- जिनते जगत अनेकरस, प्रकट होत अनयास ।
तिनसों विमतिविभाव कहि, वर्णत केशवदास ।।३।।

जिनते जगत् संसार में अनेकरस कहा नवरस कहिये प्रकट होत तिनको नाम विभावरसको कारण रूप सो विभाव ।।३।।

अथ विभावनामभेदवर्णनम् ।

दोहा- सो विभाव दोभाँतिके, केशवराय बखान ।
आलंबन इक दूसरो, उद्दीपन मनआन ।।४।।

सोई विभाव दो रीतिके एक आलंबन दूसरो उद्दीपन ।।४।।

दोहा- जिन्है अतन अवलंबई, ते आलंबन जान ।
जिनते दीपति होत है, ते उद्दीप बखान ।।५।।

यामें कोई कहै कि अतन शब्द शृंगार को कहत सो नहीं बनत काहे एक शृंगार मात्र रहिजै है ताते ऐसे कहा कि जिन्हैं पाइ अतन जो रस है सो अविलंब करै कहां जहां जबतक आलंबन नहीं तबलौं रस अतन है जैसे जीव देहको अविलंब पाय प्रकटत तैसेही रस आलंबन पाइ प्रकट होत है अरु कोई कहै कि रस नियतामें है देखौ रस तो नायकमें है अरु आलंबन नायिका है तौ नायिकामें रहो चाही तहां यह है कि नायिका नेत्रद्धार होइ हृदयमें वशकरै है तबतक रस है जब नायिका नहीं उरमें तब रस नहीं रहत जैसे रात्रिमें सोबत एकांत स्थानमें अरु एकै सुन्दरी आई ताहि देख शृंगार उपजौ अरु वही सुन्दरी आवत काहू कही जागत रहियो यहां एक पिशाचिनी आवै है तब भयानक ह्वैगयो तौ जबतक वा सुन्दरी हृदय में रही तब ता श्रृङ्गार रहो अरु जब भ्रम न दूरि हो हृदयमें पिशाचिनी आई तब भयानक ह्वै गयो अरु जो कहो कि उद्दीपनमें कहां सुन्दरी है तौ ताही आलंबनको दीपन करत है सो दो रीतिको है घनवन शरद बसंत एक यह है तौ दैवी कहावत अरु गेह वसनादिक मानुषी ऐसी रीति है ।।५।।

अथ आलंबनस्थानवर्णन ।। छप्पै ।

दंपतिजोबनरूपजातिलक्षणयुतसखिजन ।
कोकिलकलितवसंतफूलि फलदलिअलिउपवन ।।
जलयुतजलचरअमलकमलकमलाकमलाकर ।
चातकमोरसुशब्दतडितघनअम्बुद अंबर ।।

शुभसेजदीपसौगन्धगृहपानखानपरधानिमनि।
नव नृत्य भेदवीणादि सब आलंबन केशव बरनि ।।६।।

परधान पिछौरा बादर दुलही एक है सारी तथामें कोई प्रश्न करै कि जे उद्दीपन हैं आलंबन काहे कहे तहां यह अर्थ करत कि आलंबन ऐसे वर्णोका उद्दीपन सहित खाली आलंबन न चाहिये तौ यामें नायक नायिकाके रूपकी अधिकाई ना रहैगी दोहा-गहनेसे गहने परे, पिय पहिरन नहीं देइ। दृगन अंतरा डरनतै, करसे गहिगहि लेइ ।। विहारे दीपउजेरीहू हरतहरत बसन रतिकाज रही लपटि छबिकी छटन छनको छूटी न लाज अरु हमारो कियो चित्रचंद्रिका नाम विहारी सतसयीको तिलक है तामें अनेक अर्थ किये हैं इन दोहनको तामें ऐसो अर्थ है कि यामें मिलायकै पहिली तुकमें तौ आलंबन कहे अरु चारमें उद्दीपन अरु फेर कहिकै आलंबनके सब वरणे हैं का सब आलंबन सरस हैं सो देव मानुषी दोई हैं परंतु पराधीन हैं अब नायक नायिकाके अधीन जे उद्दीपन सो कहत हैं तीसरे चरणमें कमल मारुत कमलाकरभी पाठ है और चौथे चरण में तडितधनु भी पाठ अरु पञ्चम चरणमें पान गान भी पाठ है और षष्ठ चरण में वीणादि रव भी पाठ है ।।६।।

उद्दीपनवर्णन ।

दोहा- अविलोकन आलापपरि, रंभननखरददान।
चुम्बनादि उद्दीपये, मर्द्दनपरसप्रवान ।।७।।

देखो यामें घन वन आदिक नहीं कहे प्रश्न उद्दीपन छप्पै में कहि आये तौ दोहा मे फेर काहे कहे याते यह जानी जात कि वे आलंबन ही हैं उद्दीपन एक है छ:उद्दीपन अनंत हैं याते दोठौर कहे जो उद्दीपन अनंत हैं तो एकही दोहा कह्यो चाहिये नहीं तो अनेक दोहा कहते उत्तर-उत्तर छप्पै में उद्दीपन और तरहके और दोहा में और तरहके कहा छप्पे में जे उद्दीपन कहे ते बाह्यारूप हैं बाहर हैं चंद्र कोकिलादि अरु दोहामें जो कहे सो अंगही मात्रके कहे अविलोकन परिरंभ नखरद ये नायिकाके अंगते उपजत हैं याते न्यारी रीति कहे अरु येऊ कहे जैसे वस्त्र दो प्रकारके रेशमी और सूत्रके पर दोऊ में भिन्नता है तैसेही एक बाह्य और एक अंगी हैं याते अन्य दोहा में कहे यहभी कोई कहत ।।७।।

अथ अनुभाववर्णन ।

दोहा- आलम्बन उद्दीपके, जे अनुकरण बखान।
ते कहिये अनुभाव सब, दंपतिप्रीतिविधान ।।८।।

आलंबन अरु उद्दीपन जे अनुकरण हैं ते अनुभाव कहावत कहा जब

आलंबन नायक नायिका उद्दीपनं घनवनकोकिलादि जब देखे तब जे मुखपै आइजात ते अनुभाव कहावत हैं ॥८॥

अथ स्थायीभाववर्णन ।

दोहा- रतिहासी अरु शोक पुनि, क्रोध उछाह सुजान ।
भय निंदा विस्मय सदा, स्थाई भाव प्रमान ॥९॥

ये जो स्थाई आठ कहे नौ न कहे सो याते कि रस कौन कहावै जौन काव्य में अरु नाट्यमें होई यह आठ होत हैं शांतको जो स्थायी निर्वेद सो नाट्य में नहीं हो सकत काहे नाट्य में बहुत विषय हैं अरु काव्य एक विषयी है याते विकार नहीं हो सकत ताते आठ कहे सो कहियत है रति श्रृङ्गार रसको स्थायी है रति नाम प्रीति सोई जब खीरकी रीतिते होत है तब दधिवत रस होजात है इष्टइच्छाते उपजै मन विकार सो रात तहां कोई कहै कै इष्ट इच्छातें उपजी तौ संलक्ष क्रमध्वनि काहे नहीं कहत असंलक्षक्रमकोहगनी ताको उत्तर यह कि यामें प्रथम विभाव तब क्रम जाने अरु फेर अनुभाव पुनि संचारी पुनःस्थायी तक देहाध्यास रहत है जब रसको रूपभयो तब छूटिजात जैसे वीरमें रावणादिकको छूटिगये रामायणे "गरजो मरत घोर रव भारी । कहां राम रण हतौं प्रचारी" इत्यादि जानिये ताते असंलक्षक्रम व्यंग ध्वनि जानिये तामें जो दूध दधि को दृष्टांत दीन्हों सो नहीं बनत यामें जल बर्फवत कहो चाहिये जामें एक स्वादु रहै अरु कोई कहै है प्रीति तौ सबपै होति है सो नहीं मदन उत्साह संबन्धी जो प्रीति है सो स्थायी है अरु तहां कोई कहै कि प्रीतिते मदन संबन्धी सामान्य कि अनेकपै होत है तौ आलंबन एक काहे अनेक आलंबन कहो चाहिये तहां रस नहीं होत वामैं रसाभास हो जात यही रीतिते आलंबन आन जानलीजै ॥९॥

अथ सात्त्विकभाववर्णन ।

दोहा- स्तंभस्वेदरोमांचसुर, भंगकंपवैवर्ण ।
अश्रुप्रलाप बखानिये, आठो नाम सुवर्ण ॥१०॥

स्तंभ क्रिया न करिसकै वैवर्ण रूप बदलजाइ इत्यादि सुगम हैं इनको अनुभावही में मानत हैं ॥१०॥

अथ व्यभिचारीभाववर्णन ।

दोहा- भाव जु सबही रसनमें, उपजत केशोराय ।
बिना नियम तिनसों कहैं, व्यभिचारी कविराय ॥११॥

सब रसनमें नियमही नहीं उपजत है तहां कोई कहै कि हर्ष उद्वेग चपलता हास्यको नियत कीन्हों इत्यादि सो काहे तहां कालको नियम केशव कहो तहां कोई कहै कि कालको नियत तौ विभावादिकमें भी नहीं है तहां रहनेको नियम चाहिये तो रहने में रसकी पूरणता को समय जब होत तब सब क्रम छूटिजात याते संकल्प विकल्प नानारीतिक तेई संचारी जानिये तिनके नाम कहत ॥११॥

दोहा- निर्वेद ग्लानि शंका तथा, आलस दैन्यऽरुमोह।
स्मृति धृति व्रीडा चपलता, श्रम मद चिंता कोह ॥१२॥

निर्वेद वासनारहित ग्लानि अचाही बस्तु देखब शंका भावति वस्तु हान जानन आलस देह टूटब दैन्यता सुगम मोह सुमिरण सुधि आइबे धृति संतोष ब्रीडा लज्ज़ा चपलता श्रम चिंता प्रियवस्तु ध्यान कोह क्रोधमूल ॥१२॥

दोहा- गर्व हर्ष आवेग पुनि, निंदा नींद विवाद।
जडता उत्कंठा सहित, स्वप्न प्रबोध विषाद ॥१३॥

गर्व सबते अधिक मानबो हर्ष अनहोनी देख चित्तभ्रम आवेगा निंदा नींद सोइबो विवाद आनते करिबो जडता सब कर्मते सुन्न उत्कंठा आन वस्तु प्राप्त होत स्वप्न होत स्वप्न प्रबोध ज्ञान विषाद दुःख ते मनको घटिबो ॥१३॥

दोहा- अपस्मार मतिउग्रता, आशतर्क अतिव्याध।
उन्माद मरणम आदिदै, व्यभिचारी युतआध ॥१४॥

अपस्मार मिरगी रोगमति यथा ज्ञान उग्रता अपनेको उच्च जानब त्रास भय उन्माद बे विचार आधिमनकी व्यथा याही रीतिते सब सुगम है ये सब व्यभिचारी कहे तहां इनको विचार तहां स्थायीभाव तौ बीज मात्र है रसको विभाव कारण है रसके अनुभाव कार्य व्यभिचारी सहाय जानिये अरु सात्त्विक को अनुभावको इतनो भेद है सात्त्विक रसको ज्ञापक नहीं जैसे कंप स्तंभ भयो तो या नहीं जानीजात कि भयते कि क्रोधते भयो है याते न्यारो है अरु अनुभाव ते जानपरत याते भयो है याते रसके सब पांच अंग कहे ॥१४॥

अथ हावलक्षण।

दोहा- प्रेमराधिका कृष्णको, है ताते श्रृङ्गार।
ताके भाव प्रभावते, उपजत हावविचार ॥१५॥

राधाकृष्णको जो शृङ्गार है ताकी जो चेष्टा सोई हाव है ॥१५॥

दोहा- हेला लीला ललित मद, विभ्रम विहित विलास।
किल किंचित विक्षिप्त अरु, कहि बिब्बोक प्रकाश ॥१६॥

टीका सुगम ॥१६॥

दोहा- मोट्टाइत सुन कुट्टमित, बोधादिक बहु हाव।
अपनी अपनी वुद्धिबल, वर्णत कवि कविराज ॥१७॥

टीका सुगम ॥१७॥

अथ हेलाहाव लक्षण।

दोहा- पुरण प्रेमप्रतापते, भूलत लाज समाज।
सोहे लाजिहिं हरत हिय, राधा श्रीव्रजराज ॥१८॥

पूर्णप्रेम ते लाज छूटिजाय हियको हरै सो हेला ॥१८॥

अथ प्रियाजूको हेला भाव। सवैया।

अवलोकनि अंकुश ऐंचि अनूपमभ्रूयुगपासभलै गलमेली।
मृदुहास सुवास उठाय मिली बहुजोन्हकियामिनिमांझ अकेली॥
अधरारसप्याय किये वश केशवराय करी रसरीति नवेली।
वनमें बृषभानुसुतासुखही हरिको हरिलै गई हेलही हेली ॥१९॥

उक्ति सखीकी सखीसों॥ कि हे सखी! आजु राधाने यह चरित्र कीन्हो कि चितवन रूपी अंकुशते अपनी तरफ ऐंचिकै अरु भूरूपी फांसी गरेमें डारिकरि कोमलहास केवल उठाइ सुसुन्दर बारमें छिपाइ जोन्हकी यामिनि मध्य अकेली अरु अधरको रस प्याइ वश कीन्हों नवेली रस रीतिते सो बनमें वृशभानुसुता हरिको हेलाहेली लैगई यह अक्षरार्थ परन्तु तामें जो अधररसते वश कीन्हे सो ताको आशय यह कि सुधा को नाम मधु है अरु मदिराको नाम मधु है सो अधररसरूपी मदते मतमारे अब भये तब अरु यामें यह प्रश्न करत कि लाज न छूटी अरु ताको उत्तर करत कि लाज भूलीका सखी भूलि गई सों लाज समाजमें छूटब अन उचित है आपते लैगई यही बेलाज है यामें लोकोक्ति अलंकार हेलाहेली लोक कहनावति है॥ रामायणे॥ "जिहि जलनाथ बँधाये हेला" ॥ तामें श्लेषते हेलाहाव निकसो ॥१९॥

अथ नायकको हेलाहाव॥ सवैया।

बैन सुनाय बुलाय लई बनभौनभुलाइके भांति भलीको।
फूलगयो मनफूलो विलोकत केशव काननरासथलीको॥
अधरारसप्याइ कियो परिरंभन चुम्बनकै मुखकामकलीको।
हेलहि श्रीहरि नागरि आजु हरयोमन श्रीवृषभानुललीको २०

उक्ति सखीकी सखीसों ।। कि, हे सखी ! हरिने आजु बेणु बौंसुरी बजाय सुनाई भवन भुलाय भाँति भलीते भव भवन भुलाय पाठ है; नहीं तो बन काननमें पुनरुक्ति होयेगा अरु ताको मन न भूलगयो फूलनको देखि कानन बनथली देखी तब अधररस प्याय परिरम्भन कीन्हों अरु कामकलीको मुख आप चूमो रूप महामधु पान कराय कियो, परिरम्भन कामकली को ऐसो भी पाठ है. हेलाहेलीते हरि प्रवीणने राधाको मन हरलयो अलंकार शंका समाधान पूर्ववत् ।।२०।।

अथ लीलाहाव लक्षण ।

दोहा- **करत जहां लीलानको, प्रीतम प्रिया बनाय ।**
उपजत लीलाहाव तहँ, वर्णत केशवराय ।।२१।।

प्रिया पीय पीय प्रिया यह कहिये ऐसो रूप धारण करै तहां लीला कहिये करत जहा ललितानको भी पाठ है ।।२१।।

अथ प्रियाको लीलाहाव ।। सवैया ।

पायनको परिबो अपमान अनेक सो केशव मान मनैंबो ।
सीखो तो मोरखवाइबो खैबो विशेष चहूँदिशि चौंकि चितैबो ।।
चील कुचीलनि ऊपर पौढिबो पातनके खरकै भज ऐबो ।
आंखिन मूंदिकै सीखत राधिका कुञ्जनते प्रतिकुञ्जन जैबो ।।२२।।

उक्ति सखीकी सखीप्रति ।। राधा हहिरूप धर सकल लीला सीखत है पाँई पर पर अपमान सहि मान छुटाइबो पान खइबो खवाइबो सीठोभी पाठहै चितैबो चील कुचीलनको पैठबो पात खरकत भाजऐबौ आँखिन मूँदिबो लिखो सो नहीं यामें प्रथम समुच्चय जानिये बहुत भावते अरु जहां भाव सबलता होत तहां यही अलंकार होत है ।।२२।।

नायकको लीला हाव यथा ।। सवैया ।

झांकि झरोखनि में चढि ऊंचे अवासिन ऊपर देखन धावै ।
निंदति गोपचरित्रनको कहि केशव ध्यानकि कै गुनगावै ।।
चित्रित चित्रमें आपुनयों अविलोकन आनंदसों उरझावै ।
आंगनते घरमें घरते फिर आंगनवासरको बिरमावै ।।२३।।

उक्ति सखीकी सखीप्रति ।। कि हरि जो हैं सो नायिकाको रूप होयकै सब ताहीकी कला करत हैं झरोखन चढि चढि झांकत गोपनके चरित्र निन्दति इत्यादि सब पद सुगम हैं प्रश्न दिनको बिरमाइबो नाइबो नहीं संभवत दिन आप नहीं बिरमत

उत्तर वासरमें अपनेको बिरमावत स्वभावोक्ति अलंकार ॥२३॥

ललित हाव लक्षण ।

दोहा- बोलनि हँसनि विलोकिबो, चलनि मनोहररूप ।
जैसे तैसे वरणिये ललित हाव अनुरूप ॥२४॥

बोलतमें हँसनमें देखिबेमें अरु चाल मनोहर रूपमें जैसे होहिं तैसेही वर्णन में आवै अरु चातुर्यता जामें आवै सो क्रिया ललितहाव है ॥२४॥

नायिकाको ललितहाव यथा । कवित्त ।

कोमलविमलमन विमलासीसखीसाथ, कमला ज्यों लीने हाथ कमलसनालके । नूपुरकी ध्वनि सुनि भोरे कलहंसनके, चौंकि चौंकि परै चारुचेटुवा मरालके । कचनके भार कुच भारनि सकुचभार, लचकि लचकि जात कटितबालके । हरै हरै बोलत विलोकत हरेंई हरै, हरै हरैं चलत हरत मन लालके ॥२५॥

मरालके बच्चा चौकत ताते भ्रम अलंकार अरु स्वभावोक्ति भी है या कवित्तको अर्थ नारायणकविने कविप्रियाके तिलक में लिखो है याते इहां अर्थ सुगम करदयो है ॥२५॥

नायकको ललितहाव यथा ॥ सवैया ।

चपलापटमोरकिरीटलसै मघवाधनु शोभबढावत हैं ।
मृदुगावत आवत वेणुबजावत मित्रमयूरनचावत हैं ॥
उठि देखि भटू भरिलोचनचातकचित्तकी ताप बुझावत हैं ।
घनश्याम घने घनवेषधरे जुबने वनते ब्रज आवत हैं ॥२६॥

इहां सविषय सावयव रूपक अलंकार है जहां सम्पूर्ण अंग वर्णनमें आवै सो सविषय सावयवरूपक कहिये, इहां चपला पट किरीट धनु वेणु बजावत मित्र मयूर नचाइबो घनश्याम घनते जानिये ॥२६॥

अथ मदहाव लक्षण ।

दोहा- पूरण प्रेमप्रभावते, गर्व बढै बहुभाव ।
तिनके तरुणविकारते, उपजत है मदहाव ॥२७॥

पूर्ण प्रेम प्रतापभी पाठ है पूर्ण प्रेमके प्रतापते गर्व बढे अरु तरुणपनके विकारते मद उपजै और बहुभाव भी होय ॥२७॥

नायिकाको मदहाव यथा ॥ कवित्त ।

छबिसों छबीली वृषभानुकी कुँवरि आजु, रही हुती रूपमद मानमद छकिकै । मारहूते सुकुमार नंदके कुमार ताहि, आये री मनावनसयान सबनकिकै । हँसि हँसिसों हैं करि करि पांय परि परि, केशोरायको सों जब रहे जियजकिकै । ताहि समैं उठे घनघोरदामिनीसी धाइ, उरलागी घनश्याम तनसों लपकि कै ॥२८॥

अपनी छबिसों जो छबीली राधा है सो रूपके मदते अरु मानमदते छकीरही छलसोंभी पाठ है अरु रहीद्युतिरूप मदभी पाठहै ताको कामते सुकुमार हरि मनाइबेको बहुत बाण बनाय आये सो हंसके सौहैं करि पांय परके थकिरहे पांय परि कर जोर भी पाठ है प्रश्न-मद कहां रह्यो जब मिली उ०-पांयपरिबो आदि उपाय नायकने कियो तबतक नायिका गर्वमें रही न मानी जब घन उठी तब घनके उठत दामिनिसी उरमें लाग गई तो यामें सामर्थ्य ता दुख छुटाइबेकी अरु डर सूचित करायो ताते समाधि अलंकार है हेतु आनते कारज भये घनश्याम तन तकिकै अरु लौटिश्यामघन घनसों लपाटिकै भी पाठ है अरुसमाहित अलंकार केशवके मतते भी होत है ॥२८॥

नायिकाको मदहाव यथा ॥ सवैया ।

महिमोहिनिमोहिसकै न सखी चपला चलचित्त बखानत है ।
रतिकी रति क्यों हुं न कानकरै द्युतिचंदकलाघटि जानत है ।
कहि केशव और कि बात कहा रमणीयरमाहून मानत है ।
वृषभानुसुता हितमत्त मनोहर और हि डीठन आनत है ॥२९॥

उक्ति सखीकी सखीप्रति कि हे सखी! राधिकाको रूप निहार हरि औरको दृष्टि में नहीं आनत मोहनी महिमें मोहि नहीं सकत मनमोहनी भी पाठ है चपला चित्तकी चञ्चल है अरु रतिकी प्रीति कोई कान नहीं करत काहे काम जरेपर आप जीवत रही चन्द्र कला घटत है रमा अति रमनी नहीं ताते ऊरजस अलंकार यहां उग्रता भाव राधामें निंदा भी आन में सोई है अंग ॥२९॥

अथ विभ्रमहाव लक्षण ।

दोहा- बांकविभूषण प्रेमते, जहाँ होहि विपरीत ।
दर्शन-रसतनमनरसत, गनि विभ्रमके गीत ॥३०॥

वांकादि भूषण जहां प्रेमवशते उलटो पहिरिये अरु देखिबेते रसमें तनमन

रसित तदाकार होई सो विभ्रम ॥३०॥

नायिकाको विभ्रम हाव यथा ॥ सवैया ।

कटिके तट हार लपेट लियो कलकिंकिणि लै उरमें उरमाई ।
करनूपुरसों पगपौंचि बनी अँगिया सुधि अंचलकी बिरमाई ।
करि अञ्जन अञ्जित चारुकपोल करीयुत जावक नैन निकाई ।
सुनि आवत श्रीब्रजभूषणभूषणभूषितही उठि देखन धाई ॥३१॥

सुगम गरेको हार कटिमें लपेटो ताते असंगति अलंकार यह हावमें यही अलंकार होत है और ठौर यह कीजिये और ठौर को काम सुनिआवत श्रीव्रजभूषण भूषित हो अति आतुर देखनधाई भी पाठ है ॥३१॥

नायकको विभ्रमहाव यथा ॥ सवैया ।

नदनंदन खेलत हैं वनगात बनी छबि चंदनके जलकी ।
वृषभानुसुता हि विलोकत ही रुचिचित्तमें विभ्रमकी झलकी ॥
गिरि जात न जानत पान न खात बिरी करपंकजके दलकी ।
विहँसी सब गोपसुता हरिलोचन मूँदि सुरोचि दृगंचलकी ३२

उक्ति सखीकी सखी प्रति कि आज नन्दनन्दन खेल रहे, चन्दन चढाये तबतक वृषभानुसुता देखी तब सुधि भूलगई पान तौ गिर गये परन्तु कमल के पत्रकी बीरी खानलगे सो देखि गोपसुता हँसी तब आप लज्जा लै नेत्रमूंद तहां हे सखी का आछी दृगंचलकी रुचि भई अलंकार पूर्ववत् सरोजदृगंचल पाठ है ॥३२॥

अथ विहितहावलक्षण ।

दोहा- बोलनिकेसमयेविषे, बोलनदेइ न लाज ।
विहितहाव तासों कहैं, केशवकवि कविराज ॥३३॥

बोलिबेके समयमें लाज न बोलन देय ॥३३॥

नायिकाको विहितहाव यथा ॥ सवैया ।

मेरे कहे दहिये जु तऊ फिर ग्रीषम ज्यों हठकाठ दहौगी ।
पैरबो प्रेमसमुद्रपराये कराये किये कित क्यों निबहौगी ॥
हौंस मरैं सजनी सिगरीकबहूं हरिसों हँसि बात कहौगी ।

पीचितकीचित्रसारिचढीचित्रकीपुतरीभइकौलौंरहौगी ॥३४॥

उक्ति सखीकी नायिका प्रति कि मेरे कहे आप दहीयत है फिर पीछे आप अग्नि हैकैं हठरूपी काठको जराइ हौ पैरबो प्रेम समुद्रको परो सा पराय कहे कहांतक पैर निबहोगी सबरी सजनी हौंसन मरती हैं कबहूँ हरिसों हसिकै बात कहौंगी पीके चित्तकी चित्रसारी सेजपै चढि चित्रकी पूतरी भई कबलौं रहौगी यहां रूपक अलंकार पीयके चित्तका चित्रसारी में नायिका होकै रहो। प्रश्न हठतो काठ भये अग्निको ह्वै है उत्तर-अग्निरूप ह्वै नायिकाहठकाष्ठ जरावैगी। पुनःप्रश्न-चित्रकी पुतरीमें पुतरीपद उ०-यहां अंगुल्यानिर्देश जैसी यह चित्रकी पुतरी तैसी तुम कबलौं रहोगी? अर्थ जउ ह्वैकै मति रहो ॥३४॥

नायकको विहितहाव यथा ॥ सवैया ।

केशवराय सों आजु सखी वृषभानुकुमारि उराहनो दीनो ।
गारि दई अरु मारदई अरविंदनसों मनुके हितहीनो ॥
सीखदई सुखपाइ लई उरलाइ सुगन्ध चढाइ नबीनो ।
उत्तर देइको नंदकुमार कछू शिर नीचेते ऊँचौ न कीनौ ॥३५॥

नायिका धीराधीर है सो नायिका नायकको देख उराहनो दियो यह तो धीर अरु फेर गारि दई तुम अन्य संभोगी हौ अरु कमलके फूलकी मारदई मनहितते हीन कहे अरु सीख जो दई सो सुख मानिकै लई उरमें लगाई सुगंध नवीन चढायो पर नंदकुमारने शिरते ऊंचो न कियो अरु कोई ऐसो भी अर्थ करत कि सखी सखीसों कहत कि नायकने ये बातैं करी हैं सो यालिये उराहनो दीनो कि ऐसी बातैं निपट छिपी औरनके आगे क्यों कहत नायिकानके मानमें कहा कहा नहीं होत सो यहां सखीके आगे मुँह करके उराहनो दीनो हम कब ऐसो आचरण करो है यामें बहुत क्लिष्ट कल्पना होत है इहां असंगति अलंकार जानिये प्रीतमको प्यारी मारै है याते अरु काकोक्तिभी है ॥३५॥

अथ विलासहाव लक्षण ।

दोहा- खेलत बोलत हँसत अरु, चितवत चलत प्रकोश ।
जल थल केशवदास कहि, उपजत विविध विलास ॥३६॥

खेलतमें बोलतमें हँसतमें चितवनमें चालमें जहां प्रकाश जानो जाय अरु जल थल आदिमें बहुत तरहको विलास उपजै वहां विलास हाव कहिये ॥३६॥

नायिकाका विलासहाव यथा ॥ कवित्त ।

किलक अलक रु तिलक चिलकनि मिस, भौंहनमें विभ्रमनि भौनभेद दीनो है।
लोचननि शोचन सकोचनि नचावति है, दशनचमक हीचकित चित कीनो है।
मंदहास मुखबास अनियासदासकरि, लीने केशोराइजीय यद्यपि प्रवीनो है।
मोहनके तनमन मोहिबेको मेरी भटू, तेरो मुख सुखही अनंत ब्रत लीनो है ॥३७॥

उक्ति सखीकी नायिका प्रति कि हे सखी! तेरे मुखने मोहिबेको बहुत ब्रत लियोहै किलक दमके हैं अलक समेत तिलक चिलकन मिस होइकर अलि कपाटमें ललाट जानिये अरु भौंहनमें विभ्रम विलास जो है ताने भवन घर बनायो भेद देकर अरु लोचन नेत्र तिनको शोचडार संकोचयुत नचावत रहत हैं अत्र दशनकी जो चमक है तानेही चकित कीनो है अरु मंद हँसते मुखकी जो सुवास है ताने केशव जो हरि हैं ताको दास करलीनो है मोहनके तनमन मोहिबे निमित्त हे सखी! तेरे मुखने बहुत ब्रत लियो है यहां सबक्रिया करत में आई ताते विलास हाव अरु तिलक चिलक मिस बखानते कैतवापह्नुत अलंकार ॥३७॥

नायकको विलासहाव यथा ॥ कवित्त ।

जिन न निहारेते निहारबेको निहोरत, काहू न निहारे जिन कैसेहू निहारे हैं।
सुर नर नाग नवकन्यनके प्राणपति, पति देवतानिहूँके हियनि बिहारे हैं।
इहि विधि केशोरायरावरे अशेष अंग, उपमान उपजी विरंचि पचिहारे हैं।
रूपमदमोचन मदनमदमोचन हैं, तीयव्रतमोचनविलोचन तिहारे हैं ॥३८॥

उक्ति सखीकी नायक प्रति कि, हे लाल ! तिहारे लोचन जिन नहीं निहारे ते तौ निहारबेके लिये निहोरत रहत हम कैसे निहारि हैं ? अरु जिन काहुके नहीं निहारे अर्थ संसार छोड दयो तिन कैसे हूं कबहूं निहार पाये ? अरु सुर देव नर मनुष्य तिनकी जै नव कन्या तारा मंदोदरी आदिक तिनके तौ प्राणनके पति हैं अरु पति देवता जे हैं तिनके हियमें बिहार करनहार हैं कहा इनहीके ध्यानते पतिव्रत निब है तथा विधिते हे केशवराय ! रावरे आन अंगहैं जा विधि नेत्र हैं तिनही उपमा नहीं है आन विरंचि पचिकै हारि रहे रूपको जो मद है ताके मोचनहारे अरु मदनके मदके मोचन हारे अरु तीयव्रत मोचनहारे तिहारे नेत्र हैं इहां जिन नहीं निहारे तिनको ललचावत एक क्रिया जिन काह न निहारे तिनको दूसरी भी क्रिया पति देवतनके हीये बिहार तीसरी क्रिया इत्यादिते विलासहाव जो विलास है तामें निपुण परन्तु तीय मदमोचन जा कहे सो प्रथम पतिव्रतन के पीछे तहां दोष कोई कहै सो नहीं काहेको इहां काकोक्ति अलंकार है का तुम्हारेसे नेत्र इनके मधु घटावनहार ते तियान को मद मोचन हैं अर्थ मान मतिराखौ सब तीय आपहीते वश्य हैं अरु मोचन शब्द कैयो बार आयो ताते लाटानुप्रास भी है ॥३८॥

किलकिंचित हाव लक्षण ।

दोहा- श्रम अभिलाष सगर्वस्मित, क्रोध हरष भय भाव ।
उपजत एकहि बार जहँ, तहं किलकिंचित हाव ।।३९।।

श्रम अभिलाष गर्व स्मित कहिये मंदहास अरु क्रोध हर्ष भय इत्यादिक भाव जहां एकबार उपजैं तहां किलकिंचितहाव कहिये गर्वयुतभी पाठ है ।।३९।।

प्रियाजूको किलकिंचितहाव यथा ।। सवैया ।

कौने रसै विहँसै लखि कौनहिं कापर कोपिके भौंह चढावै ।
भूलति लाजभटू कबहूं कबहूं मुख अंचल मेलि दुरावै ।
कौनकि लेत बलाय बलाय त्यो तेरि दशा यह मोहिं न भावै ।
ऐसि तौ तू कबहूं न भई अब तोहिं दई जनि बाइ लगावै ।।४०।।

उक्ति सखीकी नायिका प्रति कि, तेरी दशा कैसी है आज कौने देख तेरे जे नेत्र ते रसमय होत हैं अरु काको देखिकर विहँसत हैं अरु कापै कोप कर कर भौंह चढावत है अरु हे बाल ! कौनकी बलाइ लेत है तेरी ये जो दशा है सो मोहिं नहीं भावती ऐसी तौ तू कबहूँ नहीं भई है दई तोहिं यह बाय न लगावै यामें क्रम लगाइबेको प्रयोजन नहीं परन्तु श्रमआदि सतभाव होत हैं कौने रसै यह अभिलाष १ विहँसै कौने लखिया में स्मित मंदहास २ भोहैं चढावै क्रोध ३ भूलति लाज यामें गर्वश्रम ५ काहे गर्व तौ यह ऐसा कौन है जाको देख लजात अरु श्रम घूँघट न डारबो मुख दुराइबो भय बलालेत हर्ष ।। प्र०-अरु कोई कहै यामें एक नायिका अनेक को देखत तौ रसाभास होत तहां उत्तर कि नायिका अनेक नायकनकै देख अनेक भाव करत है अरु अनेक भावते समुच्चय अलंकार ताते नायिकाको जो मान है ताको छुटावत यह वस्तु अरु किल निश्चय है जामें किंचित् थोरो तासों किलकिंचित कहिये अरु येभी कहत हैं ऐसो कोन है तासों सकुचत है अरु श्रम आलस्य तो घूंघट न करिबो मुख दुरायबो यह भय बलायलेतिमें हर्ष ।।४०।।

नायकको किलकिंचितहाव यथा ।। सवैया ।

ऐसि है गोकुलको कुलकी जिन दक्षिणनैन किये अनुकूले ।
खञ्जनसे मनरंजन केशव हासबिलासलता लगि झूले ।।
बोल झुकै उझकै अनबोलै फिरैं बिझुकेसे हिये महँ फूले ।
रूप भये सबके बिस ऐसे है कान्ह कहौ रस कौनके भूले ।।४१।।

उक्ति सखीकी नायकप्रति कि, हे लाल ! ऐसी या गोकुलमें कौन कुलवारी है याने आपके नैन दक्षिण आपने अनुकूल बनाये हैं खंजन से जो मनरंजन करनहार सो हासविलासरूप लतासों लगि झूल रहे हैं हारविहारभी पाठ है जो बोलत कोई तब तौ रोष करत अरु नहीं बोलत तौ उझकत हैं अरु फिरत है बिझुकेसे हृदयमें फूले रूप सबके बिसरनको ह्वै गये किंवा रूप सबके विषयी भये सो कान्ह कहौ तौ कौनके रसमें तिहारे नयन भूले हैं आन ओर नहीं देखत याते श्रम अरु हासविलास लताते झूले यामें स्मित ।। झकत बोले ते यामे क्रोध उझके अभिलाष बिझुके में भय फूले मैं हर्षरूप सबके विस भये ते गर्व अरु कोई कहै कि नायक सों ऐसी बात काहे कहत अप्रयोजन तौ यहां नायक मानी है ये बातैं स्वतः संभवीमें नायक मनाइबो वस्तु ताते समुच्चय अलंकार है ।।४१।।

बिब्बोक हाव लक्षण ।।

दोहा- रूपप्रेमके गर्वते, कपट अनादर होय।
तहं उपजत बिब्बोक रत, यह जानै सब काय ।।४२।।

रूपते और प्रेमके गर्वते जहां कपटवारो अनादर होइ तहां बिब्बोक हाव कहावै वारो रस उपजत है ।।४२।।

नायिकाको बिब्बोक हाव यथा ।। सवैया ।

आवत जानकै सोय रही हरुये हरि बैठि न जात जगाई ।
साहसके उर मध्यधरो करजागति रोमकि रोचि जनाई ।।
नीवि विमोचित चौंकि उठी पहिचान झुकी बतियां कहि बाई ।
बासर गाइ गंवार चरावत आवत हैं निशि सेजपराई ।।४३।।

उक्ति सखी की सखीसों। कि आज नायिका नायकको आवत जानिकै सोय रतब हरि हरुये बैठे जानिकै न जगाई अरु साहस करिकै उरमें हाथ धरो तब नायिकाके रोम उठि आये सो सात्त्विक जानी नीबी खोलन लगे सो जान आप चौंकिकर उठी पहिंचान झुकी का जानिकै रिसकरी वे भूले नहीं बतियां बाई कैसी कही जैसे बायमें बोलत कि वासरमें तौ गँवार गाय चरावत निशि में पराई सेज आवत अरु यहां जो कोई व्यर्थ दूषणवारो प्रश्न करै कि पहिले तौ जानके सोई पाछे पहिचान झूकी सो पूर्वापार विरोध है सो नहीं काहे जानकर झुकीझूमबो प्रेमके गर्वते अरु कपट अनादर के दिनमें गाय चरावत हृदयमें प्रीति यह कि दिन हमैं न वियोग चाहि अरु जो गँवार पद ग्राम कहत सो अर्थ नहीं पावै काहे नायिका

कहत वत्सर में गँवार गाय चरावत है गायको नाम गो गो नाम इन्द्रिय दिनमें गवांर सुख करत सो तुम आन स्त्रीपास रमे अरु यहां काहे बिब्बोक मैं तो कपट अनादर हैं अपराध नहीं है तौ यहां झुकनो नायिकाको बेकारण क्रोध कैसे होय ता निमित्त नायक झूंठ अपराध लगायो अनुमान अलंकार रोम उठै सात्त्विक जानो ॥४३॥

नायिकाको बिब्बोक यथा ॥ सवैया ।

एकसमै इक गोपिसों केशव कैसहु हांसिकि बात कहीं।
याकहँ तातदई तजि जाहि कहा हमसों रस रीति नहीं॥
को प्रति उत्तर देइ सखीदृग अंशुनकी अवली उमहीं।
उरलाइलई अकुलायतऊ अधिरातकलौ हिलकी नर हीं॥४४॥

उक्ति सखीकी सखीप्रति। एक समय एक गोपीसों नायकने हांसीको बात कही कि जाको पिताने तजिदई तासों हमसों कौन रस रीति है ? ताको प्रति उत्तर देबेकी कौन कहै नेत्रमें बहुत आंशू आये तब अकुलाय नायक उरसों लगाई परन्तु आधीरात तक हिलकी न रही अरु कोई ऐसे भी कहत जाको तात तुम्हारेने तुमको दई का जो साथ बिवाही ताको तुम तजौ तो ऐसे बचन न कहो चाही सो नायक ते कह्यो यामें रसभंग होत है अरु कोई कहत कि जाको दई जो वह निर्गुणी है ताको तुम्हैं विवाही यहां एक वचन है अनादर को अरु हमको न दई आपको उत्तम कहत तौ यहां कपटयुत नायिकाको अनादर न निकरि है यामें विशेषोक्ति अलंकार है। अंक लगायबो कारण है हिलकी रुकबेको सो नहीं भयो अरु तात शब्द दई या शब्दके सम्बन्धते अविधा मूल अविधा लक्षण॥ बहुत अर्थ करनहार जो शब्द सो आन के योग ते एक अर्थका नियम करै सो अविधा सों कहूं संयोगते कहूं वियोगते कहूं संगते कहूं विरोधते कहूं अर्थते कहूं प्रसंगते कहूं आनशब्द के साथते कहूं चिह्नते कहूं समयते कहूं देशते इत्यादि औरहू व्यंग प्रसंग पाय होत है जैसे लक्षण मुख्य षट्रीतिको है अरु फेर अस्सी रीति को होतहै निरूढी ८ उपादान १ श्वेत बाजी धावत श्वेत तौ निरूढ अरु बाजि धावत यह उपादान, उपादान जो परायो गुण गहै तो इहां अश्वग्रहण कीन्हों निरूढालक्षणलक्षणा २ कलिंगसाहसी कलिंग निरूढी साहसने जो आपनअर्थ सो पुरुषको दियो यह लक्षणलक्षणा अरु निरूढी सारोपाउपादान ३ अश्व श्वेत धावै हैं निरूढी सारोपा उपादान ४ कलिंग पुरुष युद्ध करैं हैं निरूढी उपादान लक्षणलक्षणा सारोपागौनी ५ ये तैल हेमन्तमें सुखद हैं निरूढी साध्य वसना गौनी ६ तैलान हेमन्तसुखद निरूढी लक्षित लक्षणा सारोपा गौनी ७ राजा गौडेन्द्र कण्टक सोधै है निरूढी लक्षणलक्षणा साध्य वसना गौनी ८ राजा कण्टक सोधै है यह आठ भेद तो

निरूढीके अरु प्रयोजनवतीके यह उपादान १ कुन्ता प्रविशात लक्षितखक्षणा२ नदीमें घर सारोपाउपादान ३ एते कुंत प्रवसैं हैं सारोपा लक्षितलक्षणा ४ आर्वलघृत उपादान लक्षितलक्षणा सारोपा प्रयोजनवती ५ एते राजकुमार गच्छत हैं उपादान लक्षितलक्षणा साध्यवसाना ६ राजकुमार गच्छै हैं लक्षितलक्षणा सारोपा ७ गौर्वाहीक लक्षणलक्षणा साध्यवसाना ८ गौर्जत्यति ते जे फल लक्षणहैं ते गूढ अगूढ व्यंग कर सोरह होतेहैं ते धर्मी धर्म गति ह्वै कै ३२ अरु आठ बिरूढी मिलत सब चालीस होते हैं ते पद वाक्य कर ८० भेद होत हैं जैसे ध्वनिके भेद अविवक्षित के २ ते पद वाक्यते चार होत ४ पदते अर्थांतर १ वाक्यते अर्थान्तर १ पदते अत्यन्त तिरस्कृत १ वाक्याते अत्यंत तिरस्कृत १ ऐसेअरु विवक्षित के ६ पदते विवक्षित १ अरु वाक्य ते विवक्षित १ पदैकते विवक्षित १ अरु वचनते विवक्षित १ वरण ते विवक्षित १ प्रबन्ध ते विवक्षित १ ऐसे ६ अरु शब्द शक्ति के २ शब्दते अलंकार अरु शब्दते वस्तुवाक्यते अलंकार १ अरु वाक्य ते वस्तु २ अरु सब अर्थ शक्तिके बारह १२ ते पदवाक्यते अरु प्रबन्धते ३६ अरु उभय शक्ति को १ तौ सब मिलकर ५१ ते एकते एक मिलायेते दो हजार छ:सै एक २६०१ होत हैं अरु संकर ३ रीतिको होतहै एक संशय १ अंगांगी १ व्यंजक १ अरु असंसृष्टकर चार गुण करनेते सब दश हजार चार सै बारह होत हैं १०४१२ ऐसे ही नायिका, धीरादि भेद ते ज्येष्ठा कनिष्ठा ते ६ ते मध्या अरु प्रौढाकर सब बारह होतहैं अरु स्वकीया ३ मुग्धा १ ते प्रोषित पतिकादि ते गुनौ तब १०२८सों उत्तम मध्यम अधमतैं ३०३०८४ ते दिव्य अदिव्य दिव्यादिव्य कर ११०५२ होत हैं ४४

अथ विच्छित्तहाव लक्षण ।

दोहा- भूषणभूषबको जहां, होहि अनादर आन।
सो विच्छित्त बिचारिये, केशवराय सुजान ।।४५।।

भूषण भूषिबेको अर्थ अलंकार पहिरिबेको जहां अनादर कहिये आदर न होय सो विच्छित्त कहावै ।।४५।।

नायिकाको विच्छित्तहाव । यथा ।। सवैया ।

तन आपने भावे श्रृङ्गार नहीं ये श्रृंगार श्रृंगार श्रृंगारै वृथाहीं ।
व्रजभूषण नैन हि भूख हैं जाकि सुतोपै श्रृङ्गार उतारे न जाहीं ।।
सब होत सुगन्ध नहीं तौ सुगन्ध सुगंधमैं जाति सुगंध वृथा हीं ।
सखि तोहिं तैं है सब भूषणभूषित भूषणतौ तुवभूषित नाहीं ।।४६।।

उक्ति सखीकी नायिका प्रति तनु आपने भाये श्रृंगारतिको शृंगार जे शृंगार

भाये हैं अर्थ नायिकाकी भावत है ते श्रृंगार तू श्रृंगार तू श्रृंगार करिन है ये श्रृंगार नहीं हैं जे तू श्रृङ्गारै है ये तौ वृथा हैं प्रथम तुकमें अक्षर अर्थ इतनो है तामें यह प्रश्न करत है कि नायक तौ श्रृङ्गार करत सखी रोकत तौ उलटो अर्थ लक्षणतें भयो नायिका भूषणअनादर चाहिये सो तौ पहिरत अरु सखी रोकत अरु लक्षणमें लिखी कि भूषण भूषबेको अनादर अरु दूसरो प्रश्न यह कि दूसरी तुकमें ऐसे सखी कहत कि तोपै श्रृङ्गार उतारे न जाहिं कहा ये तौ उतारे जात भूषण पर जिनकी ब्रज भूषण को चाह है ते न उतारे जाहिंगे सो यामें भूषण उतारे से लागैं हैं ॥ ऊपर पहिरत सो कही यह पूर्वपर अनमिल दोष लाग्यो उत्तर तहां ऐसो अर्थ कीजै सखी कहत है तन आपने भा तन आपने के मेंभा कहिये शोभा जो है ये श्रृङ्गार श्रृङ्गार कहावत हैं ये श्रृङ्गार श्रृंगार हैं अब जे श्रृङ्गार उतार धरे हैं तिनको ओर देखि कहत हैं नहीं हैं ये श्रृंगार श्रृंगारे अर्थ कि इन भूषननकी श्रृंगार ही पद नहीं ये गहने हैं ग्रहण करियें हैं ग्रहण करिबे लायक हैं लोक रीतिके बलसों जोई करै शोभा इनमें लक्षण नहीं और तनमें जो भा (शोभा) है सो केवल श्रृंगारही है अरु ये श्रृंगार श्रृंगारही नहीं कहा श्रृंगार पदहू है अरु ये गहने पद हैं याते ये तू उतार धरे सो भली करी कि उतारे न जायँगे जिनके भूषण व कहा चाह ब्रजभूषण के हैं यह अर्थ और स्तुति करत हैं सबस्तु होत सुगन्ध सुगन्ध मिलाये सों वह सुगन्ध जो है तामें तेरी सुभाय की सुगन्ध जात है कहा सब सुगन्धनको तेरी भाइकी सुगन्ध मिलिकै उनको सुगंध करै है और तोते भूषण आछे लगे हैं तू भूषण ते आछी नहीं लागत ॥ यह अर्थ तौ सबन कीनो परंतु इनते अक्षर को अर्थ न भयो अरु भूषण को पहिले अनादर करत फेर आदर देत ताते ऐसो कहिये कि जिनके तनमें भा शोभा नहीं है ते ये श्रृंगार श्रृंगारतो वृथा कहावें शोभावान् का श्रृंगार भी नहीं सोहत ॥ सूर । खरको कहा आरगजालेपन मर्कट भूषण अंग । अरु तू कैसी है कि ब्रजभूषण है नयननके भूषण अथवा तेरे अंग । ब्रजभूषण हरि तिनके भूषण हैं तौ तौ वै श्रृंगार करने लायक भी नहीं हैं अर्थ अति हीन है सब जगत् सुगन्ध ते सुगन्धवत् होत है अरु तेरो जो सुगन्ध है यामें जितनी सुगन्ध की जात है सो वृथा ह्वै जात तामें हे सखि तोहिमें है सब भूषणन ब्रजनाथ भूषित ताते भू पृथ्वी ताको जो तू खनत है अर्थ मान करै है सो तू भूषित नाहीं होत अर्थ मान छोडि नायक संग बिहार कर ॥ इहां सुगन्धकी अधिकाई बस्तु ते पञ्चम प्रतीप अलंकार है जहां उपमान व्यर्थ होइ तो पञचम प्रतीप इहां गहना सुगन्ध ब्यर्थ कीनो अरु सहज श्रृंगार श्रृंगारबो कविनिबद्ध तामें सखीकी उक्ति ताते कवि निबद्ध बक्ताकी उक्तिमें वस्तु में अलंकार अरु यामें जो हेतु अलंकार लिखो सो कारण कारज संगमें नहीं है काहे मान नहीं छाडो ॥४६॥

नायकको विच्छिन्नहाव ॥ यथा-सवैया ।

पान न खायन पाग रची पलटै पटचित्तकहांधरिकै ।
कंठ सिरी बनमाल मनोहर हार उतारि धरे अरिकै ॥
चन्दनचित्र निलोपि सुलोचन लीकबिलोकनि सो लरिकै ।
अंग सुभाइ सुवास प्रकाशित लोपिहौ केशव क्यों करिकै ॥४७॥

उक्ति नायिकाकी सापराध नायकप्रति कि तुम जो पान न खाये पाग न बाँधी चीर पलटौ कंठी बनमाल पुष्पहार उतारिधरे अरु चन्दन चित्र लोप लोचन लीकसों लरे सोतौ अच्छी करी चंदनचित्र कपोलनि लोपि सुलोचन अंजनसोंभरिकै यहभी पाठ है सब भूषणनको निरादर कीन्ह्यों पै गोजा आपके अंगकी स्वाभाविकसुबास है सो कैसे लोपी जायँगे व्यंगते यह जनावत वामें अनेकस्वेदकी बास है इहां स्वतःसंभवै है नायक सुवासते नायक अपराधवस्तु ते परसंख्या अलंकार जानिये ''परसंख्या इकथल बरजि दूजे थल ठहराइ'' सो इहां सब बातमें नायक अपराध बरजि सुबासमें ठहरायो अरु याको व्यर्थापत्ति कोई कहै होत सो नहीं, काहे? वामें एककौ जीति एकका निषेध चाहिये ॥४७॥

अथमोट्टायितहाव लक्षण ।

दोहा- हेला लीला करि जहां, प्रकटत सात्त्विकभाव ।
बुधिबल रोकतसो हिये, सो मोट्टायित हाव ॥४८॥

हेला कहिये लाजको बिसारिबो अरु लीला कहिये वेष बनायबो यह लीलाहेला है जहां सात्त्विकभाव उपजै ताको बुद्धिबलते रोकै अर्थ काहू बहाने ते छिपावै ताको नाम मोट्टायित है रोकत सोभी यह भी पाठ है ॥४८॥

नायिकाको मोट्टायितहाव ॥ यथा-सवैया ॥

खेलत हैं हरिबागे बने जहां बैठि तियारतिते अतिलोनी ।
केशव कैसहु पीठिमें दीठिपरी कुचकुंकुमकी रुचिरोनी ।
मातुसमीप दुराइ भले जिनि सात्त्विकभावनकी गति होनी ॥
धूरकपूरकि पूरि बिलोचन सूंघि सरोरुह ओढि उढोनी ॥४९॥

उक्ति सखीकी सखीप्रति । कि आज हे सखी हरिके बागे में राधाने अपने कुचके चिह्न देखे जो पूर्व आलिंगन कीन्ह्यों रहै किंवा नायिकाने पाछे ते नायककी पीठ सों आलिंगन कियोरहो केसरि अंगियाकी लगीही सो आपनी चिह्न देखि नायककी पीठमें नायिकाको सात्त्विक उपजो ताको का नीकी रीतिते छिपायो

कि कपूरते तौ नेत्रनको आंशू सरोरुहने कंज अरु वैवर्ण ओढ़नी ते रोमांच छिपाये या में भी नायिकाकी असक्तता स्वत: संभवीते वस्तु ताते युक्ति अलंकार यह है युक्ति कीनो क्रिया कर्म छिपायो जाय सो यामें जो सात्त्विक भयो सो आनन क्रियाते छिपायो अरु या कवित्तको तिलक हमारे शिष्य नारायणदास कविने कविप्रिया के तिलक में पूर्व लिख्यो है ॥४९॥

नायिकाको मोट्टायितहाव ॥ यथा-सवैया ।

भोजनकै वृषभानु सभामहँ बैठे हैं नंद सदा सुखकारी ।
गोपघनेबलवीर बिराजत खात बनाइ बिरीं गिरिधारी ।
राधिका झाकि झरोखन ह्वै कविकेशव रीझि गिरे सुविहारी ।
शोरभयो सकुचे समुझे हरवाहि कह्यो हरिलागि सुपारी ॥५०॥

उक्ति अलंकार वस्तु पूर्ववत् जो व्याजोक्ति लिखो सो नहीं हो । काहे ? यामें कहिकर दुराया ताते छेकापहुति जानियें "छेकाऽपहुति युक्तिकर, परसों बात दुराइ" अरु तीसरी तुझको ऐसो भी पाठ है ॥ राधिका झांकि झरोखे ह्वै झापसी लागि गिरे मुरझाय बिहारी ॥५०॥

अथ कुट्टमितहाव लक्षण ।

दोहा- केलिकलहमें शोभिये, केलि कलह पटरूप ।
उपजत है तहँ कुट्टमित, हाव कहत कविभूप ॥५१॥

केलिरूपी कलहमें जहां केलि कलह पटरूप रहै ॥ अर्थ यह कि प्रथम तौ केली केलिवत् रहै ॥ पुनि वही केलिशोभा देहि तौ जानौ वह कलह झूंठो जहां केलिको कलह झूंठी लगे कहा वह नहिं करिबेकी बात झूठी कपट को वस्तू है जे बातैं केलि अनकरबेकी हैं सो ऊपर की हैं मनमें केलि भाव है नहीं नहीं कहि भाजिबो ॥५१॥

प्रियाजूको कुट्टमितहाव ॥ यथा-सवैया ।

पहिले हठि रूठि चली उठि पीठि दैमैं चितई सखि तैं न लखीरी ।
पुनि धाइ धरी हरि जूकि भुजानतैं छूटिबेको बहु भाँति झखीरी ।
गहिकै कुचपीडनदंतनखक्षतबैरिनकी मर्य्यादन खीरी ।
पुनि ताहिको पान खवावत हैं उलटी कछुप्रीतिकि रीति सखीरी ॥५२॥

उक्ति सखीकी सखी प्रति ॥ कि हे सखि पहिले तौ हठरूठि चली मैं देखत रही तू नहीं यामें वाके भगबेकी नायक के पकरिबे की शीघ्रता सूचित करत कैसे

तू एक स्थान ही देखत रही परन्तु तू न देख्यो अरु जब धरी तब छूटिबेकि बहुभांति खसानी ताहि करिकर कुच नखक्षतसों पीड अरु दंतनसों भी बहुत पीडा दई यह कलह सो फेर कीन्हों अब ताको पान खवावत हैं ताते प्रीतिकी रीति उलटी है इहां स्वत: संभवीते नायिकाको डरिबो अरु नायिका को केलतामें नायिका कपट वस्तुते पंचम विभावना अलंकार जानिये काहे विरोधते कारज है किलक अलिक कवित्त औरको बनायो है ताते नाहीं लिख्यो ।।५२।।

नायकको कुट्टमितहाव ।। यथा-सवैया ।

देखतही जिहिं मौन गही अरु मौन तजे कटुबोध उचारे ।
सौं ह कियेहुन सौं हैं कियो मनुहारकरेहुन सूधे निहारे ।।
हाहाकै हारि रहे मनमोहन पाँई परे जिन्ह लातनि मारे ।
मण्डतु है मुँहताहिको अंक लै है कछु प्रेमके पाठनियारे ।।५३।।

उक्ति सखीकी सखीप्रक्षत ।। आजु जब हरि आये तब प्रथम राधा मौन अरु भई जो बोली तौ कटु अरु उन शपथ दई तौभी मनु सोहैं नहीं किया अरु मनुहार करेहू सूधी न निहारी अरु हाहा करिकै हारगये जब पांइपरे तब लातनिमारे ताको अंकमें मुँह धरि करि अब मुख माडैं हैं ताते प्रेमके पाठ न्यारे हैं कहिबे योग नहीं यामें जो कोई प्रश्न करत है नायकको कुट्टमित हाव नहीं होत काहे नायिकाकों मान करो नायक कपट राखा अनचाहिबो कढो देखतही कटु बोल कहे अरु मौन गही तौ नायिकाका हाव है नायक को नहीं केलिकलह होत अरु अन चाहिबो दिखावै रतिको तौर नसमुझै तहां उत्तर करत हैं कि नायकको गुरुमान है, नायिका लोक लीक उल्लंघन कर नायकको अनादर कियो ताते यह गुरु मान उपजो सो आगे मान वर्णन में कहैंगि -''लोक लीक उल्लंघि कटु त्रिया कहै कछु बैन। उपजत है गुरु मान तहँ प्रीतमके उर ऐन ।।'' सो नायिका नहीं मौन गही अरु कटु वचन कहे अरु नायिका सौं हैं करो पर आप सौं हैं न भये मनुहार करे पर भी सूधे नहीं हेरे तब नायिकाकी सखी उत्तर देत दो तुकमें नायककी सखीके बचन सुनिकै कहा पाँइ परे मान नहीं रहत इन तौ निपट अति करी लातनमारे यही लोक लीक उल्लंघन तब प्रियकी सखी कही जो ऐसो जापै कियो होइ सो कबहू न बोलै येतो मंडन हैं मुँह तो ताहीके अंकमें लेकै तब नायक की सखी कही प्रेमके पाठ न्यारे हैं सो रसाभास हो जात अरु महा कलेशते अर्थ होत ।। यामें केशवको अभिप्राय यह है केलिकी कलामें कलहरूप केलि सोहे तो नायकामें नख रद कर नायक पीडा दई अरु नायकमें नायिका पीडा दई का लातनमारे नायिका नहीं नहीं करत

रही नायक अन्य नायिकाके चिह्न बनाइल्याये झूठे कपटयुत तब तो नायिका पाछे समझ मुँह अंकमें धरो इहांई नायकको पांइपरबो नायकाके चरण प्रहार यह कविनिबद्ध है तामें वक्ता सखीकी उक्तिते वस्तु अलंकार पूर्ववत् अरु कोई उत्तरालंकार भी कहत हैं ॥५३॥

अथ बोधहाव लक्षण ।

दोहा- गूढभावके बोध जहँ, केशव समुझत कोइ।
तासों बोध कहावयों, कहत सयाने लोइ ॥५४॥

गूढभाव को बोध काहू और समुझे ॥५४॥

नायिकाको बोधहाव ॥ यथा-सवैया ।

बैठिहुती वृषभानुकुमारि सखीनकि मण्डलिमंडि प्रबीनी ।
लै कुम्हिलानो सो कञ्ज परीइकपांयन आइ गुवारि नवीनी ॥
चन्दनसों छिरकी वहवा कहँ पानदये करुणारसभीनी ।
चंदनचित्रकपोलनलोपिकै अञ्जनआंजि बिदाकरि दीनी ॥५५॥

उक्ति सखीकी सखीप्रति ॥ कि हे सखी ! आजु राधा सखीन में बैठीरही तहां एक सखी कुम्हिलानो सो कमल लै पाइँ न परी ताको चन्दन ते छिरक करुण तापै कर पान दये अरु चंदनको चित्र मिटाइ आंजनआंज बिदा करदई यामें कुम्हिलाने कंजते वाने नायककी दशा सूचित करी कि तुम बिन मुरझात हैं अरु याने चन्दन छिरको हम शीतलकरि हैं अरु चन्दनको चित्र कपोलको लोपो हम चंद अस्त भये आइ हैं फेर चित्र नवीन बनाइदयो ब्रजचंद पै अञ्जन आंजत हमारे दृगनमें हैं। प्रश्न-यामें कोई कहै फेर चित्र कहाते निकसे ? तौ वाको चन्दन लगायो अञ्जन आंज्यो तौ शृंगार कीन्ह्यों तब का चित्र मिटाइ दयो सब सखी जानेंगी नहीं याते चित्रभी नवीन कीनो अरु यह भी जताई कि तुम्हारे श्यामरूप हमरे नेत्रनमें बसतु हैं। प्र०-इहां दोउनको बोधभयो प्रिया को बोध कैसे। उत्तर-प्रथम प्रियाको है याते प्रियाको बोध जानियें ऐसो जो कोई कहै सो नहीं होत काहे तहां एक बात रहिगई कि सखीन काहे न जानी सखी तौ प्रवीन हैं जो न जाने तौ मूर्ख सखी चाहिये तहां कविको यह आशय कि वाने कमल दै पाइँपरे हम आप के पाइँपूजत हैं तब राधा सब शिंगार करे हमहू तिहारो पूजन करि हैं सखी न जानी यह नवीन मत है ताते प्रीति दोहुन ने बढाई इहां चन्दनमें चन्द अंजनमें तम कविनिबद्ध है तामें सूक्ष्मालंकार ते नायक सखीको बोध करवो यह वस्तु है ॥

सूक्ष्म पर आशय लखै करै क्रिया कछु भाइ ॥५५॥

नायकको बोधहाव ॥ यथा-सवैया ।

सखि मोहनगोप सभामहँ गोविंद बैठे हुते द्युतिको धरिकै ।
जनु केशव पूरणचन्दन सैचित चोर चकोरनको हरिकै ॥
तिनको उलटो करि आन दियो किहुँ नीरज नीरे भये भरिकै ।
कहि काहे तैं ने कुनिहारमनोहरि फेरे दियो कलिका करिकै ॥५६॥

उक्ति सखीकी सखीप्रति ॥ कि गोप सीमें जहां हरि रहे चन्दवत् आप चकोरवत् सब चित्त करैं तहां काहू सखाने नयो जलभरी कमल दयो सो उनने कली करि फेरि दयो यामें गोप गण यह जानी इन फूल नयो जलभरि दीन्ह्यों वरषाऋतु सूचितकरी काहे बरषामें गोप बहुत सुखी रहत अरु उन कली कर दई हम मुदित भये अरु बोधक यह कि तुम बिन वह रोवत तब इन कलिका करी हम रात्रिमें आइ हैं नये जलको आशय यह अब पावस आई मुलाकात कम हुइ है यमुना बढजै हैं किंवा नम्रता सों कहा ल्याई शिर नीचो करिकै नेक निहारिकै कली करि दयो याको यह आशय नायकने आपनी प्रीति जनाई कमल देखिकै कि तुम्हारे नेत्र कमल हमारे नेत्रमें बसत हैं अरु देख रहने ते आसक्तता सूचित करी बस्तु अलंकार सूक्ष्म पूर्ववत् "सखी सोहत गोप सभा महँ गोविंद" भी पाठ है॥५६॥

दोहा- राधा राधारमणके कहे यथाविधि हाव ।
ढिठई केशवदासकी, क्षमियो कवि कविराव ॥५७॥

इति श्रीमन्महाराजकुमारइन्द्रजीतविरचितायां रसिकप्रियायां
राधाकृष्णहावभाववर्णनं नाम षष्ठ: प्रकाश: ॥६॥

राधाके अरु राधारमण कहैं श्रीकृष्ण चन्द्रके कहे नाम वरणन करे यथा विधिते हावको सो ढिठाई हमारी है कविनके राव क्षमा करियो ॥५७॥

इति श्रीमन्महाराजाधिराजकाशिराजश्रीमदीश्वरीप्रसादनारायणसिंहबहादुरस्या-
ज्ञाभिगामिललितपुरनिवासिहरिजनकवीश्वरात्मजेन सरदाराख्यकवीश्वरेण
विरचितायां रसिकप्रियायां भूषणसुखविलासिकानामटीकायां
राधाकृष्णहावभावर्णनं नाम षष्ठः प्रकाशः ॥६॥

अथ अष्टनायिकावर्णन।

दोहा- ये सब जितनी नायिका, वरणी मति अनुसार।
केशवराइ बखानिये, ते सब आठ प्रकार ।।१।।

ये सब नायिका जो पूर्व वर्णन कर आये ते सब आठ प्रकारकी होती है ।।१।।

दोहा- स्वाधिनपतिका उत्कला, वासकशय्या नाम ।
अभिसंधिता बखानिये, और खंडिता वाम ।।२।।

स्वाधीनपतिका १ उत्कला कहिये उत्कण्ठिता २ वासकशय्या नामा ३ अभिसंधिता नाम कलहांतरिता ४ और खंडिता ५ वाम कहिये नायिका ।।२।।

दोहा- केशवप्रोषितप्रेयसी, लब्धाविप्र सुजान ।
अष्टनायिका ये सबै, अभिसारिका बखान ।।३।।

प्रोषित प्रेयसी कहिये प्रोषित पतिका ६ और विप्रलब्धा ७ येही अष्ट नायिका अभिसारिका सहित ८ होती हैं और प्रवत्स्यत्पतिका अरु आगतपतिका ये दोई प्रोषितपतिका में अन्तरभूत होती हैं ।।३।।

स्वाधीनपतिका लक्षण ।

दोहा- केशव जाके गुण बँधो, सदा रहै पतिसंग ।
स्वाधिनपतिका तासुको, बरणत प्रेमप्रसंग ।।४।।

जाको कहिये जो नायकाके गुणमें बन्धिकै कहिये बश होइकै सदा सर्वकाल एति संगमें रहै सो स्वाधीनपतिका है तेहिके प्रेम प्रसंग को बरणत हौं ।।४।।

प्रच्छन्नस्वाधीनपतिका ।। यथा-सवैया ।

केशव जीवनजो व्रजको अरु जीवहुते अतिबापहि भावै ।
जापर देव अदेव कुमारिनि वारत माइन बार लगावै ।।
ता हरिपै तू अहिरकि बेटी महाउरपाइझवाँइ दिवावै ।
मैंतो बची अब हासि नहीं अस और जु देखै सोऊ तरु आवै ।।५।।

उक्ति सखीकी नायकाप्रति ।। कि ऐसे जो हरि हैं ब्रजजीवन अरु जीवतैं पिताकों पियारो इहां कोई कहत कि पिताको पियारो पाछे कहो ब्रज प्रथम दोष होइ है जो ब्रजको प्रथमसो आपने बापकै प्रिय तहां ऐसो अर्थ अति बाप सबको बाप ब्रह्मा ताको जो भावै है तातहि भावै भी पाठ है अरु देव अदेव कुमारी जापै निवारत रति प्रीति ताको निबा मा लक्ष्मी अरु सूर्यवार बहुलगावै है ऐसे हरिपै तू अहीरपुत्री होकै पांइ झवाँवत महाउर लगवावत है मैंतो भली बची हांसीत परंतु

आनदेखि हैं अरु तुमते बूझि हैं तौ तुमको का उत्तर आइ है अर्थ न आइ है इहांका आइ है जहां काकोक्तिअलंकार अरु कोई कहै कि प्रेम गर्वितासों स्वाधीनपतिकासों कहाभेद तौ सखी की उक्तिते स्वाधीन पतिका नायिकाकी उक्तिते प्रेमगर्विता अरु जबजब गर्वकी रीतिते कहैं तौ गर्विता अरु अधीन मात्रमें स्वाधीनपतिका ''में तो चली अब हांसी नहीं सखी'' यह भी पाठ है ॥५॥

प्रकाश स्वाधीनपतिका ॥ यथा-कवित्त ।

चोलिके सोपान तोहिं करत समारबोई, मुकर ज्यों तोहिं मांहँ मूरति समानी है ॥ तैं हिं त्रिय देवता पै पायौ पतिकेशोराइ, पतनी बहुत पति देवताबखानी है ॥ तेरे मनोरथ रथभगीरथ पाछें पाछैं, डोलत गुपाल मेरो गंग कैसो पानी है। ऐसी बात कौन जु न मानी सुन मेरी रानी, उनके तौ तेरी बानी वेदकेसी बानी है ॥६॥

उक्ति बहिरंग सखी की नायिका प्रति ॥ नायिका आन सखीन की बात सुन सुन कि सखी सों कही कि नायकको तु बरजी ऐसे अधीन न रहैं यामें हमारी हांसी होति है सो सुन सखी जबाब देतहै कि चोलीके सोपान तो सम्हारत अरु मुकुर सम तोमैं बसत अरु आप त्रिय देवता हैं जैसे त्रियपति देवता बहुत बखानत कहे तेरो जो मनोरथ रूपी रथ है सोई भगीरथ रथ है ताके पथ पीछे गंगासो फिरत है परन्तु ऐसी कौन बात है जो न मानि है परन्तु जो बात न मानि है उनके तेरी वाणी वेदवाणीसी है अरु यामें कोई कहै कि पूर्वापार विरोध होत है कि वेदवाणीसी मान फेर न मानी है तहां कोई कहै कि वेद न मानो तो वेदइष्टीनाहीं मानत जो मैं कहोंगी न मानि है यामें चोली के पानमें उपमा भगीरथ रथमें रूपक वेदवाणीमें लुप्ताको संकर है ॥६॥

अथ उत्का लक्षण ।

दोहा- कौनहुं हेतन आइयो, प्रीतमजाके धाम ।
ताको शोचति शोच हिय, केशव उत्काबाम ॥७॥

कोई कारण ते प्रीतम घरमें न आवै ताके शोचते जो शोचित होय सो उत्का नायिका है ॥७॥

अथ उत्का प्रच्छन्न ॥ यथा-कवित्त ।

कैधों गृहकाजकै न छूटत सखा समाज, कैधों कछु आज ब्रतवासर बिभात तैं।

कैधों गृहकाजकै न छूटत सखा समाज, कैधों कछु आज ब्रतवासर बिभात तैं। दीन्हों तैं न शोध किधों काहूसों भयो विरोध, उपजो प्रबोधकिधौं उर अवदाततैं। सुखमैं नदेहकिधौं मोहीसों कपट नेह, कैधौं देखि मेंह अति धरे अधराततैं। किधौं मेरी प्रीतिकी प्रतीति लेत केशोराइ, अजहूं न आये मत सूधो कौन बाततैं ।।८।।

उक्ति नायिका की सखीप्रति ।। गृहकार्यते न आये कि सखा समाज नहीं छोडोगयो कि कोई व्रतको दिन है कि काहूते विरोध भयो कि कोई ज्ञान बोध भयो उरमें कि देहसुखमें नहीं कि मोते कपट स्नेह करि पत्नी के गये कि वर्षाते डरे कि मेरी प्रीतिकी प्रतीतिलेत अबैंलों न आये मन कौन बात में सूधो भयो जो मोहिं त्यागे मनसों कहत याते प्रच्छन्न दीन्हों तै न शोध यातें अंतरंग सखी जानीजात अथवा दिन तैं आज शोध नहीं संदेह अलंकार ।।८।।

प्रकाश उत्का ।। यथा-सवैया ।

सुधि भूलि गई भुलये किधौं काहुकि भूलेइ डोलत बाट न पाई।
भीत भये किधौं केशवकाहुसों भेंटभई कोई भामिनि भाई।।
आवत हैं मग आइ गयो किधौं आवहिगे सजनी सुखदाई।
आये न नन्दकुमार विचारि सुकौन विचार अबार लगाई।।९।।

अर्थ सुगम। सजनी सो सुखदाई खुशामद करि ताते बहिरंग है सन्देहालंकार पूर्ववत् ।।९।।

वासकशय्या लक्षण ।

दोहा- **वासकशय्या होइसो, कहि केशव सविलास।।**
चितै रहै गृहद्वारत्यों, पिय आवनकी आस।।१०।।

सो वासकशय्या होइ है कहि केशव सविलास विलासयुक्त होयकै गृहके द्वारते पिय आवन की आश लगाये चितवत रहै। ''चितबै रतिगृह द्वार'' पाठ है ।।१०।।

प्रच्छन्नवासकशय्य ।। कवित्त ।

चंदनविटपवपुकोमलअमलदल, कलितललितलता लपटीलवंग की। केशोदास तामें दुरीदीपकी शिखासी दौरि, दुरावत नीलवास द्युति अंगअंगकी ।। पौन पान पक्षी पशु शब्द जित तित होत, तित तित चौंकि चौंकि चाहै चोपसंगकी। नंदलाल आगम विलोकै

कुञ्जजाल बाल, लीन्ही गतितेही कालपंजर पतंगकी ।।११।।

उक्ति अन्तरंग सखीप्रति ।। सखी कै आजु नायिका कुंजमें यह रीतिते है चंदन के वृक्ष ताको वपु शरीर तामें जे हैं कोमल अरु अमल दल पत्र तासों लिपटरही है लता लवंग की तामें दुरी है दीपकी शिखासी दौर आसार सो नील वसन दुरावत है द्युति दरशत नीलवास भी पाठ है कि पवनते अरु पक्षिनते पशुते शब्द जित तित होत है तित तित चाहभर देखत है काहे चोप लागी है जाको प्रीतम संग की सो नंदलालको आगमन विलोकै है कुंजनके जालमें बाला ता समय पिंजरे के पक्षी की गति ह्वैरही है का इतते उत जात उतते इत यहां दीप उपमान नायिका उपमेयसी वाचक दुरत नाहीं धरमते पूरण उपमा जानिये किंवा चन्दनकी कुंज नील वासमें अंग दुराइबो जातिवर्ण है ताते जात्यलंकार भी है ।।११।।

प्रकाश वासकशय्या सवैया ।

भाषत है सुखबैन सखी सहुलास हिये अभिलाषन जो है।
कोमलहासनि नैनविलासनि अंगसुवासनिकै मन मोहै।।
मूरतिवंत किधौं तुलसीतुलसीवनमें रति मूरति को है।
कुञ्जविराजति गोपवधूकमलाजनुकुञ्जकुटीमहँ सोहै।।१२।।

उक्ति बहिरंग सखी की सखी प्रति ।। कि यह को है सुखके वचन सखी सों कहत अरु अभिलाष भरि बैन सखीन सों यह भी पाठ है अरु हासविलास सुवासते मन मोहत है अंग प्रकाश भी पाठ है मूरतिवन्त तुलसी है वृन्दावनमें रतिकी मूरति याके सामुहे कहा है कि कमला है यहां आन मैं सन्देह कमला मैं उत्प्रेक्षाको संकर है ।।१२।।

अथ अभिसंधिता लक्षण ।

दोहा- मान मनावतहू करै, मानदको अपमान।
दूनो दुखता विन लहैं, अभिसंधिता बखान।।१३।।

मानकरै जब मानद नायिका मनावै तब न मानैं दुःख याते एक नायक अपगध लगायो अपमान करिबो दूसरो वियोग ते जुदा होनो ।।१३।।

प्रच्छन्न अभिसन्धिता ।। यथा-कवित्त ।

बारबार बोले जब बोल्यो नाहिं बालशतू, बालक ज्यों बोलिवेको कतबि ललातु है। ज्यों ज्यों पांइपरे त्यों त्यों पाँइनतै पीनभयो, होत

कहा अबकिये माखनत्यों गातु है ।। केशोदास सब छांडि कियो हठही सों हेत, ताहू छोंडि जियजिये विन कहा जातु है । ऐसे व्यारीपियहिसों मान्यो न मनायो तब, ऐसी तोहिं बूझिये तू पादे पछितातु है ।।१४।।

नायिका अपने मन सों कहत कि जब नायक बारबार बोले तब तुम न बोलह बालिश नाम मूर्ख अब बालक की रीतिते बोलनहेत काहे बिललात बिलखात है बोल्यो न बुलाये जबभी पाठ है जब वे पाँइपरे तब तो पाथर ते पीन जबर भये अब तेरो करो कहा होत है भा शोभा गातकी खनेते सब बिसारि हठ सों नेह कीन्हों अब ता हठको छाँडि तुम जीय जियत तौ तिहारो आगे कहां जैहौ सब सुखको दात ऐसो प्यारों तासों मनायो न मानौ तौ अब कहा बूझि पाछेते पछितात है यामें बालस बालकतैं वृत्तानुप्रास है अरु जियतें कहत यातें प्रच्छन्न ।।१४।।

प्रकाश अभिसंधिता ।। यथा-सवैया ।

पाइं परेहु त प्रीतमत्यों कहि केशव क्योंहुं न मैं दृग दीनी ।
तेरी सखी शिष सीखी न एकहु रोषहीकी शिष सीख जुलीनी ।।
चंदनचंदसमीरसरोज जरै दुखदेह भई सुखहीनी ।
मैं उलटी जुकरी विधिमो कहंन्याइ नहीं उलटी विधि कीनी १५

उक्ति नायिकाकी बहिरंगसखी प्रति ।। नायक पाँइपरेहूमें दृष्टि न दई अरु तेरी सीख एक न सीखी कोपकी सब सीखखीझ रोषहीकी शिषभी पाठ है अब जे चन्दनादिकतैं देह जरतहै तौ जो मैं उलटी न्याइकरी बे अपराध रिसाई मनावत न माने ताके निमित्त सब विधि उलटी ह्वैगई जाते सुख होतरहो ताहिते दुख होन लागो विरोध कारजते पांचयों विभावनालंकार ।।१५।।

खण्डितालक्षण ।

दोहा- आवन कहि आवै नहीं, आवै प्रीतम प्रात ।
ताके घरसो खंडिता, कहै सुबहुविधि बात ।।१६।।

यामें प्रश्न प्रात आयेते यह तौ जानी रात और ठौर रहेहैं पर स्त्री पासरहे यह कैसे जानिये रहिबेको ठौर उत्सवादिअनेकहैं और ग्रन्थनहूंमें कह्यो पर स्त्री चिह्नधर प्राप्त गेह आवै यह शंकाकरि कोई उत्तर कीन्हयों कैआनको प्रीतम होइकै आवै सो यामें प्रीतम आप न आनकीनहूं पदते नाहीं निकसत अरु दूसरे जो प्रात आवै तो खंडिता होइ कदाचित् अर्द्ध रातमें आवै तौ न होइ ताते याको उत्तर

यह कि आवनकी बेराके प्रात आवै का वह बेरामें न आवै अरु ताके घर कहेते आन घरते आवे अरु सो बहुविधि बातकहैं नाना तरहके वचन सुनावै अरु कोई कहे कि बाततें नाहीं चिह्न सूचिततौ सुखवारी बात एक होत दुखवारीहू एक होत यामें सब तरहकी कहै दुखवारी सुखमें दुखवारी आदर अनादरवारी ''तासों कहिये खंडिता कहै रोषसों बात'' भी पाठ है ॥१६॥

प्रच्छन्न खण्डिता ॥ यथा-कवित्त ।

आंखिनजो सूझतनकाननतैं सुनियत, केशोराइ जैसे तुम लोकनमें गाये हौ। वंशकी बिसारी सुधिकाकज्यों चुनत फिरौ, जूठे सीठे सीथ शठई ठढी ठठाये हौ ॥ दूरि दूरि करत हूं दौरि दौरि गहो पांइ, जानौना कुठौर ठौर जानि जिय पाये हौ। काकोघरघा लिबेको बसेकहांघनश्याम, घूघूज्यों घुसनप्रातमेरे गृह आयेहौ ॥१७॥

उक्ति नायिकाकी नायकप्रति ॥ तौ खंडिता तीनप्रकारकी होति है उत्तमा मध्यमा अधमा तहां अधमा नायिका कहत कि ऐसे आंखते सूझत तैसे काननते भी नाहीं सुनिपरत जैसे तुम लोकनमें गायेहैं अरु लोकलाज दुरैबेमें गायेहौ तुम आपनवंशकी सुधि विसारिकरि काककी रीतिसे जूंठेसीथ चुनत फिरतहौ शठकी ईठ चेष्टी ढीठ होइ करी है हम दूर करत तुम दौरि पांइँ परत ठौर कुठौर नाहीं जानत कौनको घर घालिबेको रात बसे प्रात घूघूकी रीतिते मेरे घरघुसन आये इहां उपमा अलंकार जानिये काक घूघूमें नायिका एकांतते प्रच्छन्न ॥१७॥

प्रकाश खण्डिता ॥ यथा-सवैया ।

आजु कछू अंखियां हरि औरसी मानो महावर माहँ रंगी है।
मेरी सौंमोसहु मानहु बेगि हिये रसरोषकी रीति जगी हैं ॥
मोहन मोहीसी लागति मोहिं इतेपर मोहनमोहि लगी हैं।
मेरे वियोगके तेज तची किधौं केशव काहके प्रेम पगी हैं ॥१८॥

उक्ति नायिकाकी नायक प्रति ॥ कै हे लाल आजु आपुकी आखैं औरसीभई हैं मानौं महावर माहँ रँगी हैं हमारीसौं हमसों मानहुं वेगि शीघ्र हियेमें रस अरु रोषकी रीतिमें जगी हैं अरु मोहनी मैं मोहीसी मोहिं लागती हैं तथापि मोहन हे मोहन मोकों लगी हैं सो ये मेरे वियोगके तेजमें तपरही हैं कि आनके प्रेममें पग रही हैं यामें कोई प्रश्न करै कि जानत तौ है कि पर घर जागे हैं फेर ऐसे वचन काहे कहत संदेह कारेकै कि रसरोषकी रीति रँगी हैं अरु मोहूं मोहन लगी हैं यह

असाधारण धर्म कहांते कढ्यो ताको यह उत्तर कीन्हों कि अरुणाई नेत्रनकी देखि चंदन पंकज बंदनकी जाहीर है सो नाहीं कही महावर कही याते रति सूचित कराई तहां ऐसो न कहो चाही याको उत्तर यह है कि नानिका प्रौढा है सो सर्व बात जुगतिके साथ कहै है कि हे हरि आजु आँखें और हैं नितकी नहींका परसक्ति हैं मानो महा श्रेष्ठ रंगते रँगी हैं अर्थ कुञ्चित ते रँगी मोसों तौ मेरी सौंह करत अरु मानो तुम हृदयमें रोषरसकी रीति ते जगी हैं अर्थ मुखको नेह हृदय कपट मोहन मोह नहीं है मो मेरेही ऐसी मोको लागती है जैसो मेरो उर दुखित तैसी ये दुखित हैं। इतनेई पै मोहन मोकोननवेके मारवेके मोहमें लागी हैं का अपराध भरीसामुहे होती हैं सो मेरे वियोग दीवेके तेजमें तचीकि आनके प्रेममें पगी हैं यामें स्वत:संभवीमें संदेहालंकारतैं नायक अपराध वस्तुताते संलक्ष क्रम धुनि जानिये ॥१८॥

प्रोषितपतिका लक्षण।

दोहा- जाको प्रीतम दै अवधि, गयो कौनहूं काज।
ताको प्रोषित प्रेयसी, कहि बर्णत कविराज ॥१९॥

जाको प्रीतम अवध दैकरिकै काहू कार्य निमित्त जाय ताको प्रोषितप्रेयसी कहिये ॥१९॥

प्रच्छन्न प्रोषितपतिका ॥ यथा-सवैया।

केशव कैसहुँ पूरवपुण्य मिल्यो मनभाव तौ भागभर्‍्योरी।
जानैको माइ कहाभयो कैसहुं औधिको आधिकद्यौसढर्‍्योरी ॥
ताकहँ तू न अर्‍्यों हँसि बोलै जऊँ मेरो मोहन पाइँ पर्‍्योरी।
काठहुते हठ तेरो कठोर इतैं विरहानलहून जर्‍्योरी ॥२०॥

यामें कोई कहै कि पति विदेश में चाहिये अरु यहां सामुहे है बतावत तो प्रोषितपतिका के लक्षण में नहीं मिली है तहां ऐसो अर्थ करत कि वह दिन जादिन पति आवन कहिगयो सो दिन आयो तब सखी कहति है कि कैसहू कौनहू पुण्य ते यह दिन भागभरो पायो को जानै माई कहा कैसहू अवधि को जो अधिक दूरि दिन रहो सो पायो अरु अधिक कछु लगि गयो तौ कहाभयो तेहि दिनको तू हँसि नाहीं बोलत है जऊँ मेरो मोहन पाइँपरोंकी मोहन मोसों कहिकर गये कि याको खुशी राखबी ताकें निमित्त मेरे पांयन परे सो काठ तैं तेरो हठ कठिन है कियते विरहानल में न जरो वह दिन आयो आजु हँस्या बोल्यो चाहिये यह अर्थ जो

कोइं कहै तहां दूसरो कहत कि यह अर्थ अच्छा नहीं बनत कहि मोहन मेरे पाँइ परो यह वर्तमान है तब उनकही सखी कहत है मेरो मोह तेरे नाहिं जो तू मेरी बात नहीं मानत पाँइ परोरी तेरे पाइँ परतहौं कहां और कोई कहै कि या अर्थमें तौ तुकांत बिगरिगयो परोरी तबजरोरी चाहिये तुकांत पऱ्योरी है तहां उन कही मोसों मोहन दिनको विशेषण है जो दिन कैंसो है मेरो मोहन है सो तेरे पाइँ पऱ्यो है जैसे ऊपर दिनही के विशेषण हैं मन भावतो भाग भऱ्यो तेरो मन भावतौ दिनतेरे भाग भरी दिन आयो है और यह अचरज है मोको यह दिन मोहत है तेरे मनको नाहीं मोहत याते यह व्यंग्यकहो चाहिये कि तोको तो महामोहन ह्वै जाइ सो सखी कहत है जो दिन आइबो कठिन रहो सो दिन आयो जैसे तैसे पांइपरथो पाइलियो अथवा पाइ पऱ्योरी पऱ्यो पायो जैसे कोई कहत हम यह वस्तु परी पाई सखी अन्तरंग है याने अपनो मोहन दिन बतायो याते प्रच्छन्न अरु यामें केशव को अभिप्राय यह कि कैसहू पूरबको जो पुण्य है सो मिलो कैसो है वह पुण्यभाग खरो है या नहीं जानीजात कि पुण्य तौ प्राप्त भयो परन्तु अवध को आध दिन टरे ताकहँ तू नहीं अबतक हँसिके बोलत है जोई मेरो मोहनहार पुण्य तेरे पाइँ परयो है काठते हठ तेरो बडो कठोर है जो विरहमें न जरौ इहां कविनिबद्ध हठकाठ विरह अग्नि ते विरह कारण हठजरबो कारज नहीं सो विशेषोक्ति अलंकार ॥२०॥

प्रकाश प्रोषितपतिका ॥ कथा-सवैया ।

औधि दै आये उहां उनको यह भोजनके अबहीं हम ऐहैं।
ताकहँ तौ अबलों बहराइके राखीवस्वाइमरूकरमैहैं ॥
बैठे कहा इनके ढिग केशव जाउ नहीं कोऊ जाउजुके हैं।
जानतहौ उन आंखिनते अंशुवाउमहे बहुऱ्यो पुनरै हैं ॥२१॥

सुगम अलंकार काकोक्तिका रैं हैं न रै हैं ॥ २१ ॥

अथ विप्रलब्धा लक्षण ।

दोहा- दूतीसों संकेत बदि, लैन पठाई आप।
लब्ध विप्रसो जानिये, अन आये संताप ॥२२॥

नायकदूतीसों संकेत बदि आप लैन पठावे ताको जब संकेतमें आपन मिलै तब वाको सन्ताप होइ सो विप्रलब्धा ॥२२॥

प्रच्छन्न विप्रलब्धा ।। यथा-सवैया ।

शूलसे फूल सुवासकुवाससीभाकसीसे भये भौन सुभागे ।।
केशव बागमहाबनसो जुरसी चढि जौन्ह सबै अँगदागे ।।
नेहलगो उरनाहरसो निशि नाहघरीक कहूँ अनुरागे ।
गारीसे गीतबिरी बिषुसीसिगरेई श्रृंगार अंगारसे लागे ।।२३।।

उक्ति अंतरंग सखीकी सखीप्रति । कि हे सखी ! आजु नायक घरीक कहूँ अनुरागे बिलमें इतने में यह ह्वैगई कि फूल जे हैं ते शूल से लागन लगे इत्यादि सुगम है अरु विरहिनी होती तौ शृंगार न करती गीत न होते बीरी न खाती तो इहांहू कवि निबद्ध वक्ता की उक्ति में व्याघात अलंकार ते नायिका अतिदुःखित यह वस्तु जहां सुखदाता दुख दाता होहि तहां व्याघात अलंकार जानों ।।२३।।

प्रकाश विप्रलब्धा ।। यथा-कवित्त ।

देखत उदधि जात देखि देखि निज गात, चम्पकके पात कछू लिख्यो है बनाइकै। सकल सुगंध ढारि फूलमालतोरिडारि दूति, काको मारि पुनि बीरी बिगराइकै ।। लैलै दीह सांस तजिविविधविलासहास, केशोदास ह्वै उदास चली अकुलाइकै। सेइकै संकेतसूनो कान्हजूसों बोलऊनो, मोसों करजोर दूनों गूनों दुखपाइकै ।।२४।।

यह कवित्त बहुत फैलो हे अरु याके अर्थ कई तरहके कई कवि करत हैं ते अक्षरार्थ में नीके नाहीं होत कोई तौ कहत शिव लिखे कि हे महाराज ! काम भले जरायो । अरु कोऊ कहत सर्प लिखो पवन को वैरीजान कोऊ राहु शशिहेत कोऊ कहत भ्रमत चंपकके पातपै लिखो कोऊ अग्निवन हेत इत्यादि बहुत कहतहैं तो ये सब अर्थ अयुक्ति हैं काहे ऊपरसों निकसे कोउ कहत धृग धृग लिखो सोभी कवित्ततैं नाहीं निकसत अरु कोऊ कहत यह एक श्लोक मैं ऐसो शब्दहै सो यह बात तौ निपट अयुक्त है क्योंकि जो श्लोक होत है ताकी उल्था कवित्तमें बनत है सो वह शब्द तौ कवित्तमें धरोनःहीं उहां के शब्द इहां मानलीजै यह कौन चतुराई है ऐसो कोऊ कहूं ग्रन्थ को श्लोक पढैं सो वह कहैगो श्लोकपै कवित्त है अरु श्लोकको कवित्त तब कहावै जब श्लोकको अर्थ सब बराबर राखै काहे चन्द्रमुख, नेत्र मीन आदिक शब्द सबही में आवत तो उल्था न होइगो याते यही युक्ति है अरु धृगधृग अर्थ झूठो लगावनो इष्ट देवता को यह महादोष है जो कविने कवित्तमें अनुचित शब्द धरो होइ तौ भी उचित अर्थ करिये तब बडाई है जैसे शिशुपाल ने शब्द अनुचित कहे तहां सरस्वती के वाक्यमें अर्थ उत्तम करतहैं जैसे गुसाईं

कही "भरत भुआल होहिं यह सांची" तहां कवि भूपृथ्वी में धर करिहैं यह सत्य है सरस्वती कहत नाहीं कि बिगार कै अर्थ करो तहां और एक बडो दोष है व श्लोकमें काहू साधारण नायिका की वार्त्ता मनुष्य पै धृगधृग कह्यो तुककह्यो इहां तो कान्ह जूसो बोलि उनौ तौ श्रीकृष्ण कहे काहे केशव कविप्रियामें कहा ।। दोहा-जगके देवी देवता. श्रीहरिदेव बखान ।। तिन हरिकी श्रीराधिका, इष्ट देवता जान ।। सो धिक कैसे कहैगी अरु कोई कहत कि कछु कछु वाको कहतहैं तहां कूर्म को अंग कठोर है मन नाहीं इहां मन कठोर चाही अरु कोई कहत कानाम जलसों छूके लिखो काजलमें तुम जलै है जैसे हमै जरावत बियोगतें अरु कोई कहत तुम जलसम नीचे चलतहौ अरु कोई कहत काजलतैं है लिख्यो कहा तुम महापशुहौ तौ कोऊ काहू को पशु कहत घोडा नहीं कहत तुम बडे वृषभहौ कहैं हैं अरु कोई अर्थ करत हैं लिख्यो कहैं जुतुमान आये सोभी नहीं बनत कहे हैं हांहां ये जब बनत तब नायक सामुह होइ इहां तौ लिख्यो है घोडा को अर्थ होजैहै कैहै कछू वस्तु है यह अर्थ भासै याते यहू नहीं बनत ऐसे अनेक अर्थ करत विवादी बुद्धिहीन तहां कोई तो यह कहत कि यह नायिका जब अभिसार कर आई तब कृष्ण अभिसारिका यह बात कहांते जानी सो देखत उदधि जात कहा प्रथम नहीं रहे जब संकेतथलमें आई तब चन्द्रमा देख्यो अरु अपने गात को देख्यो तब दु:ख पाये मैंतो अंधेरे को साज पहिर आई अरु अब यह चन्द्रमा निकस आयो तो श्याम वस्त्र अन्धेरे में मेरे मन भायो अब चन्द्रमा निकसो तौ सब देखिहैं याहीते दूनों दु:ख पायो चली दूनों दुखपाइ कै यह बात सारथ भई एक नायक न पायो दूसर घर जैबो दुस्तर भयो सो यह नायिकाने उदधि जात देखि अरु निज गात देखि दुख भयो सो तब चंपकके पातमें कछू लिख्यो कछ थोरो लिख्यो सकल सुगंध ढार पहिले ये कारज करके फूलमालको तोरिडारो अरु दूतिकाको मारि बीरी बगराइ फेर लै लै बहुत सांस ये सब बातै करिकै लिख्यो इहां सब तृतीया विभक्तिको अर्थ कीन्हों यों करिकै पै करिकै तृतीता विभक्ति की रीति होत है सो लैलै दीह सांससांसनको लैलैकै कहा लिख्यो कहा, कि तजि छांड देह ये भांति भांति के विलास हास विलास हांसीको कहा किये, हांसीछोडि देह कि वनमै बुलाइकै आपन आवनो ये हास रसकी बातें तजिदेहु एतौ उराहनों लिख्यो और या अर्थ को हास शब्द न पुष्ट कियो नहीं तौ उहां बनमें हास विलास कब इन कियो जिनको छांडिकै चली यह तो आवतही संकेत सून पायो पीय न पायो तबहीं खेद पावत भई याको हास विलास कहांहुते जो कहिकै हास विलास तजि चली इहां शब्दमेंही पूर्वपक्षहो वह पूर्वपक्षहूमध्यो अर्थहू लागो अरु कोई पाठ ऐसो कहतहैं तजि विविध विलासहास कहा आश छांडदई सो तौ यह पढ न बनै

एकबेर नायक न मिलै कहा फेर मिलि है आशतौ बनी यहै आश छोडिबो अमंगल है याते आश पाठ अशुद्ध है अरु ताही में फेर प्रश्न करो कि चंपक पै लिखिबेको प्रयोजन कहा तहां फेर उत्तर कीनौं चंपक पै लिखेते विरह सूचित करत काहे चंपकसी देह रही तापै श्यामता होगई याते चंपकपै लिख्यो और वह जासों दोनोंकर जोरे सो उहां है वह कहिहै या चंपक पात पै लिख गई पत्र जा वनपैहै इहां दिखाय दैहैं इहां सखी अनेकहैं जासों करजोर कही तुम जहां होहु तहां ऐसो छल न चाही यह जो अर्थ है सो क्रमभंग है काहे प्रथम कवित्त में चम्पक है पाछे सुगन्ध ढारबो फूलन की माल तोरबो सो ये प्रथम सुगन्ध ढारबो कहत पाछे कछूपाय थोरो लिखो तामें थोरो कहा लिख़ो सो नहीं निकसो ताते अब सिद्धान्त अर्थ लिखियत है कि देखत उदधिजात चन्द्रमा यामें बिरह बढबो सूचित कीन्हों अथवा निज गात चन्द्रमा दोई मिलाय कै चन्द्रसरीखो प्रकाश मेरे गात में है तब चम्पकके पातपै कछू लिखो ॥ दोहा । कामी कुटिल कुमारगी कछु लंपट कछु धृष्ट तौ कधू नाम कुमारगीको है अर्थ तुम कुमारगी हौ अरु चंपक को लिखिबेको प्रयोजन यह लोकोक्तिमें कहत फलानो चंपक ह्वैगये अर्थात् भागगये दूसरे तुम आन के पास चपेहौ अरु सुगन्ध ढारदये फूल माला तोर दूती कौ मारकै पाननकी बीरी बगरायदई बहुत सांस लैलै विविधिरीतिके विलास हास तजि उदास होई अकुलाइकै चली सूनों संकेत सेइ कान्हजू सों ऊनैं घट बोलबोल में जो शिक्षा करतरही तासें दोई हाथ जोर दूनों दुख पाई चली दूनों दुख काहेकि एकतौ संकेतमें न मिले दूसरे यह बानपरी यामें व्याघात अलंकार जानियें जो सुख दातासों दुख दातातैं ॥२४॥

अथ अभिसारिका लक्षण ।

दोहा- हिततैं कै मदमदनतैं, पियसों मिलै जुजाइ ।
सो कहिये अभिसारिका, बरणी त्रिविधि बनाइ ॥२५॥

अभिसारिका तीन रीतिकी एक हिततैं मिलै सो प्रेमा अभिसारिका, मदतैं मिलै सो गर्वा अभिसारिका, मद मदनतैं जाइ मिलै सो कामा अभिसारिका ॥२५॥

अथ स्वकीया अभिसारिका लक्षण ।

दोहा- अतिलज्जा पग डग धरै, चलत वधुनके संग ।
स्वकियाको अभिसार यह, भूषण भूषित अंग ॥२६॥

अतिलज्जाते पगडग कहिये राहमें धरै बधूइस्त्रीनके संग चलत में यह स्वकीयाको अभिसार भूषणते भूषित है जाके अंग अति सलज्ज भी पाठ है अबृंद वधुनके संग भी पाठ है ॥२६॥

परकीया अभिसारिका लक्षण यथा ।

दोहा- जनी सहेली शोभ हीं, बंधुवधूसँग चार ।
मगमें देइ बराइ डग, लज्जाको अभिसार ।।२७।।

सुगम ।।२७।।

सामान्याको अभिसार यथा ।

दोहा- चकितचित्त साहससहित, नीलबसनयुत गात ।
कुलटा संध्या अभिसरै, उत्सवतम अधिरात ।।२८।।

सुगम ।।२८।।

दोहा- चहूँ ओर चित बहस, चित चोरै सविलास ।
अंगराग रंजित नितहि, भूषणभूषित भास ।।२९।।

सुगम ।।२९।।

दोहा- कुसुमकंदुकर मंदगति, सखीसंगम गजार।
सखी सहेलीसाथ वह, बरणि नारि अभिसार ।।३०।।

सुगम येह चारों दोहे काहू अन्यके बनाये हैं ताते इनको तिलक नारायण कवि हमारे शिष्यने नहीं लिखो ।।३०।।

प्रच्छन्न = प्रेमाभिसारिका ।। यथा - कवित्त ।

लीनै हमैं मील अनबोलै आई जान्यो मोह, मोहिं घनश्याम घनमाला बोलि ल्याई है। देखो ह्वै है दुख जहां देह ऊन देखी परै, देखो कैसे बाट केशो दामिनि दिखाई है ।। ऊँचे नीचे बीच कीच कंटकन पीडे पग, साहस गयंद गति अतिसुखदाई है । भारी भयकारी निशि निपट अकेली तुम, नहीं प्राणनाथ साथ प्रेम जो सहाई है ।।३१।।

नायक नायिकाको प्रति उत्तर। नायक महत तुम हमको मोल लैलिये जो बिन बुलाये आई । नायिका मोको हे घनश्याम घनकी माला बुलाइ ल्याई है । प्र० यामें कोई कासों कहै कि घनमाला ते उद्दीपन भयो ताते काम सतावत है । उत्तर । सो नहीं घन देख तुम्हारे तनकी सुधिआई । नायक । देखो ह्वै है तुमते दु:खकहे जहां देह नहीं दिखात ऐसौ अंधेरो लागो है अरु तुम राह कैसे देखी । नायिका । दामिनीनैं दिखाई । नायक । ऊंचे नीचे बीच कीचमें कंटकतैं पाइनको पीडा भई है । नायिका-मोकों साहस रूपी जो गयंद गात अति सुखदाता करी ।

नायक। महाभारी कारीरातमें निपट अकेली तुम आई। नायिका। नहीं प्राणनाथसाथ तिसरो प्रेम रहौ। प्रति उत्तर ते उत्तरालंकार ॥३१॥

प्रकाशप्रेमाभिसारिका ॥ यथा कवित्त।

नैनन की अतुराई बैननिकी चतुराई, गातकी गुराई ना दुरति द्युतिचाल की। आपने चरित्रनके चित्रित बिचित्र चित्र, चित्रिनी ज्यों सोहै पुत्रिका गुवाल की ॥ चंदके समान चारुचाय सों चढी फिरति, करिकै तिहारे मृगनैननिकी पालकी। कीजै पयपान अरु खैये पान प्राण प्यारे, आई है जू आई अलबेली ग्वालि कालिकी ॥३२॥

उक्ति सखीकी नायकप्रति। कि नैनकी आतुर बैन (वचन) की आतुर अरु गातकी कैसी गोरी है कि जाकी द्युति (दीप्ति) नहीं दुरति अरु चालकी भी नहीं दुरति अरु अपने जो चरित्र हैं ताही के चित्रतैं विचित्र चित्रित है अरु चित्रनीसों सखी साथ सोहत है जाके यातैं जनावत आप पदमिनी है चंद केसर चारु सुंदर जाकी चाहसी चढी फिरत तिहारे नेत्रनको पालकी करिकै अर्थ तिहारे मृग नेत्रनिकौं पालकी मैं आपनो जो चाउ है चंदरूपी सो जिननै चढायो है काहे मृगकी असवारी चंद्रमाकी है इन तुमसों चाउ प्रेम कियो है याते तुम्हारे नैनको चाउ चढिरह्यो है याही प्रेमते प्रेमाभिसारिका प्रकाश कही ताते आपण पानी पीजे पान खाइये किंवा जाके लिये आप पान खात रहे सोई है मैं लक्षणनितैं पहिचानीं यह सखी कही कि निश्चै जानो जो ग्वालि काल्हि आप देखी रही सोई आइ इहां बेबुलाई आई याते प्रेमाभिसारिका है प्रेमकामा परकीयकामा होति है इहां प्रहर्षन अलंकार जानियें ताको लक्षण-वांछित फल जहां पाइबै तहां प्रहर्षन जान। जाको चित चाहतहो तौ मिली आज सो आन ॥ अरु स्वभावोक्तिहू होत है ॥३२॥

प्रच्छन्नगर्वाभिसारिका ॥ यथा-सवैया।

लाडिली लीली कलोरी लुरी कहँ लाल लुके कहाँ आंग लगाइकै।
आजुतौ केशव कैसहुँ ले रुबै लागन देत न कैस हूं आइ कै॥
बेगि चलौ चलि आई बुलावन दौरि अकेलि यों हौ अकुलाइकै।
भूलहु गोकुलगांउमें गोविंद कीजै गरूरन गाइ चराइकै ॥३३॥

उक्ति अंतरंग सखीकी नायकप्रति। कैजो हमारी गाइ है सो दोहिबेकों चलौ कैसी है लाडिली है रंगकी लीलीहै कलोर पहली जनीहै लुरी थोरे दिन की जनी ताकौं आपु अंग लगाइकै कहां लुक रहेहौ आज कैसहँ लेरुवा बाछा ताकौं

लागन नहीं देत तुम आइ देखो बलि जाउँ बेगे चलौ हौं बुलावन आइ हौं अकेली दौरिकै यह गोकुल गांउ हैं हे गोविंद गरूर मति करौ गाइ चराइकै यामें जो पंचम विभावना कोई कहै कि होतकाहेकारज जो बुलावन आइ ताकी है यातैं छलकरनौ पर जा उक्तिसौं स्वत: संभवीमें है तातैं नायिकाको मिलाइबौ वस्तु जानियें गर्व वचन चरावन हार तुम चरवावन हार हम ॥३३॥

प्रकाशगर्वाभिसारिका ॥ यथा-कवित्त ।

चंदन चढाई चारु अंबरकै उरहार, सुमनशृङ्गार सोहै आनंदके कंद ज्यों । वारौंक्रोर रतिनाथ बीनमैं बजावैं गाथ, मृगरु मरालसाथ बानी जगबंद ज्यों ॥ चौंक चौंक चकईसी सौतिनकी दूती चली, सोतैं भई दीन अरि विदंगतिमंद ज्यों । तिमिरवियोग भूले लोचन चकोर फूले, आइ ब्रजचंद्रचंद्रावलि चलि चंद ज्यों ॥३४॥

इहां चंद्राभिसारिकाको वर्णन करत हैं कवि कि चंदन चारु सुंदर चढाये हैं अथवा अंबर वस्त्र पै चंदन चढाये हैं अरु ताहीको है उर विषै हार अरु सुमन फूल जो पहिरे शृंगारके हेत तासौं आनंदकंद हो रही हैं जाके अंगपै करोर रति नाथ वारत हैं अरु बीनमें कैसे गुनन के गाथ बजावत मृग अरु मराल जाके साथ में फिरत हैं बानी सरस्वती जगबंदसी मुनि जाके देखत हैं बियोग रूपी तिमिर अंधकार भूलेतैं लोचन रूप चकोर फूले खुशी भये अरु सौतिनकी द्युति चकई सोतैं कमलवत् ऐसे ब्रजचंद चंद्रावलि दोईचले चंद्रसे प्रश्न-अरु यामैं कोई कहै गर्वाभिसारिका कैसे इहाँतौ गर्व की बात नहीं निकसता ॥ उ०-तहां यह कहत कि अभिसारिका तीन भांतिकी हैं प्रेमा गर्वा कामा इहां कामाभिसारिकाकी रीति तौ यह कि कामन्धसी चलै ऐसे उदाहरण कहे हैं यथा ''उरझत उरग चपत चरणनि फणि'' और भी ''कुंजअंधियारी नगधारी है'' रैन विहारी पै जात तृण शुद्ध मथी रही प्रेमभिसारिका ताके अंतर्भूत कहिये एकतौ यह बात अरु आनकहत जहां प्रेम शब्द आवै तहाँ प्रेमाभिसारिका जैसे उहां दोऊ पर कवित्त कहि आये नहीं प्राणनाथ एक प्रेमजू सहाइ हैं दूजे कवित्तमैं चारुचावसों चढाये फेरयाहू प्रेम कढो तहां फेर प्रश्न प्रेमविना अभिसारतै करतनहीं प्रेम तौ आवश्यक है इहां गर्वको भाव कछू चाही तहां फेर उत्तर कि ''चौंकि चौंकि सौतिनकी दूती चली'' यामें यह बात विकसी कि याके समान आन नायिका नहीं सब की दूती निराश तौ लक्षणासों जानियें याहि गर्व है और यह जानकै चलीकै मेरे गये काहूकी दूती न ठहरि हैं याते गर्वाभिसारका दूती न जानीयाते प्रकाश चन्दसों रूपकसों सब

याको आशय नही पायो केशव यह कहत कि आपु बीन बजावत जात यातैं यह सूचित करत अब हौं जात सो छपिकै नाही जार, गाय बजाइकै हौं जाको रूप को मदहोहि सो चलो यही गर्व जतायो आपु चंद समान आई का बहुत प्रकाश करत ॥३४॥

प्रच्छन्नकामाभिसारिका ॥ यथा-कवित्त ।

उरझत उरगचपत चरणनि फणि, देखत विविधि निशिचर दिशिचारिके।
गनतनलागत मुसलधार बरषत, झिल्ली गनघोष निरघोष जल धारिके ॥
जानति न भूषण गिरत पट फाटत न, कंटक अटकि उरउरज उजारिके ।
प्रेतनकी पूछैं नारी कौन पैतैं सीख्यो यह, योग कैसो सार अभिसार अभिसारिके ॥३५॥

उक्ति अंतरंग की अंतरंगसों । कि आजु की बात ऐसी है जब नायक के पास गई कि सांप उरझत फणि पाइ तैं दबत निशाचर देखत चारों दिशन को मूसलधार वर्षा झिल्ली के समूह तिनके घोष शब्द निरघोष अधिक बडीगरज सों मेघनकी भूषण गिरत पट फाटक कंटक लागत उरमैं उजार को प्रेतन की नारी बूझती हैं कि यह तैने योग सो सार अभिसार हे अभिसारिका योग उपमान अभिसार उपमेय सार धर्म्म सों वाचिक ताते पूर्ण उपमा सो कविनिबद्ध वक्ताकी उक्तितैं घोष निरघोष अभिसार अभिसारिका जमक तातैं अलंकारतैं अलंकार ॥३५॥

प्रकाशकामाभिसारिका ॥ यथा-सवैया ।

गौप बडे बडे बैठे अथाइनि केशवकोटिसभाअवगाहीं ।
खेलत बालकजाल गलीनमैं बालविलोकि विलोकि बिकाहीं ॥
आवति जाति लुगाइ चहूं दिशि घूंघुट मैं पहिनान तिछाहीं ।
चंदसो आनन काढि कहां चलि सूझत है कछु तोहिं कि नाहीं ॥३६॥

उक्ति सखी की नायिका प्रति । कि तू यह बेराँ कहां जात बडे बडे गोप अथाइन पै ब्रैठे जिन कोटिन राज सभा जानी अरु बालकन के जाल खेलत हैं कैसे हैं बालक कि जिन्हैं देखि बाला बिकाती हैं अरु लुगाई बहुत आवती कैसी हैं जे घूंघुट में छांह पहिचाँनतीं ऐसे समय चांदसी आनन काढि तू कहां चली कछू तोको सूझै है कि नहीं तो यामैं कामाभिसारिका एक तौं यह कि कामांध तैं काहू को नहीं देखति अरु कोई कहै कि यह काहे तौ जानी कि अभिसार करै जात या और ही कार्य्य निमित्त जात होहि तो मुखनिकासे ते वाकी कामांधता सूचित होत हैं तौ भी कोई कहै कि ग्रामकी पुत्री है तहां जो पुत्री होती तौ मुख

निकासेई रहत तासों यह कैसे कहती कि मुख निकासे काहे जात इहां कामांध वस्तु ते अर्थांतरन्यास अलंकार जानिये गोप सामान्य तैं फेर जिन सभा देखी यह विशेष ऐसे ही बालक सामान्यता बालक पै लुगाइ बिकाय जातीं यह विशेष अरु यह सखी सिखावति हैं की लुगाईं चारों ओर से देखती है ताते प्रकाश जानियें ॥३६॥

दोहा- केशवदास सुतीनविधि, बरणी सुकिया नारि।
परकीया द्वै भांति पुनि, आठ आठ अनुहारि ॥३७॥

केशवदास ने तीन विधि की स्वकीया नायिका वर्णी और परकीया दो भांति की वर्णी तिन सबके आठ आठ भेद कहे सो सब देखावत हैं तिलक में ॥३७॥

दोहा- उत्तम मध्यम अधम अरु, तीन तीन विधि जानि।
प्रकट तीनसौ साठ त्रिय, केशवदास बखानि ॥३८॥

इहां तीनसै साठको बेउरा ताको विचार केशवदास तीनविधि वर्णी कहां सुकिया तीन विधि बर्णी तही एक एक की चार चार अनुहार कही ऊपरतैं सब बारह भई अरु परकीया दो भांति तौ चौदह भई अरु पुनके कहिबे सों व्यंग्य तैं सामान्य निकसी नाम लियो सो ऊपरही कहि आये तहां हू नाम लीनो कहीं स्वकीया परकीया न यह कह्यो तीसरी नायका कैसी है स्वकीया है न परकीया है कहीं तैसे ही परनाम न उच्चार्‍यो तसे इहां हू पुनि शब्द तैं वही जानियें यह सब पन्द्रह भई फिर आठ नायिका सों जोर्‍यो एक सौ बीस भई फेर उत्तम मध्यम अधमसों तीनसों साठ जुरीं यह रसिकप्रिया को मत जानियें ॥३८॥

अथ उत्तमा।

दोहा- मानकरै अपमानतैं, तजै मानतैं मान।
पिय देखे सुख पावई, ताहि उत्तमा जान ॥३९॥

मान करै अपमान तैं नायक जो अपमान करै तौ मान करै कहा नायकको आदर करै अथवा मान नहीं करै अपमान करत विषे अर्थ अन्य स्त्री गमन न रोकै अरु तजि देइ मानतैं मानको अर्थ नायक जब आदर करै तब आपु गर्व न करै अथवा तजै मा श्री अमर में "लोकमाता मा" नाम लिखो है अथवा तजैं मा न तो मान मनै करिबो न तजै पिय देख सुख पावै सो उत्तमा ॥३९॥

उत्तमा ॥ यथा-सवैथा।

होहि कहा अबके समुझे समुझे न तबै जबहीं समुझाये।
एकही बंकबिलोकन मांह अनेक अमोल विवेक बिकाये।

जानिपरो न जना बहु जू जनमावधि लौं उहि जानि हौं पाये।
बात बनाइ बनाइ कहा कहौ लेहु मनाइ मनाइ ज्यों आये ॥४०॥

सखी नायक सों कहत है कि जैसे मनाइ आये तैसेही मनाइ लेउ अरु कोई अर्थ याको ऐसो लिखो है कि सखी कहत नायक सों तुम बिन पांयन परे मनायो है सो न मान्यो ॥ अब पांयन परि मनाइ लेहु सो इतनो बिचार न कीनो प्रथम तौ उत्तमा मान नाहीं करत यापै इतनो मान जौ पांय परे तैं छूटै यह उत्तमा को अर्थ तैं राख्यौ तौ ऐसे अर्थतें उत्तमा मध्यमा है गई अरु कोऊ यह कही कि नायक जासों बहुत प्रीति राखत रहीं तासैं रूढ आयो हैं तब उत्तमा कहत है अबके समुझे कहा होत जबलोगन तुम को समुझायो तबतो न समझे ताते तुम जानपनो न जनावहु अरु "जानपऱ्यो" भी पाठ है एजू जनम अवधि लौं इहि उहि कहाउहिको जानपनो कहा निर्बेद बैराग्य जिन जनावो काहे उहि देहरि दीपक कहिये उहि तुम्हैं जान पाये हैं कि मो बिन एक घरी न रहिहैं तातैं जैसे मनावत रहे तैसे मनाहि लेहु। प्रश्न - तहां काहू यह कही कि यामैं जब वा बोली बात मेरे सामुहे न बना तब उत्तमा कहां तहां उत्तर यह कहत कि वाके सामुहे बातैं बनाइ बनाइ कहौ जातैं वह रूसी न है बातैं बनाइ बनाइ कहाकहो याको अर्थ कि वाके बात बनाइ बनाइ कहा कहीं कहिबो करों तहां यह प्रश्न करत बातैं कहा करौं ऐसे कहतहैं बातै कहा कहौं यह शब्द अप्रयुक्त है ॥ ताको उत्तर बातैं बनाइकै कहौ अरु वाको कहा कहों कहा जो वह कहै मुखतैं सोइ तुमहूं कहो ॥ अर्थ ॥ जो बात वह कहत सो टारिकै न कहौ अपनी चतुराइ सों जो राति कहै तो राति जो दिन कहै तो दिन ऐसे अनेक रीतितैं कहत है अरु केशव को आशय तौ यह है कि वासों अब बात बनाइये कहा काहे कहत दोहा कहि तौ आगे मनावतरहे अर्थ हाहा करि मनावहु इहां नायक को प्राप्त आइबो यह कविनिबद्धता मैं नायिका वक्ता तातैं नायिका अपराध जान नहीं मानत यह वस्तुतैं काव्यलिंग अलंकार जानियें "काव्यलिंग सामर्थ्यता जहां दृढ करत बनाइ" सो वानै जान पाये वाको जान पाइबो एक बंक बिलोकनमैं जतायो यह दृढ जानिये ॥४०॥

मध्यमा लक्षण ।

दोहा- मानकरै लघुदोषतैं, छोडै बहुत प्रमाण ॥
केशवदास बखानियें, ताहि मध्यमा बाम ॥४१॥

मान करै थोरे दोषतें ताही मान को बहुत प्रमाणतैं छोडै ताको केशवदास मध्यम नायिका कहतहैं ॥४१॥

मध्यमा ॥ यथा-सवैया।

भूलहूं सूधे नहीं चितयो इहिंकान्हकियो लचि लालच केतौ।
हाहा कैं हारि रहे मनमोहन पांय परें त्यों परेई रहे तौ ॥
हौं तौ यहै तबहीं कि विलोकति हो तो गुमान क्यों याहि धौंकेतौ ॥
लांबी लटैं अरु पातरौ देह जुनेक बडी विधि आंखिन देतौ ॥४२॥

यामें यह प्रश्न करत कि मान करै लघु दोषतैं सो लघुदोष कवित्त मैं कहो चाहिये अरु मान छोंडै बहुत प्रमाण सों सो मानको छोडबो कहा है यह नायका तौ सूधेहू न चितई कान्हने लालच बहुतेरो कियो तहां उत्तर कहत कि या विधि कवित्तको अर्थ कीजै लघुदोष अन्य नायका देखतैं होत है बातनतैं मध्यदोष चिहनतैं गुरुदोष होत है सो सखीनायक की कहत है नायकाका सखीसों कि तेरी नायका जानती है ये औरको देखत हैं सो ये काहूको मनसों देखत नही यों दृष्टि जाइ परो पर चाहसों नहीं देखत, सो कहत हैं कि वह जो कोऊ आन नायक है उन इनके लच लालच केतौ पर भले हैं - सूधे न चितयो उहां कान्ह "करचो पबि" भी पाठ है अरु याही में प्रश्न है इनजु कह्यो नहीं चितयो तौ लघुदोषचितयेतैं हेत है ताते लघुदोष कवित्ततैं जातरह्यो तामैं उत्तर करत "भूलहिसूधे नहीं चितयो" सूधी दृष्टि नहीं देख्यौ चाहतैं अर्थ दृष्टि जाइपरी यामैं लघु दोष स्थापित भयो सो यह लघु दोष जानि कि नायकाने एतो कियो हाहा करि पांय परे त्यों परेई तब नायका की सखी बोली रहेतौ कहाकि पांयन परनदिये यामैं मान छूटचो हाहा करिबो यह प्रणति है छांडे बहुत प्रमाण यह लक्षण साध्यो अरु यामे कोइ कहैं कि कान्ह कह्यो अरु मनमोहन कह्यो पुनरुक्तितो नहीं है परंतु नजीक नजीक हैं तहां प्राचीन पुस्तकमें यह पाठ हैं "हाहाके हारिरहे पुनिकेशव प्यारीके पायपगेइ रहेतौ" फेर तीसरी तुक सीधी है नायकाके सखी बचन किये तौ गुमान याही क्यों होतौ जो या बात न होती लांबीलटैं अरु पातरी देह केशव ऐसे काहूके नहीं अरु सुकुमारताको गर्व यह अरु यामें केशवको आशय यह कि कान्हतैं भूलकर सूधेकाहूकी ओर नहीं चितयो है करै कोई लचकर लालच कितनो सो कान्ह हाहाकर हाररहे परंतु याके मनमोहन पांय परेतौ परेई रहे सोहौं तबकी देखतको इतनो गुमान काहेको होतौ जो विधाता पातरी देह लांबीलट अरु बडीआंख न दे तौ तौ देखो लघु दोषतैं मान चाही सौ याहीमैं निकसकै सूधेमनतैं लचकै लालचतैं नहीं चितयेतौ चितैबो साबितभयो जैसे कोई कहै हम आपुतौ नहीं गये तो जैबो जानो जाइ रहे अथवा हाहाकरकेतौ हारे परंतु जब पांय परे तब त्यों परे

रहे जैसे सब दिन एक सेज पर रहत रहे अरु तीसरी तुमको ऐसी भी पाठ है "हौं तौ यहै तबहींकी बिचारति होतो गुमान क्यौं खाहि सो एतौ" ताते हेत अलङ्कार है जहां कारण अरु कार्य्य एक साथ कथन होहिं लांबी लटैं पातरी देह बडी आंख कारणको कथन गुमान कार्य्यके साथ है ॥४२॥

अथ अधमा लक्षण ।

दोहा- रूठै बारहिं बार जो, तूठै बैठहि काज ।
ताहीको अधमाबरण, कहै महाकविराज ॥४३॥

बारंबार रूठै अर्थ मानकरै अरु बिना प्रयोजन तूठै गुस्साहोय 'तूठै विनही कार्य्य' भी पाठ है ॥४३॥

अधमा ॥ यथा-सवैया ॥

काटौ कपट्ट जुकान्हसों कीजैं रीबांटौ वे बोल कुबोल कसाई ।
फाठौजु घूँघुट ओट अटै सोई दीठि फुरौ अधिकौ जुहँसाई ॥
केशव ऐसी सखिनको मारौ सिखैकै करै हितही जुहँसाई ।
बारहि बारको रूसिबौ बारो बहाउ जुबुद्धिवियोग बसाई ॥४४॥

नायकासों कि वह कपट काटि डारिये जो नायक सों होय वे कुबोल पीसि डारिये जो नायकको कसकैं वह घूँघट फारिये जो नायकको देख कि मुखपै रहै दीठि फोरिये जो अधिकधँसे नायकको कूर जान जाय ऐसी सखनिको मारिये जो हितकी हँसाई करे बारंबारको रूसिबो जराय दीजिये वा बुद्धि बहाय दीजिये जो नायक सो वियोग करावे स्वभावोक्ति अलंकार है ॥४४॥

दोहा- इहिविधि नायकनायका, वरणों सहितविवेक ।
देशकाल वय भावते, केशव जानि अनेक ॥४५॥

देश-जैसे गुर्ज्जरी मालवी बंगाली इत्यादि काल-पावसाभिसारिका वसंताभिसारिका वयभाव-अज्ञातादिक जातिकाल पाठमें पद्मिन्यादिक ॥४५॥

अथ अगम्या।

दोहा- तजि तरुणी संबंधकी, जान मित्र द्विजराज।
राखलेई दुख भूखते, ताकी तियतैं भाज ॥४६॥

जो तरुणीतै सबंध होय अर्थ भगिनी आदिक सबंधमें परत होय ताके साथ विहार न करिये अरु मित्रकी तरुणीको जानके तजिये कविप्रियाके तिलकमें

नारायण दास कवि षटमाताके प्रसंगमें लिखे हैं द्विजराज ब्राह्मणकी स्त्री जो राख लेय दुखित देखकै भूखते अर्थ जो अपनो पालन करै ताकी तियातैं भाजिये अर्थ गमन न करिये ॥४६॥

दोहा- अधिक बरण अरु अंगघटि, अंत्यजजनकी नारि।
तजि विधवा अरु पूजिता, रमियहु रसिक विचारि॥४७॥

अपने ते जो उत्तम जाति होय अरु अंगघट होय अर्थ न्यून जाति होय अक्षन जनकी नारिभी पाठ है अंत्यजचांडालादिककी स्त्री जन दासकी तरुणी विधवा अरु पूजिता तो पूजनीय हो इन सबको त्याग करके रमण करियो विचार पूर्वक है रसिक यह आगम्यागमन है ॥४७॥

दोहा- यह संयोग श्रृंगारकी, केशव बरणी रीति।
विप्रलंभ श्रृंगारकी, रीति कहौं करि प्रीति॥४८॥

इति श्रीमन्महाराजकुमारइन्द्रजीतविरचितायां रसिकप्रियाया-मष्टनायिकासंभोगश्रृंगारवर्णनं नाम सप्तमः प्रकाशः ॥७॥

यह संयोगश्रृंगार की रीति केशवदास ने वर्णी अब विप्रलंभ कहिये वियोग श्रृंगार की रीति कहत हौं प्रीति करके ॥४८॥

इति श्रीमन्महाराजाधिराजकाशिराजश्रीमदीश्वरीप्रसादनारायणसिंहबहादुरस्या-ज्ञाभिगालिलितपुरनिवासिहरिजनकवीश्वरात्मजेन सरदाराख्यकवीश्वरेण विरचिते रसिकप्रियाभूषणे सुखविलासिकानामटीकाया मष्टनायकानायक-संभोगश्रृंगारवर्णनं नाम सप्तमः प्रकाशः ॥७॥

अथ विप्रलंभश्रृंगारलक्षण।

दोहा- बिछुरत प्रीतमप्रीतमा, होत जुरस तिहिं ठोर।
विप्रलंभतासों कहैं, केशव कविशिरमौर॥१॥

जहां नायकनायकाको मिलन न होइ सो विप्रलम्भनामा वियोग ॥१॥

अथ विप्रलम्भश्रृंगारके भेद।

दोहा- विप्रलंभश्रृंगारको, चारि प्रकार प्रकाश।
प्रथम पूर्व अनुराग पुनि, करुणा मान प्रवाश॥२॥

विप्रलम्भश्रृंगारके चारि प्रकारके प्रकाश (भेद) हैं पूर्वानुराग एक द्वितीय करुणा, तृतीय मान, चतुर्थ प्रवास (विदेश बसिबो) ॥२॥

अथ पूर्वानुरागलक्षण ।

दोहा- देख तिहीं द्युति दंपति हिं, उपज परत अनुराग।
बिन देखे दुख देखिये, सो पूरब अनुराग ।।३।

प्रश्न-इहां देखतकहो तौ सुनने ते न होहिगो रुक्मिणी को दमयन्ती को सुनकर भयो है और ग्रन्थन में एकश्रृति अनुराग एकदृष्टानुराग तहां यह उत्तर है कि दर्शन श्रवण कहावत तो का श्रवण सों देखत हैं तहां फेर प्रश्न कि स्वप्न चाही दर्शन में तौ न हृदय के नेत्र न बाह्य के देखत हैं तौ स्वप्नानुराग कहोचाही अरु चित्रानुराग चाही अनुराग दो न चाही चार चाही तहां उत्तर कि चित्रसाक्षात् एतौ देखबे में है अरु स्वप्नभी देखिबे में है काहे स्वप्नौ देख्यों कहत याते तीन दृष्टानुराग श्रवण श्रुतानुराग है बिनदेखे दुखहोत सो है भी पाठ है ।।३।।

नायकको प्रच्छन्नपूर्वानुराग ।। यथा-कवित्त ।

फूलन दिखाउ शूल फूलत है हरिविन, दूरि करि माला बाला व्यालसी लगति है । चँवर चलाउ जिन बीजन हलाउ मति, केशव सुगंधवायु बाइसी लगति है।। चंदन चढाउ जिन तापसी चढति तन कुंकुम न लाउ अंग आगसी लगति है। बारबार बरजति बाबरी है वारौं आन, बीरी ना खवाउ बीरविषसी लगति है ।।४।।

उक्ति नायका की सखी अन्तरंग प्रति । कि हे सखी फूल मति लियावहु मोको शूल फूलत है इत्यादि पदार्थ तो सब सुगम हैं परन्तु प्रवास विरह सों जानोजात ताते कुमकुम अरु बीरी जे तप्त हैं जो नायक विदेश होय तौ सखी सीरे उपचार लियावति अथवा हरिको जब देखत रही तब सब सामान नीके लागतरहे अब हरि नाहीं हैं ताते पंचम विभावनारूप ह्वै गये कारणतें कार्य्यविरोधभयो तापसों तवसि भी पाठ है ।।४।।

नायकाको प्रकाश पूर्वानुराग ।। यथा-सवैया ।

केशव कैस हुँ ईठन दीठ ह्वै दीठपरै रतिईठ कहाई।
ता दिनते मन मेरेको आनि भई सो भई कहि क्यों हुँ न जाई ।।
होहिगी हांसि जो आवै कहूं कहिजानिहितू हित बूझन आई।
कैसे मिलोंरी मिले बिन क्यों रहौं नैननि हेत हिये डरुमाई ।।५।।

उक्ति नायकाकी बहिरंगसखीसों । कि हे सखी जो तू मेरी दशा बूझति है ताकी बात यह है कि जो हरिसों ईठन चेष्टा ते मेरी दीठमें आये तबते रसप्रीतिकी

चेष्टा कहाईईठ कन्हाईभी पाठ है तादिनते जो मेरे मनकी दशा भईसो कैसे कहौं सो या बात कहे मेरी हांसी होत है तू मेरी हितू है ताते हितकी बूझबेको आईहौं ताते मैं कैसे मिलों अरु मिले बिन कैसे रहें नैनमें हेतु है अरु हृदयमें डर है यह दो भी संघमें हौं परीहा इहां प्रेमालंकार है लक्षण कपट निपटि जाइ जहां सो प्रेमालंकार ॥५॥

नायकाको प्रच्छन्नपूर्वानुराग ॥ यथा-सवैया ।

एकसमै वृषभानुसुता सजनीगनमें जननीसँग वैसी ।
जात उहैं चित योजिहिं रीति सुप्रीति हिये कहि जाई न तैसी ॥
ता दिनते जगकी युवती मिल गावत केशव बात अनैसी ।
चाहि फिऱ्या चित चक्र चहूं न कहूंद्युति देखिये वा मुख कैसी ॥६॥

उक्ति नारायण की अन्तरंग सखी प्रति । याते प्रच्छन्न अर्थ यह कि एक दिन वृषभानु कुमारी माताके ढिग बैठी रही ताही समय में जात रही तहां जैसे चितई सो कही नहीं जात अर्थ अतिरसीली तादिनते जग की रसीली जे युवती है नीकी ते अनीकी लागतीं चाहि करिके सिगरे ब्रजमण्डलमें चित्त करौ पै वाके मुखकीसी द्युति न देखी अलंकार पूर्ववत् ॥६॥

नायकको प्रकाशपूर्वानुराग ॥ यथा-सवैया ।

भांति भली वृषभानुलली जबते अँखियां अँखियानसों जोरी ।
भौंह चढाइ कछू डरपाइ बुलाई लई हँसिकै वशभोरी ॥
केशवकाहुसों तादिन ते रुचिकै न विलोकति केत्यों निहोरी ।
लीलतिहै सबहीके श्रृङ्गार अँगारिन ज्यों बिन चंदचकोरी ॥७॥

तहां प्राचीन ऐसी कहत कि सबके श्रृंगारललित हैं हरि जैसे चंद बिन चकेरी अंगार लीलत तहां स्त्री काहे कहो चकोर काहे न कहो इहां नायकको विरह है अरु रुचिकर काहूकी ओर नाहीं देखत नायक के तो निहोरे कहौंही निहोरी न चाहिये अरु बुलाइलई हसिकै यह शब्द अलग्न है तहां फेर आन यह कहत कि हरिके बचन सखी सों अपनी अँखियानी की बात कहत कि राधाने जब ते अँखियान सों अँखियां जोरी कैसे भौंह चढायी भृकुटी बिलाससों कछू डरपाईकै बुलाइलइ अपनी और को कैसे हँसिके बुलाइ लई और अपने वश भोरी करिकै ता दिनते जे आँखें काहूसों रुचि नहीं करतीं हम केती निहोरी हैं काहू त्यों भी पाठ है कि शृंगार कैसे लीलबो बनै आनके अरु कहौ कै उनकी द्युति लीलती हैं तौ उनको तौ भावहू नाहीं भास हैं कैसे तहां उत्तर है कहीं के हृदयके शृंगार आंखैं लीलती हैं जैसे चकोरी अंगार लीलती तैसो आपुनै शृंगार लीलति हैं

विलोकनमें सब लखत याते प्रकाश इहां अलंकार पूर्ववत् ॥७॥

दोहा- अविलोकन आलापते, मिलिबेको अकुलाहिं।
होत दशा दश बिन मिले, केशव क्यों कहि जाहिं ॥८॥

देखिबेते आलाप स्वरते अर्घ टारिबेतें मिलापके हेत व्याकुल होयँ तहां दश दशा होत हैं केशव कहत बिगर मिल क्यों दशा कही जाय ॥८॥

अथ दशदशानाम कथन ।

दोहा- अभिलाष सुचिंता गुणकथन, स्मृति उद्वेग प्रलाप।
उन्माद व्याधि जडता भये, होत मरण पुनि आप ॥९॥

अभिलाष १ चिंता २ गुणकथन ३ स्मृति ४ उद्वेग ५ प्रलाप ६ उन्माद ७ व्याधि ८ जडता ९ मरण १० ॥ यह दश दशा है ॥९॥

अथ अभिलाषलक्षण ।

दोहा- नैन बैन मन मिलि रहे, चाहै मिलन शरीर।
कहि केशव अभिलाष यह, वर्णत हैं मतिधीर ॥१०॥

नैन बैन मन मिलिबेको अर्थ एतो मिलिरहे शरीर मिलो चाहत तहां कोई प्रश्न यह करत कि शरीर मिलो चाहे ताको अभिलाष कहैं तौ यह बात नहीं संभवत काहे देखिबेको भी अभिलाष होत हैं। रामायण। सिय हिय अति उतकंठा जानी। इहां देखबेको भी अभिलाष है अरु बोलिबेका भी अभिलाष होत है अरु मन मिलाइबेको भी हेत है अभिलाष जैसे रामायण में। सुना चहै प्रभु मुखका बानी। ऐसे काहू की बात करिबेको जानियें तहां ऐसो अर्थ चाहिये नैन बैन मन मिलरहै चाहे हैं अरु मिलो शरीर चाहै ऐसो सबभांतिको अभिलाष चाहिये सो दशा कहावत सो ऐसो अर्थ नहीं बनत काहें पूर्वानुराग बिनदेखे सुने नाहीं होत तौ जब देखै तबतो नयननिमें नयन बैननमें बैन मनमें मन अंतःकरण मानसे तैं मिलिगयो अरु बाह्य शरीर मिलो चाहत ॥१०॥

नायकाको प्रच्छन्नाभिलाष ॥ यथा-सवैया ।

सुधि बुद्धि पटी द्युति देह मिटी दिनहीं दिन चाहिये बाढतिसी।
कछु केशव आपने पेटकी पीर दुरावतपै मुख काढतिसी ॥
बिसऱ्यो सुख भूंख सखी निशि नींदपरी चित चाहत आढतिसी।
गिरिगोकछु गाँठिते छूट छबीली सुकाहेतैं डोलत डाढतिसी ॥११॥

सखी चितचाहनाको जानति नाहीं ॥ कि याकी दशा विरहकी है नायका सों पूछति है ताते प्रच्छन्न तीसरे चरणमें आढतिसी है तहां आढतिमें चित्त बहुत लगो रहत है या वयक्रममें बढो चाहिये सो घटत जात याहीते कारणते कार्य्य विरोध सो पंचम विभावनालंकार को रूप है ॥११॥

नायकाको प्रकाशअभिलाष ॥ यथा-सवैया ।

जो कहौं देखे लगै दिख साध दिखावत हीं दिन ही दुख पैहौं ।
याहीमें केशव देखिये बोलन देखि हौं देखि सखी अब कैहौं ॥
जो उनकी दुरि देखि हौं देह ज्यों आपनी देह न देखन दैहौं ।
देखिबेको बहरावति मोरि सुहौंव कहा कछु देखही लैहौं ॥१२॥

नायका वचन सखीसों । जोहा कहौकै देखेतो लगी है देखिबेकी साथ अरु जो तू दिखावे तौ दिनहींदिन ज्यादा दुःख पाइहौं या हियमें केशवका बोलन देखिये सो यह देख सखी अब कैसे देखिहौं । अर्थ हे सखी अंतर में रहत बाहिर नहीं काहे दिखात यों ऐसेहों उनकी दुरिकै देहदेखिहौं ज्यों नाम जैसे आपन देह जो प्रत्यक्ष है सो न देखनदेंही देखनसैं हौंभी पाठ है देखिबेको जे मोहिं बहरावत सोहौं है सखी सोहौं बकहा कछू देखही लेहुंगी अथवा सखीसों कहत है कि तू जो मोको बहरावत है सो तोहिं देखै दिखिबेकी साध लगी है फेर देखिबोई सुराइगो अरु तू यों कहैं दिखावत मैं दिन दिन दूनो दुःख पाइ है तौ मेरो बोल देख लीजे अबको देखि फेर न देखि हौं जो सुखी बहरावत सो बहिरंग यातें प्रकाश परन्तु या अर्थमें रचना नाहीं है प्रेमालंकार जानिये ॥१२॥

नायकको प्रच्छन्नअभिलाष ॥ यथा-सवैया ।

पाइँपरौं बलिजाउं मनोहरि आपुन सीन करौ अब ताहू ।
देखे अघात नहीं तिनके फिरि वारि कधौं अनदेखही जाहू ॥
मोसों कही सुकही अब केशव कैसहुं कान्ह पत्या उत काहू ।
डाठहुगे जु कहूं कइ तीरु तातो होनेक सिराइधौं खाहू ॥१३॥

उक्ति नायकसों सखीकी । नायक कही तू जायकै मोहिं दिखाय दे सो सुन सखी कहति कि तिहारे मैं पाँइ परतु तुम घरजाहु हे मनहरण आपुनीसी ताको न करो अर्थ जैसे लागे तुम्हैं कुचाली कहत तैसे वाको मति कहवावो आपुसमान भी पाठ है दिनभर देख अघाने नाहीं फिर कईबार अनदेखे जैहौ मोसों कही सो कही आनको कौनहू ठौर मति पतियावहु जो ऐसी तिहारी रुचि है तौका जरिजै हौ ताते सिराइखाउ बहती रुचि भी पाठ है अलंकार प्रेमा ॥१३॥

नायकाको प्रकाशअभिलाष ॥ यथा–सवैया ।

है कोउ माईहितू इनको यह जाइ कहै किहिं वायु बहे हैं।
न्यार ही केशव गोकुलकी कुंलटा कुल नारिननाउ लहे हैं।
देखिरी देखि लगाइ टकी इत सोनोसो घालिजु चाहि रहे हैं।
कोहैरीको जैसे जानत नाहिं न काल्हिही वाके सन्देश कहेहैं ॥१४॥

उक्ति सखीकी सखीप्रति । नायक कौ सुनाय दोई सखी बहिरंग आपसु में कहतिं हैं कि इनको कोउ हित करता है यह बात कहै ए कौन वायुमें बहे हैं देखि न्यारिही गोकुलकी कुलटा अरु धुलनारिन इन के नामलये हैं न्याय हों भी पाठ है तहां नीतिते नामपायो है देखिरी तू सोनोसो वालिके चाहिये रहे हैं सोनो सो घालि ज्यों डारि रहे हैं इस पाठमें जैसे सुवर्ण डार कोई देखत रहैं याको यह अभिप्राय है एक तो सुनार सोनेको तपाय देखि रहत है अर्थ अग्नि में डारके भले बुरेको पहिंचान करत अरु ठग मार्ग में सोनो डारिकै टक लगाए रहत जो याको उठावै ताको मैं पकरौं यह बचन सखीसों सुन नायक कही कि को है री को है तब सखी कही तुम नहीं जानत कि कौन की बात हैं ऐसे अजान ह्वै गये हौ काल्हिही काके तुम संदेशो कहै सो मैं सुनत रही उत्तरालंकार ॥१४॥

केशव नैननि लागि है ज्यों वह मूरुह्वै प्रेम अदष्ट बढावै ।
क्यों वह कामकला मिलै मोहिं सुत्तौ मनमूढ उपाउ न पावै ॥
कीजै कृपा बुधि दीजै बुधीश जू राधिकाके उरमें यह आवै ।
लागति ज्यों कबहू कबहू मुखचारक ज्यों मुखसों मुख लावैं ॥१५॥

यह कवित्त केशवकौ बनायौ नहीं है काहू ऊपरते लिखिदियो याते हमारे शिष्य नारायणदास कविने याको अर्थ नहीं लिखो ॥१५॥

अथ चिन्तालक्षण ।

दोहा– कैसे मिलिये मिलेहरि, कैसे धौं बश होइ ।
यह चिन्ता चित चेतकैं, वर्णत हैं सब कोइ ॥१६॥

कौन भांति सों मिलिये जामें हरि मिलैं अरु कैसे कि वश होइ यह चिंता को जो चित्त चेतै चिंतवन करै ताको चिंतादश सब कोई बर्णन करत है प्रश्न नायका नायक दोनों की चिन्ता चाही यामें प्रश्न नायका मात्रकी होत है तहां उत्तर सब कोई वर्णन करत चिन्ता चित्तमें चेतकै या ते दोहुन की आई ॥१६॥

नायकाकी प्रच्छन्नचिंता ।

दोहा- आपु नहीं तू आपनो, होत न देखे जाहि।
आपुनहीते आपुनो, क्यों मन करि है ताहि ॥१७॥

नायका मनसों कहति याते प्रच्छन्न जानिये हे मन तू आपु नहीं है कहा आपन नहीं काहे देखत तू जातरहत है सो बेबुलाये तौ पराये को कैसे वश करि है अथवा मनको व्याकरण में नपुंसक लिखो है सो तू मन नपुंसक नहीं है काहे देखत परसंग जात है इहां आपु नहीं ते यह शब्द अधिक है ताको अभिप्राय यह कि बली होय सो वश करै तू तो आपुन पै समुझिकि मैं अबल हौं काहेते अबलाको मन है याते नायका की चिन्ता इहां आपु आपु पद एक अर्थ भिन्न ताते लाटानुप्रास है ॥१७॥

नायकाकी प्रकाशचिन्ता । कवित्त ।

प्रेमभय भूपरूप सचिव सकोच शोच, विरह विनोद पील पेलियत पचिकै। तरलतुरंग अविलोकनि अनन्तगति, रथ मनोरथ रहे प्यादे गुन गचिकै। दुहूं ओर परी जोर घोरघनी केशौदास, होइ जीत कौनकी को हारे जिय लचिकै। देखत गुपालतिहिं काल उहिं, बाल उर सतरंज कैसी बाजी राखि रचिकै ॥१८॥

प्रेम अरु भय ए तौ भूप कहे तो होतही हैं अरु शोच संकोच मंत्री सोभी होत हैं अरु बिरह बिनोद फील कहे सो चार चाही एक प्रश्न यह है अरु विलोकन में चारि प्रकार कहाँ यह प्रश्न दूजी है रथ मनोरथ चारि कहां यह तीसरी प्रश्न है अरु गुण प्यादा सोरह कहां यह चौथो प्रश्न है तहां ऐसो उत्तरवारो अर्थ करत प्रेम भय ये दोऊ राजा हैं प्रेम भय भूप ये तौ पाठमें रूप सचिव हैं प्रेमकी आकृति ये दोऊ सचिव हैं मंत्रीहैं अरु संकोच शोच अरु विरह विनोद ये चारचौं फील हैं अरु तरल तुरंग कहा घोरे कौन हैं अबिलोकनि किन की शोचकी संकोचकी बिरहकी बिनोद की ये चारों जो ऊपर कहे ये जब नेत्रन में आवैं तब इनकी अवलोकन चार भांतिकी ह्वैजाइ तेई तुरंग कैसे हैं तुरंग ? अनंतहैं गति जिनकी यह तुरंगन कोविशेषण है फेर इन चारों अवलोकन नायकाकी मन की बात जानी परति है कि मनमें यह मनोरथ है सो बेचारो मनोरथ रथ भये रथ मनोरथ या पाठमें रहे प्यादे गुण गचिकै अब प्यादा सोरह चाही सो यह बातैं सबतैं ऊपर कहो ते सोरह हैद्वै भूप, द्वैसचिव चार फील चार तुरंग चार रथ ये जोहैं सब सोरह तिनके गुण जब विचारियत है प्रेममें गुण कहा प्रेमवती नाम पायो १ भय में गुण कहा है शीलवती नाम पाये २ सो शील गुणहै गुण चौबीस हैं सो हमारो कियो

न्यायमुक्तावली की भाषा न्यायप्रकाशिका में हैं ताकी व्याख्या कविप्रिया के तिलक में नारायण कवि लिख चुके प्रेमकी आकृति तैं गुण कहाहै प्रेमकी प्रतीति सबनको आवै ३ भयकी आकृति में गुण कहा है शील की प्रतीति औरनिको आवै ४ संकोचमें गुण कहा तिय को संकोच भूषण है ५ शोच में गुण कहा तियमें धर्मरीति जानी जाइ ६ विरह गुण कहा है सुतती दर्शन देय ७ विनोदमें गुण कहाहै मीत बेग भेटै ८ विरहा विलोकन में गुण कहाहै सखी मित्रको दिखाये ९ अरु विनोद विलोकनमें गुण कहाहै कि सखी मित्र मिलावै १० संकोच अविलोकन में गुरु जन सराहैं यह गुणहै ११ शोचअविलोकनमें शीलवती सराहैं सोई गुणहै १२ दर्शनविलोकन में यह गुणहै कि नैन व्यथा नाशै १३ निजप्रतिष्ठामें लोकमें कहा गुणहै लोक में स्तुति १४ भेटन के मनोरथमें कामव्यथा नाशै यही गुणहै १५ कुलप्रतिष्ठामें परलोक सुधरै यह गुण कहे ऐसे सतरंज के भाउलिखे प्रकाश कैसे दुहूं वोर परी घोरानगरमें घोरारा घरीहै याते प्रकाशसो यामें संदेह रहत बहुत बात परकीयाकी बहुत स्वकीया की यह तौ पूरब अनुराग राख्यौ चाही ऐसो प्रेम अरु भय २ भूप, संकोच शोच मंत्री, अरु विरहको विनोद पांच तरह को, तामें शाप पूर्वानुरागमें नाहीं होत ये चार पीत अरु तरल चंचल तुरंग यह अविलोकन श्रवण स्वप्नदो २ श्रवण तीन ३ प्रत्यक्ष ४ अरु रथ मनोरथ मनोरथके जे चारउपाय साम मित्रमिलन १ दाम आनदह २ भेद लगाइ आप की सखीको मिलाइ ३ दंड कुल कानि नाश करिबो ४ अरु प्यादा १६ सोरह शृंगारयुत जाहि देख आपु रीझौ दुहू ओर परी है और तुम्हारी और वाकी और घोर अतिशयघनी है केशवराइ सो नाहीं जानतको बाजी जीतत को हारत तुमतौ नाहीं मिलबो चाहत अरु वह चाहत सो देखी तुम जीतत कै वह ऐसी बाजीको रूप कहै सविषय सावयव यातैं सर्वांगवर्णन १७ ऐसी जिन कही तिनसे यह प्रश्न कि प्रेम अरु भय दो राजा हैं तौ दोहुन के सचिव केशवने वर्णनकै संकोचकुलकी अरु शोच मिलनको तौ दोई भांतिकी बाजी चाही तहां यह अर्थ कि विरह दो रीति को एक प्रच्छन्न एक प्रकाश सोई विनोद येई हैं अरु अविलोकन देखन कुललाज अरु लग्ननकी सोभी प्रच्छन्नप्रकाशतैं ४ रीति हैं ते घोरे अरु मनोरथ भी दोई एकहांसीतैं डारिबो दूसरे आपको देखबे सो भी प्रच्छन्नप्रकाशतैं ४ भये सोई रथ हैं अब इनके जे गुण हैं ते प्यादे हैं प्रेमको गुण स्वरूपदर्शन एकभयको गुण एक न रहै यही रीतितैं सब जान लीजै ॥१८॥

नायकाकी प्रच्छन्नचिंता ॥ यथा-कवित्त ।

केशोदास सकल सुवासको निवास तन, कहि कवि

भृकुटीविलासत्रास छोलि है। कैसो है सुदिन बडभागी अनुरागी जिहिं, इंग वाके संग संग लागी लागी डोलि है।। ऐसी हू है ईशपुनि आपनै कटाक्ष मृग, मदघनसार सम मेरै उरओलिहै। दीपके समीप पुनि दीपति वीलोक वह, चित्रकैसी पुतरीसु क्यों हू हँसिबोलि है ।।१९।।

नायक हमसों कहत किंवा विचार करत ऐसो दिन है विधाता कौन हू है कैवा जो चित्र कैसी पुतरी है सोहँसिकै मोसों बोलैंगी तो हँस बोलनके सब ये अंग कहत कि अपने रूपके गर्भतैं सुगंध ला उस समैं कहैगी मेरो तन सकल सुवासको निवास है अन्य सुगंध काहेको लगावत वा कहत समयको जो भृकुटिनको विलास है तासों मेरे तनमें जो त्रास है ताको छोलडारैगी अर्थ जुदा करिडारैगी अरु कौन दिन वह अनुरागी बडभागी ह्वै है जा दिन मेरे इंग चेष्टा के संग चेष्टा करैगा अरु प्राचीन पुस्तकनमें मेरे दृग वाके संग लागि लागि डोली हैं यह पाठ है सो मेरे उरमें ओलि है डारि है यह कब ह्वै है प्रश्न अरु अभिलाषको क्यों न कहियो उत्तर जहां विचारसों करे तहां चिंता जानिये मनसों वचन है याते प्रच्छन्न इहां पर्याय अलंकार एक विषे जु अनेकको वास बहूपराजय सकल सुवास एक तनमें जाके बसत है अरु कहूं मेरे अंग वाके संग लागिलागि डोलिहैं ऐसो भी पाठ है अरु मृगमद घनसार समतातैं धर्मलुप्तालंकार ।।१९।।

नायकाकी प्रकाशचिंता ।। यथा-सवैया ।

राधिकाकी जननीको जनीकोऊ क्यों हूं स्वयंवर बात जनावै।
देवकुमारसे गोपकुमारनि मान दै दै वृषभान बुलावै ।।
केशव कैस हुँ बाल भली बहुमाल सुमेरे हिये पहिरावै ।
तोहि सखी समदै सँग वाके सुक्यों यह बात सबै बनिआवै ।।२०।।

नायक वचन बहिरंग सखी सों कि राधिकाकी माताकी सखी स्वयंवर बनावै अरु वृषभानु गोपन को आदरसों बुलावे अरु राधा मेरे गरमें जयमाल डारै अरु तोहि सखी समदै विवाह की बिदाको कहत संग वाके वा राधा के संग ऐसी बात क्यों बनि आवत सखी अन्तरंग हो तो तो या न कहते कि तोको संगदेहिं याते प्रकाश देव कुमारसेमें धर्मलुप्ता अलंकार अरु प्रेमी है ।।२०।।

अथ गुणकथनलक्षण ।

दोहा- जहँ गुणगणमणिदेहिंद्युति, वरणत बचन विशेष ।
ता कहँजानहुँ गुणकथन, मनमथमथन सुलेष ।।२१।।

जहां गुणगण मनमें राखै अरु द्युतिको वरण विशेष करिकै मन्मथ काम लेख करिकै ।।२१।।

नायकको प्रच्छन्नगुणकथन ।। यथा–कवित्त ।

कीरतिसहित नित केशव कुँवर कान्ह, केवल अकीरति नृपति सोम मानिये । छुवतचंपकपात कुम्हिलात जाततन, अतिहरषितगात हरिजूको जानिये ।। कोमल सुवास युत प्यारेके परमपानि, कंटककलित नालनलिन बखानिये । लोचन विशाल चारुमदनगुपालजूके, मदनसरन दरशन रस हानिये ।।२२।।

उक्ति नायकाकी मनसों । कि कुँवर कान्ह कीर्ति सहित हैं ब्रजराज सदा द्युति वान अरु सोम जो शशि है सो केवल अकीरत है एक तौ ऋक्षराज सदा छीन कलंकयुत दिन मलीन अरु चंपक पात छूवेतैं कुंभिलात है अरु हरिको गात अति हर्षित होत है अरु प्यारेके पानि कोमल हैं औ सुवासयुत हैं अरु नलिन कमल कंटक युत हैं अरु मदनगुपालके नेत्र विशाल हैं मदन शरद रसतैं हीन अर्थ मदन सरनमें दर्शन रस नाहीं एकतौ उनमें दृष्टि नहीं दूजे वे दीखत नहीं इहाँ नायकके गुण वस्तुते उपमानके दूषण ताते दूषणोपमा मनसों कहत याते प्रच्छन्न जानिये ।।२२।।

नायकको प्रकाशगुणकथन ।। यथा–सवैया ।

खंजन हैं मनरंजन केशव रंजननैन किधौ मतिजीकी ।
मीठी सुधासरकी सुधाकी दुतिदंतनकी किधौं दाडिमहीकी ।।
चन्दभलो मुखचंदसखी लखि सूरति कामकी कान्हकी नीकी ।
कोमलपंकजके पदपंकज प्राणपियारेकी मूरति पीकी ।।२३।।

उक्ति नायकाकी बहिरंग सखीसों कि खंजन मनरंजन है कि नायक के नेत्रहैं मनरंजन तूं जीकी मति मोसों कहु मीठी सुधाकी है कि सुधाधर अधरकी है द्युति दन्तनकी नीकी है कितौ दाडिमहीकी है चन्द भलो है कि मुखचन्द सूरति कामकी आछी है कि कान्हकी कोमल कमल हैं कि पद हैं तब सखी कहत कि प्राणपियारे की मूरति पीकी है जैसे कोई कहे यह वृक्षमें पीको भये यामें नाहीं बहिरंग सखीसों कहत ताते प्रकाश सखीके उत्तरतैं उत्तरालंकार उपमान उपमेयकी बराबरी के संबंध तैं सारोपालक्षणा गुण कथनतैं गौनी अरु सुधाधर कहैं अधरको नाम नाहीं ताते रूपकातिशय उक्तिको संकर है ।।२३।।

नायकको प्रच्छन्नगुणकथन ।। यथा-सवैया ।

जो कहौ केशव सोम सरोज सुधासुर भृंगनि देह दहे हैं ।
दाडिमके फल श्रीफल विद्रुमहाटककोटिक कष्ट सहे हैं ।।
कोक कपोत करी अहि केसरि कोकिल कीर कुचील कहे हैं ।
अंगअनूपमवात्रियके उनकी उपमा कहँ वेई रहे हैं ।।२४।।

उक्ति नायककी मनसों कहत हैं जो मुख चन्दकी उपमा कहिये तौ सोमके अंग सुधा सुर तिन दहेहैं एककला नित्त लेत हैं सरोज कहौ नेत्रनकी उपमाको तौ सरोजनको भृंगन दह्यो हैं अरु दाडिम तौ वनमें शीत उष्ण वर्षा सहत हैं अरु कोक आदि कुचील हैं या ते उन अंगनकी उपमाको ये सब नाहीं इहां दूषणोपमा अरु अनन्वय को संकर है मनसों कहत यातें प्रच्छन्न ।।२४।।

नायकको प्रकाशगुणकथन।। यथा-सवैया ।

लोचनबीच चुभी रुचिराधेकी केशव कैसहूं जाति न काढी ।
मानहु मेरे गही अतुरागिनि कुंकुमपंकअलंकित गाढी ।।
मेरी यों लागिरही तनुता जनु यों द्युतिनीलनिचालकी बाढी ।
मेरही मानौं हिये कहुँ सूँघतियों अरविंद दिये मुख ठाढी ।।२५।।

नायक वचन सखीसों-कि लोचन के बीच मैं राधाकी रुचि मोहि चुभी है सो कढत नहीं कुंकुम पंक जो लगी है सो मानो मेरे अनुरागिन गहीहै कलंकित्त भी पाठ है अरु नील वसन नहीं जानौं मेरी तनुता लगी हैं अर्थ अंगके रंगसों है मानों अरु जो यह कमल सूंघत सो मेरे हृदय कमल मानों हाथके लिये हैं ऐसे गुण देहद्युति वर्णत है कहूं अरुविंद लिये ठाढी देखी है यातें प्रकाश इहां वस्तुउत्प्रेक्षालंकार जानिये मानों दयाते ।।२५।।

अथ स्मृतिलक्षण ।।

दोहा- और कछू न सुहाय जहँ, भूलि जाहि सब काम ।
मन मिलिबेकी कामना, ताहि स्मृति है नाम ।।२६।।

मनमें कामना और सब भूलि जाहि ध्यान सो लग्यो रहै सो स्मृति है ।।२६।।

नायकाकी प्रच्छन्नस्मृति यथा-सवैया ।

बोल्यो सुहाइ न खेल्यो हँस्यो अरु देख्यो सुहाइ नदु:ख बढ्योसो ।
नीकीयों बात सुनै समुझे न मनोमन काहूके मोद मढ्योसो ।।

केशव ढूंढत यों उरमें मन मूढभयो गुणगूढ पढ्यो सो।
को करै साज बजावैको बीन हि वाको कछू चित चाकचढ्योसो ॥२७॥

उक्ति अंतरंग सखी प्रति अंतरंगकी किंवा नायकाकों बोल्यो नहीं सुहात न खेलिबो हँसिबो न देखबो सुहाइ बढ्यो सो दुःख भयो है यह नीकी बात कोई कहै तौ न सुनै न समुझै मनो काहूके मोदमैं मन मढ्यो है मनमें कैसे ढूंढति है जैसे पढिके गूढ गुण मूढ होजाई फेर ढूँढन लगे हमारो कहा पढो है को साज करै को बीन बजावे वाको मनतौ चाकसो चढो है इहां नायका को विरह वस्तुते व्याघात अलंकार सुखद दुःखद ह्वै गये चित्तको चाकचढ्यो सो बतायो स्मृतिदशा सखीने नहीं जानी याते प्रच्छन्न ॥२७॥

नायकाकी प्रकाश स्मृति ॥ यथा-सवैया।

मेरे मिलाये हिये मिलिहौं मनमोहनसों मनमीहि न दीजै।
मौनहि मौन बने न कछू अब क्यों मनमानदके रस भीजै॥
ऐसही केशव कैसे जियौ अहो पानन खाउ तौ पान्यौ न पीजै।
जानि है कोऊ कहा करिहौ तब सोचि न एक तौ सकोच तौकीजै ॥२८॥

सखी वाचन नायका सों। जानजै है कोऊ तब कहा करिहौ तब नायका कही यह शोच नाहीं काहे सब जानति हैं तब सखी कही संकोच तौ राखिये पान नाहीं खाती तौ पानी तौ पीयो यामें लोग हँसि हैं ऐसी निपट लीन रहति है पियसों नायकाने कहो सब जानतिहौं यही प्रकाश इहां उपादान लक्षण जहां आनको गुण गहै तौ पानीतैं भोजन पान अय गये प्रेमा उत्तराको संकर है ॥२८॥

नायककी प्रच्छन्नस्मृति ॥ यथा-सवैया।

घोरि घनो घनसार घस्यो घनश्याम सुचंदन ह्वै तन तूल्यो।
केशवकुञ्जको कूल चिते प्रतिकूल भये शुभफूलन फूल्यो॥
भूले सडोलतबोलत हूं उतजात कितै मन संभ्रम फूल्यो।
जानति हौं यह काहुको आजु मनोहरिहारहिंडोरन झूल्यो ॥२९॥

सखी वचन नायक सौं कि घारिकै घने घनसार कपूर घस्यौ सो हे घनश्याम सुगंधन तुल्य तुम्हारे चित्ततैं तनकी तूल ह्वैगयो कहा श्याम ही ह्वैगयो अर्थ जर कर उठगयो अरु कुंजको कूलभी तुम्हारे चित्ततैं प्रतिकूल ह्वैगयो कैसो है कुंज जो शुभ फूलनिफूल्यो तामें मन तुम्हारो संभ्रम भूल्यो है किंवा सब फूलनफूल्योभी पाठ है तहां प्रतिकूल व्है गयो कहे सब फूलन फूल्यो तिहारे बिरहकी तापते भूले सो डोलतहौ अरु बोलत हौ उत कित जात हौ मन भ्रमसहित करि कैसी मैं जानतहौं

तिहारो मन काहूके मनोहरिहारके झूलामैं झूलो है इहां सखी अनुमान कर कहत ताते प्रच्छन्न अनुमानालंकार अरु कोई यह प्रश्न करत जो नायकको मन संभ्रम भूल्यो कहिये तो हारहिंडोरा निर्धार सखीने जान्यो तो प्रकाशही ह्वै गई जो कहै मेरो मन संभ्रम भूल्यौ तौ प्रच्छन्न है तहां मन शब्द एक ओर चाही हार हिंडोर कौन झूल्यो है। उत्तर-चितैको अर्थ चितही तुम्हारे प्रतिकूल भयो है कुंजके कूलते चित्त ही उहां लग्यो हार हिंडोरा झूल्यो है कै यह मेरे मन संभ्रम है सखी स्मृतिदशा निर्धार नाहीं जानति यातें प्रच्छन्न अलंकारव्याघात ॥२९॥

कृष्णकी प्रकाशस्मृति ॥ यथा-सवैया।

वासनवासभयो बिसकेशव डासनडासनकी गति लीने।
चंदनचांदनी ज्यों चित चाहै न चंद्रकवंदचितारस भीने ॥
पानन खातन पानकरै कछुहास बिलास बिदाकर दीने।
ऐसी है गोकुलको कुलकी जिनि गोकुलनाथके जे ढंग कीने ॥३०॥

बासन वस्त्र बास सुगंध डांसन बिछौना डांसडांस सखी बहिरंग है सो जानति नायकाको नहीं जानति याते प्रकाश इत्यादि चिंता समानते चंद्रकपूर व्याघाताऽलंकार जानिये ॥३०॥

अथ उद्वेगलक्षण।

दोहा- दुखदायक ह्वै जात जहँ, सुखदायक अनयास।
सो उद्वेग दशा दुसह, जानहु केशवदास ॥३१॥

सुखदायक अनयास दुःखदायक होजाय सो उद्वेग की दुसह दशा है ॥३१॥

प्रियाको प्रच्छन्नउद्वेग ॥ यथा सवैया।

चंदनहीं विषकन्द है केशवराहु यही गुणलीलिन लीनों।
कुम्भज पावन जानि अपावन धोखै पियौ पचि जानि न दीनो ॥
यासों सुधाधर शेष विषाधर नाम धरो विधि है विधि हीनों।
सूरसों माई कहा कहिये जिन पाप लै आप बराबरि कीनों ॥३२॥

उक्ति नायकाकी मनसों। कहत कि चंद नाहीं है विषकी जर है राहु यह गुणते लीलनहीं लेत दूजे हेतु कुंभज बडे पवित्र तिन पान कियो ताते अपवित्रके धोखे ते पियौ पचिन जान दियौ तासों तौ सुधा अमृतधर कहत अरु शेष विषधर काहे शेष हजार मुख ते क्षमा धारण करैं यह एक मुखते लाख वियोगिनीको नाश करतहै सो विधि सिख विधि हीन है बुद्धिहीन पाठमें बुद्धि ते हीन है परन्तु सूर्य सोंका कहिये ऐसे पापीको आप बराबर करो यामें कोई यह प्रश्न करै कि चन्दसों

दु:ख पायो अरु शेषसों कहा सुख पायो जो कहति याको विषधर क्यों कह्यो अरु सूर्यने बराबरि कहाकियो सूर्यलोक उष्ण है चन्द्रलोक शीतल है अथवा सूर्य दिनकर चन्द्र निशिकर यह विरुद्ध हैं ताको उत्तर यह है कि शेषके मुख हजार हैं तो मुखते महादु:ख देनहार जो पवन है ताको भक्षण करत याते हितकारी कह्यो अरु सूर्य चन्द्रमाकी कला मिलाइलेत अमावसको आपुने बराबर धारण करत हैं याते चन्द्रमा सूर्यके बराबरि भयो पापीको बराबर आप क्यों कियो यहांई व्याघात प्रतिषेधालंकार पूर्ववत् है ।।३२।।

नायकाको प्रकाशउद्वेग ।। यथा-सवैया ।

केशव काल्हि विलोकि भजी वह आजु विलोके बिनो सो मरैजू ।
वासरबीस बिसे विष मीडिये राति जुन्हाईकी ज्योति जरैजू ।।
पालिक तैं भुवभूमितैं पालिक आलि करोरि कलाप करै जू ।
भूषणंदेहि कछू ब्रजभूषण दूषण देहिको हेरि हरैजू ।।३३।।

सुगम । सखी नायकसों कहतहै कि काल विलोके आजु बिन विलोकें मरति है बासर (दिन) में विषमें मीजी रहत अरु रातितौ जुन्हाईकी ज्योतिते जरीजात जे पालिक हैं तिनते भुव भूमि ते पलिक हो रही है आली करोर कलाप करतिहै बहिरंग सखी ते प्रकाशकाहे नायकाके समाधान हेतु भूषण मांगत वाके मनकी बात नाही जानति अन्तरंग सखी होती तो नायकको लिवाय जाती ताते तुम हे ब्रजभूषण वाके निमित्त भूषण देहु जामें वाकी देहको दूषण नाश होहि पालिकते भुव भूमिते पालिक आली करोरि कलालि करैजू या पाठ में अत्यन्त उद्वेग है अलंकार व्याघात ।।३३।।

नायकको प्रच्छन्नउद्वेग ।। यथा-सवैया ।

मेघन ज्यों हँसिहंसन हेरत हंसन ज्यों घनरूप न पीवें ।
कञ्चन ज्यों चितचन्दन चाहत चन्दन ज्यों कञ्जनि क्योंहूँ छीवें ।।
तालतैं बागनि बागत तालनि तालतमालकोजातनि सीवें ।
कैसी हैं केशव वेयुवतीं सुनि ऐसी दशा पियकी पल जीवें ।।३४।।

नायिका सखिन में बैठी है तहां अंतरङ्ग सखी प्रस्ताव ते पियकी बात नायिकाको सुनाइके कहत है कि वे युवतीं कैसी हैं जे ऐसीकी दशा सुनिकै नायक की पल आप जीवती हैं अर्थ नायक की दशा ऐसी है तू जायके मिल नायक की दशा मेघ हंसको परस्पर वैर है तैसे मेघन की रीति ते हंस हंसनकी रीति ते मेघन देखत है कंजन की रिति ते चन्दनही हेरत अरु चंदनकी रीतिते कंज नाहीं परसत तालते बागनमें आवत अरु बागते तालनमें अरु जहां ताल तमाल दोई

हैं ॥ तहां नाहीं जात याते संकेत सूचित प्रस्तावते करो ताते प्रच्छन्न है जो सखी अंतरंगते अलंकार व्याघात पूर्ववत् ॥३४॥

नायकको प्रकाशउद्वेग ॥ यथा-सवैया ।

शोचि सखी भरि लेति विलोचन कांपत देखत फूले तमालहि ।
भूलेसे डोलत बोलत नाहिंन बागगए किधों तेरेई ताल हि ॥
देख्योजु चाहति देखे न आवति ऐसे मैं हों न दिखा उरी लाल हि ।
आजु कहा देखे साधि लगो जब देख्यो सुहाइ कछू न गुपालहि ॥३५॥

उक्ति बहिरंग सखीकी नायिका प्रति । शोच ते नेत्र भरि २ लेत अरु फूले तमाल को देखिके कम्पत भ्रमेसे डोलत कबहू तेरे बागमें कबहू तेरे तालपै और देखे चाहत सो नाहीं देखिपरत ऐसी मैं हौं न दिखाऊंगी लालको आजु तुम्हैन कहा देखिबेकी इच्छा लगी है जब गोपालको कछू नाहीं सुहात इहां सखी बहिरंग है देख्यो जु चाहत याते प्रकाश ते अलंकार पूर्ववत् ॥३५॥

अथ प्रलापलक्षण ।

दोहा- भ्रमत रहै मन भौंर ज्यों, है तन मन परतापं ।
वचन कहै प्रियपक्षसों, तासों कहत प्रलाप ॥३६॥

मन तौ भ्रमत रहै अर्थ एक जगह थिर न रहै अरु वचन कहै सो वचन व्यर्थ कहै ॥ प्रश्न-अमरकोशमें यह कह्यो है कि "प्रलापोऽनर्थकं वचः" । तौ प्रालप यहिते वृथा बचनको नाम भयो सो या लक्षणमें नाहीं निकसत । उत्तर-प्रियपक्ष वचन कहै अथवा प्रियपक्ष को ऐसो अर्थ कीजिये कि जैसो जाको व्यसन होइ सोई बकिबेमें आवत है "भावत है मनमें सदा है ॥ तनमन परिताप" ऐसो भी पाठ है ॥३६॥

नायकाको प्रच्छन्नप्रलाप ॥ यथा-सवैया ।

खेलन हांसी न खोरि अटाउनहेतुनवैरहियौ कम्पै हो सों ।
लेनो न देनो हलाउ भलाउ रनातो नगोतो कहा कहौं तोसों ॥
आनि दियौ सुखमें दुख केशव कैसे हँसोरी कहा कहीको सों ।
नैननि नीरभरे कहै ग्वालिनि देख्यो तैं कान्ह कहा कह्यो मोसों ॥३७॥

सखी बहिरंग आन सखी सों कही इन ग्वारिन कहा कह्यो मोसों सो मैं न जानी जो वह नायिकाने प्रलापके वचन कहे हैं आइके सखी सो ऊपर ते बचन

नायिकाके हैं पर वृथावा कहैं खेलन हांसी यह ऊपर कह्यो है ''बैरु न हेत हियो का परसा'' भी पाठ है अरु ''कहति कैसे हँसोरी कैसी सहोरीं'' भी पाठ है ॥ अरु कहा कहि कोसों देखो तो कान्ह ए सब पद अलग्न ताते प्रलाप अरु इन सखी कछू न समझेउ याते प्रच्छन्न परन्तु यामें प्रलाप मात्र निकसत वचन नाहीं है तहां नायका कहति देख तौ कान्ह मोसों कहा कह्यो मिलनो कि नाहीं ''नैन भरी भरी ग्वालि कहै अलि'' यह भी पाठ है अलंकार पूर्ववत् ॥३७॥

नायकाको प्रकाशप्रलाप ॥ यथा-सवैया ।

आलिन मांझ मिली हुति खेलति जानैको कान्ह धौं आये कहातैं।
डीठिहि डीठि परयो ना कछूसु ढिठाई गही हठि पीठकी घातैं ॥
गई गडि लाज नहीं हि यहौं तौ उठी जरिको सबकाँपनीयातैं।
इतीरिस मैं न सही कबहूँ पै रही बचि हौं अँखियानके नातैं ॥३८॥

सब वचन नायका के बहिरंग सखीन प्रति ॥ नायकाको देखि जो सात्त्विक कंप भयो ताको छपावत कि आजु मैं आलिन में खेलत रही तबलौं को जानै कान्ह कहां ते आए सो जब सों डीठ डीठ सामुहे भई तब ढिठाई वाने गही हठ पीठ की घातेत तब मैं तो लाज में गडि गई अरु जरि उठी ताहिते कानपति हौं अरु इतनी रिस मैं नहीं सही है कबहूं पै बचिगई केवल आंखिन के नाते ते इहां प्रीति दुरावति है अरु सबसों कहति है ताते प्रलाप में प्रकाश विरोधाभास अलंकार वरि उठी गडिगई यह बिरोधसो लगत प्रलापमें अविरोध है ॥३८॥

नायकको प्रच्छन्नप्रलाप ॥ यथा-सवैया ।

नील निचोल दुराइकपोल विलोकति हीं किये ओलिकतो ही।
जानिपरी हँसि बोलति भीतर भाजिगई अबिलोकति मोही ॥
बूझिबेकी जक लागी है कान्हहिं केशव के रुचि रूप लिलोही।
गोरसकी सों बबाकीसों तोहिकी बारलगी कहि मेरीसों कोही ॥३९॥

उक्ति अंतरंग सखी की कि आजु मोहिं देख नील निचोल वस्त्र ते कपोल दुराह मोहिं देखि भाज गई अरु मोकों यह जानिपरी हँसि कि भीतर बोलति है कान्ह को जक बूझिबेकी लगी है की कि रुचिरूपलिलोही लालची होइकै मिलोहों भी पाठ है सो तोकों सपदि है कि बारलगी सो कह को रही ऐसे मोसों कहत रहे यहां जान परी अरुकोही ए दोऊ शब्द विरुद्ध हैं याही ते प्रलाप सखी अंतरंग ते प्रच्छवस्वभावोक्ति अलंकार ॥३९॥

नायकको प्रकाशप्रलाप ।। यथा-कवित्त ।

मोहन मरीचि कासो हांस घनसार कैसो, बास मुख रूपकैसो रेखा अवदात हैं। केशोदास वेणी तो त्रिबेणीसी बनाइ गुही, जामें मेरे मनोरथ भुनिसे अन्हात हैं।। नेह उरझेसे नैन देखिबेको बिरुझेसे, बिझुकीसी भौहैं उझकेसे उरजात हैं। देवीसी बनाई बिधि कौन कीहैजाई यह, तेरे घर आई आजु कहि कैसी बात हैं।।४०।।

यहां जो बातैं कहत है सो सब अभिलाप हैं ताते प्रलाप के नेहुमें उरझेसे नयन यामें नायका नेहवती जाके बैन उरझे प्रेममें अरु उरझे से उरजात हैं यामें मुग्धा वय संधिमें प्रलाप अरु तेरे घर आइ जो सो कहत है सो बहिरंग याते प्रकाश मोहनमरीचिका सो हास यामें पूर्ण उपमा हास उपमेय मोहन धर्म सो वाचक मरीचिका उपमान घनसार कैसी वास में लुप्ताबात मुपरूपकी भी पाठ है ।।४०।।

अथ उन्मादलक्षण ।

दोहा- तरकि उठै पुनि उठि, चल, चितै रहै सुख देखि ।।
सो उन्मादगनावही, रोवै हँसै बिशेखि ।।४१।।

तर्कना करै, उठि चलै, चितै, रहै सुख देखिकै अर्थ सुख न मानै ।।४१।।

नायकाको प्रच्छन्न उन्माद ।। यथा-सवैया ।

केशव सुबद्धि सिद्ध हरि तुम बिनवृथा अगाध राधि हि बाढी।
छूटी लट लटकति कटितट चितवति नीठ नीठ कर ठाढी ।।
तरकि तोरति तनुतलफति अति अपार उपचारनि डाढी।
सकसकांतिलै श्वास अचेत सुचेतहु प्रेम प्रेतगहि गाढी ।।४२।।

सुबुद्धि सिद्धि हरि ए तीन शब्द संबोधनके काहेको कहे ऐसी कोई कहै तहां सखी अंतरंग है सब नायक नायका के भेद जानति हैं कि तुम कहो वाको कछू व्याधि भईहू है सो सखी कहति तुमको सब सुधि हू है अथवा तुम सुसुंदर विधि बुद्धिवारे हो जो रोग है सो जानत हौ कदाचित् कहो हम कैसे जाहिं आन के घरमैं तौ तुम सिद्धहौ सिद्ध जहां चाहै तहां जाय कहो पीर कैसे हरैं तो तिहारो नाम हरि है हरणकरताहौ अंतरंग सखीते प्रच्छन्न प्रेम प्रेतको रूपक अरु सुबुद्धि विशेषण हरि साभिप्राय है ताते परिकरांकुर अलंकार "केशव सुधिबुद्धि रहै तुम्हैं बिनु बिथा अगाब राविकही बाढी" भी पाठ है ।।४२।।

नायकाको प्रकाशउन्माद ।। यथा-सवैया ।

केशव चौकति सीचित वैक्षिति पांथर कैतर कैतकि छांहीं ।
बूझिये और कहै मुख औरसु औरकी औरभई क्षणमाहीं ।।
डीठी लगी किधौं बाइ लगी मन भूलि पर्‍यो कै कर्‍यौ कछुकाहीं ।
घुँघुटकी घटकी पटकी हरि आजु कछू सुधि राधिकै नाहीं ।।४३।।
सुगम । सखी बहिरंग ताते प्रकाश संदेहालंकार ।।४३।।

नायकको प्रच्छन्नउन्माद ।। यथा-सवैया ।

गूढ अगूढ प्रकाशित बात निलोकलोककी बात सरीसी ।
रोवतहै कबहूं हँसि गावत नाचत लाजकी छाँह छरीसी ।।
काहूको शोचु सकौचुन केशव देखति आवति देह मरीसी ।
बामकि बाइकि कामकि बाइकि है हरिकी मति काहू हरीसी ।।४४।।
यामें सखी निश्चय नाहीं करो कि कहाभयो ताते प्रच्छन्नसंशयालंकार ।।४४।।

नायकको प्रकाशउन्माद ।। यथा-कवित्त ।

सजल चकित चितवत चितचहूं दिशी, चाइचाइ रहैं मुख चपुल चलत धाइ। शोचतसे मनमन कंपत तपत तन, केशोदास रोवत हँसत उठै गाइ गाइ ।। चलहि दिखाऊं तोहिं देखत ही भयो मोहिं, भयो सु कहन आई तोसों कलि अकुलाइ। जैसे कछु अकुवाकु बकत हैं आजु हरि, तैसे जिन नावँ मुख काहूको निकस जाइ ।।४५।।

सखी बहिरंग है कहति कि चलि तोकों दिखाऊं ताते प्रकाश जात्यलंकार ल० जैसो जाको रूप गुण कहिए तैसो साज ।। यहां सज़ल बकित ए भाव कहे ताते भावसबलता ।।४५।।

अथ व्याधिलक्षण ।

दोहा- अंगबरण विवरण जहां, अति ऊंचो उश्वास ।।
नैन नीरपरताप बहु, व्याधि सुकेशवदास ।।४६।।
सुगम ।।४६।।

नायकको प्रच्छन्नव्याधि ।। यथा-सवैया ।

बैन तज्यो उन बीनतैं बोल्यौ न बोलि विलोकति बुद्धि भगी है ।

बैन सुनैः समुझैन तुबातहि प्रेत लग्यौ किथौं प्रीति जगी हैं ।।
केशव वेतुहि तोहिं रटें रट तोहिं इतै उनहींकी लगी है ।
वे भषैं पानन पानी नतू सुतौ कान्ह ठगे कि तू कान्ह ठगी है ।।४७।।

सखी संशय करति है कि तोकों कान्हने ठगे हैन कि तूं कान्हको ठगी यह संदेहते प्रच्छन्न प्रेम संदेहा को संकर अर्थ सुगम ।।४७।।

नायकाको प्रकाशव्याधि ।। यथा-सवैया ।

उनकेतनतापतैं तापि ये ह्यांइन केतनतो अंशुवान अन्हैयैं ।
व्हाँ उनके उडजै यैउ सासनिह्यां इनके उपचार जुडै थैं ।।
केशव वे वृषभान लडी नँदलालनएपै निदाननपै थैं ।
एकही बेर दुहूँनि कहा भयौ माई यहै चलि देखि डरै थैं ।।४८।।

आंशू श्वास ते व्याधि दोउन को ताते न्यारो न जानिये प्रेमालंकार ।।४८।।

अथ जडताक्षण ।

दोहा- भूलि जाय सुधि बुधि जहां, सुखदुख होय समान ।
तासों जडता कहत हैं, केशवराय सुजान ।।४९।।

सुधि बुधि भूलजाइ सुख दुःख समान होय सो जडता ।।४९।।

प्रियाकी प्रच्छन्नजडता ।। यथा-सवैया ।

खरे उपचार खरी सियरी सियरेतैं खरोई खरो तन छीजैं ।
ऐसे मैं और कि एतै कछू उपजैतैं सकेलकहा हम लीजैं ।।
देखत हीं यह कामलता कुम्हिलानियै जाति कहा अब कीजैं ।
कौन पै जाउँ कहा करों केशव कैसे जियै वह क्यों हम जीजैं ।।५०।।

सखी अंतरंग है ताते प्रच्छन्न जडता कहत हैं खरे उपचारते शीतल होजाते शीतलंते खरी ऐसे मैं आन करै तौ आन होजाइ इत्यादि पद सब सुगम पञ्चम विभावनालंकार कारण कार्य्य विरुद्धते ।।५०।।

प्रियाकी प्रकाशजडता ।। यथा-सवैया ।

अँखियानि मिली सखियानि मिली, पतियान मिली बतियां तजि मोने ।
ध्यान विधान मिली मनहीं मनज्यों मिलै एक मनोमिल सोने ।।
केशव कैसहुं बेगि मिलौ तन, ह्वै है वहै हरि जो कछु होने ।

पूरण प्रेम समाधि मिलैं मिलि, जैहै तुम्हैं मिलहौ तब कोने ।।५१।।

मनोमय सो मैं मनोमय है कि सोनेसी मिलेज्यों एक प्रेमतौ है ही पर पूरणसमाधि मिलै तुममें मिलजै हैं तब कौनको मिलिहौ अर्थ कि समाधिसी भई है पूरब समाधि होनीहे यामें जडता कढी सखियान के संग मिली यामें प्रकाश प्रेमालंकार ।।५१।।

नायककी प्रच्छन्नजडता ।। यथा-सवैया ।

पलही पल शीतल होत शरीरबिचारे सबै उपचार निदानें ।
जो करिये तनखंडनमंडचित्त कछू सुखदुःखन आनें ।।
केशव कान सुनै समुझै नहिं बूझिय कौनहिं को यह मानें ।
योगलियो कै बियोग है काहुको लोग कहा इनरोगनि जानें ।।५२।।

सुख दुःख चित्त नहीं समुझै है यह जडता योग है कि वियोग है यातैं प्रच्छन्न संदेहालंकार ।।५२।।

नायकको प्रकाशजडता ।। यथा-सवैया ।

कान्हके आसन वासन हीन हुताशनमीतको प्रासन कीजै ।
केशव इंद्रिय सोधि सबै मन साधिसमाधिनके रस भीजै ।।
जौलों भये हरि सिद्धप्रसिद्धन तौलों विलोकि अलोकन लीजै ।
देवीकरै तपितो लगिबे वरदाननजो जियदानतो दीजै ।।५३।।

हुताशन मीत पवन को प्रासन भोजन करत है और समाधिके सरसभीजे हैं इह जडता कढी तौ लगि तप करैं हैं यामें अपन जानै वो जतायो सो बहिरंग है संभावनालंकार जो वरदान नहीं तौ जियदानहँ दीजै जौ तौ ए शब्द पूरे ।।५३।।

अथ मरणलक्षण ।

दोहा- बने न केहूँ मिलन जहँ, छलबलकेशवदास ।
पूरण प्रेम प्रतापतैं, मरण होहि अनियास ।।५४।।

सुगम ।।५४।।

दोहा- मरण सुकेशवदासपै, वरणों जाइ निमित्त ।
अजर अमर तासों कहैं, कैसे प्रेतचरित्त ।।५५।।

'अजर अमर जस करि कहों' भी पाठ है सुगम ।।५५।।

दोहा- रति उपजै रमनीनके, पहिले केशवदास ।

तिनकी इंगित जान सखि, करत सुप्रेम प्रकाश ।।५६।।

सुगम ।।५६।।

दोहा- अति आदर अति लोभतैं, अतिसंगतितैं मित्त ।
साधुनिहूको होति है, केशव चंचल चित्त ।।५७।।

सुगम ।।५७।।

दोहा- सुभगदशा दशमैं कही, उपजै पूरनराग ।
जिहिं बिधि उपजै मानमन बरनहुं सुनहु सुभाग ।।५८।।

इति श्रीमन्महाराजकुमारइन्द्रजीतविरचितायां रसिकप्रियायां विप्रलम्भशृंगारपूर्वानुरागवर्णनं नामाष्टमः प्रकाशः ।।८।।

सुभग दशा दशमैं कही हैं कि पूरनराग कहिये प्रीति उपजै है अब जिहिं विधि ते मनमें मान उपजै सो बरणत हौं हे भाग्यवान पुरुष सुनो ।।५८।।

इति श्रीमन्महाराजाधिराजकाशिराजश्रीमदीश्वरीप्रसादनारायणसिंहबहादुर-स्याज्ञाभिगामिललितपुरनिवासिहरिजनकवीश्वरात्मजेन सरदाराख्यक-वीश्वरेण विरचितायां रसिकप्रियायां भूषणे सुखविलासिकानाम-टीकायां दशदशावर्णनं नामाष्टमः प्रकाशः ।।८।।

अथ नामलक्षण ।

दोहा- पूरण प्रेम प्रतापते, उपजपरत अभिमान ।
ताकी छबिके छोभसों, केशव कहि यतमान ।।१।।

सुगम ।।१।।

दोहा- मानभेद प्रकटहि प्रिया, गुरु लघु मध्यम मान ।
प्रकटहिं प्रीय प्रियान प्रति, केशवदास सुजान ।।२।।

सुगम ।।२।।

गुरुमान ।

दोहा- आनि नारिके चिन्ह लखि, कै सुनि श्रवननि नाउ ।
उपजत है गुरुमान तहँ, केशवदास सुभाउ ।।३।।

सुगम ।।३।।

नायकाको चिह्नदर्शन प्रच्छन्नगुरुमान ।। यथा-सवैया ।

आजु मिले वृषभानकुमारिहि नंदकुमारवियोग बितैके।
रूपकी रास रस्यो रस केशव हांस बिलासनिरोसरि तैके।
बागेके भीतर देखि हिये नख नैननवाइ रही सुइतैके।
फूलहिमें भ्रम भूलि मनो सकुचे सरसीरुह चंद चितैके ।।४।।

वृषभानु सुताको नन्दकुमार वियोग बिताइ मिले रूपकी राशि सों नायकासों रस्यो रस बहुत अर्थ रस लियो अरु हास बिलास रासे रीतिकै फेरे बागे मैं आन तियाकी नखरेखा देखी तब नयन कैसे नवाये जैसे कमल चन्दको देख संकोचि खाय इहां रीस रीतैके कहा लघुमान छुटाइ अन्तरंग अन्तरसों कहत याते प्रच्छन्न उत्प्रेक्षा अलंकार ''बागेके भीतर देखि हिये नखरेख बनाइ रही'' भी पाठ है ।।४।।

नायकाको प्रकाश गुरुमानश्रवणते ।। यथा-सवैया ।

बूझतहीवहगोपीगुपालहि आजुकछूहँसिकैगुणगाथहिं।
ऐसेमेंकाहूकोनामसखीकहिकैसेधौं आइगयोव्रजनाथहिं।।
खातिखवावतिहीजुबिरीसुरहीमुखकीमुखहाथकी हाथहिं।।
आतुरह्वैउनआंखिनते अँशुआनिकसे अखरानिकेसाथहिं।।५।।

गोपकुमारी बूझत बतरात रही नंदनंदनके साथ ता समय हरिके मुखते, आन गोपी को नाम निकसो सो सुनि जो बीरी खात खवावत रही सो जहां की तहां रहि गई अरु उन अखरानके साथ अँशुआ निकसे तौ सहोक्ति अलंकार कहो चाहिये परन्तु इहां अपर कारण अँशुवा कारजकी चपलता है ताते चपलातिशयोक्ति जानिये ।।५।।

नायकाको प्रच्छन्नगुरुमान ।

दोहा- लोकलीक -उल्लंघि कछु, प्रिया कहै जब बैन।
उपजत है गुरुमान तहँ, प्रीतमके उर ऐन ।।६।।

लोक की मर्यादा उल्लंघके नायका कुछ बात कहै तहां गुरुमान प्रीतमके उर रूपी घरमें उपजै ।।६।।

कृष्णको प्रच्छन्नगुरुमान ।। यथा-कवित्त ।

ऐसी ऐसी रति राचे सोंहनके सांचे श्याम, देखौं आनि बांचि किधौं कौन किये चीठी है। सुनहु सभाग पाई रावरीये पागमहँ कागदके रूपहू सुआगकी अँगीठी है ।। जानति हौं एही मग पायो है जनम जग, औहू

अविलोकनकी बीथी तुम दीठी है, काहेको कहावत कटुक कालकूटसी, एक ह्यो हरिहरैं हँसि हमको तौ मीठी है ।।७।।

नायिका नायक सों कहत यातें प्रच्छन्न चीठी पागमें ताको आगि कहनो यह लोकलीक उलंघनी यते गुरुमान भयो इहां कारणते कारजको ज्ञान जैसे रजबर्षाते कीच ताते अनुमान ।।७।।

नायकको प्रकाशगुरुमान ।। यथा-कवित्त ।

आपनसो आपनेहीं आगे कहियत किधों, खोरके खजानै खोरहीमें खोलियत है । डीठहू तौ रोकियत जोर कहूँ जाइ केशो, और कहूं नैनलै छुरी सों छोलियत है ।। वेई घनश्याम जिन बिन घनी घरनीनि, घरीहूमें घने घनसार घोलियत है ।। बोलत हौ कैसे ऐसे बोलौ जैसे बोलियत, मौलहू लियेसों ऐसे बोल बोलियत हैं ।।८।।

उक्ति नायका सों सखीकी । कि आपनेसो आपनेई आगे बातै कहने परती हैं कहू बाकी जो खोर है ताके खोरनमें गलीनमें खजाने खोलियतहै दीठ तौ रोकत है जोर कर कहू जाइ तौ जात नहीं देत अरु का नैन छुरीते छोले जात हैं जे वेई घनश्याम हैं जिन बिन बहुत घरनी बिछुरे घनसार घोरती हैं बोलती कैसे हौ ऐसे बोलो जैसे सब बोलत हैं मोलहूके लयेते ऐसे बोल नहीं बोलियतु जैसे तुम बोलती तहां कोई कहै सखीको अपराध दुरायो चाहिये तौ जाहिर करति कि जिन बिन घर घरनी घनसार घोरती तहां तिहारे हेत उपचार करती यह उत्तर कीजै अरु कोई ऐसो भी कहत नायिका कही वे जेई घनश्याम हैं जिन बिन घनी घरनी बिरहिन होती अरु कोई ऐसो भी अर्थ करत नायिका कही कि अपनो जो है तासों आपनै आगे बोलियत जे खोरके खजानै खोरमें खोलत सो या अर्थ ते कवित्त अलग्न हो जात है इहां जो सखीने कही कि तुम खोरमें नायकको त्रास दिखावती सो लोकलीक लांघी अरु गलामें खोरके खजाने खोले सोई प्रकाश अरु कोई सखाके हाँकसे बोलत तब नायिका जैसे बोलत अरु खोर खोर बोल बोल एक शब्द बहुवार ताते लाटानुप्रास है अरु कोई अनुमान और उत्तरालंकार भी सखीको प्रति उत्तरते कहत ।।८।।

अथ लघुमानलक्षण ।

दोहा- देखत काहू नारित्यों, देखै अपने नैन ।
तहँ उपजै लघु मानकै, सुनै सखीके बैन ।।९।।

नायक को अन्य स्त्री देखत नायका अपने नैनसों देखै कि वा सखी से सुने तहां लघुमान उपजत है ॥९॥

प्रियाको लघुमानप्रच्छन्न ॥ यथा-सवैया ।

कान्ह तिहारी वे प्रान प्रियाके अयान सयान सबै मनमाहीं।
मान किधौं अपमान अबै यह मान लखौ अनुमानेन जाहीं।
सुखदुःखन केशव जानि परे समुझै रिस हांसी नहीं अरु माहीं।
यों सियरीखिन हूं खिनताती हैज्योंबदलै बदरानकी छाहीं ॥१०॥

सखी नायक सों कहतिहै हे कान्ह तियारी जो प्राणप्रिया है ताके अयान अरु सयान सब मनमें है यह मान है कि अपमान है यह तुम मानी अनुमान मति करौ "मान किधौं अपमान सबै यह मानुषपै अनुमानि न जाहीं" इस पाठमें मनुष्य पै अनुमान नहीं करचोजात सुख दुःख नहीं जान्योंजात समुझत रिस हाँसी नहीं और नहीं ए दोई नहीं समुझत छाँहीं अबै क्षण क्षण सियरी ताती होति जैसे बादर की छाँह तौ यामैं मान कीनो सो अनुमानतैं नायक जानों ताको सखी छपावत है यातैं प्रच्छन्न उपमा अलंकार ॥१०॥

नायकको प्रकाशलघुमान ॥ कवित्त ।

झूंठेहू न रूठियेरीईठ सोई तौ कहावनेक, पीठदेइ ईठकौनके भए
अली । काल्हकेतो नंदलाल मोसों घालि लालि करै, काल्हहीन आई
ग्वारिजोपै तू हूती भली ॥ आजुही जु बीचपरीबीच परिबे को माई,
आनरंग आन जिय ज्यौं कनेरकी कली । तेरेही कहेकी कोऊ साख
हैजू बूझियेरी, देखिये जु आंखि ताहि साखकी कहा चली ॥११॥

सखी वचन नायका सों। किं झूंठेहू न रूठिये तब नायका कही में नेक पीठ देत तब सखी कही काल्हिकी घाल उताइल लालु करिरहे हैं नायका काल्हि क्यों न आई सखी अजहूं बीचपरी तीय तिय कही बीच परिबेको वासों जो आन रंग है कनेर की कली ज्यों ऊपर लाल भीतर सेत बिनुरंग सखी कही अंतरंग क्योंकरि जान्यों ऊपर लाल भीतर सेत बिन रंग सखी कही नायका तेरेही कहैं तब नायकाने कही आंखही देखिये ताको सखी कहा तौ इहां नायकाने अन्य तियाको देखत देख्यो है जो बातैं करत लख्यो तो कहती मैं अपने कान सुनी देखिये आंखियामें देखतेही देखौ आजुही बीच परी याते बहिरंग प्रकाश भयो उत्तरालंकार पूर्ववत् ॥११॥

प्रियाको प्रच्छन्नलघुमान ।

दोहा- प्रियको कह्यो कर्‌यो नहीं, प्रियको नाहीं लाज।
उपजत है लघु मानतहँ, वरनतहैं कविराज ।।१२।।

प्रिय नायक को कह्यो नायका न करै तियको कह्यो करै नहीं पिया यह पाठ में नायक लाज ते कह्यो न करै नायकाको ।।१२।।

प्रियप्रच्छन्नलघुमान ।। यथा-सवैया ।

आगे कहा हरिहौ अबही तौइतौ दुखदीनो कह्यो बिन कीने।
केशव कौनहुँ लाजकी लाउतै भूलिगई तौ भई हितहीने।।
भेटतहीं भरि अंकललाभरि जीवनबोलीजु बोलनवीने।
देखे नहीं कब हूं भरि आंखिनि आजुही कैसे चलौ चितुलीने ।।१३।।

नायक गेह में आयो सो नायका नायकको अपराध जान नायककी कही बात करत परन्तु कपट साथ करत ताते प्रच्छन्न तब सखी कहति है आगे तुम कहा ही रहै 'करिहौ' भी पाठ है अबहीं ते इतौ दुःख दीन जो कहो नहीं करती सो कानहू लाज ते कै लाड ते भूलि गई हौ ताते हित हीन भई हौ भेटत हैं तुमको अंक भरि लाल तुम जीव भरि वाही बोलती भरि जीभ न बोली यह भी पाठ है आंखें आंखि भरि नहीं देखति रही हौ अब कहा चित्त चलायवान् कीनो है इहां नायक की कही नाहीं मानती जीव भर नहीं बोलिती याते न मानती दृढ़ कीनो ताते काव्यलिंग अलंकार ।।१३।।

प्रियको प्रकाशलघुमान ।। यथा-सवैया ।

बोलि ज्यों आए त्योंबोलत नाहि नेमोसों कहा कछु चूक तिहारी।
केशव कैसहु देख्यौ सुने बिन जाने कहा कोउ जीकि बिहारी।।
खीरसिराइ न जानति खाइनई यह भूंख कि भांति निहारी।
काँचिही दाखहि चाहत चाखौ सुआनतहूँ तुम कुंजबिहारी ।।१४।।

नायका नवीन नायक प्रवीन रतिहेत गयो सो नायका न मानी तब नायक रूसो सो जान सखी समुझावत है जैसे मोसों आगेसे बोलत आये तैसे नहीं बोलियत है सो मोसों कौन चूक है कैसहू देखे सुने बिन को जाने बिहारी छपी खीर सिराइ खायो चाहियत नई भूंखकी भांति है ए कुंजबिहारी काँची दाख खाये चाहत हौ यामें जो सखी कहत सो बहिरंग है काहे वास्तों नायक ने नहीं कही तब वह अन्योक्ति अलंकार करके कहा ।।१४।।

अथ मध्यममानलक्षण ।

दोहा- बात कहत तिय औरसों, देखे केशवदास ।
उपजत मध्यम मान तहँ, मानिनिकेसविलास ।।१५।।

और तियासों बातकर नायक को नायका देखै तहां मध्यम मान उपजत ।।१५।।

पियाको प्रच्छन्नमध्यममान ।। यथा-सवैया ।

कहो कान्हा कहां सिगरीनिशि नारीसुतौ तुमही कहँ चाहत हीं ।
तनुमें तनुरेखलिखी कहि केशवकंटक काननगोंहतहीं ।।
कछुरातीसी आँखि कहाभइ ताति तिहारे वियोगके दाह तहीं ।
हिय वंचकरति रची जबरंच कलाइ लई उरनाह तहीं ।।१६।।

इहां प्रश्नोत्तर है तहां नायका प्रथम नायकावचन नायकसों कहौ हरि कहां सिगरी निशि रहे वह नारी जासों तुम बोलत रहे सो तौ चाहति है ही ते अरु तिहारे तनमें तनकी रेख लिखी है नखरेवख भी पाठ है कंटक कानन अवगाहतहीं तब नायक कही कछु रातीसी आंखें कहा करती हौ तब नायका कही तिहारे वियोग के दाह ते जब ते तुम हीयमें वंचककी रीत रची है रंचक अथवा वंचककी रीति यह रंचक नायका रची तब हँसि नायक उरसों लगाई अरु यामें जो कोई प्रश्न करत रेख चिह्न है सो गुरु मान कहै वाही ताको उत्तर करत कि झूट कही काहे वंचकता सों सो नाहीं नायका सनेहकी रेख कहति जब तुम वासों सनेहकी रेख रची अरु दूसरो प्रश्न कि उर लगाने ते मान मोचन होजात ताको उत्तर कि जब नायक कही कि बंचकता करती हौ तप नायका बोली तबहीं उरमें न लाइ लाई अरु बात करत कहा हौ अन्यनायकासों यह तीसरो प्रश्न तहां उत्तर कि बात करत देख धोखो भयो यह रीतते मध्यम मान जानोजात अरु नायक नायकाके वचनते प्रच्छन्न उत्तरालंकार प्रतिउत्तरते ।।१६।।

प्रियाको प्रकाशमध्यमान ।। यथा-सवैया ।

ज्यों उनको तू बकावत मोहिंसों आई बकावन ह्वै गरई ।
अब याहीते तों सहु बात कछू कहिबेकि हुती न केही थरई ।
कहि केशव आपनी जांघ उघारिकै आपही लाजनको मरई ।
इकतौ सबतें हरुएहरिहैं अबहौंहूँकहाहरितेहरुई ।।१७।।

जासों हरि बात करत रहे सो मनावन आई तासों नायका कहति है कि जैसे तू उनकौ बकावत है तैसे मोकों बकावन आई गरू होके याहीते कहु तू मान

छुटावन आई जो बात कहते रही सो थर थल यह न कहोगी काहे अपनी जांघ उधार आप तोको लाजन मरै जैसे हरि सबते हरुहैं तैसेहौं कहा हरुई होंहु यामें आन सखी सों कहत ताते प्रकाश जांघ उधार कहनेतें लोकोक्ति अलंकार है ।।१७।।

प्रियको मध्यममानलक्षण ।

दोहा- जहां न मानै मानिनी, हारै पियजु मनाइ ।
उपजत मध्यम मानतहँ, प्रीतमके उर आइ ।।१८।।

जहां मानिनी न मानै प्रीतम मनावतमें हार जाय तहां प्रीतमके उरमें जो मान उपजै ताको मध्यममान कहिये ।।१८।।

प्रियको प्रच्छन्नमध्यमान ।। यथा-कवित्त ।

बारबार बरजीमैं सारससरसमुखी, आरसी लै देख मुख आरसमें बोरि है ।
शोभाके निहारे ते निहारतननेकहूं तू, हारी है निहोर सब कहा काहू खोरि है ।।
सुखको निहोरो जो न मानो सो भली करी ते, केशोराइकीसों अब जो तूं मुख मोरि है ।
नाहके निहोरे किनिमानति निहौनेके, निहारे फिर मोहिं जू निहोरि है ।।१९।।

प्रश्न यामें नायका मानसों भाषत प्रत्यक्षमें सो नाहीं । उ०-नायक मान कीनों तब नायक कहे ता नायकाके वचन सखीसों कि तू नायकको मनाइ ल्याउ तब सखी पूर्ववारी बात करति है कि तब मैं कही सो तू न मानी कि नायकके मनाये ते नहीं मानति आखरिमें मोको निहौरैगी या रीत ते पद सुगम है अरु नारायण कवि कविप्रिया के तिलकमें याको अर्थ लिखचुके याते इहां नहीं लिख्यो अरु निहारे पद बहुबार आये ताते लाटानुप्रास जानने और प्राभाविक भी पछिलीबातते ।।१९।।

प्रियको प्रकाशमध्यममान ।। यथा-सवैया ।

मनहिं मानते मानिन केशव मानसते कछु मान टरैगो ।
मानहैरी सुजुमाने नहीं परिमान नखे अभिमान भरैगो ।।
ह्वै है सहेलीसमान तबै जब सौतिनमें अपमान करैगो ।
आपु मनावत मानहिरी बहुरयो जु मनावनतोहिं परैगो ।।२०।।

यामें कोई कहत हैं जे मानिन हैं ते मान आदरही ते मानती अरु नहीं तौ कछु मानस मनुष्यते काहूको मान टरत है अरु मानैं नहीं तौ रूठिबोई हाथ रहत पर मान हद्दनखे ते अतिकरे ते देखि वह नायक अभिमान के भरे कहिये भारसों

नैगयो उठिके ताते तू सहेली मान ह्वैहै तब जब अपमान करैगो अबहूं मैं जो कहति हौं सो आपहीको मनाइबो जान नाहीं हौ फेर तोहिं मनाइबो परिहै सहेली ऐसे सामान कहत ताते बहिरंगसे यामें भी नायका मान होति ताते पूर्व वृत्तांत याहीमें भी जानने अलंकार पूर्ववत् ॥२०॥

दोहा- राधाराधारमनके, बरने मान समान।
तिनको मान मनाइबो, कहियत सुनहु सुजान ॥२१॥

इति श्रीमन्महाराजकुमारइन्द्रजीतविरचितायां रसिकप्रियायां विप्रलंभश्रृंगारमानवर्णनं नाम नवमः प्रकाशः ॥९॥

राधाको अरु ताके रमन नायक ताको मान वरने सामान्य करके अब तिनके मानको मनाइबो कहत हौं अर्थ मानमोचन कहोंगो ॥२१॥

इति श्रीमन्महाराजाधिराजकाशिराजश्रीमदीश्वरीप्रसादनारायणसिंहबहादुरस्याज्ञाभिगामिललितपुरनिवासिहरिजनकवीश्वरात्मजेन सरदाराख्यकवीश्वरेण विरचिते रसिकप्रियाभूषणे सुखविलासिकानामटीकायां मानवर्णनं नाम नवमः प्रकाशः ॥९॥

अथ मानमोचनलक्षण।

दोहा- मान तजहिं प्रीतमप्रिया, कहि केशवकरि प्रीत।
बरनि सुनाऊँ सो सबै, मैं जु सुनी षटरीत ॥१॥

मान तजि देहि प्रीतम अरु प्रिया प्रीति करके सो षट रीति ते वर्णत हौं अरु प्रसंग विध्वंस पुनि जियमें सुनि षट रीत यह भी पाठ है ॥१॥

दोहा- साम दाम अरु भेद पुनि, प्रणति उपेक्षा मानि।
अरु प्रसंग विध्वंस पुनि, दंड होहि रसहानि ॥२॥

साम १ दाम २ अरु दान भी पाठ है। भेद ३ प्रणति ४ उपेक्षा ५ प्रसंगविध्वंस ६ अरु दंड कहेते रस हानि होहिगी याते षट कह्यो ॥२॥

अथ सामउपायलक्षण।

दोहा- ज्यों केहू मन मोहिये, छूटिजाय जहँ मान।
सोई साम उपाय कहि, केशवदास बखान ॥३॥

कोई रीतिते मन मोहिके मान छुडाइये ताको साम उपाय कहत हैं ॥३॥

प्रियाको सामउपाय ॥ यथा-सवैया ।

केशवदास सदा किये आश रहै सुखकी दुखताहि न दीजै ।
ताहुसों रोष न मानिये मानिनि भूलहू आपनो मानिजु लीजै ॥
हौ तुमहीं तुमहौ सुनि सुंदरि मूरति द्वैजिय एकहीजी जै ।
मान है भेदको मूल महा अपने सहुसो सपने नहिं कीजै ॥४॥

प्रथम बचत नायक के जो सदा सुखकी आश करे रहै ताहि दुःख नहीं दीजे अरु ताहूसों मान न करिये जो आपन भूल मानें मैं तुमहौं तुमहोहौं वै तुमहीं तुम वै सुनि सुन्दरि इस पाठमें सखी की उक्ति करनी परैगी मूरति दोन जिय एक भान भेद को मूल है यहांतक नायक तब नायका कही जो अपनो सो होहि तोन कीजे तुमतो पराये सों हौ जैसे लोग कहत फलानी सों फलाने हैंबिहारी अहेकहे न कहा कहो तो सों नंदकिशोर बढबोली कति होति है वैडे द्दगनिके जोर १ कहत काहे माहीं कहाहै जो तू मान कीनों तब नायका कही तोसों नंदकिशोर हैं नायका बोली ताते मान मोचन प्रति उत्तरते उत्तरालंकार अरु दो देह एक जीय आन सो तुमहो यह लोकोक्तिसंकर है "अपनेहुनते सपनेहु न कीजै" यह भी पाठ है ॥४॥

प्रियको सामउपाय ॥ यथा-सवैया ।

कहि आवतिहैजु कहावत हौ तुम नाहीं तो ताकिसके हमसो हीं ॥
तिहि पैंडे कहा चलिये कबहूं जिहि कांटो लगै पीर दुखोहीं ॥
प्रीत कुम्हेडे कीजै हैं जईसम होति तुम्हैं अँगुरी पसरोहीं ।
कीजै कछू यह जानिकै केशव हौ तुमहीं तुमतौ हरि होहीं ॥५॥

नायका वचन नायक सों । जो तुम कहावत तौ कहि आवत तुम हमारे सोहे न ताकसके तौ पैंडे न चलिये जामें पायँमें कंटक लगैं हमारी तिहारी प्रीतिमें जब अँगुरी पसरी तब तुम्हेडे की जई जैसे अँगुरीपसारत कुम्हिलात तैसे कुम्हिलाय जै हैं जई कोहडेके बतियाको नाम है तब नायक कही कीजे कछू जानके हम तुम हैं तुम हम हौ यामें नायक बोले ते मान छूटो प्रत्युत्तर ते उत्तरालंकार ॥५॥

अथ दान उपायलक्षण ।

दोहा- केशवकोतिहुँ व्याज कछु, दै जु छुडावै मान ।
वचनरचन मोहै मनहिं, ताको कहिये दान ॥६॥

कोई छलते अथवा कछू देइ कै मान छुडाइये अरु वचन की रचनासों मन मोहि ये ताको दान उपाय कहत हैं । प्रश्न-यामें कछू देबेते गणिका काहे न होइ ।

उ० गाणिकामें धन देनो चाहिये यहां कछु कह्यो है ॥६॥

दोहा- जहां लोभते दानते, छांडै मानिनि मान।
बारवधूके लक्षण हिं, पावै तबहि प्रमान ॥७॥

जहां लोभते अरु दान ते मानिनी जो मान छाँडे ताको गणिका मानवती कहिये ''जहां लोभते दान लै'' भी पाठ है ॥७॥

नायकाको दानउपाय ॥ यथा-कवित्त ।

कोमल अमल दल दीन्हैंजु कमलभव, अरुणअरुण प्रभुजूको सुखदाइये। केशोदास शोभाघर अधरसुधारके घर, मधुर अधर उपमातो इन पाइये ॥ उरजमलयशैलशीलसम सुनि देखि, अलकबलितव्याल आशा उर आइये। निपट निगंधि यह हारबंधु जीवको सु, चाहत सुगंध भयो नेकग्रीव नाइये ॥८॥

उक्ति सखी की नायकासो। नायक ने बंधुजीव (दुपहरिया) के फूलको हार सखी के हाथ पठवायो है सो सखी कहत यह कैसो है कोमल अरु अमलु याको दल कमलभव ब्रह्माने दये अरु अरुण है अरुण प्रभु सूर्यके मन भायो है शोभा धारण है और सुखदेन हारहै अरु अधर सुधाके धरनहार मधुर अधर शोभाको पावत है अधरनकी शोभा इनकी उपमा उनको सोयह उरज तिहारे मलयगिरि जानके काहे अकल सर्प लपटे देखि सुगन्ध आपके उरते चाहत है अथवा मलयाचल शैलपै जो वस्तु जाय सो सुगन्धमयी होजात है इनमें सुगन्ध नाही न है याते तेरे उरज मलय शैलसम सुने सो यह जानिकै आये हैं अरु अलक रूपी सर्प जापै हैं याते आशा भई कि हम सुगन्ध ह्वैं है ताते निपट निगन्ध हारहै बंधुजीवको सो चाहत सुगंधभयो सुन नायका कही नेंक ग्रीवामें नाइदे याही ते मान छूटो। प्रत्युत्तरतें उत्तरालंकार मलय उरजका रूपक दोई को संकर है ॥८॥

अन्यच्च-सवैया ।

मत्तगयन्दन साथ सदा इहि थावर जंगम जन्तु बिदारयो।
तादिनते कहि केशव वेधन बन्धनकै बहुधा विधि मारयो ॥
सो अपराध सुधारनसोधि इहै इनि साधन साधु विचारयो।
पावन पुञ्ज तिहारे हिये यह चाहत है अब हार विहारयो ॥९॥

उक्ति नायिका सों सखीकी। नायक ने गजमोतिनको हार पठायो है ताही देखि युक्तिसों सखी कहत कि यह जो गजमोतिनको हार है ताने मतवारे जे हाथी तिनके साथ सदा रहिके थावर जङ्गम जंतु जीव बिदारे अथवा गज जीवविदारन

हार है ताके ये साथी हैं तादिनते याको निबन्ध कर विधिने बंधनमें डार दियो अर्थ छेद डारे सो अपराध सुधारिबेको सोधिकै साधन इन साध्य एहू विचारचो है कि पावनताको पुंज जो तिहारो हियो है काहे यामें शम्भु कुच युगुल रोमावली यमुना त्रिबली त्रिवेणी उदर सिन्धु इत्यादि अनेक तीर्थ हैं सो चाहत है तब नायिका कही बिहारी बिहार करचो याही तें मान छूटो हेतूत्प्रेक्षालंकार है अहेत को हेत थाप्यो ताते ॥९॥

प्रियको दानउपाय ॥ यथा-कवित्त ।

हँसत हँसत आई आई इक गाथ गाई, कहहु कन्हाई याको भाउ समुझाय कै। पीवै क्यों अधरमधुदंपति एकही बार, रदनकरज थल दीजै हि बताय कै॥ यह परिरम्भन कहावै कौन केशोराइ, मेरीसों ज्यो मोसों तुम राखहु दुरायकै। राधिकाकी अधिकाई कहा कहों तीनौ आजु, आपनो पियारो पिउ आपुही मनायकै॥१०॥

नायिका नायककी कथा। सखी सखी सों कहति कि आजु नायक मान जान हँसत हँसत आई राधा एक गाथा कही याको भाव हमको समुझावहु कि एकबार दम्पति जो अधर पान करो चाहै तौ कैसे करै रदन करन थल बतादीजे अरु उरज करज भी पाठ है अरु यह परिरम्भन कौन कहावत है तुम्हैं हमारी सपथ जो दुरावहु सो राधाकी अधिकाई कहा आजु अपनो पिय आपहू मनाइ लये यामें प्र० कोई कहै कि दान कहां पायो उ० तौ परिरंभन कर कहो कि यह कौन कहावत सोई दान भयो परजा उक्ति अलंकार छल करिकै इष्ट साधौ ॥१०॥

अथ भेदलक्षण ।

दोहा- सुख दैकै सब सखिन कहँ, आप लेइ अपनाइ।
तब सुछुडावै मानको, वरणों भेद बनाइ॥११॥

सब सखीको सुख दैकै अपनाय लेय तब मान छुडावै ताकी भेदोपाय कहियै ॥११॥

नायकाको भेदउपाय ॥ यथा-सवैया ।

केशव धाइ खवासिन तोहि सखी सकुचै सब आपनि घातें।
मोहिं तौ माई कहेईबने अब बांधि दई विधि तीकहँ तातें॥
नेक हरे हरे बोलि बलाइ लौं हौं डरिपौं गडि जाइ न यातें।

माखनसो मेरे मोहनको मन काटसी तेरी कठेठी ये बातें ॥१२॥

नायिका सों जनी वचन नायकने वाको अपनी ओर करलई सो उनहीकी ओर होके कहै है जनी जो दहेजमें संग आवत पूरब में वाको लोकनी कहत हैं बुन्देलखंड में खवासिन नायिकाको समुझायो सो कठोर बोली तब वा कहत मोको तिहारे संग बांध दई ताते मोपै नहीं सुनीजाति माखन सो धर्मलुप्ता काठसी कठेठी बातें पूर्णोपमा अलंकार नायक भेद करिकै खवासिन फोर लई ताते भेद नायिका कठोर बोली याते मानमोचन ॥१२॥

नायकको भेदउपाय ॥ यथा-सवैया ।

काहू कह्यो हरि रूठि रहे तब ते बहु बुद्धि बितर्क बढावै ।
सोधि सबै अपनो सोरही धनमीत रहै सु उपायन पावै ॥
ह्वै वह रीति इहां इहि केशव ज्यों दुहुँ ओर जरै क्यों जुडावै ।
बूझतिहौं पिय प्यारी तिहारीसुमान करै कि मनावन आवै ॥१३॥

सखी नायककी नायिकाने मिलाई मनावत हेत पठाई सो कहत है कि काहूने नायिका सों कही कि हरि ताते रूठे हैं तबते अपनी बुद्धिमें भी विशेष तर्क बढावती है अरु अपनेते सोधि रही है कि धन भी रहै अरु मित्रता न छूटे यह लोकोक्ति है सो उपाय नहीं पावत अर्थात् सपत्नीनमें अपमान न होय हँसै नहीं अरु नायक अपनो होइजाय इहां वह रीति है कि दोई ओर तो आगि लगी है सो आगि कैसे बुझाइये ध्वन्यार्थ यह कि सपत्नी अभिमान कर रहीं अरु आप रूठिरहे हौ सो मैं बूझति हौं हे पीय तिहारी प्यारी मानकरै कि मनावन आवै ताहीमें प्रश्नोत्तर अलंकारते नायक कही मनावत आवे याहीते मान मोचन भयो ॥१३॥

अथ प्रणतिलक्षण ।

दोहा- अतिहिततै अतिकामते, अतिअपराधहि जान ।
पांय परै प्रीतमप्रिया, ताको प्रणति बखान ॥१४॥

अति हितते कहिये अति प्रेमते और कामते और अति अपराध जानके प्रीतम वा प्रिया पाइँ ताको प्रणति कहिये ॥१४॥

नायकाको प्रेमते प्रणति ॥ यथा-सवैया ।

तैं चित योजुन सूधे तऊ तऊ प्रेमकै कै पियपांय गह्यो है ।
मोहिं विलोकि विलोकि अलीनि अलीक अलीक प्रवाह बह्यो है ॥

बूझति हौं सखी शीश दिये तिन और सबै हियहेतु रह्यो है।
कान्हजु आये मनावनतोसों मैं मानकिधौं अपमान कह्यो है॥१५॥

प्र० या कवित्त में मान छोडब नाहीं जानोजात पाँय गह्यो तऊ न मान रह्यो ताते रसकी हान भासत है, उ० ता निमित्त ऐसो अर्थ चाही कि नायका पूर्व वृत्तांत सखीसों कहति है कि हे सखी ! देखिये सखी मोसों कहती है कि जब नायक आयो तब तैं सीधी नाहीं चितई अरु नायक ने प्रेम करकर तेरो पाइँ गह्यो सो मोको देखि अरु इन सखिनको देखि जिन अलीकमें मर्याद कहिये मिथ्या अलीक कलंकको प्रवाह बहायो है ताते हे सखी ! मैं तासों बूझति हौं शीशदै मेरो शीश छुइकै कहु तिन ओर सबने तो हीयको हेतु गहि राख्यो है अर्थ मनमानी कहती कान्हतो आये मनावन जब तोसों तप मैं मान कह्यो कि अपमान इहां पूर्व वृत्तांततै भाविक अलंकार जानोजात अरु लोकोक्ति भी है ॥१५॥

नायकाको अतिकामते प्रणति ॥ यथा-सवैया ।

न बोलति आपु बुलाये ही बोल कहालगी मोहिं बकायेही मारन।
सो परो पाँयनि बूझि सखी सब देति हैं जी युवती जिहि कारन॥
हठ छाँडिकै कंठ उठाइ लगाइ कहां लगि ऐंठि अकाशनिहारन।
कानों भये नट द्वैदिमये तिनतेहीं लगी कछू ऊलटपारन॥१६॥

प्रथम सखी वचन नायकों सों अरी नहीं बोलति बोलायेते तब नायका कही मोहिं कहा बकावति है तब सखी कही अरी सो तेरे पाँय परो है जाके हेतु युवती जी देती हैं ताते हठि को छोड कण्ठ लगाय लै ऐंठके आकाश न निहार कानौं तू नहीं करि है ये दिन ये दीन भये कामासक्ति भये सो सुन नायक कुछ कही तैहीं उलट पार न लगी है यामें दीनते काम सखी नायकासों कहत नायका सखीसों याते उत्तरालंकार बोलेते मान छूठो अरु विशेषोक्ति भी कोई कहब सो नहीं कोनोभये नटि है दिन ये दिन ये भी पाठ है ॥१६॥

नायकाको अतिअपराधते प्रणति ॥ यथा-सवैया ।

केशवदास उदास भई दरसाइ दशादुखद्योस भरचो री।
राति भये अधिरात कहूंलों बिनै बहुबंधुबधू न करचो री॥
धाइ रही समुझाइ कछू न सखीनहुंके सिखयेते सरचो री।
काहे ते मान्यो न मानिनि तौलगि जौ लगि पाइनपी उपरचोरी॥

नायक राति मनावत रह्यो सो न मान्यो जब नायक जात रहो तब सखी सों कही अब तू मनाय ल्याउ सो सुन सखी कहति है कि अब उदास भई है दु:खदशा दर्सी द्योस भर्‍यो राति जब आधी राति लौं उनकी बन्धु बन्धून देवरानिन जिठानिनने विनय बहुत करी अरु फेर धाई सिखायो अरु सखीनपर कछू कार्य न सर्‍यो तब काहे न मानों जब प्रीतम पाँयन परो तौ अपराध बकसायो याते अपराध बोलिउठी ताते माननो न पाछिल बात कहेते भाविक अलंकार किंवा हेतु कारण कारज सहित पायँ परिबो कारण मानिबो कारज ते ॥१७॥

दोहा- पियहि मनावै पाँय परि, प्रिया परम हित मान।
ना अपराधन कामते, वरणतही रसहान ॥१८॥

प्रिय पाँय परिके मनावै अरु प्रिया परम हित मानै न अपराध होय न काम होय ऐसा वर्णन करेते रसकी हानि होय ॥१८॥

प्रियाको प्रणति अतिहितते ॥ यथा-सवैया ।

नीरहितौ बिन मीनसरै बरु मान तौ नीरहिके जिय जीजै।
जाबिन और सुहाइन केशव ताहि सुहाइ सुनौ सब कीजै ॥
जालगिमो पग लागत है सुलगीपग अंकलगायन लीजै।
हौं सिखवों अपने सपनेहुँ तो आवत लक्ष्मि किंवारन दीजै ॥१९॥

उक्ति सखी की नायकसों ॥ कि नीरहीते बिना मीनसरै वरु मानों तौ नीरही के बल जीजे है अब प्रिया मीन तुम नीर हौ जा विना आन नहीं सुहात ताको जो सुहाय सोई करो चाही जाके लिये मेरे पग लागत रहे सो पगलगी है ताको अंक काहे नहीं लगावतहौ हौं अपने जान सिखावत हौं कि घर सपनेहू लक्ष्मी आवत किवाँर नहीं दीजतु है हौं सिखवों अपने सपने घर ये भी पाठ है यामें मीन नीर को दृष्टांत कहि एक शब्द दोबार आयो याते जमक अरु ऐसो भी कोई अर्थ करत कि प्रिया पग लगी यह बात सखी कही तब नायक कह्यो अंकसों लगायलेहु तब सखी वचन कहो आपुही उठाय लगाय लेहु यामें उत्तरालंकार ॥१९॥

अथ उपेक्षालक्षण ।

दोहा- मान मुचावन बात तजि, कहिये और प्रसंग।
छूटि जाइ जहँ मान तहँ, कहत उपेक्षा अंग ॥२०॥

मान मोचनवारी बात तजिके और कछू प्रसंग कहिये तहां मान छूटिजाय ताको उपेक्षा कहिये ॥२०॥

चपलान चमकति चमक हथ्या नरनकी बोलतनमोर बन्दीसयन

समाजके । जहाँ तहाँ गाजत नबाजत दमामेदीह, देत न दिखाई दिनमणिलीने लाजके ।। चलि चलि चन्द्रमुखी साँवरे सखा पै बेगि, सोखकजु केशोदास अरि सुख साजके । चढि चढि पवन तुरंगन गगनघन, चाहत फिरत चन्द योधा यमराजके ।।२१।।

प्रश्न-यहाँ जो डारदेके मान छुडायो सो प्रसंग विध्वंस को लक्षण है यामें उपेक्षा कहा है यह कोई कहै उ० तहां ऐसो कहो चाहिये यहां सखीने उक्ति करिकै मघवाको कोप सूचित कीन्हों जब मघवा ब्रजपै चढो तब जिन रक्षा करी तिनहींके पास चलिबे रक्षाकरिहैं सो सुनि नायका कही चलि काहे सखीके कहेते यह सूचित भई तू चन्द्रमुखी है वे चन्द्रही को ढूंढत फिरत सो सुन नायका कही चलि तौ यहां मान छूटो सविषय सावयव रूपक अलंकार है ।।२१।।

प्रियको उपेक्षा ।। यथा-कवित्त ।

केशोदास दिनराति केतकीकी भावै भांति, जियमें बसति जाति नैननमें नलिनी । माधवीको पिये मधुसूझतन अंधक हूं, सेवती सेवन कही सेई गंध फलिनी ।। औरहौं कहति बात कान्ह काहेको लजात, ऐसै तौ खिस्याइ सु जुहोइ मनमालिनी । देखहु धौं प्राणपति निलज अलीकीगति, मालतीसोंमिल्योचाहै लीने साथ अलिनी ।।२२।।

सखी कहैहै कि हों तो भ्रमर की बात कहत तुम काहे लाज लेतहौ याही में मान प्रियको छूटो ताते उपेक्षा का कहीं दिन रात तौ केतकी की भांति भावत है केतकीके दो अर्थ एक केतकी फूल एक अपनी जातिवारी नलिनी कुमोदिन एक कुमुदिन जो नायका आनन्दको नहीं जानति माधवी फूल को मधु सुगन्ध पियत दूसर जो वे साखि नहै सूझत नहीं सेवती फूल अरु स्वकीया गन्धफलिनी चम्पकली एक गन्धही हैं जामें फले रस नहीं देखो तौ है प्राणपति निलज अली भ्रमर की गति भ्रमरी संग लैकै मालती के फूलसों मिलौ चाहत है दूसरो अर्थ सखी संगलै मालती वेश्या अथवा तमाल सों तियाकी मालसों यामें विवक्षितवाच्य ध्वनि है काहे सखीकी इच्छाते अरु अर्थान्तर भी है, अर्थ के अन्तरते अश्लेष अप्रस्तुत प्रशंसा अलंकार है ।।२२।।

अथ प्रसंग विध्वंसलक्षण ।

दोहा- उपज परै भय चित्त भ्रम, छूट जाय जहँ मान ।
सो प्रसंग विध्वंस कवि, केशवदास बखान ।।२३।।

भयते चित्तमें भ्रम उपजै ताते मान छूटै सो प्रसंग विध्वंस है ॥२३॥

प्रियाको प्रसंगविध्वंस यथा ॥ सवैया ।

केकिन केशवकामके किंकर बोलतडोलत देत दुहाई।
काम निशा यह कामिन कोऊ रिसाई गीता कहु ह्वै है रिसाई ॥
गाजति नाहिंने मेघ घटा यह बाजत डोंडी सखी सुखदाई।
भोरभये फिरकीबौ अबोलौ सुबोलौ अबै बली बोल कन्हाई ॥२४॥

उक्ति सखीकी नायका सों ॥ कि ये केकी मयूर न जानो कामके किंकर हैं सों डोलत फिरत दुहाई देत फिरत हैं सो कहैं हैं कि कामराति में कोऊ कामिनी जो रिस करि है तापै महाराज रिसायगो जे मेघकी घटा नहीं गर्जती है डोंडी बाजति है भोर होत फेर अबोल करबो अरु अबै बोलौ हे बलि बोलत है कान्ह इहां कवि प्रौढोक्ति में रूपकालंकार ताते बल बोलिकै कन्हाई ताहीमें नायक उत्तर दीनो हे बलि कन्हाई बुलाव ताते मान छूटो अरु कामकी भय दिखाय मान छुडायो याते प्रसंगविध्वंस है ॥२४॥

प्रियाको प्रसंगविध्वंस ॥ यथा-कवित्त ।

कोकनकी कारिकाकहत काहू शारिकासों, दूरि दूरि हित चित चौगुनो चढ़ायो है ।सूकिरही सकुचनि बापुरी सुकीतौ कहि, काहूसों नसकै देह दुखन उठायो है ॥ उठि चलो न्याय कीजै अबकै मनाय दीजै, नेकहीमें केशोराइ कलह बढायो है । मान तन एते पर उलटो मनावै बरु, ऐसो इसयान श्याम सुकहि पढायो है ॥२५॥

उक्ति सखीकी नायकसों कि देखो कि कोककी जो कारिका हैं सो शुक काहू शारिकासों कहत है देखो शुकीने दूरदूरभयेते हितचितमें चारगुण बढाय राखो हैं सुकरही है सकुचमें बापुरी शुकी जो है सो काहूसों नहीं सक्त कहि देह दुःख न उठायो है देहका जो सुख है सो उठाय दयो सो चलो उठकै न्याय करिये अबकै मनायदीजै नेकहीमें हम कलह बढाय राखोहै देखो हम एतेपर नहीं मानत वा उलटी मनावत है ऐसो जो सयान है सो हे श्याम ! तुम शुकको पढयो है यामें प्राचीन तीन प्रश्न करत है एक तौ अन्योक्ति सी भासै है दूजे उपेक्षा काहे न होइ और डर नहीं तौ प्रसंग विध्वंस कैसे, तीजै मान नहीं छूट्यौ तामें उत्तर करत शुकीकी देह सूखतमें नायकको भय भई तो भय आई का प्राणहानि नहीं जाय याते उपेक्षा बली ह्वैगई अरु मान छूटिबो यह दिखायो कि जब सखी कही उठ चलो तब नायक कही अबकै मनाय दीजै हम नीके हीमें कलह बढायो है सो सही परन्तु आप

ही तौ अन्योक्ति की शंका करी अरु आपही फिर अन्योक्ति लिखनते आन कैसे मानि है तामें ऐसी जानिये कि इहां शुकको प्रसंग सूचनके निमित्त है काहे कि मुख्य तौ शुकमें कोककी कारिका कही याते यह सूचित कराई कोककी कारिका शुकको तो पढाई अरु आपुन भूलि गये द्वितीय तिहारी नायका प्राण तजिदे है याते कवि निबद्धवक्ताकी उक्तिमें मुद्रालंकारते उत्तरालंकार जनायो ॥२५॥

दोहा- देश काल बुधिवचनते, कल ध्वनि कोमल गान।
शोभा शुभ सौगंधते, सुखही छूटत मान ॥२६॥

ये सब उद्दीपनहै इनते सहजही मान छूटत यह सहज उपाय है मानछूटनको ॥२६॥

कवित्त ।

घननकी घोरसुन मोरनि कीशोर सुनि, सुनि सुनिकेशव अलाप अलीजनको। दामिनीदमकि देखि दीपकी दीपति देखि, सुखसेज देखि देखि सुन्दर सुवनको ॥ कुंकुमकी बास घनसारकी सुबास भयो, फूलनकी बास मानफूलिकै मिलनको । हँसि हँसि बोले दोऊ अनही मनाये मान, छूटि गयो एकबार राधिकारमनको ॥२७॥

देशकाल आदि जो सब कहि आये ते यहां सब उद्दीपन हैं कवित्तमें घनकी घोरते वर्षा समय १ अरु काल मोर वाणी कल ध्वनि २ अली जनके अलापमें कोमल गान ३ दामिनीके दमकमें बुद्धि वचन ४ शुभाशुभ सदन सुवनको नीकीं बन संकेत यामें देश ५ सौगंध कुंकुमादिकी बास ६ ऐसो अर्थ भी कोई करत सो सहजही मान छूटचो याते समाधि अलंकार आनि हेतु ते मान छूटेते ॥२७॥

दोहा- इहि विधि मान छुडावहीं, आपुसमें नरनारि।
पल पल प्रीति बढावहीं, केशवदास विचारि ॥२८॥

यहि विधिते सखी मान छुडावति हे आपुसमें जो नरनारीमें मान भयो है तिनको पल पलमें प्रीति बढावति है बातें बिचारि विचारिके ॥२८॥

दोहा- प्रिया न प्रीतमसों करै, अतिहठ केशवदास।
बहुरचो हाथ न आवई, जो ह्वै जाय उदास ॥२९॥

हे प्रिया न प्रीतमसों अति हठ कर फेर हाथ न आवैगो जो उदास ह्वै जायगो ॥२९॥।

दोहा- बारहिबार न कीजिये, बारक कीजै मान।
कहि केशव ज्यों आपमें, सदा बढै सनमान ॥३०॥

बारंबार न कीजिये बारक छांडि दीजिये मानके छांडे ते सदा सन्मान आदर बढैगो ॥३०॥

दोहा- प्रीतिबिना भय होय नहिं, भयबिन होहि न प्रीति।
प्रीति रहै जहँ भय रहै, यहै मानकी रीति ॥३१॥

प्रीति बिना भय नहीं होत अरु भय बिना प्रीति नहीं होत जहां प्रीति है तहां भय है यही मानकी रीति है ॥३१॥

दोहा- गर्व व्यसन धन त्यागते, निष्ठुरवचन प्रवास।
लालच बिप्रियकरनते, तिय पिय होइ उदास ॥३२॥

गर्वते व्यसनते किम्बा व्यसनके गर्वते अथवा गर्व के व्यसनते धनते अरु त्यागते निठुर वचनते अरु प्रवासते लालचते अप्रिय वचनते तिया पियाको जीय उदास जहां होय तहां मान होय है। तहां प्रश्न० धन अरु लालच क्यों कहो उ० गणिका को मान धनहीते छूटै है प्रमाण- "पावन पुंज तिहारे हिये अब चाहत है यह हार बिहारो" लालच विप्रिय करन त्रय प्रियते होई उदास यहभी पाठ है ॥३२॥

दोहा- मान विरह वरणो विविध, जहाँ विविध बुधवास ॥
केशव करुणा कहि कछू, कीजत विरह प्रकाश ॥३३॥

इति श्रीमन्महाराजकुमारइन्द्रजीतविरचितायां रसिकप्रियायां
विप्रलंभशृंगारमोचनं नाम दशमः प्रकाशः ॥१०॥

बहुत भाँतिते मान विरह वर्णन करचुक्यो अब यह प्रकाश में करुणा विरह वर्णन करिहौं ॥३३॥

इति श्रीमन्महाराजाधिराजकाशिराजश्रीमदीश्वरीप्रसादनारायणसिंहबहादुरस्या-
ज्ञाभिगामिललितपुरनिवासिहरिजनकवीश्वरात्मजेन सरदाराख्यकवीश्वरेण
विरचिते रसिकप्रियाभूषणे सुखविलासिकानामटीकायां विप्रलम्भ-
शृंगारमोचनं नाम दशमः प्रकाशः ॥१०॥

अथ करुणा विरह लक्षण।

दोहा- छूटिजात केशव जहां, सुखके सबै उपाय।
करुणारस उपजत तहां, आपुनते अकुलाय ॥१॥

ग्रंथनमें यह भेद लिखो है करुणा विरहके जहांलौं आश मिलनकी तहांलौं विरह जहां आश छूटि जाय तहां करुणा अुर जहां मरणमें फेर मिलन आश तहां करुणाविरह काहे शोकअस्थाई नहीं है रति स्थाई बना रहत अरु भास साक को हात है ताते विरह करुणात्मक है यही ते लक्षण में कही है छूटिजात उपाय सुखके सुखके उपाय जीवत में होत फेर जिवाई लीबो नहीं होति पर आशा रहै है कि मिलैगो याते रतिस्थाई रहो उपाय नहीं है ताते करुणा विरहको लक्षण राख्यो प्रसंग पाइ कवि इतनी कह्यो ॥१॥

दोहा- सुखमें दुख क्यों वरणिये, यह वरणत व्यौहार।
तदपि प्रसङ्गहि पाय कछु, वर्णत मति अनुसार ॥२॥

सुखमें दुखको वर्णन करौ तदपि प्रसंगते बुद्धि अनुसार कहो कविनकी बुद्धि उक्ति लिये होति है याते कछू उक्ति ते वरणनकीजत तौ यहां करुणा विरह के कवित्त में अरु प्रवास विरह के कवित्त में यह भिन्नता राखी जहां प्राण तजिबे सी बात आवै रुदनादिक बलिष्ठ होहिं जा कवित्त में तहां करुणा विरह जानिये अरु देखो रामलक्ष्मण के विरह में दशरथ को तौ साफ विरह नहीं भयो केवल करुणा अरु कौशल्या सुमित्रादिकनको करुणा विरह इत्यादि जानिये ॥२॥

नायिकाको प्रच्छन्न करुणा विरह ॥ यथा-सवैया।

मैं पठई मतिलेन सखी सुरही मिलिको मिलिबे कहँ आने।
जाय मिले दिनहीं दृग दूत दयालसो देहदशा न बखाने ॥
प्रेरत पैजकिये तन प्राण नियोगके और प्रयोगनिधाने।
लाजते बोलन पाऊं न केशव ऐसेही कोऊ कहा दुख जाने ॥३॥

उक्ति नायिकाकी अपने मन ते निवारति कि मैं मतिरूपी सखी पठवाई सो आप मिल के रहिगइ को मिलायबे को आने दृगरूपी जो दूत हैं सो भी जाइ मिले दिनहीं ते दयाल सों सो देहदशा नहीं बखानत इतने पर प्रेरत हैं पैजकर कि प्रणाम को तन अर्थ प्राणको पठावत हैं योग संयोग ताके प्रयोग उपचार निधाने निधन भये निंधान पाठ में निघटे यह अर्थ अरु लाजते बोलनो भी नहीं होत सो दुख कैसे कहिये अरु ऐसे कोई कैसे जानि है इहां मतिकी गति गई नेत्र मिल ताते देखि गयो तन प्राणन को प्रेरत याते करुणा विरह मनते कहत याते प्रच्छन्न अरु प्रेमते मिलन चाहत लाजते नही बोलत ए दोन भाव चपलता व्रीडा ताकी संधि

है अरु सखी जो लेन पठाई न ल्याइसकी याते कारण ते कार्य न भयो तासों विशेषोक्ति अरु मति सुख दाता दुखदाता ह्वैगई ताते व्याघात को संकर है ॥३॥

प्रियाको प्रकाश करुणाविरह ॥ यथा कवित्त ।

हरित हिरत हार हेरत हियो हरत, हारोहोंहरननैनी हरिन कहूं लहों ।
वनमाली ब्रजपर बरषत वनमाली, वनमाली दूर दुख केशव कैसे सहों ॥
हृदयकमलनैन देखिके कमलनैन, होहूँगी कमलनैनि औरहों कहा कहों ।
आप घने घनश्याम घनहींसे होत घन, श्यामके दिवस घनश्यामबिन क्योंरहों॥४॥

हरे हरे हार श्वेत वनमाली जो वनकी पंक्ति जहां वर्षत वनमाली मेघ अरु वनमाली कृष्ण हृदयको कमल जो है सोई नयन उनको देखिके कमलनयन कृष्णकी होहूँगी कमल नयन कमल पानी हैं नयननमें जाके ऐसी होहुँगी कहा रुदन करोंगी काहे ते घनश्यामके द्यौस कहा बादरनके दिन कैसे हैं बादर अपघने जल हैं घने जामें घन सघन हैं अरु श्याम हैं घनहीं से होत घन नाम लोह ताडन करन हार यहां रुदनादिक दूना नहीं भयो याते करुणा विरह हरिणनयनी सखी कोई परोसिन बहिरंग है याते प्रकाशजमलंकार अरु याको तिलक कविप्रियाके टीकामें नारायणकवि लिखि चुके हैं याते इहां नहीं लिख्यो संक्षेप कर दियो है ॥४॥

प्रियके प्रच्छन्नकरुणा विरह ॥ यथा-कवित्त ।

ऐसे मिल्यो प्रथम श्रवण मग जाइ मन, रवन भवन कीने अलिक अलकमें ।
मन मिले मिले नैन केशोदास साबिलास, छबि आश भूलिरहे कपोल फलकमें ॥
नैन मिलै मिल्यो ज्ञान सकल सयान सजि, तजि अभिमान मूल्यो तनकी झलकमें ।
तैसे छलबलसाधिराधिकै मिलन कहँ, चाहत कियो पयान प्रणहू पलकमें ॥५॥

नायक मनसों कहत है प्रथम तो ऐसे मिले श्रवणकी राह जायकै सो रवन सुन्दर भवन तुम कीनों अलिकमायो अरु अलकावली में फेर मन मिले जो तिहारे नयन हैं तासों मिले तहां विलास सहित रहे फेर छबि की आसते कपोल रूपी फलक आकाश अथवा फलमें फेर तिहारे संग जो नयन हैं सोभी ज्ञान सों भी सब सयान सजकैं अभिमान आपन तजकै तनकी झलक में भूले तोसों छल बल कहां है साधतैं राधिका को मिलबे को प्राण भी पलक में मिलत हैं प्राण तजन सो करुणा विरह मनसो कहत याते प्रच्छन्न जैसे मन मिल्यो तैसेही प्राण मिलन चाहत यह दृष्टांत अलंकार ॥५॥

प्रियको प्रकाश करुणाविरह ॥ यथा-सवैया ।

हेतरुणाई तरंगिनपूर अपूरब पूरब राग रँगे पय।
केशवदास जहाजमनोरथ संभ्रम बिभ्रम भूर भरें भय॥
तर्कतरंग तरंगित तुङ्गतिमिंगिल शूल विशालनिके जय।
कान्ह कछू करुणामय हेसखितें हीं किये करुणावरुणासय॥६॥

उक्ति बहिरंग सखीकी नायकासों। कि कान्ह कछू करुणामय रहे अबतें वरुणालय समुद्र बनाये ताहीको रूपक कराति है जो तरुणाई है सोई तौ तरंगिणी नदी है सो अपूर्व है ऐसी आन नाहीं अरु पूर्व राग राग पूर्वक है दाग सहित है अर्थ तेरे प्रेम ते तरुणाई उमगी व्यंग्यते तरुणाईकी उमंग दिखावत हैं रँगेपय पय जो जल है सो रँगेरँग हैं अरु जहाज मनोरथ है ते संभ्रम होरहे हैं अरु विभ्रम भौंरमय है अर्थ जो मनोरथमें भय है सोई भँवर है कहा मनकी विकलताते जहाज भरै है अरु तर्क रूपी जो तरंग लहर है तरंगत है भयदा है तुंग ऊंची है अरु तिमिङ्गिल बडे बडे जीव सो विरहके शूल हैं चय समूह ते तामें उठतहैं यामें सखी बहिरंग ते प्रकाश अरु पूर्ववत् करुणा विरह रूपक समुद्रको॥६॥

अथ प्रवासविरहलक्षण।

दोहा- केशव कौनहु काजते, पिय परदेश हि जाय।
तासों कहत प्रवास सब, कविकोविद समुझाय॥७॥

कौनों कार्यते पिया परदेश जाय ताको प्रवासविरह कहिये॥७॥

प्रियाको प्रच्छन्नप्रवासविरह॥ यथा-सवैया।

तू करि है कबि धौं कहि गौनहिं नंदकुमार तौ गौ न कियोई।
मोहिं महारुड तो उरको न रहै लटिले जिन कैधौं लियोई॥
ऐसी न बूझिये केशव तोहिं विचारै जु बीच विचार वियोई।
तेरे ही जीय जिये जिनको जियरे जिय ताबिन तूव जियोई॥८॥

नायका जीवसों कहत है कि तू कबतक गमन करै है नन्दकुमार तो गमन कीनो मोको यह तेरे उरको डर लागत है कि तू लटी कमीकी बात लेके न रहे लटी निषिद्ध जिन किधौं लियोई है होति है जात है रहत है ऐसी तोहिं न चाहिये जो दूसरी विचारै तेरे जीवसों जिनको जिय जिये रे जिय ता विन तू जियो यहां कोई प्रश्न करै कि जाके जियसों जियत ताको छोडि कैसे जैहैं ताको उत्तर करत की जीयकी लक्षणा प्रेममें है लोकमें कहत हम तिहारो जीय पाय यह कही तहां जिय प्रेमहीसों जियो तो भी जायबो नहीं बनत कहा प्रवासमें जो प्रेम छूटत तो

विहारी आदिक कवि यह वरणी दोहा-मिलि बिछुरत फिर फिर मिलत, आंगन अथयो भानु। भयो मुहूरत भोरको, पौरहि प्रथम मिलानु ॥ ताते इहां नायका को विरहताप ते सुधि भूलि जो जिय आवत सोई कहति है मन सों कहत याते प्रच्छन्नका जियत है याते काकोक्ति अरु दृष्टांत अलंकार ॥८॥

प्रियाको प्रकाशप्रवासविरह ॥ यथा-कवित्त।

कौन केतप्रीति कौन प्रीति महीं विछुरत, तेरेही अनोखे पतिब्रतगाइयतु
है। यतन करेहीं भले आवै हाथ केशोदास, और कहौ पक्षिनके पाछे
धाइयतु है॥ उठि चलौ जो न मानै काहूकी बलाइ जानै, मानसो जो
पहिचानैं ताके आइयतु है। याके तौ है आजुही मिलो कि मारिजाउँ
माई, आगि लागे मेरी आली मेह पाइयतु है॥९॥

उक्ति बहिरंग सखीकी। नायक विदेश गयो तासमय नायका अति ब्याकुल भई तहां कहति कि कौनके अपने नायकमें प्रीति नहीं है अरु कौन नायक नायकाते बिछोह नहीं होत तेरोही अनोखो पतिव्रत है कि प्रीतम गमन सुनि भोजनादि त्याग कीनों देख यत्न करेते पक्षी हाथ आवतहै कोऊ पक्षीके पाछे धावत नाहीं उठि चल यह द्वितीय सखीते कही जो नहीं मानत तो नायकाको काहूकी बलाय जानै जो मानैं मनको पहिंचानै ताके घर आइये है यह या चाहत कि नायक मिलै नहीं तो मैं प्राण छोड देउँ सो आगि लगे कहूं पानीबरसो है चलो कहेते बहिरंग आग लगे मेह नहीं मिलत यहते लोकोक्ति अलंकार ॥९॥

विरहभयविभ्रम ॥ यथा-सवैया।

कोकिलकेकी कुलाहल हूल उठी उरमें मतिकी गति लूली।
केशव शीतसुगंध समीर गयो उडि धीरज ज्यौंतन तूली॥
जै मुनि जै मुनि कैबचि जोन्हकी यामिनी पैन अजों सुधि भूली।
क्योंजिये कैसी करै बिससी बहुर्यो बिनसी बिसवासिन फूली॥१०॥

कोकिल अरु मयूर इनके कोहाहलते उरमें हूल उठी तासों मतिकी गति लूली लँगरी ह्वैगई अरु शीत सुगन्ध जो समीर है तासों धीरज तूल रुइकी भांति उडि गयो जैमुनी अगस्त्य कहि कहि जोन्हकी यामिनमें बची अगस्त्य समुद्र शोषण करत अरु चन्द्रमा समुद्रको पुत्र सो सुनि मंद ह्वैगयो अरु कोई कहत कि चांदनीमें जोन्हाईको भ्रम ह्वैगयो कि विजुरी न परै ताते अगस्त्य कहो अब क्यों जियो बिससी फेर बिनसी बिसवासिन बिस नाम जल ताकी वासिन पुरइनि फूली है यामें विरहते

भय भई अरु सुखद दुःखद ह्वैगये यह व्याघात अलंकार ते न जी है यह वस्तु व्यंग ॥१०॥

प्रियको प्रच्छन्न प्रवासविरह ॥ यथा-सवैया ।

जिन बोलि सुबोल अमेल सबै अँगकेलि कलोलनि मोल लिये ।
जिनको चित लालची लोचन रूप अनूप पियूष सुपीय जिये ॥
जिनके पद केशव पानि हिये सुख मानि सबै दुख दूर किये ।
तिनकों सँग फूटतही फिटिरे फटिकोटिकटूक भयो न हिये ॥११॥

नायक चित्तते कहत है । जा प्रियाने कोलि कलोलनि में सुबोल बोलिके जिनको मोल नहीं ते अंग मोल लैलये जिन लोचननिको चित्त लालची ते वाको अनूपरूप सुधा पीके जिये जिन के पदको परसके हाथ जो है सो हियमें सुखमानिके सब दुःख दूर करदिये पान छिये भी पाठ है ताको संग फूटतमें फिटि रे धिकरे हे हिये सौ टूक काहे नहीं भयो ॥ तिनको संग छूटतही फेटुर फटि कोटिक टूक यह भी पाठ है । चित्तते प्रच्छन्न बोल अमोल इत्यादि से वृत्त्यानुप्रास ॥११॥

प्रियाको विरहप्रकाशप्रवास ॥ यथा-सवैया ।

केशव क्यों हूं चलैं चलि कोरि सदेश कहैं फिरि पैंडकदूपर ।
आगे धरे अपनो सुकै साहस पाछहिं पेलपरैं पग भूप ॥
होत जहीं तहिं ठाढे ठगेसे चलो न कह्यो परै कान्हहितूपर ।
लोककि लाज फिरचो न परै पैमिलान करे दशकोशकु ऊपर ॥१२॥

उक्ति सखीकी सखी सों ॥ कैसेहू चले फेर दो पैंड पे कोरन संदेशे कह अरु अपनो साहस करके आगेको पाउँ छरै पर पीछे को परजाय जहां तहां ठाढे ठगेसे होजात चलो नहीं कहत बनत हितू सों अरु लोक की लाज ते फिरत नहीं बनत परन्तु दश रोज में एक कोश गये यहां सब जानत ताते प्रकाश अरु लोक की लाज कारण फिरबो न बनै कार्य एक संगते हेतु अलंकार अरु नूपुर पाठ में जब प्यारीसों कान्ह कहे चलो न तब नूपुर गिरि परे ॥१२॥

कृष्णको विरह भयविभ्रम ॥ यथा-सवैया ।

प्रेतकी नारि ज्यों तारे अनेक चढाय चलौ चितवै चहूं घातो ।
कोढिनिसी कुकरेकरकंजनि केशव श्वेत सबै तन तातो ॥
भेंटत ही बरही अबहीं तौ वरचाह गई ही सुखै मुखसातो ।
कैसी करों कहि कैसे बचों बहुरौ निशि आइकिये मुख रातो ॥१३॥

यहां रात्री चुरैलको रूपक है प्रेतकी नारी की ज्यों जैसे तारे नेत्रन के होत हैं तैसेही तो तारागण रात्रीमें अनेक हैं सो चढाई कर चलत चार ओर चितनत है अरु इतने पर कोढिनसी है काहे कररूपी कंज सिकुरे हैं अर्थ रात्रीमें कमल सिकुर जात अरु कोढिनके करभी सिकुरे होत हैं अरु सब अंग श्वेत करे है चांदनी ते भेटत ही बरत है ही अब हीतो सातों सुख बराय गई नाश करगई वा जराय गई सुखैसुधिसातोंभी पाठ है कैसी करों तू कहु कैसे बचे फेर राती मुख करके आई है निशिमुख संध्या ताको रंग लाल होतही है अरु सातमुखको नाम ॥ दोहा – खान पान परधान पुन, ज्ञान गान द्युतिअंग । शुभ संयोग वियोग बिन, सातों सुख तियसंग ॥ अरु कोई यह मानत ॥ नींदसेजसु मनोसमा, संगति साल सुगंध । सात बियोगिनको करत, महा विरह ते अंध ॥ आशय यह कि रात्री विरहनी को दुःखदेनहार आई ताको वर्णन कियो है रूपकालंकार ॥१३॥

प्रियाको निद्रा ॥ यथा–सवैया ।

आयेते आवैगी आंखिन आगे ही डोलि है मानहू मोल लई है ।
सो वैनसो वन देय नयों तब सो इनमें उन साथ दई है ॥
मेरी ये भूलि कहा कहौं केशव सौतिकहूंते सहेली भई है ।
स्वारथ ही हितु है सबके परदेश गये हारी नींद गई है ॥१४॥

नायका कहति है कि हे सखी या नींद मेरी सौति है काहे जब पीव आवेंगे तब आंखिन आगे आवैगी अरु डोलैगी मानो मोलकी लीनि है सोवैं है आपुन ॥ सोवन देति पीय पास का पीय आपनो करलेत सोवनमें नाम जानी बेरउन मेरे साथ दई है कि यह नीकै राख है सो भूल मेरी है जो मेमानी कहूं सौति सहेली भई है स्वार्थ के लिये सब हितु है परदेशगये हरि नींद संग लई हैं रूपकालंकार ॥१४॥

प्रियको निद्रा ॥ यथा–सवैया ।

केशव कैस हुँ कोरिउपायनि आन सुतो उरलागति है ।
चकचौंडति सीचितवै चितमें चितसोवत हूं महँ जागति है ॥
परदेश प्रियापलमोहिं पत्यातिन जानेको याकी कहा गति है ।
तजि नैनन नींद नवोढ वधूलहु अधिकाराति ते भागति है ॥१५॥

यहां नवोढाको अरु निद्राको एकसी कहैं नींद अनेक उपायन ते आवत मादक वस्तु ते अथवा किस्सा कहानीते तैसेही नवोढा साखन के छल बल ते आवति हैं नींद चकचौंधति सी चितवै अधखुली आंखिनमें नवोढाभी तैसेही अधखुली आंखिन ते चितवति है कब जब मैं जागत तब चकचौंधतसी चितवत

आपन नींदसी जतावै अरु नींदहूमें जागि यह अधखुली आंखिन रहै नींद उमच उमच जात नवोढा भी उचकि उचकि परत नींद परदेश प्रिया जान मोको नहीं पत्यात नवोढा परदेश परदासे रहित मोहिंनहीं पत्यात को जाने याकी कहा गति है ऐसी तज नैनन नींद नवोढा वधू आधीरात तें भागति तहां नवोढा पत्याति नहीं ॥ प्रश्न-नींद काहे नहीं पत्याति यह कोइ कहै उत्तर तों नींद विरहाग्नि की भय मानति. प्रश्न अरु कोई कहै नेत्र तौ दोहैं पीय एक है तहां उत्तर यहां नींद नवोढा सो सविषयमें सावयव रूपक भयो हैं तहां एकदेशवती भी सावयव होतु है एकवस्तु ऊपरते कहे बिन कहे जैसे विधुमुख मृगमद बिंदु अंक लखत सुपिय गहिटेक इहां मुखबंद मृगमद अंक अरु चकोरत्व बिन कहै लसै तैसे यहां नेत्रनको नींदछोडि जाति है नवोढा पियको अंक छुटाय भागिजाति है सो अंग ऊपर ते गायल लीजै एक देश विवर्ती सावयव रूपक भयो ऐसी तो प्राचीन कहत तहां यह प्रश्न है कि रूपक कौनहू होहि विषे विषयीको संबंध नहीं छूटन चाही प्रथम वर्ण पुन अवर्ण कोई कहत प्रथम अवर्ण पाछे वर्ण सो यामें वर्ण अवर्ण एकही अर्थते पुष्ट कीने ताते यहां वाच्य सिद्धांत व्यंग होत है वस्तु उत्प्रेक्षा अनुक्त विषया जानियें काहे सब पद क्रियाके पहिले कहि पाछे वाचिक दीनो है जैसे बिहारी ऐंचतसी चितवन चितै भई ॥१५॥

प्रियाको विरहनिवदेन ॥ यथा-कवित्त ।

केशव कुँवर वृषभानुकी कुँवरि वन, देवता ज्यों वन उपवन विहरति है। कमला ज्यों थिर नरहति कहूँ एक ठौर कमलानुजा ज्यों कमलनिते डरति है॥ काली ज्यों न केतकीके फल सूंघैं सीताजू ज्यों, निशिचर मुखचंद देखि हीजरति है। वदन उघार तहीं मदन सुयोधन ही, द्रौपदी ज्यों नाउ मुख तेरोई रति है ॥१६॥

विरह में राधिका की सखीकी पत्री कृष्णको हे केशवकुँवर वृषभानुकी कुँवरि राधा वन कहिये बनाय देवता ज्यों वनदेवीसी वनके उपवनमें फिरति है किंवा देवीसी बनके बन जंगल उपवन बगीचामें फिरति है कमलासी चंचल चंचलताई में लगति है कमल ते डरति है याते मानो कमला है कमल ते डरत है किंवा कमलासी चंचल है कमलानुजा दरिद्रासी कमलते डरत कालीसमान केतकी सूंघत काली ज्यों न केतकीको फूल रुचे' या पाठमें जैसे कालीको केतकीको फूल नहीं रुचत तैसे याको भी सीतासमान निशाचरी चंदते जरत निशिचर राक्षस अरु चंद्रमा मदनरूपी दुर्योधन जब वदन उघारत तब दौपदीकी रीतिते तिहारी नाम लेति है यहां उल्लेख अलंकार बहुविध वर्णन ते ॥१६॥

पुनः कवित्त ।

भौंरिनि ज्यों भावत रहत वनवीथि कान, हंसिनी ज्यों मृदुल मृणालिका चहति है । पीउ पीउ रटत रहत चित चातकी ज्यों, चन्दचितैं चकई ज्यों चुप ह्वै रहति है ।। हिरनी ज्यों हेरतिन केशरीके काननको, केका सुनि व्याली ज्यों बिलानहीं कहति है । केशव कुँवर कान्ह विरह तिहारेऐसी, सुरतिन राधिकाकी मूरति गहति है ।।१७।।

सखी वचन नायकसों राधे तिहारे विरह ते भौंरीसी भॅवत रहत वननीथिन में अरु 'भौंरी ज्यों भँवति है भवन वनवीथिकान' भी पाठ है । अरु हंसिनीसी कोमल मृणालिका चाहति अर्थ तोरि डारति अरु पीउ पीउ पपीहा की तरह रटत रहति अरु चंद्रमा को देखि चक्रवाकिन सी रहिजात अरु हिरनी केशरी सिंहके कानन ते भागै तैसे केसरि के वन ते भागति है सर्पिणि जैसे मयूरके वचन सुनिके बिलमें घुसति तैसे यहभी उद्दीपन जानके बहति है 'चहति है' यह भी पाठ है। अरु वाकी मूरति सूरति को नहीं गहति अति बेहोश है इहां भी उल्लेख अलंकार पूर्ववत् जानिये ।।१७।।

प्रियको विरह निवेदन-कवित्त ।

दीरघ दरीन बसै केशोदास केशरी ज्यों, केशरीको देखे वनकरी ज्यों कँपत है । वासरकी संपदा चकोर ज्यों न चितवत, चकवा ज्यों चंदहीते चौगुनो चँपत हैं ।। केका सुनि व्याल ज्यों बिलात जात घनश्याम, घननिकी घोर निजवासे त्यों तपत है। भोर ज्यों भँवत बनयोगी ज्यों जगत निशि, चातक ज्यों श्यामनाम तेरोई जपत है

उक्ति कृष्णकी सखीकी राधिकाप्रति । दीरघजे पहार की दरी हैं तिनमें वसत केशरी सिंहकी रीतिते याके दोइ अभिप्राय एक गेह में नहीं रहत दूजे अकेले केशरी आदिके सुगन्धित वन देखि हाथीकी रीतिते कँपत अर्थात् प्राणहानिको डर मानिके वासर दिनकी जो संपदा है भोजनादिक ताको चकोरकी तरह चितबत अर्थ खान पान छोड दियो 'वासरकी संपत्ति ज्यों घू घू ज्यों न चितवत' यह भी पाठ है। चक्रवाककी रीतिते चंद्रमा को देखिके चौगुनो चंप जात चौगुन में यह अभिप्राय है चांदनी ते विरह तपन १ उद्दीपन चंदते २ मुख को स्मरणही ते चंद को आकार देख ३ अरु चौथे प्रकाश ते संकेत स्थल देखि परत चकवा में भी चार अभिप्राय हैं एक बिछुरन दूजे रात्रिमें तपन किंवा रात्रि दिनसी भासत तीजे चकई दृष्टि आवत चौथे शीतलता किंवा चाँदनी उद्दीपन जरावत है विरही 'को चकवा ज्यों चंद चितै' यहभी पाठ है । भौंर की रीतिते वनमें भँवत योगी की रीति ते रात्रिमें जागत चातक

की रीतिते श्याम नायक तेरो नाम जपत है 'चातक ज्यों श्याम नाम तेरोई जपत हैं" यहभी पाठ है ॥ प्रश्न-इहां कालविरोध होत है उत्तर-वर्षको वर्णन है अरु कृष्णकी सखीकी पत्री राधिका प्रति है यापर भी अर्थ लगत है अलंकार पूर्ववत् ॥१८॥

दोहा- केशवदासको, कह्योप्रवास यथामति साज।
राधा हरिबाधाहरण, वरणों सखीसमाज ॥१९॥

इति श्रीमन्महाराजकुमारइन्द्रजीतविरचितायां रसिकप्रियायां संभोगश्रृंगारप्रवासवर्णनं नाम एकादशः प्रकाशः ॥११॥

प्रवासको यथा मतिते वर्णन करचो अब बारहवें प्रकाश में राधा की अरु हरिकी बाधा हरनिहार सखी वर्णन करिहौं ॥१९॥

इति श्रीमन्महाराजाधिराजकाशिराजश्रीमदीश्वरीप्रसादनारायणसिंहबहादुरस्या-
ज्ञाभिगामिललितपुरनिवासिहरिजनकवीश्वरात्मजेन सरदाराख्यकवीश्वरेण
विरचितायां रसिकप्रियायां भूषणे सुखविलासिकानामटीकायां
करुणादिविरहप्रवासवर्णनं नाम एकदशः प्रकाशः ॥११॥

अथ सखीवर्णनम् ।

दोहा- धाइ जनी नायन नटी, प्रकट परोसिन नारि।
मालिन बरइन शिल्पिनी, चुरि हेरनी सुनारि ॥१॥

धाइ जनी जो दुरागमनमें साथ आवत, नायन नटी परोसिन मालिन तमोलिन शिल्पिनी नाम चितेरिन चुरिहेरिनी सुनारिन ॥१॥

दोहा- रामजनी संन्यासिनी, पटु पटवाकी बाल॥
केशव नायक नायिका, सखी करहिं सब काल ॥२॥

रामजनी गोसांइन पटु प्रवीण पटवा की स्त्री नायक अरु नायिका इनको सबकाल में सखी करत हैं यह केशव कहत ॥२॥

प्रियासों धाइको वचन ॥ यथा-सवैया ।

मोहनसाथ कहा निशिद्योसर है सतरंजहिके मिसि बैठी।
केशव क्यों हु सुनै महतारीतो राखहिरी घरहीमहँ पैठी ॥
हौंसिखवों सिखदै रुखि तोहिंते भौहै चढायकै दीठ उमैठी।
कौन लडैती सुरूपन कांहि तुही कछुजाति अकाशहि ऐंठी ॥३॥

पद सुगम अरु कोई कहै यामें धाइ कहां है तो लडैति शब्द पोषण करत

लाड धाइ करत है पिहित अलंकार नायिकाकी हियेकी बात सो सतरञ्जके मिसते कही अरु पर्यायोक्ति भी है ॥३॥

प्रियप्रति धाइको वचन ॥ यथा-कवित्त ।

थोरीसी सुदेशवेष दीरघ नयन केश, गौरी जूसी गोरी भोरी भवजूकी सारीसी। सांचेकी ढारी अतिसूक्षमसुधारि कढी, केशोदास अंग अंगभांइके उतारीसी॥ शोधे कैसी शोधी देइ सुधासों सुधारी पांउ, धारी देवलोकतैं कि सिन्धुते उधारीसी। अजुयासों बोलि चालि हँसि खेलि लेहुलाल, काल्हि ऐसी ग्वारिलउँ कामरी कुमारीसी ॥४॥

नायका वह आपनी ससुरारि जाति है ताको नायक बहुत चाहत रहो तानिमित्त धाइ समाधान करति है भवकी सारी पार्वती की बहिन सी है ॥ प्रश्न-जाको लाइ है ताकी हिनता क्यों करै यासों आज कार्य साधिलेहु ॥ उत्तर-काल्हिहु ऐसी ल्याइहौं यह तौ जाति है यह तौ तुमको नीकी लगी है याते ऐसी काल्हि और ल्याइहौं कुमारी शब्दते धाइ जानियें इहां जाति अरु संशय है दीरघनयनके समय जाति सिंधुते उधारी सी है यामें सन्देह भवजूकी सारीसी में उपजा अरु याको अर्थ कविप्रिया के तिलक में नारायण कवि लिखिचुके हैं याते इहां नहीं लिखो उपमा लुप्तालंकारको संकर है ॥४॥

प्रियासों जनीको वचन ॥ यथा-कवित्त ।

शोभाको सघनवन मेरो घनश्याम नित, नई नई रुचितन हेरत हिराइये। केशोदास सकल सुवासको निवासकरि, विविध विलास हास त्रास विसराइये ॥ ऊषरस केतकु मयूष रस मीठो है पि, यूषहूकीपैलीघाहे जाकी नियराइये । चोरी चोरा नैननि चुराये सुखकोंने जौलों, पियमनमाहीं मन मेलना चराइये ॥५॥

शोभाको जाकी घन नहीं है कहैं नवीन २ शोभा धारत सुवास को निवास बहुत विलास हास त्रास विचारे अरु ऊष कितनो मयूष मधु पियूष अमी के पार है जाके नियरें ताते चोरी काहे चुरावत नयनन को कौन सुख है जौलों मन मेलिन चुरावैगी इहां इतनी बातें मेघमें नहीं हैं याते उपमान ते उपमेय अधिक है ताते 'व्यतिरेक शोभाको सघन वन' या पाठमें उपमा विलास इत्यादि में वृत्तानुप्रास ऊष मयूष कहा है यह उपमानकी निन्दा ते प्रतीप अलंकारादिको संकर है जनीको अर्थ जन चाकर की दासी अरु मइकेके घरते आवै ॥५॥

जनीको वचन प्रियासे ।। यथा-कवित्त ।

ऐसी बातें ऐसेही धौंकैसे कहा पर तन, जाकी गति मति लाज पटसों
लपेटी है। मेरेही न आवै मेरी वीर एतीबारवेतो, जात धाइहीके घर
साथ लौटि लेटीहै।। ऐसी तो है चेरिनकी चेरीवाकी केशोदास, जैसी
तुम हाहाकार पांइपर मेंटी है। जानति हौं नंदजूके ढोटा हौ जू जानो
वोन, वेऊतो उतहि वृषभानुजूकी बेटी है ।।६।।

नायकको अपराध जान जनी कहति है कि ये बातें हम कैसे कहें तासों जैसी तुम कहत हौ काहे तासों जाकी गति अरु मति अति लज्जा ते लपेटी मेरे नहीं आवति धाइके घर जाति है अरु जैसी तुम आजु वशकरी तैसी वाकी चेरीकी चेरी नहीं है तुम जानत हम नंदलालहैं या नहीं जानत वे वृषभानु सुताहैं चेरीके नामते चेरी वचन लाज पट ते रूपक ।।६।।

नाइनको वचन प्रियाप्रति ।। सवैया ।

अहो तो गये पुनि पौरहि लौं सुतो बोलन जाहि तू पाछहि लागे।
करै तब कैसे पराये जुढोटहि ह्वै है कछूनिशि द्योसके जागे ।।
जो नरह्योपरै केशव कैसहुँ देखतही सुख श्याम सभागे।
देतिहौ जान क्यों राखति काहेन आरसीयों करि आंखिन आगे ।।७।।

आरसी याते उपमा अलंकार आरसी शब्दते नाइन अहोतो गये पुन पौरहि लौं सुतो बोलन जाहिरी पाछहि लागे करिहै तब कैसी परायेहि ढोटहि यह भी पाठ है ।।७।।

नाइनवचन प्रिय प्रति ।। सवैया ।

बडी बडी आंख बडी छबिसों चितवै बडी बेर बडो सुख दीने।
बडीही विचार बडीरुचि केशव क्यों हूं मिलो सुबडी हम हीने ।।
बडी जिय लाज बडो डर आली बडी लहरीयों चलैं चितलीने।
बडी निहूं सों तो बडे दुख बोलै इतौ बडे मान बडो मन कीने ।।८।।

नाइन कहतिहै एक तो क्योहूं मिलौ तौ मिलैं हमहीने हमहींको मिलै केश सँवारिबेके सम्बन्ध दूजे नायका न्हाति हें तब नाइनसों लाज नहीं करति यह नाइनहूं सों लजाति है सो नाइन कहति है याके बडी लाजहै याते नाइन लाटानुप्रास बडे बडे शब्दते ।।८।।

नटीवचन नायकासों ।। सवैया ।

ज्यों हौं दिखावनतोहिं गई रीतैं मारिये ग्रीवगही फिरिमाई ।
आजु कहा दिख साध लगी है दिखाऊंगी जाहतौ वेई कन्हाई ।।
देखते शीरी ह्वै जातिभटू अनदेखे जरे तुव है अधिकाई ।
रातिकी वा गति द्योसके एपुनहौं तेरी बालनि बाजन आई ।।९।।

अति प्रेमते प्रेमालंकार गतिते नटी ।।९।।

नायकप्रति नटीवचन ।। कवित्त ।

जहीं जहीं दुरै तुहीं जौन्ह ऐसी जगमगै, कैसे हूं जु केशव दुराइ ल्याउँ रंगकी । पवनको पंथ अलिअलिनके पीछे आली, अलिनी ज्यों लागी रहैं जिन्हें साधसंगकी ।। निपट अमिल वहतुम्हैं मिलि बेकी जक कैसे, कै मिलाऊं गतिमोपै न विहंगकी । इकतो दुसह दुख देति हुती दुतिहूँजे, बीसबिस्वे विसावास भई वाके अंगकी ।।१०।।

सुगम विपरीति अलंकार ताको लक्षण ।। साधक बाधक सिद्धको जो बास सुगन्धको पियको मिलावत है पीय वश होइ जात है सोई बाधक भयो मिलनमें बाधकता करत है कि जो वाको लिवाइ कुंजमें दुराउं तो द्युति चांदनी दिखात अरु पवनके पंथते भ्रमर संग लगे रहत अरु अलिनके पीछे आली सखी भ्रमरी समान रहती सो एक तो दुःखदा द्युति रही अरु ताहूपै विषसी सुबास भई है तहां प्रश्न है, कि अली भ्रमरके पीछे रहनेको कहा आशय नायकाके पाछे काहे नहीं रहती ताको उत्तर, कि वह चांदनीमें जब चलत तब मिलजात देख नहीं परत सब सखी जा ओर भ्रमर बहुत जात ताही ओर जाती हैं । अर्थ कुंजकी राहे लाऊँ तो प्रकाश नहीं छिपत चांदनीमें तो भ्रमर दिक्क करत अरु वास उपमेय विष उपमान फैलन धरम ताते वाचकलुप्ता भी होत है ।।१०।।

परोसिन वचन नायकाप्रति ।। सवैया ।

पांइपरै पलिका परस्यो सुलगी रतितोलन मेलि रती हो ।
सोहै किये मुहसोहै कियो अबलों तुमपै गति ऐसीनती हो ।।
केशव कैसहुं देखनको जिन्हें भोरहि भौंरी ह्वै आनँदती हो ।
पानखवावत ही जिनसों तुमराति कहां सतरातहती हो ।।११।।

इहां रातिको सतरैबो अपने भवनते जानों याते परोसिनके पांइपरे तुम पलँग पर सन दीनों अरु अपनी रति मेल मिलाई अथवा डारको उनकी रति प्रीति तौलत

रही जिनके देखबेकी भोरते भौंरी ह्वै ह्वै मोसों देती रही तिनसों पान खवावत राति कहा सतरात रही ॥ प्रश्न-इहां पान खवावत सतरानी सो काहे ॥ उत्तर-आनको पान खवावत रहे सो सुधि आई याते स्मृति अलंकार अरु दूसरी प्रश्न कि जो परोसिन जानी तो गेहक आन न जान हैं तहां जानेते निरलज्जता सूचित होति ॥ उत्तर-नायक प्रात आइ सब कथा कहिगयो रहो प्रश्न । तहां अन्य धाइ नटी सो काहे न कही ॥ उत्तर-परोसिनको सुनबो सम्भव होति है ॥११॥

परोसिनवचन नायकप्रति ॥ यथा-सवैया ।

हांसमें बात कवासों कही हँसि वाहूकही मुहितै करि लेख्यो ।
आंख मिली न मिली सखियां मिलबोई सुकेशव क्यों अबरेख्यो ॥
चिच्याइ मरो चुप साधैकि चातक स्वाति समेही स्रवै सुविशेख्यो ।
आजही क्यों वह आवत ह्यांजिनि आगिलगेहूँन आंगन देख्यो ॥१२॥

उक्ति परोसिन की नायक प्रति कि जा सखीसों तुम कही रही वासों मिलावहु ताकी बात मैं सुनत रही परोसिन हो ताते वाने हांसी करि नायका सों कही अरु हँसि वे कैसी बात वाहू कही हम मिलिहैं सो तुम हित जानो अबै तुमसों नहीं या लक्षण सखी मिलिहै मिलबो कहा अबरेखति है सो चिच्चाइ काहेको मरत हो चुप साधिरहो स्वाती समय पाइ स्रवत है आजहीं वह क्यों ह्यां आवत है ताते तुम आगि लगो आंगनमें मति देखो भाविक अलंकार पाछिली बातें भी कहेते अरु आगिलगेहू आंगन न आई यामें कोई विशेषोक्ति भी कहत अरु परोसिन भी याही में ॥१२॥

मालिनिवचन नायकासों ॥ कवित्त ।

दुरिहै क्यों भूषण बसन दुतियौवनकी, देहहीकी जोति होतिद्योस ऐसी राति है। नाहको सुवास लागे ह्वै है कैसी केशव, सुवासहीकी वास भौर भीरफारे खाति है॥ देखि तेरी सुरतिकी मूरति बिसूरति हौं, लालनके दृग देखिबेको ललचाति है । चलि है क्यों चंदमुखी कुचनके भारभये, कंचनके भारतो लचक लंकचाति है॥१३॥

जो सखी है सो नायकाके रूपकी अधिकाई नायकको जतावत नायका प्रति कहिकै अरु 'सुवास भ्रमर ते मालिन सुभावही' भी पाठ है । अरु अभूत उपमा अलंकार के उदाहरण में यही कवित्त कविप्रिया में है याते नारायण कवि याको तिलक नहीं लिख्यो है ॥१३॥

मालिनिवचन नायकप्रति ।। कवित्त ।

घेरो जनि मोहिं घर जान देहु घनश्याम, घरिकमें लागी उरदेखि वीज्यों दामिनी । होई कोऊ ऐसी वैसी आवै इत उत ह्वैकै, वेऊ वृषभानुजूकी बेटी गजगामिनी ।। आदितको आयो अंत आवो वनि बलिजाऊं, आवत हैं वेऊ बनीं आई अरु यामिनी । कामके डरन तुम कुंज गह्यो केशोदास, भौरनके भयन भवन गह्यो भामिनी ।।१४।।

उक्ति मालिनि की नायक सों तहां प्राचीन प्रश्न करत कि कुंजमें जो नायकको पठावत कामके डरते सो तौ कुंज उद्दीपन है उहां ज्यादा विरह हू है कामे काम अत्यंत सतावत है तब कंज गह्यो क्यों कह्यो तहां उत्तर यह कीन्हों कि कुंज कामको घर है घरमें आये तो न मारि है तहां कुंजमें क्या न्यून चाही सो अधिक है घनवनशरदवसंत उद्दीपनस्थल हैं ते सब काम के भवन हैं उहांहू गये काम बढत है तहां कुंज दो प्रकारकी है एक संभोग कुंज १ दूसरो तप कुंज २ सो तुम तप कुंजमें जाहु याते काम न सताइ है सो इहां लक्षणा तें जान्यो कि तुम काम सोंडरिकै तप कुंज गह्यो जहां निर्वेद वैराग्य उपजै तहां सखी काहेकी रही जो शृंगार विरोध भई तौ कवित्तको अर्थ कि घेरो जिन मोको हे घनश्याम घर जान देहु जाघरमें नायका हैं एक घरीमें दामिनी वत अंगसों लगी देखि वीज्यो साधारन होहितो आनरीति ते आइसकै वह एक बडे बापकी बेटी दूजे गजगामिनी सो सूर्य्य को अंत आयो सो अब बलि जाउं वन जलभी आवत है अरु वेभी बनको आवती हैं अरु यामिनी भी आई भ्रमर जिनके डर भवन में बैठी हैं ते कमल में बंद ह्वै जैहैं अबै घरमें बैठी हैं तुम कुञ्जमें बैठो इहां कोई कहै वन जल कहेते पावस सूचित होत तहां कमल कहाँ जो वन आवत अब तिहारी बनी आवत है तुम घनश्याम हो सो रस बरसिबो करिहौ ताते साभिप्राय पदते परिकरांकुर अलंकार अरु सुवास पदते मालिन जानियें ।।१४।।

वरइनबचन नायका सों ।। कवित्त ।

मैने ऐसो मन तन मृदुल मृणालिकाके, सूत ऐसो सुरधुनि मन हि हरति है। दारों कैसी बीज दंतपांतिसे अरुण औंठके, शोदास देखे दृग आनँद भरति है।। एरी मेरी तेरी मोहिं भावत भलाई ताते, बूझत हौ तोहिं उर बूझत डरति है। माखनसे जीभ मुखकंज सो कुवंरि, कहुँ काठसी कठेडी बात कैसी निकरति है ।।१५।।

पात पान अरुणाई तें बरइन 'मृदुमृदुलमृणालिकाके' भीपाठ है । अरु बिंब

से अरुण ओंठ' यह भी पाठ है । याको अर्थ कविप्रिया के तिलकमें नारायण कवि लिखिचुके याते इहां नहीं लिख्यो यामें उपमालंकार है ॥१५॥

बरइनबचन नायकसों ॥ कवित्त ।

नैननि नवावो नेक अतिही अनीत करे, जानत हौ तुम जैसे जग
जानियतु है ।चंचल चरित्र चित चेटकी चेटका गायो, चोरी कै
चितन अभिसार सोपियतु है ॥ एकनिके पैठे उर उररी उरोजन में,
उरझेते केशोराइ कसे वैजियतु है। ऐसी कहुँ होति है जो बालनिकी
चोरी चोरी, चितमति मनमथहाथ बेचियतु है ॥१६॥

बरइनकी उक्ति कि हे प्राणप्यारे नयन न नवावो नेकहू अरु अति अनीत करत है तुम जानत हौ जैसे जग के जानिये है अरु चंचल जो तिहारो चरित्र सोई चेटका है ताने चेटक गायो है सो चोरी करि चित्तकी ताको अभिसार करावत हौ चेटक चटक लावो यह भी पाठ है ॥ एकन के उरमें पैठे अरु उरोजन में उरझे फिर कैसे तजत हौ अर्थ तजेते वह कैसे जीवैगी 'उर उरन उरोजन में' यह भी पाठ है । ऐसी नाहीं होति कि ब्रज बालानकी चोरी चोरीउनको मनकाम हाथबेचत हौं 'मन मनमथही के हाथ' भी पाठ है । चंचल चरित्र ते नायक के नयननिमें थापै लेत चित्त को अभिसार कहा सारपीलेत है पाननि कोऊसार पीजियतु है इहां चेटक करकतु है पान बेचिबेमें ताते वरइन चोरको रूपक अरु नयन को भी ॥१६॥

शिल्पिनिवचन प्रियासों ॥ सवैया ।

अबहीं पुन बोलिरी बोलिलगी पौरहूं लौं उठि जान न दीने ।
मेरे ही जान भई उलटी वश केशव हैं कहिबे कहँ कीने ॥
जो पै इतौ दुखपावति है तलफै दृगमीन मनोजलहीने ।
तौकित छांडति है छिन एकरहै किनचित्र ज्यों हाथ हिलीने ॥१७॥

उक्ति सखीकी नायकासों अबहीं ते बुलायबेकी जक लगिरही है तोकों नायक दरवाजे तक नहीं पहुंचो 'अबहीं पुनिबोलरीबोललगी जक' यहभी पाठ है । यामें कलहांतरिता सूचित होत याते मेरे जान तूही वश है उनके जो पै ऐसो दुख पावत मीन जलकी रीति नेत्रकरिकै तौ चित्रकी नाईं हाथ में काहे नहीं लिये रहति इहां चित्रते शिल्पिनी तलफै दृग मानो जलते हीन मीन यह उत्प्रेक्षा ॥१७॥

शिल्पिनिवचन प्रियप्रति ॥ सवैया ।

खोट तुरी जिमि खूटि रहो गहि ठौरकु ठौर निजांनि न जाहू ।

लालन आवत मारे समाजन लागे अलोकके ता जनता हू ।।
कोरि विचार विचारहु केशव देख हु बूझहि ते सब काहू ।
नेहहिके फिरलागहु संगन नैननिके सँग और निबाहू ।।१८।।

शिल्पिनि वचन है कि तुम पोट अडेल घोडा की रीति खूट किनारो गहिकर रहेहौ ठौर कुठौर नहीं जानत जहां मनमानो तहीं रहे किंवा ठौर कुठौर कहा जाने न जात हौ 'पैटतुरी जिमि' भी पाठ है। लालन कोई करै तौ समाज में न आवो अरु ताजन चाबुक मारै तौ आवो 'लाजन आवत मारे समजान, इस पाठ में अलोक के ताजने चाबुक लागे सभामें तौभी लाज नहीं आवत या जो मैं कहति हौं कोरिभांति सों सो विचारो पुनि हितसों बूझो नेहही के फिरफिर संग लगतहो सो नयननिके संग और निबाहत हो इहां नेह के संग लगो नयनके न लगो नेहपद अश्लेष है सचिक्न रँग बतावत ताते शिल्पिनि किंवा खोटातुरी ते चित्रको घोडा याते शिल्पिनी जानिये खोटतुरीकी उपमति उपमालंकार अरु अडीयल घोडा को दृष्टांत है ताते दृढांत अलंकार है ।।१८।।

चुरिहेरिनिवचन प्रियाप्रति ।। कवित्त ।

मन मन मिले कहा मिलि है मिलेको सुख, मिलहु धौं देखहु बोलाहि काहू बालसौं । भूलिपरे भौंहनि धौं बांधि हौंकिते कदिन, बांधौ बलि जाउँ वनमाली वनमालसों ।। मुहु मोरे मारे नामरति रिस केशोदास, मारहुधौं मेरे कहे कमल सनालसों । नैननिही विहँसि विहँसि कौलोंबोलिहौजु बचहूतो बोलिये विहँसि मुख लालसों ।।१९।।

उक्ति सखीकी नायका प्रति । परस्पर तुम जो मन मन मिले हौ तामें मिलेको कौन सुख तुम्हैं मिलि है मिलिकै देखो अरु काहू बाल सों मिलेको सुख बूझो भूल परे यै भौहनि सों कितेकदिन बांधिहौ यातें मेरे कहे सनाल कमलसों मारो अर्थ वनमालते कुंज सनाल कमल ते बांह साध्य वसाना लक्षणा कर नैनन नैनी तिनही हैं विहँसिविहँसि के बोलो याते मुख विहँसिके लालसों बोलो चुरी पहिरत मुँह मोरत सोई बात कहत ताते चुरिहेरिनि है रूपकातिशयोक्ति अलंकार अरु स्वभावोक्ति भी है ।।१९।।

चुरिहेरनिवचन नायकसों ।। सवैया ।

आपुन हूजै दुखी दुखीजाके हौ ताहि कहा कबहूँ दुख दीजै ।
जाबिन और सुहाइन केशव ताहिसु हाइसु तो सब कीजै ।।

भाग बडो जु रची तुमसों वहतो बिझकाइ कहो कहँ लीजै।
जोरीसिय इतो जैंये मनावत तातो है दूध सिराइन पीजै ।।२०।।

जाके दुखते आपु दुखी होत ताको दुख का कबहू दीजै जा विन तुमको और नहीं सुहात ताको जो सुहाय सो करो चाही तिहारे बडे भाग हैं जो वा रची है तुमसों ताको बिझकायते कहा पावोगे 'बिरचाये औ बिछाये भी पाठ है। जो रिसि करै तो मनाइये चुरी पंहरावतमें सुहात चुरी पहिरावत ताते चुरिहेरिन अन्योक्ति अलंकार दूध सिराके पीजै अबै तिहारे लायक नहीं है का सिराइन पीजे या काकोक्ति ।।२०।।

सुनारिवचन नायकासों ।। सवैया ।

लोल अमोल कटाक्ष कलोल अलोलिक सौपट ओलिकै फेरे।
पानिपसों अतिपैने रसाल विशाल बने मनभावते मेरे।।
केशव चीकने चौगुने चोखे चितैके किये हरित्याइन चेरे।
शोच सँकोचन और तिरोचन धीरज मोचन लोचन तेरे।।२१।।

उक्ति नायका सों सुनारिनकी। कि लोल चंचल अमोल हैं तेरे कटाक्षन की कलोल कहैं अलोलिक तासों धीरज सों पट ओलि कै ओट दैकै फेरे अर्थ नेत्रपट काहेको फेरत है पानिप करन अति तीक्ष्ण रसाल रसको घर बहुत विशाल बनो है ताको देख रो मन भावत है यहू सब नेत्रके विशेषण हैं।। 'पानिप सो अति बैन विशाल' भी पाठ है। केशव चीकने सचिक्कन चतुर चोगुने चोखे हैं ते चोखे जो चतुरके गुण हैं ते चोखे हैं सो इनको चितैकि हरि चेरे भये सन्याय है अन्याइ नहीं शोच संकोच श्रीरति की रोचन अरु धीरज इनको मोचन तरे लोचनको स्वभाव है 'धीरज मोहन' भी पाठ है। इहां अमोल पानिप पैने चौगुने चोप न्याइ ये वचन सब सुनारिनिके हैं अमोल आभूषण संज्ञा है याते वृत्तानुप्रास अलंकार ।।२१।।

सुनारिनवचन नायकसों ।। कवित्त ।

हांसीमें हँसेते हरिहरे कौ झुकत मन, हरिकै हँसत हेरहिये अनुरागी है। प्रेमकी पहेली गूढ जानति जनावति हीं, आजु अधरात कलों मेरे संग जागी है।। अबलों ज्यो धीर धरयो तैसे दिन द्वैक और, धरो गिरिधर तुमतेको बडभागी है। भावतीति हारी वह काल्हहीते केशोराय, कामकी कथानि कछू कान देन लागी है ।।२२।।

उक्ति सुनारिन की नायक सों हांसी में हँसेते हरि हरे धीरे झुकति है ।। मन हरिके हँसे है होरकै उरको अनुरागी है। प्रेम पहेलिका जो गूढ जाने जनावें अरु

आज आधी रात लौं मेरे साथ जागी है ॥ अब दोदिन धीर राखो जैसे धीरज धरे रहेहौ हे गिरिधर तुमते को बडभागी है तिहारी जो भावती भामिन है सो काल ते कामकथा सुनतमें कान देन लगी है इहां गूढबात सुनार की है वृत्तानुप्रास हास हँस हँस ताते ॥२२॥

रामजनीवचन नायकासों ॥ कवित्त ।

कोमल अमलवेतो अमल एतीछे चल, मलिन नलिन नवनील कैसे पात हैं। सूधे साधु शुद्धवेतो कुटिलकरम एतो, केशव मरम चौर परम किरात हैं।। पाइ हैं पकरि तब पाइ है न कैसे हू तू, थोर इठलात एतो अति इठलात हैं। बरजत क्यों न तूही कबिकी कहत मेरे, मोहनको मन तेरे नैन छूछू जात हैं ॥२३॥

वे जो नायक हैं सो कोमल अमल हैं एहू अमल हैं परन्तु तीक्ष्ण हैं चल चञ्चल मलीन हैं नव नवीन नीलकमलपत्रवत् फेर मोहन कैसे हैं ॥ सीधे साधु साधु में भी शुद्ध सीधे अरु ये कोल किरात में भी कुटिल अरु 'मरमके चोर चितचोर' भी पाठ है। जब पकरि पाइ हैं तब तू कैसेहू न पाइ है तू थोरी इठलात वे बहुत इठलात हैं तू बरजति काहे नहीं है मैं कबकी कहति हौं । मेरे मोहनको जो मन है सो तेरे नयन छुये जात हैं इहां रामजनी सामान्या न जानिये काहे अमीरके घर कैसे जइहैं यामें वैरागिनि है सो साधु पदते जानीजात अरु कुटिल चोर इत्यादिककी निन्दा करत याते रामजनी । पाइ है पाइ है ते जमक अरु जैसे उहां कोमल अमल वे कहे तैसे तीक्ष्ण कुटिल ये याते क्रमा भी है ॥२३॥

रामजनीवचन नायकसों ॥ सवैया ।

कौन हूँ तोष कहाभयो केशव कामिनकोटिक सोहित ठाटे।
रंचन साध सुधै सुखकी बिन राधिके आधिक लोचन डाटे ।।
क्यों खर शीतलवास करै मुख ज्यौं भषिये घनसारके साटे ।
लालच हाथ रहै ब्रजनाथपै प्यास बुझायन ओसके चाटे ।।२४।।

रामजनी कहै है कि कौनहू तोष तुम करो अर्थ काहूसों सनेह करो कोटि कामनी सो हित ठटिके तौ कहा भयों पै तिहारी साध रंच न सधैगी सुखकी जबलौं राधाके अधिखुले नेत्र न देखि हौ डांटे डँटकै जैसे खरी माटी सपे होत परन्तु शीतल सुवास ता बिन घनसार नहीं होति कपूर के सांट बराबरी वा कपूर के सांट बदले भक्षण करे का होत तिहारे साथ लालच मात्र रहैगो कहूं ओस चाटे प्यास बुझती हैं इहां साधु पद तोष पद याते रामजनी वैरागिन है दृष्टांतालंकार है अरु ओस के चाटे यह अन्योक्ति है ॥२४॥

सन्यासिनिवचन नायकासों ।। कवित्त ।

छूटि है छुटाये जब करिहौधौं कैसी तब, केशोदास अनियास प्यास भूख भागि है । खेल भूलि जाइ गो जुडाइ गोनचित्त चेत, कछूना सुहाइ गोरी रैन दिन जागि है ।। ताते ते तपति दूनी सीरेते सहसगुनी, उपजि परेगी उरऐसी एक आगि है। ऐंडसो ऐंडई जिन अंचल उडात ओली, ओढत हौं काहू की जु डीठ उडि लागि है ।।२५।।

उक्ति संन्यासिनि की नायिका सों ।। कि अञ्चल उठाय ऐंड सों मति ऐंडाय में ओली ओढके मांगति हौं काहूकी डीठि लगिजायगी सो छुडाये ते न छूटि है ।। तब तू का करैगी ।। भूंख प्यास जात रहैगी अरु खेल भूलि जैहै ।। अंग तपि है तपायेते दूनी अरु हिमते हजारगुनी शीतल ह्वै जैहै ऐसी व्याध उपजैगी रात दिन जगनेते संन्यासिन शुभोक्ति अलंकार ।।२५।।

संन्यासिनीवचन नायकसों ।। कवित्त ।

शीतलहू हीतल तिहारे न बसत वह, तुम न तजत तिलताको उर ताप गेहु। आपने जो हीराको पराये हाथ ब्रजनाथ, दैके तौ अकाथ हाथमें न ऐसो मन लेहु।। एते पर केशोराय तुम्हैं ना प्रवाहवाहि, वहै जक लागी भागी भूँख सुख भूल्यो देहु। मांजो मुखछाजो छिन छल न छबीले लाल, ऐसीतो गवांरिनसों तुमहुँ निबाहोनेहु।।२६।।

इहां व्याजस्तुति अलंकारते नायकाकी निंदा नायककी स्तुति है वह तिहारे शीतल हृदयमें नहीं बसत है ऐसी खोटी अरु तुम कैसे भले हौं ताको तपत हियो तिलभर भी नहीं तजत हौ अरु तुम कैसे आपन मन हीराको पराये हाथ दे दियो अमोल अरु वाको मन मेंन नाम मोमसो लैलियो ऐसे उदार हौ तुम यहै काम यह काम अकाथ अकथ कियो इतनेपर तुम्हैं अपने हीराकी कछू चिन्ता नहीं ।। अरु वाको वही अपने मोम मन की जक लगी है मेरो मन गयो है ऐसी तुच्छ है वाकी भूंख भागि गई सुख सब भूलि गये शरीरते फेर तुम केशरसों वाको मुख मांडत हौ अरु वह छल छिनभरभी नहीं छांडत है ऐसी गवांर सो तुमहूं नेह निबाहो मांड्यो. मुँह छांड्यो छिन यह पाठ है दूसरो अर्थ व्यंग सो वाही में नायका की स्तुति कढिकै वह तिहारे शीतल उरमें नहीं बसति है कहा तुमको वाको वाकी चाह नहीं है अरु वहको जो तिहारे तापते तपत हृदय होरहा है तामें तुमहूं बसत अर्थ वह तुम्हें चाहत तुम नहीं चाहत अरु तुम अपनो हीरा सो कठोर मन आन नायकाके

हाथ दीनो वाको मोम ऐसो मन लैकि अर्थ वाको मन कोमल सो तिहारे पास तिहारी जक लागी है भूंख प्यास घर भूलन की कहा देहाध्यासभी नहीं है मांडो मुख मुल सामुहे छल न छांडो ऐसी जैसिन के पास रहत तैसिन सों नेह निबाहत वह सों न निबाहत इहां भूख प्यास सुख दुःख भागी या शब्द सो संन्यासिन है ॥२६॥

पटइनवचन नायका सों ॥ सवैया ।

याहीको मेरी गुसाइनमैं पहिले मिलई बतियां छलि छैलो ।
वाते मिले अँखियां मिलई सखियानकी आंखिन पारके ऐलो ॥
आंखि मिले मुहुँ लागिरहै मनलेहु मिलै वगहैहमगै लो ।
माइमिले मनका करिहौ मुहँहीके मिलेते कियो मनमैलो ॥२७॥

नायका मान कीन्हों तब सखी कहति है मेरी गुसाइन इन बातन निमित्त मैं तुम्हैं पहिलेही छल करिकै छैल नायक सों मिलाई किंवा नायक को बातन में छलि के पुनि बात फेरिकै आंखि मिलाई सब सखिन की आंखिन में ऐल पार के ऐलो ओट पारिबो अरु बँटिबेको नाम है आंखि मिलेते मुँह भी लागो अब मन तुम मिलावहु यह कहि हम गैल गही सो माई जो मन मिलि है तो का करोगी मुखके मिले जो मन को मैलो कियो अब हम जानी कि मोसों प्रीति करि है सो उलटो मन मैलो कियो ॥ इहां डारो बहन ते पटइन अरु इष्टके उद्यम ते अनिष्ट भाई ताते विषम ॥२७॥

पुनः सवैया ।

गेहकी नेहकी देहकी दीखेकी भूषणकी जिन भूख भराई ।
मोहिं हँसी दुखदोऊ दई तिनहूं सों जनावत है चतुराई ॥
केशवराइ बडाई दई सो कहाभयो जान सुभावन जाई ।
सोने सिंगारही सोंधे चढाइ हों पीतरकी पितराई न जाई ॥२८॥

याही पेंचते केशव सामान्य कहिचुके अर्थ सुगम ॥ लोकोक्ति अलंकार हमारे शिष्य नारायण कवि को भ्रम भयो कि यह कवित्त औरको है ताते अर्थ याको नहीं लिख्यो ॥२८॥

पटइन वचन नायकसों ॥ सवैया ।

वामृगनैनी ज्यों और नहीं जुलगावत हौं मुँह ऐसे नहूजै ।
सोने सीजो कहूं पीत रहोहि तो केशव कैस हूं हाथ न छूजै ॥

आपु गिरागुन जौ सिखवैतऊ काकन कोकिल ज्यों कलकूजै।
सुंदरश्याम विराम करो कछु आमकि साधन आमिली पूजै ।।२९।।

उक्ति पटइनकी नायक सों कि वा मृगनयनी अन्य नायका बराबर नहीं। जो मुख लगावत हौ ऐसो मति कीजै सोनेसे जो पीतर होहि तो भी हाथ से न छूजै जो काक को सरस्वती आपु सिखावै तोभी कोकिल समान न बोलै हे श्याम! विचार करो आमची साध अमली नहीं करत अन्य पीतर वह सोना है इत्यादि सब पद में जानिये इहां मुख मुखमिलाइब धरमपट वाको वितरेक अलंकार जो कहत सो भी है परन्तु लोकोक्ति बहुत मिली सोने सी पीतर सोनईसी सोन पीतर यहभी पाठ है आम आमलीते अरु गुन नाम डोरा ते पटइन ।।२९।।

दोहा- बैन ऐन सुख मैन करि, कहे सखिनके धर्म।
केशव कहों कछूक अब, तिनके कोविदकर्म ।।३०।।

इति श्रीमन्महाराजकुमार-इन्द्रजीतविरचितायां रसिकप्रियायां
सखीजनवर्णनं नाम द्वादशः प्रकाशः ।।१२।।

सखीके कर्म यावत रहे सो वचनादि ते कहे अब तिनको धर्म कहत हौं नयन चैन मुख मयन करि कहे सखिनके मर्म यह भी पाठ हैं ।।३०।।

इति श्रीमन्महाराजाधिराजकाशिराजश्रीमदीश्वरीप्रसादनारायणसिंहबहादुरस्याज्ञाभिगामिललितपुरनिवासिहरिजनकवीश्वरात्मजेन सरदाराख्यकवीश्वरेण विरचितायां रसिकप्रियायां भूषणे सुखविलासिकानामटीकायां सखीजनवर्णनं नाम द्वादशः प्रकाशः ।।१२।।

सखीजनकर्मवर्णन।

दोहा- शिक्षा विनय मनाइबो, मिलबै करहि सिंगार।
झुकि अरु देइ उराहनो, यह तिनको व्यवहार ।।१।।

शिक्षा आदिक सखीजनको व्यवहार कहत हौं ।।१।।

नायका सों शिक्षा सखीकी ।। सवैया।

नाह लगे मुख सौति दहे दुख नाहिं लगे दुखदेह दहैगो।
नाहिं अबै सुख देत है केशव नाह सदा सुख देत रहैगो ।।
नाहिंते नाहिं रीनाहि भलाई भलो सब नाहहितेपै कहैगो।

नाहसोनेह निबाहि बलाइल्यों नाहीं सों नेह कहानि बहैगो ।।२।।

शिक्षाकार के वचन नायक सों नहीं लगे हैं मुख सौति के अरु वाके जो दुःख सो नहीं जराये हैं अरु लगे हैं वाको अबै दुःख तासों वाको देह दही है अरु जो तुमको अबै नहीं सुख देत हैं अरु नाह सदा नहीं यह सदा सुख देहैं अर्थ पाछे ताप देहैं सो मैं पुकारिकै कहत कि नहीं ते भलाई नहीं है भलो सब कोई नहीं हित पै कहिहै ताते तू नाहसों नेह निबाहु मैं बलाइ लेतहौं नाहीं सो नेह न निबहै यामें उपदेश व्यंग्य है लाटानुप्रास अरु कोई व्यतिरेक भी कहत ।।२।।

शिक्षा नायकसों सखीकी ।। कवित्त ।

कुंकुम उबटि कुंकुमान अन्हवाइ जल सोधो सिरलाइ याहि लाये कहारासमें। चंदन चढाइ पुनि फूल पहिराइ भूलि, -बेही काज मांजि आंजिकी नो है प्रकासमें ।। केशव कपूर पूर काहेको खवावो पान, मनजो मगन है जू ऐसेई विलासमें। वाहि नाम नावो हरि हहाकर पांइ पर, सब ही सुवास बसे जाके मुखवासमें ।।३।।

नायक आन नायका को शृंगार करावत सो सुन शिक्षा देत कि वाकी मनावो जाके सुखवास में सबै सुवास भरी है जाको शृंगार करावत तामें विशेषोक्ति सुवास कारण ते कार्य नाहीं है अरु जाकी बात कहत तामें दूसरो विशेष काहे थोरही आरंभ ते सब सवास प्राप्त ह्वै है कुमकुम जबादि भेद भी पाठ है अरु जोपै मन मगन है यह भी पाठ है ।।३।।

राधाकी विनय सवैया ।

ऐसे हि क्यों चुप ह्वै रहि हौं सखि हौं सहि हौं सतराइटसौ लों।
क्यों सरिहै मिलिबे बिन तोहिं तऊ मिलिहै मिलिये दिन जौलों ।।
केशवकोरिकरो उपचार मिले को कहा मिलिहै सुखतौलों।
देखिये अंगन आरसीलै मिलि हो पियसों मनही मनकौलों ।।४।।

उक्ति सखीकी नायकासों ऐसे कबलौं बुरी होगी हौं तिहारो सतराइट सहिहौ उनके विना मिले कार्य्य कैसे ह्वै है वे तऊ मिलिहैं जौलों दिन मिलि है कोर उपाय करो जौलों न मिलि हौ तौलों मिलेको सुख नाहीं अंग आरसी ले देखो मन कबलौं मिलौगी पियसो इहां पियासों मिलवाइबेकी विनय अरु अलंकार काकोक्ति ।।४।।

कृष्णसों विनय कवित्त ।

कंज कैसे फूलनैन दारोंसेदशन ऐन, बिंबसे अधरहास सुधासो सुधारचो है। बेनी पिक बैनीकी त्रिबेनीसीबनाइ गुही, बारसी बारीक कटिहांको करि हारचो है ।। कीने कुच अमल कलपतरु कैसे फल, केशोदास याते विधि मुगुध विचारचो है। देख्यो नागुपालसखीमेरीको शरीर सब, सोनेसों सवाँरि सब सोंधेसों सुधारचो है ।।५।।

उक्ति सखीकी नायक सों ।। कंज से नयन दारयोंसे दशन माणिक से अधर सुधासो हास त्रिवेनीसी वेनी कचसों कटि बार ज्यों सिवार भी पाठहै कल्पतरु फलसे कुच अरु कहूं अमलका फल भी पाठ है तुम अबै देख्यो है की नाहीं जहां सोनो तहां सुगंध नाहीं यामें दोई हैं याते व्यतिरेक व्यंग्य ते स्तुति है याते व्याज स्तुति भी ।।५।।

राधाको मनाइबो सवैया ।।

ना हसि खावत नाहिं भली सखि पावकलों तिनको मुहँ डाढौ।
भौंहनको भुलयो भटभावन नैननको मतसोहितु बाढौ ।।
काल्हिके कालके दीन दई हँसि पाइ परोतन प्यौ मुहँ काढौ।
राजकरौ जहँ राजसदार हे केशव चित्र ज्यों अग ही डाढौ ।।६।।

यह कवित्त प्राचीन पुस्तकन में नहीं मिलत ताते नारायण कवि नहीं लिख्यो ।।६।।

रीझि रिझाइ झरोखनि झांकि रही मुख देखि दिखाइ सुभाहीं।
बोलन आये अबोल भई अब केशव ऐसी हमैं न सुहाहीं ।।
मैं बहु तै बहराई हैं तो सीरी तू बहरावत मोहिं वृथा हीं।
याही सयान सदा चलि हौ हरिसों हँसि हां करै मोहिं सों नाहीं ।।७।।

उक्ति सखीकी नायका प्रति ।। कि हरि सों तो हां करत अरु मोसों नाहीं करत झरोखन झांकि रीझि रिझाय मुख देखि दिखावत जब बुलाउन आवत तब अनबोली होइ रहत ।। ऐसी मोहिं नहीं सुहात मैं तोसी कितनी भुराई तू मोको का भुरावत मोहिंसों नहीं करत यही मनावन विभावनालंकार ।।७।।

कृष्णको मनाइबो ।। सवैया ।

भूषणभेद बनाइ कै केशवफूल बनाइब नाइकै बागे।
भाग बढाइ सुहाग बढाइकै राग बढाय हिये अनुरागे ।।
पांइनि लागन सोंधो लगावत पान खवावत ही निशि जागे।

कान्ह चलो उठ बैठे कहा मनमूसि परायौ सुरू सनलागे ।।८।।

उक्ति सखीकी नायकसों ।। भूषण फूल वसन बहुत प्रकार के बनाय पहिर भाग अपनो बढाय वाको सुहाग चढाय प्रीति बढाय आप अनुरागे पायन परि सुगन्ध लगाय पान खवावत जागत रहे अब चलो मिलो परायो मन मूसिके अब का रूसत इहां चित्रालंकार सोंधो चढाइबो तहां इच्छा रूसन की ।।८।।

राधाको मिलैबो ।। सवैया ।

दुर्लभ देवनहूंको सुतो हरिको मन हांसिनहूँ हठि लीनो ।
टारहु जो हियते कबहुँ अब जौं गुरुको दिया मन्त्रप्रवीनो ।
लेति लियो तौ न देत दियो अब मानहु तादिन दुःख नवीनो ।
मांगन आवै तौ दीजे भटूअपनो मन ज्यों वह जाइ न दीनो ।।९।।

यह सवैया केशव को नहीं ताते नारायण कवि तिलक नहीं लिख्यो ।।९।।

सवैया ।

आजु देवारि किरात जो कीजे तौ आजुके द्यौसलौं हू है सभागी ।
बात सुनी जननीपै जबै तबहीं मतिमानकी नींदते जागी ।।
अंग श्रृङ्गार निहार निशातिन चित्त बिहारणसों अनुरागी ।
दीप दै देवन जाइजु वा मिल केशव रांड़सों खेलन लागी ।।१०।।

पूर्ववत् यह भी अन्यको बनायो है ताते नारायण कवि तिलक नहीं लिख्यो ।।१०।।

जो हौंगनों औगुन तौ तू गुनै गुननगन, जोहों गुनतौ तू अगुनै गुननमें ।
केशोदास ऐसी प्रीति छिपावत छलनमें, जैसे छिन छबि छूटि छिपै जाइ घनमें ।।
भारी है निठुर निशिभादोंकी भयावनीमें, सो क्यो बसै घर जाको पिय बसै वनमें ।
बैठेते उठावै उठि चले ते मचलि रहै, सोई क्योंन कहै बीर जोई तेरे मनमें ।।११।।

उक्ति सखीकी नायका सों ।। जो मैं गुन कहौं तौ तू औगुन गनत ऐसी प्रीति छपावत जैसे घनमें बिजुरी छपिजात यह भादोंकी भारी निशि भयावनी में पिय वनमें हैं तू घरमें कैसे रहैगी बैठेते उठावत चलेते मचलत सो क्यों नहीं कहत जो तेरे मनमें है इहां दृष्टांत अलंकार जैसे छिन छवि ।।११।।

कृष्णको मिलैबो कवित्त ।

सिखै हरीसखी डरपाइ हारी कादंबिनी, दामिनीदिखाइ हारी दिशिअधिरातकी । झुकिझुकि हारी रतिमाई मारि मारि हारयो, मार

हारी झकझोरति त्रिविध गति वातकी ।। दई निरदई वाहि ऐसी कहि मति दई, जारत जुरैन ऐन दाह ऐसी गातकी । कैसेहूँ न माने ही मनाइहारी केशोराय, बोलि हारी कोकिलाबुलाइहारी चातकी ।।१२।।

उक्ति सखी की नायक सों ।। की वाकी सखी सिखाय घटा डरपाय दामिनी दिखाय कोप करि करि रति मार दै दै काम झकझोर पवन ये सब हारे दई ने वाको ऐसी मति काहे दई है कि जासों अपने अंगको जरावत कोकिला बोल हारिये में यह व्यंग्य कि रिसियाय कि बोल उठैगी सब उपाइ करि हारि वा नहीं मानत ताते तुम चलौ सब उद्दीपन कारण है कार्य्य नहीं होत ताते विशेषोक्ति ।।१२।।

राधिकाको शृंगार सवैया ।

**दीनो मैं पांइ झँवाइ महावर आंजीमें आंजन आंख सुहाई ।
भूषणभूषित कीने मैं केशवमाल मनोहरहू पहिराई ।।
दर्पण लै अब दीपत देखि सखी सब अंग श्रृङ्गार सिधाई ।
बंक विलोकन अंक लै पान खवावैको कान्ह कुमारकी नाई ।।१३।।**

अर्थ सुगम ।। उक्ति सखीकी सखीसों । यावक अञ्जन भूषणादि सब मैंने किये वर नायककी रीतिते पान को खवावै व्यंग्य ते तू नायक पास चल यह मंडन सखी है सम अलंकार ।।१३।।

**पाग बनी अरु बागो बन्यो पटु आप टुकाकटिंराजत नीको ।
सोंधो बन्यो अतिचार चढावत हार बन्यो उरभावत जीको ।।
बीरी बन्यो मुख खात मनोहर मोहिं श्रृंगार लग्यो सब फीको ।
भाल भली विधि जौलौं गुपाल कियोवह बाल बनाइनटीको ।।१४।।**

अर्थ सुगम उक्ति नायक सों सखीकी पाग बागो वटुका सुगंध तांबूल ये सब यद्यपि बने हैं तथापि जौलौं राधिका के हाथ को तिलक नहीं लगो रहै तौलौं सब फीको है इहां पहिली विनोक्तिअलंकार अरु मिलाईबो व्यंग्य ।।१४।।

राधाको झुकिवो कवित्त ।

फिरि फिरि फेर फेर फेरचो मैं हरीको मन, मन फेरै फिरी पुनि भागकी भली घरी । पलपल पायन परति हुति जिनके सु, परचो पीयतेरे पांइ पीके पांइहों परी ।। बडी बडी वधुनकी बडी ये बडाई मेटि, केशोदास बडेनमें जो तुमें बडी करी । हौं तौ जान्यो मनमें तू मेरे गुन मानिहैहौं,

ताहि क्यों मनाय हौं जो मोहूसों भली करी ।।१५।।

उक्ति सखी की नायका प्रति ।। फिर फिरकै मैं उनको मन फेरयो फिर आई जाके तू पांवन परत रही सो तेरे पांयन पै परयो मैं पायन परिकै जे उत्तम उत्तम रहीं तिनकी उत्तमता मेटि तिनमें उत्तम तोहिं करी मैं तो अपने मन जानी कि मेरो गुण मानि है तू मोहूंसों भली करी अर्थ रिसानी मनी धरी भी पाठ है पायन परत हीं तू याहि झुकिबो विषमालंकार ।।१५।।

पुनः सवैया ।

केशव राइ बुलावत हैं चित चारु विलोचन नीचे करौ जू।
काल केलावर बीसविसों परौ बीसविसव्रतते न टरौजू।।
आगि लगौ तेरे कालके शीशपरो हरजायब जागि परोजू।
आजु मिलौ तौ मिलौब्रजराज हि नाहिंतो नीके ह्वैराजकरोजू।।१६।।

यह कवित्त भी प्राचीन पुस्तकन में नहीं मिलत ताते नारायण कवि अर्थ याको नहीं लिख्यो ।।१६।।

नायकको झुकिबो यथा-सवैया ।

तासों बसाइ कहा कहि केशव कामलता तरुते दुरई।
विधिकी गति लोपि न जाइ अलोपित लै मणिशीश भुजंग दई।।
अपनो मुहुँ देखहु आरसीलै पुनि बात कहौ परमान लई।
वृषभान सुतापर और सुहागिन वारों जहां लगिजी भगई।।१७।।

जासों का बसाइ ताने कामलता वृक्ष सों लपेटि नागके शिर मणिदई है कान्ह आरसी लै मुख तौ देखो फिर प्रमाणवारी बात कहौ यही झुकिबो किंवा तेंदू वृक्ष सो कामलता रई मिलाई यही झुकिबो वा हाउंबाते राधापर जहां लग जीव जासों सब वारों यह सखी नायक सों कही लोकोक्ति अलंकार ।।१७।।

प्रियासों उराइनो ।। यथा-कवित्त ।

केशोदास कौन बडी रूप कुलकानपै, अनोखो एकतेरही अनख उर ओलिये। आपने समान काहू मान सैन मानै तू, गुमानके विमान चढी व्योम व्योम डोलिये।। ऐंडसों ऐंडाइ अति अंचल उडाइ ऐसी, छांडि ऐंड वैंड चितवन निरमोलिये। दीनो मन हाथ जिन हीरासौ हरषि ऐसे, हरिसों हरिन नैनी हरेहू तौ बोलिये ।।१८।।

उक्ति सखीकी नायकासों तेरो कुल औ रूप बडो है पै एक कनख तेरी आंचर पसारि के मांगिये है अपने समान आन को नहीं माना या गुमान के विमानपै चढिके आकाशमें फिरते जौ अंचल उठाय ऐंडसो ऐंडात हैं सो ऐंड छांडि जिन अपनो मन हीरा तेरे हाथ दियोहै तिनसों धीरे बोल सुभावोक्ति अलंकार ॥१८॥

कृष्णको उराइनो कवित्त ।

सौंहनको शोच न सकोच काहू बीचकी को, पोंछो व्यारे पीक लीक
लोचनकि नारेकी । माखनकी चोरी की है थोरी थोरी मोहूं सुधि,
जानत कहा कि सोरी मोरीं है जुवारेकी ।। मेरी ये कुमति और कहा
कहौं केशोराइ, लागतन लाल लाज इहां पग धारेकी । एती है झुँठाई
वाहि अबहीं रुठाई यह, छारहू तौ छूटी नाहीं पाँइनके पारेकी ।।१९।।

उक्ति नायकाकी नायक प्रति किंवा सखीकी उक्ति शपथ को शोच तुम्हैं नहीं न मोको बीच में डारी ताको संकोच लोचन की पीकतो पोंछो अरु माखन जो तुम चुराया ताकी सुधि मोको है तुम किशोरी बालापन की जानत हौ मैं अपनी कुमति का कहौं तिहारे गेह में पांव धरेकी लज्जा नहीं छूटत इतनी झुंठाई अबलों नहीं छांडत जो पांयन परेकी धूर वदन में ते नहीं छूटी सुभावोक्ति और अनुमानालंकार ॥१९॥

राधावचन सखीसों अपरंच सवैया ।

आंधी सीधाइ है दाइ दवारसी दासिनकी दुख देह दही है ।
तापके तूलत मोलिन मालिन नाइन नाहके नेह नही है ।।
तेरी सों तेरिसों मेरी सखी सुन तेरी अकेलीकी आश रही है ।
कान्ह मिलाउकि मोहिंनपै है मैं आपनजीयकी तोहिं कही है ।।२०।।

उक्ति नायकाकी सखीसों कि धाई आंधी सी दाई दवारिसी दासिन की दे जरत तापसी तमोलि औ मालिन और नाइन तो नाहके नेहई में नहीं है कान्हको मिलाउ नहीं तो मैं मरिजाउँगी ॥ प्रश्न-इहां कोई कहै कि सखी कौन है ताको उत्तर यह है कि है तो नाइन नाहके तौ नेह नहीं है हियमें नेह नहीं ठौर ठौर फिरत हैं फेर प्र० तहां नाह के नहे नहीं तौ नायका की प्रीति आगे काहे करी. उ० ताते संन्यासिन जानिये का आन वाके वश भई तू न ह्वै है आधी उपमान सी वाचक धाई उपमेय धर्म नहीं ताते लुप्तोपमालंकार ॥२०॥

दोहा- इहि विधि श्यामशृंगाररस, बुहविधिवरणो लोइ ।

चार वर्णचहुँ आश्रमन, कहत सुनत सुख होइ ।।२१।।

प्र० यामें चार आश्रम कहते संन्यासिनभी भई तौ संन्यासिनि काम कथा कैसे सुनि हैं ताको उत्तर ।। कि जिनका मोक्षकी आकांक्षा है तेई रसानंदको जानि हैं विषई पुरुष कहा जानि हैं जैसे शुकदेव सुनो अरु व्यास कहो फेर परीक्षितको सुनाया ।।२१।।

दोहा- राधा राधारमणके, करचो श्रृंगार सुवेष ।
रस आदिक आगे कहौं, और रसनिको मेष ।।२२।।

इति श्रीमन्महाराजकुमारइन्द्रजीतविरचितायां रसिकप्रियायां सखीजनकर्मवर्णनं नाम त्रयोदशः प्रकाशः ।।१३।।

राधाको अरु राधारमण कृष्णको श्रृंगार वर्णन करचो अब और रसादि और रसको मेष कहि हौं यह चौदहवें प्रकाश में ।।२२।।

इति श्रीमन्महाराजाधिराजकाशिराजश्रीमदीश्वरीप्रसादनारायणसिंहबहादुरस्याज्ञाभिगामिलसितपुरनिवासिहरिजनकवीश्वरात्मजेन सरदाराख्यकवीश्वरेण विरचिते रसिकप्रियाभूषणे सुखविलासिकानामटीकायां सखीजनकर्मवर्णनं नाम त्रयोदशः प्रकाशः ।।१३।।

इति श्रृङ्गाररसः समाप्तः ।।

अथ हास्यरसलक्षण ।

दोहा- नयन वयन कछुकरत जहँ, जनको मोद उदोत ।
चतुरचित्त पहिंचानिये, तहां हास्यरस होत ।।१।।

नयनमें वा वचनमें जहां चेष्टा कछू आन बनावै अर्थ वाचा कर्मनाते कछु आकृति आनकी आन बनावै तहां हास्यरस जानिये यह याके विभाव हैं 'नयन वयन जब करत कछु मनको मोद उदोत । चतुर चित्त पहिचानिबो' यह भी पाठ है ।।१।।

अथ हास्यरसको भेद ।

दोहा- मंदहास कलहास पुनि, कहि केशव अतिहास ।
कोविद कवि वर्णत सबै, अरु चौथो परिहास ।।२।।

हास्य रसके यह चारि भेद हैं मंदहास १ कलहास २ अतिहास अरु चौथे परिहास जानिये ।।२।।

अथ मंदहास लक्षण ।

दोहा- बिकसहिं नयन कपोल कछु, दशन दशनके वास ।
मन्द हास ताको कहैं, कोविद केशवदास ॥३॥

नेत्र कपोल दांत अरु दशनके वसन ओष्ठ थोरे विकसैं ताको मंदहास कहिये ॥३॥

दोहा- वर्णत बाढै ग्रन्थ बहु, कहेन केशवदास ।
औरों रसयों जानियो, सब प्रच्छन्न प्रकास ॥४॥

ग्रंथ वृद्धि भये ते नहीं वर्ण्यो सर्वस प्रच्छन्नप्रकाश होत है ॥४॥

राधाको मंदहास । यथा सवैया ।

भेदकी बात सुनेते कछू वह मासिकते मुसुकानि लगी है ।
बैठति है तिनमें हठिकै जिनकी तुमसों मति प्रेम पगी है ॥
जानति हौं नलराज दमंतीकी दूतकथा रसरंग रँगी है ॥
पूजैगी साध सबै सुखकी बडभागकी केशव ज्योति जगीहै ॥५॥

याको तिलक कविप्रियाके तिलक में हमारे शिष्य नारायणदास कवि हमसों पूंछके कर चुके याते इहां नहीं लिख्यो ॥५॥

अपरंच सवैया ।

जानैको पान खवावत क्यों हूं गई लगि अंगुली ओंठ नवीने ।
तैं चित्त यो तबहीं तिहिं भांति जुलालके लोचन लीलिसेलीने ॥
बात कही हरये हँसि कै सुनि मैं समुझी वै महारसभीने ।
जानति हौं पियके जियके अभिलाष सबै परिपूरन कीने ॥६॥

उक्ति सखीकी नायकासों कि न जानै आजु पान हरि खवावत रहे तहां अंगूरी नवीन ओठनमें कोई प्रकारते किंवा नवीन अँगुरी ओंठमें लागि गईते चितयो सो हे सखी तू देखी तबहीं ताही भांति ते जो लालके नयन लीलि से लिये अरु सनेहरे अर्थ धीरे हँसिके बात कही सो सुनि हौं समुझी अरु वै बहुत रसमें भीजे सो जानति हौं कि पीयके जीयके अभिलाष सब पूरण करे तहां बात कौन कही यह प्रश्न है ॥ ताको उत्तर ॥ कि यामें सखी नायकासों कहत महारसभीने ते कही तुम महारसभीने हौ तो ते कही तुम महारसभीने हौ तो इहां राधा लायक नाहीं है श्रृङ्गारके यह अयोग्य बात है सो कहत तुम महारसभीने हौ तो पान नायक के हाथते काहे खाये सो इहां नायकाने जो कही रसभीने सोई मोद उदोत करनहार है अरु यह सब रस जो केशव कीने सो ताको समाधान केशव सो बनि है आन सब के मतते विरोध

है जैसे बीभत्स श्रृंगारमें उन कीनों तथापि बुद्धि अनुसार समाधान लिखो है अरु जो वस्तु जन्म की बिगरी सो नहीं सुधरत। फेर प्रश्न ॥ ओठ नवीने कहा; तोको उत्तर ॥ एक तो यह कि जिन ओठन में कबहू अँगुरी नहीं लगी याते नवीने अरु नवीने पान हर ए हँसि कि याही पदते मंद हास भी अुर सुभावोक्ति अलंकार स्वभाव वर्णन और रसवत् भी है ॥६॥

श्रीकृष्णको मंदहास ॥ यथा–कवित्त ।

दशनवसनमाहँ दरशै दशनद्युति, वरषि मदनरस करत अचेत हौ।
झांई झलकति लोललोचन कपोलनमें, मोल लेत मनक्रमवचन समेत हौ॥ मो हैं कहे देत भाउ कहो मेरी भावतीके, भावते छबीले लाल मौन कौन हेत हौ। केशवप्रकाश हास हँसि कहा लेहुगे जू,
ऐसही हँसेते तौहि येको हरिलेत हौ ॥७॥

उक्ति सखी की नायक प्रति ॥ दशन वसन जो ओट है तिनमें द्युति दशनकी दर्शन मदन कामके रस वर्षाय अचेत करत हौ चंचल लोचन की कपोलन में झांई झलकत अरु मोल लेतहौ मन कर्म वचन करके अरु भृकुटीभाव भाषती मेरो भावतीको हे भावते छबीले लाल चुप कौन हेतु साधेहौ अरु प्रकाश हास हँसके कहा लेहुगे मन्द हास ते तो मन को हरलेत हौ अरु जो स्वभावोक्ति अलंकार प्राचीन कहत तामें चमत्कार नहीं द्वितीय विभावना होत है हेतु अपूर्णप्रकाशहास नहीं हियो हरिलेत है ॥७॥

अथ कलहास लक्षण ।

दोहा- जहँ सुनिये कलध्वनि कछू, कोमल विमल विलास।
केशव तनमन मोहिये, वर्णहु कवि कलहास ॥८॥

जहँ कलध्वनि सुनिये कोमल निर्मल विलास देखि के तन मन मोहै सो कलहास है ॥८॥

राधाको कलहास ॥ यथा–सवैया ।

काछे सितासित काछकी केशव पातुर ज्यों पुतरीन विचारो।
कोटि काटक्षन चै गतिभेद नचावत नायकनेह निहारो ॥
बाजत है मृदुहास मृदंग सो दीपति दीपनिको उजियारो।
देखत हौं हरि देखि तुम्हैं यह होतु है आंखिन बीच अखारो ॥९॥

नाचको रूपक है जो सित असित है नेत्र सोई काछनी है पातुररूपी पुतरी

को अरु कटाक्ष सोई नृत नायकको नेह सोई नायक है नचावनहार अरु निनारो पाठ में निनारे पद कहा वे नायक न्यारो नचावति ही हौ अरु मृदु कोमल हास जो सहै सोई मृदंग है हास नेत्र पलकन दीपत सोई दीप ॥ प्रश्न-मृदु हास नयननकों हास बाजत कहांहा. उत्तर-तहां पलक सों पलक लगति यही मानों मृदंग है जो स्पर्श है तहां सूक्ष्म स्थूलशब्द होतही है सो हौं देखत तुम्हें हरिको कि आज आंखिनमें अखारो यह भी पाठ है ॥ यह कवित्त मंदहास में जहां बात कहो हरये हँसि सो कलहास सोहै परंतु बहुत पुस्तकान में यही लिखो है ताते हम हूं लिख दीनो ॥९॥

अपर सवैया ।

प्रेम घने रसबेनसने गति नैननकी रसमें न भई है ।
बाल बय क्रम दीपति देह त्रिविक्रमकी गति ली लिलई है ॥
भौंह चढाइ सखीन दुराइ इतै मुसुकाइ उतै चितई है ।
केशव पाइ हौं आजु भले चित चोर जु काल गुवारि गई हैं ॥१०॥

सुगम । यह कवित्त प्राचीन पुस्तकनमें नहीं मिलत याते नारायण कवि याको अर्थ नहीं लिख्यो ॥१०॥

कृष्णको कलहास सवैया ।

आजु सखी हरि तोसों कछू बडी बात बारलों कही रसभीनी ।
मेलिगरे पटुका पुनि केशव हार हिये मनुहारसों कीनी ॥
मोहिं अचंभो महासुहहा कहि चाइ कहा बहु बारन लीनी ।
तैं शिर हाथ दियो उनके उनि गांठि कहा हँसि आँचर दीनी ॥११॥

उक्ति सखीकी नायका प्रति ॥ हे सखी आजु तोसों हरि बडी बारलौं कहा बात रस भरी कहत रहे अरु गरे पटुका डारो हियमें कहा हार मनिहारसी कहा करी मनुहारिसि कीनी भी पाठ है यह मोको अचम्भव लागत हाहा काहुका चाह बहुबार लई बांह कहा बडी बारलौं अरु बांह कहा बहु बारनि लीनी यह दोनों पाठ हैं ॥ तैं कहा उनके शिर हाथ दयो उनने आंचर में कहा गांठि दई हटुका में लेते बिनै इहां हरिजूने बातैं कही सो सखीने ध्वनिसी सुनी याते पूंछति है ॥ औ हँसि गांठदीनी यामें हँसिबो अरु बात कहिबो यही ध्वनिसी भासत है ॥ श्रीकृषणको कह्यो याते कलहास भयासे बांह गहाई की चाह गह्यो शिर हाथ देनेसे मान छोडब औ शपथ कराइब पुनि शिरहाथ ते संकेत बताओ कि हम संकेत में मिलैंगी उन गांठ दई न भूलि हैं ॥ अर्थ हमैं तिहारी सुधि रहैगी सूक्ष्म अलंकार औ जाति अलंकार भी कोई कहत लक्षण पूर्ववत् ॥११॥

अथ अतिहास लक्षण ।

दोहा- जहाँ हँसै निरशंक ह्वै, प्रकटै सुख मुख बास।
आधे आधे वरण पद, उपज परत अतिहास ।।१२।।

जहां निःशंक प्रकट होई हँसे आधे वचन कहि फिर हँसि उठे सो अतिहास है ।।१२।।

राधिकाको अतिहास ।। यथा-कवित्त ।

तैसी यें जगतज्योति शीश शीशफूलनिकी, चिलकत तिलकत रुणि तेरे भालको। तैसी ये दशनद्युतिदमकति केशोदास, तैसी ये लसत लालकण्ठकण्ठमालको।। तैसी ये चमकचारु चिबुक कपोल निकी, तैसो चमकत नाकमोति चलचालको । हरैं हरैं हँसि नेक चतुर चपलनैंनी, चित्तचकचौंध मेरे मदनगुपालको।।१३।।

हरे हरे हँसि हँसि कहिबेते अतिहास लेश अलंकार हँसन गुणते चकचौंधी दोष भयो अरु अनुगुण भी है ।।१३।।

कृष्णको अतिहास ।। यथा-कवित्त ।

गिरि गिरि उठि उठि रीझ रीझलागे कण्ठ, बीच बीच न्यारे होत छबि न्यारी न्यारीसों। आपुसमें अकुलाइ आधे आधे आखरनि, आछी आछी बातैं कहै आछी एकह्यारी सों।। सुनत सुहाइ सब समुझिपरै न कछू, केशोराइकी सों दुरैं देखो मैं हुस्यारीसो। तरणितनूजातीर तरुवर तर ठाढे, तारी दै दै हँसत कुमारकान्ह प्यारीसों।।१४।।

उक्ति सखीकी सखी प्रति ।। गिरि गिरि उठिबेमें अति विह्वल ।। कंठ लगिबेमें प्यार जुदे होत में हास्य ।। आधे आधे आखर में कष्ट गद्गद ।। तरणि सूर्यतनुजा पुत्री यमुनातीरके तरेके वृक्ष यहां समुच्चय अलंकार बुहभावते ।।१४।।

दोहा- जहँ परिजन सब हँसि उठै, तजि दंपतिकी कान।
केशव कौनहुं बुद्धिबल, सो परिहास बखान।।१५।।

परिजन नायक नायकको मर्याद छोडि हँसि उठैं सों बुद्धि बलते परिहास जानो ।।१५।।

राधाको परिहास ।। यथा-सवैया ।

आई है एकमहावनते तिय गावत मानों गिरा पगु धारी।

सुन्दरता जनु कामकीकामिनि बोलि कह्यो वृषभानु दुलारी ।।
गोपिकै ल्याई गुपालहि वै अकुलाई मिलिं उठि सादर भारी ।
केशव भेंटत ही भरि अंक हँसी सबकी कदै गोपकुमारी ।।१६।।

गोपिन कही एक गोप कुमारी आई है सो सुनि राधा बुलाई वह वेष बनाये गोपाल रहे तिनसों जब राधा मिलीं तब सब सखी हँसीं विशेष अलंकार राधा को मान थोरे उपायते छूटो ।।१६।।

कृष्णको परिहास ।। यथा-सवैया ।

सखि बात सुनो इकमोहनकी निकसी मटुकी शिररी हलकै ।
पुनि बाँधि लई सुनिये नतनारु कहूं कहुँ कुन्दकरी छलकै ।।
निकसी उहिगै लहुते जहँमोहन लीनी उतारि जबै चलकै ।
पतुकी घरी श्यामखिसाइ रहेउतग्वारहँसीमुख आंचलकै ।।१७।।

इहां कृष्णको हास गोपिन को करनो ताके निमित्त खाली ढांककर मटुकी छीटा डार लै आई सो जब हरिलीन्हीं तब सब हँसीं यह छलकर साध भयो याते हासपर उत्कर्ष पर जो उक्ति अलंकार अरु कृष्ण को अभिलाष दूध लूटनो गोपिन की हँसी करनो सो अपनी भई याते विषम अरु जो कोई विषाद लिखो सो नाहीं काहे विषाद में चित्तचाहमात्र रहै विषममें क्रिया करनो यह विषाद विषम को भेद शिररी तिय लैके यह भी पाठ है ।।१७।।

अथ करुणा लक्षण ।

दोहा- प्रियके विप्रिय करणते, आन करुणरस होत ।
ऐसे वरन बखानिये, जैसे तरुण कपोत ।।१८।।

नायकको विप्रिय नाम ।। वियोग ते जहां करुणाको रंग उपजै कपोतवत् औ करुणारस को रंग कपोत की नाईं भी वर्णन करत करुणारस तहँ होत यह भी पाठ है ।।१८।।

प्रियाजू को करुणारस ।। यथा-कवित्त ।

तेजशूरसे अपारचन्द्रमासे सुकुमार, शंभुसे उदार अति उरधरियत है। इन्द्रजूसे प्रभुपूरे रामजूसे रणशूरे, कामजूसे रूपरूरे हिय हरियत है।। सागरसे धीर गणपतिसे चतुर अति, ऐसे अविवेकी कैसे दिन भरियत है। नंदमति मंदमहा यशुदासों कहौं कहा, ऐसे पूतपाइ

पशुपाल करियत है ।।१९।।

प्र० इहां जो कोई कहै कि करुणामें मिलन आश नाहीं अरु वियोगमें आश रहत यह भेद चाही सो तौ केशव न राख्यो यामें वियोगहू कहो चाही । उत्तर । तौ इहां उन्माद दशा राधाकी ह्वैगई ताते इहां उनको यह खबर न रही कि फेर मिलन ह्वै विहारी दौरत है समुहे शशी सरजित सुरभि समीर अरु कहो खबर नाहीं तौ कामसे रामसे कैसे कहे तो वहांतक नायकके रूपको विचार है पशुपाल की जाति होइ ताहीकी निन्दा करी याही ते वेखबर जानी इहां रसवत् अलंकार है जहां रस अँगि आन अँगसों रसवत् इहां वियोग अंगी करुणा अंग है किंवा श्रृङ्गार रसमें करुणा रस याही भांति वरण्यो चाही पशुवार वियोग हैं अरु ऐसनिको ऐसो न चाहिये यामें विप्रिय करन है पूर्णोपमा अलंकार भी कोई कहत हैं पहिले चरण में उर उर भी पाठ है ।।१९।।

कृष्णको करुणारस ।। यथा-कवित्त ।

चंपकीसी कली अली केशव सुवास भली, रूपकैसी मंजरी मधुप मन भाइये। देव कैसी बानी अतिबानी ते सयानी देव, राज कसी रानी जानी जनमुख दाइये।। कामकी कलासी चपलासी काम अविलासी, कमलासी छरे देह पूरे पुण्य पाइये। कौन कीने निपट कुजाति जाति जाति ग्वार ऐसी, राधिकाकुँवरि परगोरस बिचाइये ।।२०।।

चम्पकली रूपमंजरी आदि अर्थ सुगम है अलंकार पूर्वत् ।।२०।।

अथ रौद्ररस लक्षण ।

दोहा- होहि रौद्ररस क्रोधमें, विग्रह उग्र शरीर।
अरुणवर्ण वर्णत सबै, कहि केशव मतिधीर ।।२१।।

क्रोध होनेते रौद्ररस प्रगटत ताते व्यंग्य चित्त होके उग्रता को प्राप्त होत है शरीर किंवा रौद्ररस होनेते क्रोधमय विग्रह उग्रशरीर होत है तौ रौद्ररसको रंग अरुण है ।।२१।।

प्रियाजू को रौद्ररस ।। यथा-कवित्त ।

केहरीकी हरी कटिकरी मृग मीन फणि, शुक पिक कंज खंजरीट बन लीनो है। मृदुल मृणाल बिम्ब चंपक मराल बेल, कुंकुमरु दाडिमको

दूनो दुख दीनो है ।। जारत कनकतन तनक तनक शशि, घटत बढत बन्धु जीव गन्ध हीनो है। केशोदास दासभयो कोविदकुँहर कान्ह, राधिका कुँवरि कोप कौनपर कीनो है ।।२२।।

उक्ति सखीकी उक्ति करिके नायका को कोप मिटावत कि तेरो अंगके जे उपमान हैं ते सब आप भाग गये केहरी सिंहके कटिकी शोभा हरी चालं करी को मृगके नयन अरु मीनकी चंचलता तेरे नेत्र हरि लिये इत्यादि जानिये इहां केहरी कपोतकर भी पाठ है अरु इतने सब वनबास लियो सो वनबास की तर्क किंवा मृगवन उद्यानमें गयो अरु वनको नाम जल भी है याते मीन बन जलमें अब कौन पै कोप कीनो है इहां सपत्नी पर कोप जानिये ।। उत्प्रेक्षालंकार केशव और वस्तु में औरै कीजै तर्क उत्प्रेक्षा अरु मृणाल आदि लैकै कुमकुम पर्यन्त एऊ बन बसे दाडिमको दूनों दुःख काहे फाटजात वाको उदर अरु कनक तनको जरावत शशि घटि बढि होत बन्धुजीव सुगन्धहीन ह्वै गयो ए सब तर्क हैं ।।२२।।

कृष्णको रौद्ररस ।। यथा-कवित्त ।

मीडिमारचो कलहवियोग मारचो बोरिकै, मरोरि मारचो अभिमान भरचो भयभान्यो है । सबको सुहाग अनुराग लूटिलीनो दीनो, राधिकाकुँवारि कहँ सब सान्यो है ।। कपट झपटडारचो निपट कै औरनसों, मेटी पहिंचानि मनमैं हूं पहिचान्योहै। जीत्यो रतिरणमथ्यो मनमथहूकोमन, केशोराइ कौनहूंपैरोषउर आन्यो है।।

सखी नायक सों कहत तुम कलह आदिक तो मीडि माडचो अब कोप कौन पर कररहे हौ इहां नायकको अति अपमान भयो सो सखी छुडायो चाहत रचना करके ताते पर्य्याय उक्ति अलंकार अरु तीसरे तुकमें कपट झटकि डारचो निपटकै आरानसा पहिंचान मानि मनमें भी पाठ है जीत्यो रति मति प्रन यह चौथे तुकको पाठ है ।।२३।।

अथ वीररस लक्षण ।

दोहा- **होहि बीर उत्साहमय, गौरवर्णद्युति अंग।**
अति उदार गंभीर कहि, केशव पाइ प्रसंग ।।२४।।

उत्साहते वीर रस होत है 'उत्साहवर्द्धनो वीरः' इत्यमरः । और वीर रसको वर्ण गौर है ।।२४।।

प्रियाजीको वीररस ।। यथा-कवित्त ।

गति गजराज साजि देहकी दीपति वाजि, हाव रथभाव पतिराजि चल चालसों। लाज साज कुल कानि शोच पोच भयभानि भौंहे धनु तानिबानलोचन विशालसों ।। केशोदासमन्दहास असिकुचभट भिरे, भेंटभये प्रतिभट भाले नख जालसो । प्रेमको कवच कसि साहस सहायक लै, जीति रतिरण आजु मदनगुपालसों ।।२५।।

सेनाको निबाह है तामें गति हाथी देह दीपति बाजी हाव रथ भाव पति राज प्यादेकी पंगति है लाजकी साज अरु कुलकी कान अरु शोच पोच झूंठ इनकी भय भानि नाशकर भ्रुकटी धनु तान कर लोचनके बाण विशालसों मन्दहास खड्ग कुच भट भेंट भई है प्रतिभट नख सो नख लालसो भी पाठ है प्रेमको कवच बख्तर पहिर साहस सहाय पाइ रतिरूपी रण जीतौ मदनगुपाल सों इहां सेनाको रूपक है ।।२५।।

कृष्णको वीररस ।। यथा-कवित्त ।

अघ ज्यों उदारि हौ कि बक ज्यों विदारि हौ जू केस ज्योंकि केशोरायके शीज्यों पछारि हौ । हरिहौकि प्राणनाथपूतनाके प्राणनिज्यों, बनते कि वनमाली काली ज्यों निकारि हौ ।। करिहौ विमदघनबाहन ज्यों घनश्याम, काहूसों न हारेहरियाही सों क्यों हारि हौ। वे ही काम कामवरव्रज की कुमारिकानि, मारतु हौ नन्दके कुमार कब मारि हौ ।।२६।।

उक्ति सखीकी नायक सों । प्रश्न-कंस मारि फेर नंदघर नहीं आये तब कंसादिक को कहिबो अयोग ।। उत्तर-मथुरा में दूतकी उक्ति है विरह निवेदन करत अरु जे जे मारे हैं सो सब उत्साहसों मारे हैं सो सुन वीर होतही है यहां उपमा अलंकार ।।२६।।

अथ भयानक लक्षण ।

दोहा- होहि भयानक रस सदा, केशव श्यामशरीर।
जाको देखत सुनत ही, उपजि परे भयभीर ।।२७।।

जाको देखे ते औ सुनेते भय उपजै सो भयानक रस है ताको रंग श्याम है ।।२७।।

राधिकाको भयानकरस ।। यथा-सवैया ।

भुवमंडल मंडितकै घनघोर उठे दिवसण्डल मंडि घटी।

घहराति घटाघनवातके संघट घोष घटै न घटी हूं घटी ॥
दशहूं दिशि केशवदामिनी देख लगी पियकामिन कंठतटी।
जनु पारथ पाइ पुरंदरके वनपावककी लपटैं झपटी ॥२८॥

उक्ति कविकी पृथ्वी पै मेघ छाइ रहे हैं अरु घोर करत हैं आकाश मंडल में जुर जुरके अरु घन पवन के संयोग ते घरी घरी घारते हैं दामिनी चमकत देखि कामिनि कंठसों लगि गई ताकी उत्प्रेक्षा कि अर्जुन की सहाय पाय इंद्रके वनमें अग्नि की लपट लपटी है यहां गटी समूह कामिनी आलंबन घोषशब्द दामिनी आदि उद्दीपन भयवारी चेष्टा अनुभाव शंका त्रास संचारी कंप सात्विक भय थाई ताते भयानक सो श्रृंगार को अंग है ताते रसवत् जनु पावक की लपटते उत्प्रेक्षा 'जनु पंथहि पाइ पुरंदरी यह भी पाठ है ॥२८॥

कृष्णको भयानकरस ॥ यथा-कवित्त ।

रिसमें बिरस बोलविषते सरस होत, जाने सो प्रबल पित्त दाखै जिन चाखी है। केशोराइ दुख दीबें लायक भये व तुम, आजु लहुजीमें जाकी आंखें अभिलाषी है ॥ सूधे हो सुधारिबेको आये सिखवन मोहिं, सूधेहूमें सूधी बातें मोसों उन भाखी है। ऐसेमें हौं कैसे जाउँ दुरिहूधौं देखी जाइ, कामकी कमानसी चढाई भौंह राखी है ॥२९॥

नायक अपराध करि आपुही पुनः सखीसों कही तू मान छुडाउ तब सखी कहत 'रसमें रसके बोल' यह भी पाठ है रिस में जो विरस के बोल हैं सो बिष ते बडे होत हैं सो जाने जिन या पित्तकी दाखें जिन खाई हैं तोको तुम दुःख दीबें लायक भये जाकी आजुलौं आंखिन की जीमें अभिलाषि है तुम बडे सूधे हौ अब मोहिं सुधारन आये हौ का कबहू सूधे में मोसों उन सूधी बातें कही हैं न कही हैं ऐसे समय में कैसे जाहुँ तुम देरते दुर देखौ तौ काम कैसी कमानै भौहें चढी हैं प्रबल पित्तमें दाख दृष्टांत का मोसों भाषी है यामें काकोक्ति भौं है उपमेय कमान उपमान चढी धरम सी वाचक ते पूर्ण उपमा श्रृंगार को अंग भय ताते रसवत् याते संकर जानिये ॥ २९ ॥

अथ बीभत्सरस लक्षण ।

दोहा- निंदामय बीभत्सरस, नीलवरण वपु तासु।
केशव देखत सुनत ही, तन मन होइ उदासु ॥३०॥

जाके देखे ते अरु सुनेते तन मन उदास होइ घृणामय होइ ऐसो निन्दामय बीभत्स रस जानिये ताको रंग नील है अरु निंदा भय भी पाठ है ॥३०॥

राधाको बीभत्सरस यथा-कवित्त ।

माताहीको मासतोहि लागतु है मीठो मुख, पियत पिताको लोहू नेकन अघाति है ।
भैयनके कण्ठनि को काटतनक सकति, तेरो हियो कैसो है जु कहत सिहाति है ॥
जब जब होति भेंट मेरी भटू तब तब, ऐसी सी है दिन उठि खाति न अघाति है ।
प्रेतनी पिशाचिनी निशाचरीकी जाइ है तू, केशोराइकीसो कहु तेरी कौन जाति है ॥३१॥

उक्ति सखीकी नायकाप्रति । यहां जो शपथ करति सो झूंठी करति कि माताको मासखाउँ जो न चलौं ऐसेही पिताआदि को शपथ करति इत्यादि जानिये इन्हींसे बीभत्स जानो जाते परनिष्ठ बीभत्स है जिनसों बीभत्स उपजै सो परनिष्ठ अरु स्वनिष्ठ में वैराग्य प्रगटत है रसवत् अलंकार ॥३१॥

कृष्णको बीभत्सरस ॥ यथा-कवित्त ।

टूटे टाटि घुनघने धूम धूमसेनसने, झींगुर छगोडी सांप विच्छिनकी घाटतजू ।
कंटलकलित त्रिनबलित विगंधजल, तिन के तलपत लताको ललचात जू ॥
कुलटा कुची लगात अन्धतम अधरात, कहि न सकत बात अति अकुलाजजू ।
छेडीमें घुसे कि घरईं घनके घनश्याम, घरघर नीनि यह जातन घिनात जू ॥३२॥

उक्ति नायकाकी नायकसों । यहां अपवित्र नायकानके अपवित्र स्थान को वर्णन टाटी टूटी घुन सहित धूमरे जालासो धुँवांसों हो रहे ॥ अर्थन से नाश भये झींगुर लगोडी मकरी लागी है तल्प सेज छेंडी छोटी गली ऐसे ठौर जात घिनात नाहीं इहां भी परनिष्ठ बीभत्स कुचीलस्थल को वर्णन है जाति अलंकार जानिये ॥३२॥

अथ अद्भुतरस लक्षण ।

दोहा- होहि अचंभौ देखि सुनि, सो अद्भुत रस जान ।
केशवदास विलासनिधि, पीतवर्ण वपु मान ॥३३॥

जहां अचंभव देखिके वा सुनके होय तहां अद्भुत रस होत है ताको रंग पीत है ॥३३॥

प्रियाको अद्भुतरस यथा-कवित्त ।

केशोदास बालबैस दीपत तरुण तेरी, बाणी लघु वरणत बुद्धि परमानकी ।
कोमल अमल उर उरज कठोर जाति, अबलापै बल बीर बन्धन विधानकी ॥
चंचलचितौ न चित अचल स्वभाव साधु, सकल असाधभावकामको कथानकी ।
बेंचत फिरत दधि लेत तिन्है मोललेत, अद्भुतरसभरी बेटी वृषभानकी ॥३४॥

हे सखी और अद्भुत बात करत तूतो अद्भुत रससों भरी है बैस बाल दीप्ति तरुण वाणी लघु बुद्धि परमानकी परमान याते बडी आन नहीं उर कोमल अमल निर्मल है उरज कुज कठोर जातकी अबला बन्धन बलवीर की अर्थ वशकर निहार है चितवन चंचल चित अंचल स्वभाव साधु भावादिक असाध कामकी कथनको कहत दही बेंचत फिरति है जो लेत सोई बिकत ये सब बातें आश्चर्य की हैं ताते अद्भुत रस भयो अलंकार रसवत् है ॥३४॥

पुनः अन्यच्च ॥ यथा-कवित्त ।

व्रजकी कुमारिका वै लीने शुक शारिका, पढावैंकोककारि कान केशव सबै निबाहि ॥ गोरी गोरी भोरी भोरी थोरी थोरी बैस फिरैं, देवतासी दौरी दौरीआईं चोराचोरी चाहि ॥ बिन गुण तेरी आनि भ्रुकुटीकमान तानि, कुटिल कटाक्ष बान यहै अचरज आहि। एते मान डीठईठ तेरेको अदीठ मन, पीठ दै दै मारतीपै चूकती न कोऊ ताहि ॥३५॥

कुमारिका कोक शारिका पढावती भोरी चोरी जानती बिन गुणकी कमान बाण मारने टेढे मनते अदृष्ट बेझो पीठ दै मारत चूकती नहीं यही अद्भुतता अलंकार वीप्सा जानिये अरु याको तिलक कविप्रियाके टीकामें नारायण कवि लिख चुके याते विस्तार इहां नहीं लिख्यो ॥३५॥

कृष्णको अद्भुतरस यथा-कवित्त ।

माखनको चोर मधु चोर दधि दूध चोर, देखत हों देखत हीं हियो हरि लेत हैं।
पुरुषपुराण अरु पूरण पुराण इन्हें, पुरुषपुराण सुकहत कि हि हेत हैं ॥
केशोदास देखि देखि सुरनकी सुंदरि वे, करती विचार सब सुमति समेत हैं।
देखिगति गोपिकाकी भूलि जात निजगति, अगतिन कैसेधौंपरमगतिदेतहैं ॥३६॥

पुरुष पुराण लोमशादिक ऋषि पूरण पुराण भारतादिक इन्द्रें पूरण ब्रह्म ज कहत सो काहे येतौ माखनकी चोरी करत यही अद्भुतता अरु अहीरिनीनि की गति देखि आपनि गति भूलि जात तौ अगतिनको सुगति कैसे दे हैं यही अद्भुतता अलंकार विभावना विरुद्ध ते कार्य की उत्पत्ति जो गति भूलि जैबो ऐसो होय सो गति देय ॥३६॥

पुनः यथा-सवैया ।

वनमोहिं मिले हुते केशवराइ कहा वरणों गुढ गूढ उधारे ।

गति देखि आपनि गति भूलि जात तौ अगतिनको सुगति कैसे दे हैं यही अद्भुतता अलंकार विभावना विरुद्ध ते कार्य की उत्पत्ति जो गति भूलि जैबो ऐसो होय सो गति देय ॥३६॥

पुनः यथा-सवैया ।

वनमोहिं मिले हुते केशवराइ कहा वरणों गुढ गूढ उधारे ।
यशुदापै गई तब रोहिणिपै चुटि आहि गुहावत जाइ निहारे ॥
घरजाउँ तु सोवतहैं फिर जाउँ तो नन्दपै खात बरो दधि पारे ।
सपने अनसत्त किधौं सजनी घर बाहिर होत बडे घरवारे ॥३७॥

या कवित्त बहुत प्राचीन पुस्तकन में नहीं मिलत ताते नारायण कवि याको तिलक कछू नहीं लिख्यो विशेष अलंकार ॥३७॥

अथ समरस लक्षण ।

दोहा- सबते होइ उदास मन, बसै एक ही ठौर ।
ताहीसों समरस कहैं, केशव कवि शिरमौर ॥३८॥

सबते मन उदास होके एकठौर रहै सो समरस है ॥३८॥

श्रीप्रियाजूको समरस ॥ यथा-सवैया ।

देखै नहीं अरविंदनि त्यों चितचन्दनकी आनँदकन्दनिकाई ।
कामिनि कामकथा करै कानन ताके त्रिधामकी सुन्दरताई ॥
देखि गई जबते तुमको तबते कछुबाहि न देख्यो सुहाई ।
छोडैगी देहजौ देखे बिना अहो देहुन कान्ह कहूँ ह्वै दिखाई ॥३९॥

उक्ति सखीकी नायक प्रति चित दैके कमल नहीं देखत अरु चन्दको भी नहीं देखत अरु कामिनी है कामकी कथा करति है कान मर्याद नहीं मानत ताको तीन धामकी सुन्दरता ताकै है कहा अति सुन्दरी है जबते तुम्हें देखिगई तबते वाको आन देखिबो नहीं सुहात सो देह छांडै है ताते तुम दिखाइ देहु इहां सबते निर्वेद ह्वै गयो तिहारेपर आशक्तिता है यह समरस रचनाते बात है याते पर्यायोक्ति अरु रसवत् तौ चलोई आवत अरु पर्यायालंकार भी कोई कहत कि एक तुमहीमें चित्त बसत ॥३९॥

कृष्णको समरस ॥ यथा-सवैया ।

खारिक खातन दारौ उदाखन माखनहूँ सह मेटि इठाई ।

केशव ऊख मयूष हि दूखत आई हौं तोपहँ छांडि जिठाई ॥
तो रदनच्छदको रसरंचक चाखि गये करिकेहूँ ढिठाई ।
ता दिनते उन राखी उठाय समेत सुधा वसुधाकी मिठाई ॥४०॥

सब मिठाईते निर्वेद एकतेरे ओष्ठकी मिष्टता पर आशक्तिता है अर्थ अधरवारी जो मिठाई है तो मिठाई के जो अन्य मिष्टता उपमान हैं तिन सबको तिरस्कार निन्दा है याते प्रतीप अरु याको अर्थ कविप्रिया के तिलक में नारायण कवि लिख चुके याते इहां नहीं लिख्यो और अलंकार पूर्ववत् ॥४०॥

अपरञ्च कवित्त ।

दनुज मनुज जीव जलथलजननिको, पर्यौई रहत जहां कालसों समरुहै। अनन्त अनन्त अज अमर मरत पर, केशव निकस जाने सोई तौं अमरु है॥ बाजतु श्रवण सुनि समुझि शबदकरि, वेदनिको वाद नाहीं शिवको डमरु है। भागहुरे भागो भैया भागनि ज्यों भाग्यो परै, भवके भवनमांझ भयका भँवरु है ॥४१॥

इहां केशव शुद्ध शांत दिखावत तहां शांतता को रूप ऐसो है कि सिद्ध तपवन पुराण कथा श्मशान ये विभाव चाही सबमें समता ज्ञान की सो अनुभाव चाही धीर्यहर्ष सञ्चारी निर्वेद स्यायी सो कहत हैं दानव मानुष जे जलथलवासी हैं जीव दानव आदि जलके मनुष्यादि थल के तिनसों कालसों संग्राम परो रहत है अर्थ ये सब नाश को प्राप्त होत अरु अनन्त अनन्त ब्रह्मा अमर देव ते मरकर परत हैं ताते यह संसार ते निकस जानत सोई अमर होत अनन्त अजर अज अरोऊ मरत यह भी पाठ है तैं योवन युत है मेरे श्रवण कानन विषे ताको सुनिकर समुझि वह वेदकी कानको शब्द नाहीं है जो त्रिकुटी विषे शिव हैं ताकी डमरू है जब तू श्रवण सुनि समुझि सबै शब्द यह भी पाठहै ताते भागोरे जो भागते भागत बने या भवके भवनमें भयको भँवर मौरहै अरु कोई कहै कि अमर कैसे जानो तहां शिवको डमरू मतिं मानो यह वेद शब्द श्लेष हैं कि वेदको शब्द है कानको नाहीं वेद कहत भागहु रे जो भागते भागत बने अरु यह वेद श्रवण को वाद नाहीं शिवही को डमरू है ऐसो भी बनत है डमरू बजाइ शिव कहतु हैं कि देव दनुज मनुज अज सबसों कालको समर हो रहो है तो इहां निर्वेद सबते उदास भये यह कहां ते आई सो उदास होनो भगबेते अरु वेदशब्द ते विभाव अरु सब मरत तो सब एक सम हैं यह अनुभव अरु धीर्य देयकै भाग है सो बचि है अरु कंप रहो है सोई सात्त्विक ताते शांत रस पूर्ण भयो तहां कोई प्रश्न करै कि सबरस रसिक प्रियामें

दोहा- इहि बिधि बरणों वर्ण वहु, नवरस रसिक विचारि।
बांधहुँ वृत्तिकवित्तकी, कहि केशव विधि चारि ॥४२॥

इति श्रीमन्महाराजकुमार-इन्द्रजीतविरचितायां रसिकप्रियायां नवरसवर्णनं नाम चतुर्दशः प्रकाशः ॥१४॥

यहि प्रकार ते हमने नव रस को वर्णन कियो अब चार तरह की वृत्ति कवित्तकी बांधत हौं ॥४२॥

इति श्रीमन्महाराजाधिराजकाशिराजश्रीमदीश्वरीप्रसादनारायणसिंहबहादुरस्या-ज्ञाभिगामिललितपुरनिवासिहरिजनकवीश्वरात्मजेन सरदाराख्यकवीश्वरेण विरचिते रसिकप्रियाभूषणे सुखविलासिकानामटीकायां नवरसवर्णनं नाम चतुर्दशः प्रकाशः ॥१४॥

अथ वृत्तिवर्णन।

दोहा- प्रथम कौशिकी भारती, आरभटी भनिभांति।
कहि केशव शुभसात्त्विकी, चतुर चतुर विधि जाति ॥१॥

कौशिकी १ भारती २ आरभटी ३ अरु सात्त्विकी ४ ये चार वृत्ति हैं ॥१॥

अथ कौशिकी लक्षण।

दोहा- कहिये केशवदास जहँ, करुणा हास श्रृंगार।
सरलवर्ण शुभ भाव जहँ, सो कौशिकी विचार ॥२॥

जहां करुणा रस हास्य रस औ शृंगार रस कहिये औ सीधे अक्षर होहिं औ शुभ व सुन्दर भाव भी होहिं सो कौशिकी जानिये ॥२॥

यथा-कवित्त।

मिलिबेको एक मिलि मिली फिरैं दूतिकानि, मिलि मनमनहि विलास विलसति हैं।
बोलिबेको एकबालबोल सुनिबेको और, बोलि बोली तीरथनि व्रत निबसति है॥
देखिबेको एकै फिरै देवतासी दौरी दौरी, देवता मनाय दिनदानमैनसति है।
कीजै कहा करम को इहिं रूप मेरी, माई ये तो मेरे कान्हजूके नामहिंहँसति हैं॥३॥

उक्ति धाय की सखिन प्रति कि देखौं हमारे कान्हके नाम ते हँसती कान्ह काहे नहीं सुन्दर चक्षु हैं यह तौ हास्यरस॥ किंवा ऐसे जिनको सबरी चाहत तिनको

नाम लिये ये हँसति हैं ।। या बातको कहिके कि उनको रूप श्याम है ।। अरु कहा करौं यह कर्मको जाने यह नाम राख्यो ।। सोई करुणा अरु मिलिबे को एकै फिरै मिल मिलके दूतिकानि सों एकै मनसों मिलती एकै मिलिबेके विलास ते बिलासती एकै बोलिबे को एकै बोल सुनिबेको एकै बोलिमा बोलि बोलि तीर्थ व्रत करती एकै देखिबेको देवीसी दौरी दौरी फिरतीं ।। एकै देवी मनाइ दान करतीं इत्यादि पदन तें श्रृंगार । किंवा विलास विलसति हैं ये भी श्रृंगार जानिये याते कौशिका वृत्ति रसको अंगरस याते रसवतालंकार ।। मिलि मिलि बोलि बोलि शब्दते लाटानुप्रास भी होत है ।।३।।

अथ भारती लक्षण

दोहा- वरणे जामे वीररस, अरु अद्भुत रस हास ।
कहि केशव शुभ अर्थ जहँ, सो भारतीप्रकाश ।।४।।

जामें वीर अद्भुत और हास्य रस वरणिये अरु सुन्दर अर्थभी जहां कहिये सो भारती है ।। 'वरणहिं जामहँ वीर रस, मिलि श्रृंगार रस' यह भी पाठ है ।।४।।

उदाहरण कवित्त ।

कानिकनिकपत्रचक्र चमकत चारु, ध्वजा झुलमुली झलकति अतिसुखदाइ । केशव छबीलो छत्र शीश फूल सारथीसो, केसरकी आड अधिराधिका रची बनाइ ।। नीके हीन की बश मनी को नक मोती नाक, एक ही बिलोकन गुपाल तौ गये बिकाइ । लोचन विशाल भाल जरित जराउ लाल, मानों चढ्यो मीननके रथमनमथराइ ।।५।।

इहां सवारीको वर्णन है । कि तरवन चक्र झलि मलि छबि की झूल ध्वज शीश फूल सारथी केसरकी आड अधिराधिका जाके आसरे पर सब रहत नकीब नाक मोतीमें उत्साह ते वीररस बेंदा काम लोचन मीन एक विलोकन मंदहासवारीते हास बेंदारक्त सों काम धाप्यो ताको रंग श्याम ताते अद्भुत अथवा मीन के रथ पै चढ्यो यह अद्भुत ताते भारती रसवत अलंकार अथवा सवारी को रूपक है बेंदामें मन्मथकी तर्कनाते उत्प्रेक्षा लक्षणके दूसरे पाठ मैं श्रृंगार कह्यो तो यहां बिकाय जैबो श्रृंगार क्यों कि जब हँसि चितवै है तब नायक बेग वश हो जात है ।।५।।

अथ आरभटी लक्षण ।

दोहा- केशव जामें रुद्ररस, भय बीभत्सक जान ।

हास बेंदारक्त सों काम धाप्यो ताको रंग श्याम ताते अद्भुत अथवा मीन के रथ पै चढ्यो यह अद्भुत ताते भारती रसवत अलंकार अथवा सवारी को रूपक है बेंदामें मन्मथकी तर्कनाते उत्प्रेक्षा लक्षणके दूसरे पाठ मैं श्रृंगार कह्यो तो यहां बिकाय जैबो श्रृंगार क्यों कि जब हँसि चितवै है तब नायक बेग वश हो जात है ।।५।।

अथ आरभटी लक्षण ।

दोहा- केशव जामें रुद्ररस, भय बीभत्सक जान ।
आरभटी आरंभ यह, पदपद जमक बखान ।।६।।

जामें रौद्र भयानक बीभत्स रस अरु पद पदमें जमक भी होय सो आरभटी वृत्ति कहावै ।।६।।

उदाहरण सवैया ।

घोर घने घन घोरत सज्जल उज्जल कज्जलकी रुचि राचैं ।
फूले फिरै इभसेनभ पाइक सावनकी पहिली तिथि पाचैं ।।
चौहूं कुधा ताडिता तडपै डरपैं वनिता कहि केशव साचैं ।
जानि मनो ब्रजराज बिना ब्रजऊपर काल कुटुम्बिन नाचैं ।।७।।

तडपै है तडिता अरु घोर हैं घन यामें या जान्योजात कि मारिबेके हेतु क्रोध करति है ताते रौद्ररस । चौंहूदिशा तडपै तडिता यह भी पाठ है अरु देखि देखि वनिता डरपतीं सोई भयानक है अरु काल कटुम्ब नाचै यामें बीभत्सरस ।। अरु हृदयमें मारिबेकी रुचि है याते आरभटी अरु पूर्ववत् अलंकार रसवत् । मानों काल कुटुम्ब ते उत्प्रेक्षा ।।७।।

अथ सात्विकी लक्षण ।

दोहा- अद्भुत वीर शृंगार रस, समरस वरणि समान ।
सुनतहि समुझत भाव जिहिं, सो सात्विकी सुजान ।।८।।

अद्भुत वीर औ श्रृंगाररस या समरस समान कहिये ।। अद्भुत रुद्रौ वीर रस, समरस बरणि समान । सुनतहि समुझत भावमन, सो सात्विकी प्रमान ।। यह भी पाठ है ।।८।।

उदाहरण कवित्त ।

कशोदास लाख लाख भांतिनके अभिलाष, बारि दैं री बावरी न बारि

हिये होरीसी। राधा हरिकेरी प्रीति सबते अधिक जानि, रति रतिनाथहू में देखो रति थोरीसी।। तिनहूंमें भेदन भवानिहूंपै पारचो जाइ, भारति की भारती है कहिबेको भोरीसी। एकै गति एकै मति एकै प्राण एकै मन, देखिबेको देह द्वै है नैंननकी जोरीसी ।।९।।

उक्ति सखीकी अन्य नायकासों। कि तू कहति है कि मोंहिं श्यामसों मिलाउ सो ये अभिलाष बारि दै हे बावरि हृदय में होरी मति बारै राधा हरिकी प्रीति सबते अधिक जान रतिमें अरु काममें रति थोरी है इनमें भेद भवानीभी नहीं पार सकति भारती की भारतीभर शोभा है कहतमें भोरीसी जानी जात भारत में भारतकी भारती ऊभोरी सी यह भी पाठ है ।। गति मति प्राण इनके एक हैं। देखिबे में देह दो हैं नयनन कैसे जोरी ।। इहां दोहुनको उत्साह वीर जब सखी कही ये अभिलाष बारि दे हृदयमें होरीसी कहा जरइ रही यह क्रोध ते रौद्र राधा हरिकी प्रीति ते श्रृंगार अरु देह द्वै जीव एक इहां अद्भुत अरु भेद नहीं ।। अभेद वर्णन ते समरस। किंवा अभिलाषन को बारिदैबो विषय वासना छुडाइबो यह भी समरस अरु द्वै देहमें एक जीवको वर्णन तौ एक अनेक ठौर कहो याते दूजो परजाइ अलंकार अरु एकै एकै बहुवार आयो याते लाटानुप्रास भी है ।।९।।

दोहा- इहि विधि केशवदास कवि, नवरसवरणि कवित्त।
पांच भांति अनरस सुनो, ताहि न दीजै चित्त ।।१०।।

इति श्रीमन्महाराजकुमार-इन्द्रजीतविरचितायां रसिकप्रियायां
चतुर्विधकवित्तवृत्तिवर्णनं नाम पञ्चदशः प्रकाशः ।।१५।।

इहिं प्रकारके केशवदास ने नवरस अरु वृत्ति वर्णन कियो। अब पांच भांति ते अनरस वर्णत तापै कोई चित्त न दीजियो ।।१०।।

इति श्रीमन्महाराजाधिराजकाशिराजश्रीमदीश्वरीप्रसादनारायणसिंहबहादुरस्या-
ज्ञाभिगामिललितपुरनिवासिहरिजनकवीश्वरात्मजेन सरदाराख्यकवीश्वरेण
विरचिते रसिकप्रियाभूषणे सुखविलासिकानामटीकायां
चतुर्विधकवित्तवृत्तिवर्णनं नाम पञ्चदशः प्रकाशः ।।१५।।

अथ अनरस वर्णन।

दोहा- प्रत्यनीक नीरस बिरस, केशव दुःसंधान।।
पात्रादुष्ट कवित्त बहु, करहिंन सुकवि बखान।।१।।

प्रत्यनीकरस १ नीरस २ विरस ३ दु:संधान ४ अरु पात्रा दुष्ट ५ कवित्त को कवि लोग नहीं कहत हैं अनरस जानिके ॥१॥

अथ प्रत्यनीक लक्षण ।

दोहा- जहँ श्रृंगार बीभत्स भय, विरस हि वरणे कोइ ॥
रौद्र सुकरुणा मिलत ही, प्रत्यनीक रस होइ ॥२॥

जहां श्रृंगार अरु करुणा और रसके जे विरोधी रस हैं तिनके मिले प्रत्यनीकरस होतु है ॥ जहँ श्रृंगार बीभत्स भय, विरही वरणे कोइ ॥ अरु 'वीरहि वरणे' वह भी पाठ है ॥२॥

उदाहरण सवैया ॥

हँसि बोलतही सुहँसै सब केशव लाज भगावत लोक भगै ।
कछु बाता चलावत घैर चलै मन आनत हीं मनमत्थ जगै ॥
सखि तूजु कही सुहुती मन मेरेही जानिये नेह हिये उमगै ।
हरि त्यों नेकु दृष्टि पसारतही अँगुरीनि पसारन लागे लगैं ॥३॥

इहां नायका सों सखीने परिहास कीनो सुनकर नायका कहति है ॥ कि हँसि बोलत न सब कोई हँसन लागत हँसि बोलिबो श्रृंगार ॥ लाज भगावत श्रृंगार लोक भगबो बीभत्स ॥ बात चलाइबो शृंगार घैर चलबो बीभत्स मन आनत मन्मथ जगै श्रृंगार हियो न उमगै यह बीभत्स याते है सखी यह बात जो तूते कही सो मेरे मनमें भी रही ॥ जानि यही नहीं ज्यों उमगै अरु जानिये है न हियो उमगै यह दोनों पाठ हैं अरु हरिको थोरी भी दृष्टि पसारके मैं देखों तौ लोग अँगुरी पसारन लगत दृष्टि पसारिबेते श्रृंगार अरु लोग अँगुरी पसारत यामें बीभत्स कह्यो तहां प्रत्यनीक रसभयो यह परिवृत्त कहावै ॥ कविप्रियामें यह कवित्त परिवृत्तके उदाहरण में है ताते इहां नारायण कवि विस्तार पूर्वक अर्थ नहीं लिख्यो औ भय वीर रौद्र करुणा जहान ऐसेही मिलै तहान भी प्रत्यनीक रस जानिये ॥३॥

अथ नीरस लक्षण ।

दोहा- जहां दम्पती मुँह मिलै, सदा रहै यह रीति ।
कपट रहै लपटायमन, नीरस रसकी प्रीति ॥४॥

जहां नायक अरु नायका मुँहसों मिलैं यही रीति सों सदा रहैं ॥ अरु लपटाय पर मनमें कपट रहै यही नीरस रसकी प्रीति है ॥४॥

उदाहरण सवैया ।

गाहत सिंधुसयाननिके जिनकी मतिकी मति देह दहेली ।
मोहिं हँसी दुख दोऊ दई तिनहूं सो जनावति प्रेम पहेली ।।
आजु लों कानन हूं न सूनी सुतौ देखि चली हम सौति सहेली ।
जानी है जानी मिली मुँहही हिय नाहिये भावति गर्व गहेली ।।५।।

सखी अपनी बात कहति है कि हम ऐसी हैं सयाननी के सिंधु गाहत गाहत मतिकी दहेली ह्वै गई हैं पानी में बडी बार भीजते देह दहेली जाति है सो हम ऐसीही तिनके आगे प्रेम पहेली जनावति हैं सो मोहिं हँसीहू आवति है और दुःखहू है तेरे छलको याते जानिहौं तुमहू मिली है हियमें तेरे नाहँ नहीं भावति है हे गर्वगहेली सो नहीं तैंने अपने आंगी करि राखी है सो वह नहीं तौ है तौ सौति जो पियको मिलन नहीं देति पर तैंने सहेली करि राखी है बारबार वही है तेरे पास सहेलीहू पास ही रहति है यह अर्थ तहां प्रश्न-इहां तौ नायकाको कपट कह्यो लक्षण में तौ कह्यो है दंपति मुहँमिलैं कपट लहैं लपटाइ सो नायकको कपट या कवित्तमें कैसे जानिये इहां तौ मुहँ मिली यह पाठ है मिलेपाठ हो तौ दोऊ जाने जाते अरु गर्व गहेलीपद बनै दोऊ में अरु नायक में सौति सहेली पद बनै या कवित्त में बडो प्रश्न है तहां उत्तर-सखी दोउनसों कहित दोऊ बैठे हैं अरु मनमें तौ कपट है क्योंकि नायक शठ है अन्यासक्त है नायका कुलटा है यह अन्यसों आसक्त है सो झूंठी बातें बनाइ बनाइ सखी के आगे कहत ते तहां सखी कहति है कि हमें तुम ठगत हौ हम कैसी हैं जिन मति देह सयाननके सिंधुमें परति है परत परत देह दहेली ह्वै गई ताते मोहिं हँसी दुःख मोको हँसीहू है अरु दुःखहु है मोहिं ठगत हौ यही तौ हँसी और तुम्हारे कपट को दुःख है क्योंकि दोऊ दई तुम दोऊ दई तुम दोऊ प्रेमकी पहेली हमें सुनावत हौ पहेली सोहे फेरि हमारे आगे कहत हौ चतुराई जनावत हौ तौ जानी हौ जानी मिली मुँह मिली वह प्रेम पहेली तुम्हारी मुहँही मिली है और हियमें तुम्हें नहीं ये भावति है दोऊ बात नहीं कौन मिलाप कीजै तौ भलो है जो मिलाप न होई तौ और ठौर पहुँचिये कैसी है वह नहीं गर्व गहेली अपनी चतुराई को गर्वताकरि बावरी ह्वै रही है और की चतुराईकी खबरिही सूझति है नहीं याते वा तस कही तब सखीनें एक औरत देखी सो कहति है एक वहां सहेली है सो वह सौतिहू है अरु सहेलीहू है सहेली सौति को कोऊ करत नहीं पर या नायका के तौ मनमें ईर्षा नहीं जो पिय सों अनुरक्त होइ तौ अन्य स्त्री की ईर्षा आवै यह तौ और ही ठौर लगी है याते वा नायिका को इन सहेली करि राख्यो है सो इन सखीने कही आजुलों यह बात काननिहूं नहीं सुनी सो यह आंखिन

देखी चलो सौति सहेली या भांति अर्थ इहां दंपवीन को कपट वर्ण्यो याते नीरस कवित्त जानिये इहां पांचमी विभाजना कारज होइ विरुद्ध ते यहु विभावना महिं सौति ते सहेली के कर्म उपजे यही विरुद्ध ते कार्य यह जो प्राचीन ने लिख्यो सोई अर्थ है ॥५॥

अथ विरस लक्षण ।

दोहा- जहां शोकमहिं भोगको, वरणि कहै कवि कोइ।
केशवदास हुलाससौं, तहँही वीरस होइ ॥६॥

जहां शोक में भोगको वर्णन होइ तहां विरस जानिये ॥६॥

उदाहरण कवित्त ।

केशोदास न्हान दान खान पान भूल्यो गान, गयो ज्ञान भयो प्रानपीठि कीसी पीठि है। छांडहु रसिकलाल यह जक वैह बाल, देखतहीं सब सुख तुमहि उबीठि है।। ऐसी शोच सीठी सीठी चीठी अतिदीठी सुने, मीठी मीठी बातनि जु नीकेहूमें नीठि है। इठनिसों तूटी ईठी ताके शोककी अँगीठी, उठी जाके उरमें सुकैसे हँसि डीठि है ॥७॥

सखी वचन नाइकासों कि नाइका की यह अभ्यस्त है न्हाइ दान इत्यादि सब भूले प्राणतौ पीठि चौकी ताकी पीठिसे भये हैं ताते तुम भोगकी जक छांडि देहु वह बाल तो तुम्हैं देखि के सब सुख छांडि है ऐसी शोच सीठी अरु चिठी सो सीठी है अति फीकी है काहेते जु नाइका सुनति है मीठी मिठी बातें नीकेहूमें क्योंहू क्योंहू हँसौ तौ अब यह अवस्था है और ईठनि सों जु टूटी है ईठी जाके सो ढाकी अँगीठी वाके उरमें उठी है सो कैसे तुम सों हँसिकै देखि है तो इहां भोग में शोक वरण्यो याते विरस भयो इहां वृत्त्यनुप्रास है यह भी पूर्ववत् जानिये ॥७॥

अथ दुःसंधान लक्षण ।

दोहा- ये कहोइ अनुकूल जहँ, दूजो है प्रतिकूल ॥
केशव दुःसन्धानरस, शोभित तहां समूल ॥८॥

जहां एक तो अनुकूल मित्रभाव होइ अरु दूजो प्रतिकूल शत्रुभाव होइ तहां दुःसंधान रस सहित मूल जडके सोहत है ॥८॥

उदाहरण सवैया ।

दै दधि दीनो उधारहो केशव दान कहा अरु मोल लैखै हैं।
दीनो विना जुगईहो गई न गई न गई घरही फिरि जै हैं॥

गौहितु वैर कियो कबहोहि तु वारु किये बरनीकी ह्वैरै हैं।
वैरुकै गोरसबेचहुगी अहो बेच्यो न बेच्यो तो ढारि नदैहैं ॥९॥

इहां प्रत्युत्तर है नायक अनुकूलतासों बोलतु है नायका प्रतिकूलतासों बोलति है तहां ॥ प्रश्न-दे दधि यह तौ नायक कह्यो दीनो उधार यह नायक कह्यो तब नायक कह्यो दान कहा अरु दान देहु तब नायका कही कहा अरु मोललै खै हैं मोल लै खै हौ ऐसे चाहिये है पदतो ऐसे है जनु औरसों कहति है प्रत्युत्तर में खैहौ पद चाहिये एक प्रश्न तौ यह अरु वैर नायक के वचन है वैरु किये वरुनीकी ह्वै रै हैं इहां हू रैहौ हरैहौ चाहिये रहे पद इहां अनबन हैं अरु तीसरो प्रश्न नायकहूने प्रतिकूल वचन कह्यो वैरुकै गोरस बेचहुगी नायकको वचन अनुकूल न रह्यो ॥ उत्तर-या कवित्तको अर्थ या भांति कीजै दैदधि यह तौ नायकने कह्यो तब नायकाने कह्यो दान तब नायका बोली कहा अरु और कहा करोगे भिक्षाही मांगोगे तब नायक ने कही भली हम मोल लै खै हैं मोल दैकै लैहैं यह अर्थ तब फेरि नायका बोली दीने विना कहा जो हम देहिं गी नहीं तो तुम कैसे मोल लैखावगे तब नायक ने कही गई जू गई कहा लौं तुम गई जू गई कहि कह्यो प्रतिष्ठा दैकै कहा कि दान देहुगी पै तब नायका न कही नगई नगई घरहीं फिरि जैहैं फेर नायक कह्यो गयो हित वैरु कियो उन कह्यो हितु कबहो तब नायक कही वैरु किये कर कछु करुनाहूं हैं श्रेष्ठता है तब नायका कही [illegible]की है नीकी ह्वैरै हैं हम नीकी भांतिरहि हैं तुम्हारे वैरुते कछू डरि हैं नहि नीकी ह्वै रै हैं वैरुकै यह वैरुके शब्द चौथी तुकको इहां अर्थमें लगाइ लीजै कहा नीकी ह्वै रै हैं वैरुकै तुमसो तब नायक कही गोरस तौ वैरुके बेचैगी तब नायकाने कह्यो बेच्यो न बेच्यो तौ ढारहू तो न देहिंगी धरही राखि हैं इहां सर्व वचन नायका नायकके अनुकूल प्रतिकूल लगे याते दुःसंधान रस भयो उत्तरालंकार है उत्तर जहां प्रति उत्तरौ यह उत्तर लक्षण है उत्तरालंकारको ऐसो अर्थ भी कोई करत अरु हमारे शिष्य नारायण कविने या कवित्तको अर्थ कविप्रियाके टीकामें हीनरसपर खूब लिख्यो है याते इहां नहीं लिख्यो ॥९॥

अथ पात्रादुष्टरसलक्षण ।

दोहा- जैसो जहां न बूझिये, तैसो करिये पुष्ट।
विनु विचार जो बरनिये, सो रस पातरदुष्ट ॥१०॥

जैसे जहां नहीं बूझिये तैसे ताको पुष्ट भी न करिये अरु विना विचारे वर्णन करिये सो पात्रादुष्टरस है. जैसे जाकहँ बूझिये करिये, तैसो पुष्ट यह भी पाठ है ॥१०॥

उदाहरण कवित्त ।

कपटकृपानी मानी प्रेमरस लपटानी, प्राननिको गंगाजूके पानीसम जानिये। स्वारथनिधानी परमारथकी रजधानी, कामकी कहानी केशोदास जग मानिये।। सुबरन अरु ज्ञानी सुधासों सुधार आनी, अकल सयानी सानी ज्ञानी सुखदानिये, गौरा औ गिरा लजानी मोहे मुनि मूढ प्रानी, ऐसी वानी मेरी रानी विषुकै बखानिये ।।११।।

इहां सब वर्णमें विचार के पद परे हैं कपटको काटति है सबके कपटको काटै अपनेहू कपटको काटै ऐसो बिनु विचारको पद है फेरि प्रेमरससों अरु गंगाजूके पानीकी बात इहां ऐसो न बूझिये सो धरचो स्वारथ निधानी में पति सेवाकी ही नति है परमारथ सों फेरि बिनु विचार की बात कहै ऐसे ऐसे सब कवित्तमें जानिये पात्र दुष्टता कही इहां वृत्त्यानुप्रास है अलंकार अक्षर समता बहु यह लक्षण है सो अनुप्रास ही है अरु ऊख बखानि है, यह भी पाठ है ।।११।।

दोहा- केशव करुणा हास्य कहि, अरु बीभत्स श्रृंगार।।
वरणे वीर भयानक हि, सन्तत वैरु विचार ।।१२।।

केशवने करुणारस १ हास्यरस २ बीभत्सरस ३ श्रृंगाररस ४ वीररस ५ अरु भयानकरस ६ सन्तत निरन्तर अरु वैर सहित के वरणे ।।१२।।

दोहा- भय उपजै बीभत्सते, अरु श्रृंगारते हास।
केशव अद्भुतवीरते, करुणाकोप प्रकास ।।१३।।

बीभत्सते भय श्रृङ्गारते हास्य वीर ते अद्‌भुत रुद्र ते करुणा ।।१३।।

दोहा- इहि विधि केशवदास रस, अनरस कहे विचारि।
वर्णत भूलि परी जहां, कविकुल लेहु सुधारि ।।१४।।

इहि प्रकारते केशवदास ने रस अरु अनरस कहे विचारिके वर्णतमें जो भूल परी होय ताको हे कविकुल सुधारि लीजियो ।।१४।।

दोहा- जैसे रसिकप्रिया विना, देखिय दिन दिन दीन।
त्योंही भाषा कवि सबै, रसिकप्रिया करि हीन ।।१५।।

जैसे रसिक लोग प्रिया नायका बिन रोज रोज दीन दुखी रहत हैं तैसेही भाषा वारे कवि सब रसिकप्रिया ते हीन होके अर्थ विना पढे दीन रहत हैं ।।१५।।

दोहा- बाढै रति मति अतिपरे, जाने सब रस रीति।
स्वारथ परमारथ लहै, रसिकप्रियाकी प्रीति ।।१६।।

इति श्रीमन्महाराजकुमार-इन्द्रजीतविरचितायां रसिकप्रियायां रस-अनरसवर्णनं नाम षोडशः प्रकाशः समाप्तः ।।

या रसिकप्रिया के पढे रति मति अति बढै और सब रस विरस कहा नवरस तिनकी रति जाने और स्वारथ २ कहा याके पढे चातुर्यता लहै तब राजा प्रजा को वल्लभ होइ या भांति तौ स्वारथ लहै और श्रीकृष्णराधाको वर्णन है याते तिनके ध्यानको परमारथ लहै याते रसिकप्रिया की प्रीति ते दोऊ बातें सिद्धि होहि ॥१६॥

इति श्रीमन्महाराजाधिराजकाशिराजश्रीमदीश्वरीप्रसादनारायणसिंहबहादुरस्या-
ज्ञाभिगामिललितपुरनिवासिहरिजनकवीश्वरात्मजेन सरदाराख्यकवीश्वरेण
विरचिते रसिकप्रियां भूषणे सुखविलासिकानामटीकायां
रस-अनरसवर्णनं नाम षोडश: प्रकाश: समाप्त: ॥९ ॥

शिष्य सरदार कविके नारायण कवि ता कृत स्फुट कवित्त लिख्यते ॥

परमप्रकाशी सुखराशी रहै मुक्तिदासी, कलुषनिवासी ऐसी काशीको बसैया हौं। दक्षिणदिशामें विश्वनाथते सुनारपुर, सन्निधि केदारहनूमानको पुजैम याहौं ॥ पुत्र अन्नपूरणा भवानीजीको जाहि रहौं, बंदीजन जात जह्नुसुताको नहैयाहौं। बानी अवतार सरदार कबिजूको शिष्य, नारायणनाम रामसुयश कहैम याहौं ॥१॥ काछनी कछोटी कसे कामरी कंधापै धरे, अति अनियारे दृगतारे कजरारे हैं। ठटुकि चलत लटलटकैं कपोलनपै करमें लकुटमोर मुकुटसुधारे है ॥ खेलत खिलत जात खिरक नारायण जू, कुटिल कटाक्ष कचकारे घुँघरारे हैं। चूमि चुचुकारत चरावत धरापैधेनु, धाइधरै धूमरीकलिंद जा किनारें हैं॥२॥ तहां लै सखीन संग आइ वृषभानसुता, जहां खरे श्यामसखा सहित निकाइमैं। तकि तकि छकि जकि दोउवै दुहूंको रहे, कहे कौन कवि छबि उपमा न पाई में॥ खेलै लगे गेंदगोरी संगमें नारायणजू, लखि लखि मारै लगे कुचउचताई मैं। उचटि गिरत कह्यो कान्ह ना अधिरहोहु, ल्याइ हौं तुरत रहो नेक धीरताईमें॥३॥ चकै कदंब कान्ह कूदि कालिंदीके मांझ, काली नाथि ल्याये कृपाकरिकै जननपै॥ मन्द मुसुकात जात नृत्यत नारायण जू, वारत अनेक कामवानिक बननपै। मटकि मटकि गति अति चटिकीलो लेत, भांति भांति छूटी छटा छविकी छननपै। मोदभरि मोहन मधुरसुर साधि साधि मोरि मुख मुरली बजावत फननपै ॥४॥ एहो ब्रजनाथहौ अनाथ निके नाथ अब, कीजिये सनाथ मोहि अबला विचारिकै।

देव यक्ष नारि नर जेते जीवजन्तु सबै, मायामें तिहारे परे तुमहिं बिसारिकै ।। करति विनय बुहनागिनी नरायणसों, याहि छांडि दीजै प्रभु मो तन निहारिकै। महामोह ग्रसित फँसित काम आदिकमें, याही ते न चीह्न्यो रूप मूढमद धारिकै ।।५।। मंजुमोर मुकुटकपोलपै अलकपट, पीततैं चटकचारु चूनरी अनूपकी। मन्द मुसुकात जात कहत बनाय बात, श्याम पीत गात छटा छूटी छबी कूपकी ।। नोकदार नैनते निहारत नरायणजू, हाव भाव करै प्यारी भारी ब्रजभूपकी । थोरी थोरी बैसमन देखत ठगोरी होत, आजजुरी जोरी यह जूगुलस्वरूपकी ।।६।। स० जातबिहाल महा इहि काल तहां तिहिको जुरि आइ घनेरी। नीकी नई निमकीन नरायण बाल बिशाल सबै मिलि घेरी।। सो नँदलाल तमाल तरे खरे प्रेमभरे यह बात निबेरी। मीन चखीं जिनि हो विलखी तू सखी नालखी विनतीपर मेरी ।।७।। तेहतरेरन कीजिये मोढिग प्रीतिकी रीतिमें होहु निहाल हि। नातो व्यतीत भई सब बात सुतो कहि हौं सबसों हम हालहि ।। तान सुनेतरकी तिहि बेर नरायणको तरताकि तमाल हि । होइ लटूझट बांधि पटू भट् भारी भुजाभरि भेंटि गुपाल हि ।।८।। क० ।। जगमग जटित जवाहिरकी ज्योति जगी, जमी है जलजमुखी जूहिनकी सेजपर। जोमभरी जोबनजलूसते जमाये जेब ज्वालसी जरब देत मनकी मजेजपर।। जाहु तो जलद योग जानिकै नरायणू जादा जाहि जपत भई हैं वा अमेजपर। याहीजाम जो हत जनी तेलै जलजहार जात ज्यों ज्यों यामिनी जम्हात त्यों त्यों सेजपर।।९।।

इति श्रीसरदारकविशिष्य नारायणदत्तकविकृत स्फुट कवित्त समाप्त ।।

पुस्तकें मिलने के स्थान

१) खेमराज श्रीकृष्णदास,
श्रीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग
खेतवाडी, बम्बई ४००००४

२) खेमराज श्रीकृष्णदास,
६६, हडपसर इण्डस्ट्रिअल इस्टेट
पुणे - ४११०१३

३) गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस,
व बुक डिपो,
अहिल्याबाई चौक, कल्याण
(जि.ठाणे- महाराष्ट्र)

४) खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक - वाराणसी (उ. प्र.)

मुद्रक एवं प्रकाशकः
खेमराज श्रीकृष्णदास,
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, बम्बई-४०० ००४

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS